चौ० - शीतल निशि तव असि वर धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा॥६॥
तेरी असि जो तरवारि त्यहिं की धार शीतल निशि की समान है त्याहि ते तैं मेरो दुख भारी कमी न हरि सकेगो॥६॥

दंक (दे ५३) चौ० धरै जो विविध देह सुर त्राता। तुमसे शठन सिखावन दाता॥७॥ ते श्रीरामचन्द्र देवतन के त्राता कहो रक्षा हेतु विविध प्रकार की देह धरतेहैं मत्स्य कच्छप वाराह नृसिंह वामन परशुराम इत्यादिक सो काहे हेतु तनु धरते हैं तुम्हे ऐसे शठन को सिखावन कहो शिक्षा दण्ड देबे हेतु॥७॥

दोहा॥ जाके बल लव लेश ते जितेउ चराचर झारि॥ तासु दूत हैं जासु कै हरि आनेहु प्रिय नारि॥२॥ हे रावण जिन रामचन्द्र के बल के लवलेश मात्र ते चराचर झारि तैं जीति लीन्हे है प्रथम रकार तेरे नाम विषे परेउ है वोही के प्रताप ते तैं सबको जीत्यउ है तिनका मैं दूत हौं जिनकी प्रिय नारि तैं हरि लातेई इतनी मर्दाई ढिठाई तै कीन्हेहै (पुनि दूसरा अर्थ) जिनके बल के लवलेश ते चराचर कहो देव दानव नाग मनुष्य पशु पक्षी तरु तृण शैल इत्यादिक जेतेहै तिन विषे जेता बल है सो सब श्री रामचन्द्र के बल के लवलेश ते सब के बल है॥२१॥

पृष्ठ (९५४) चौ० खायऊँ फल प्रभु लागी भूखा॥
कपि स्वभाव ते तोरेउँ रूखा ॥ ३॥ इहाँ प्रभु कही राजा को नाम है ताते हनुमान् जी कहा है प्रभु भूख लागे ते फल खायों है अरु कपि स्वभाव ते रूख तोरेउँ है किन्तु अन्वय करिके अर्थ होतहै हे तरु फलन के प्रभु भूख लागे ते फल खायों है कपि स्वभाव ते रूख तोरेउँ है ॥ ३॥

चौ०- राम विमुख संपति प्रभुताई जाइ रही पाई बिनुं पाई ॥ ५॥ हे रावण श्री रामचन्द्रते विमुख भये ते जेती सम्पति प्रभुताई है सो पाई कहो वर्तमान में सम्पत्ति प्रभुताई है अरु बिनु पाई कहो जो परिणाम पाइबे को है सो दूनों जाती रहती हैं किन्तु पाई कहो एक कर अंक तापर एक सुन्न ते दश होते हैं दुइ सुन्न ते सौ ऐसे दश दश गुणे बढ़ते जाते हैं अरु जो अंक न होर तब सब सुन्ने सुन्न हैं तैसे राम नाम अंक हैं अपर मोक्ष के साधन सब सुन्न हैं हे रावण अस जानिकै श्रीरामचन्द्र के सन्मुख शरण होकै राम नाम भजहु ॥ ५॥

[illegible] चौ० नाघि सिन्धु हाटक पुर जारा ॥ निशि-
चर गण बाधि विपिन उजारा ॥ ८॥ हे नाथ जो आप श्रीजानकीजी
को मुद्रिका दीन्हे तेहि के आधार से समुद्र पार गयउ हौं तहां श्री जानकीजी
आपको विरह महाअग्नि ज्वालारूप तेहि ते तप्त हैं मुद्रिका पाइके शीतल
भई हैं तब आपकर विरह महा अग्नि रूप मैं लंका के सम्मुख करि दीन्हे
बिना प्रयासहि पुरी भस्म ह्वै गई है अरु वानर स्वभाव ते बन उजारि दीन्ह
है अरु आपके बल ते राक्षसन को मारा है अरु आपको श्रीजानकी
जी चूड़ामणि दीन है त्यहि के आधार ते समुद्र पार उतरि आयों है
हे महाराज एक राति लंका मे रह्यउँ है ॥ ८॥

५५ ([illegible]) चौ० - निर्मल मन जन सो मोहि पावा मोहि कपट
छल छिद्र न भावा ॥ ५॥ जिनकर मन निर्मल है तेई मोको पावैहिगे अरु
कपट छल छिद्र जिनमें है ते मोको भावते नहीं हैं किन्तु जिनके कपट छल
छिद्र है अरु मोरे सम्मुख आवत भये हैं तो उनको कपट छल छिद्र मो को
भावते नही मैं लेते नहीं तुरत मन निर्मल करि देत हौं ॥ ५॥

दो०- उभय भाँति लै आवहु हँसि कह कृपा निकेत जय कृपालु कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥ १ ॥ हे कपीश दुष्ट भाव ते आयो होइ या आर्त ह्वैकै आयो होइ तो उभय भाँति कही दोऊ भाँति से ल्यावहु विहँसि के कृपा निधान कहते हैं विहँसे क्यों कपिन का सन्मत सुनिकै तब अंगद हनुमान समेत सब कपि जय कृपालु श्रीरामचन्द्रकी कहिकै चले ॥ २ ॥ पृष्ठ (२७६) चौ०- उर कछु प्रथम वासना रही प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥ ६ ॥ मेरे उर विषे प्रथम कछु वासना रही है आपके चरणारविन्द विषे सोई वासना अब प्रभु पद पंकज देखिकै नदी रूप ह्वैकै बही है तहाँ विभीषण के जो कही कि प्रथम यह वासना रही है कि रावणको वध कराइ कै मै राज्य करौं तौ यह कहना नहीं सम्भवित है काहेते कि विभीषण कै परम भागवतनमें गिनती है अरु भागवत निर्वासिक होतेहैं प्रमाण भारते-

(श्लोक एकः) प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक व्यास अम्बरीष शुक शौनक भीष्मकाद्यान् ॥ रुक्माङ्गदार्ज्जुन वशिष्ठ विभीषणाद्या नेतानहं परम भागवता नमामि ॥ २ ॥ इसलिये तौ शास्त्रन विषे यह प्रमाण है कि पूर्वापर विरोधरा तहाँ ग्रंथन के प्रमाण विषे

पुनि श्लोक आदि अंत विशेष कहावत है अरु मध्यम सामान्य कहावत है
तहाँ यह श्लोक विषे प्रथम प्रह्लाद को गिनती है सो दानव वंश विषे अरु
अंत मे बिभीषण को कहा है सो राक्षस वंश विषे तिन दुनो को विशेष भाग-
वत कहा है काहे ते कि हिरण्य कशिपु अरु रावण ते द्वौ त्रैलोक्य विरोधी
तिनकी सभा विषे वैष्णव धर्म कर निशान गाड़ दीन है सो नही हिल्यो है
तेही धर्म ते प्रह्लाद विभीषण के द्वार हुइकै सहित परिवार दुनो वंश कृ-
तार्थ भये हैं तहाँ विभीषण के कहीं वासना सम्भवत है जामे स्फुरित होइ
ताते यह चौपाई को वहै अर्थ पुनि कहो है उर कछु प्रथम वासना रही है
अब आपु के चरणारविन्द देखिकै सो वासना महा नदी रूप ह्वैकै प्रवाह
चली जाती है ऐसे आपु के चरणारविन्द के दर्शन हैं॥६॥

पृष्ठ ([illegible]) चौ० यदपि सखा तव इच्छा नाहीं मम दरशन
अमोघ जग माहीं॥८॥ हे सखे यद्यपि तुम्हारे लंका के राज्य को इच्छा
नही है तदपि मेरे दर्शन कर अमोघ फल है याहि राज्य करिकै रावण तुम्हा-
रो निरादर कीन है सो राज्य मैं तुमको दैकै शुद्ध कीन चाहत हौं॥९॥ इति सुंदर काण्डम्

अथ लंका काण्ड प्रारम्भः॥ दोहा॥ लव निमेष परिमाणु युग वर्ष कल्प शर चण्ड भजसि न मन त्यहि राम कहँ काल जासु को दण्ड॥ १॥ हे मन श्री रामचन्द्र को भजु कैसे हैं श्री रामचन्द्र कल्प जेहि कर बाण है अरु काल जाको दण्ड है कल्प काल काको कहौ लव कहौ जो पलक कही तौ फिर कोल लव कहौ चौनो होते है त्यहि साठि को निमेष कहौ जामे पलक नैनन को बार २ खुलते है बन्द होतेहै त्यहि साठि निमेष को एक परिमाणु होत है साठि परिमाणु को एक पल होत है साठि पल को एक दण्ड होत है साठि दण्ड को एक दिन राति होत है तीस दिन राति को एक मास होत है बारह मास कर एक वर्ष होत है सौ वर्ष श्रीराम चन्द्र के बाण के डांड़ी है अरु लव अरु निमेष जेहिं बाण मे हैं फोक हैं अरु यहि प्रमाण ते वर्ष में लगे हैं चारिउ युग सोई बाण के पर हैं अरु कल्प प्रचंड गाँसी है कल्प कहौ हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग ऐसे चारिउ युग हजार हजार मिलि के हजार चौकड़ी जब बीतै तब ब्रह्माका एक

दिन होतहै अरु अन्तरे तीने राति होति है तिके प्रलय होत है ताको ईं वांहू नैमित्य
प्रलय कहतेहैं तहाँ ब्रह्मा को लोक रहिजात है अपर प्रलय होइ जातहै
कल्प प्रचंड बारा के गासी है अरु महा काल कहीं जो महा प्रलय होतहै
सोई धनुष है अरु जो काल के भीतर उतपत्ति पालन प्रलय है सोई पनिच
है ऐसे सकल चिह्न श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे धनु बाणहैं तिनको भजु ॥१॥

पृष्ठ (२६४) ॥ दोहा ॥ अति उतंग तरु शैल गण लीलहि लेहि
उठाय आनि देहि नल नील कहँ रचहिं सुसेतु बनाय ॥१॥

अतिशय उतंग जे ऊँचे विस्तारिल पर्वत तिनपर तरु सयुक्त वनके
वन लीलहिं कही अपने खेलहिं ते पृथ्वी सहित उखारि लेते हैं
अरु नल नील को देते हैं ते सुन्दर बनाइ के सेतु बाँधतेहैं ॥१॥

चौ० ॥ शैल विशाल आनि कपि देहीं कन्दुक इव नल नील ते लेहीं
॥१॥ हे पार्वती विशाल२ पर्वत कपि अरु भालु उखारि२ दक्षिण दिशा
को अनेकन फेंकि देतेंहैं त्यहिको नल नील कन्दुक कही गेंदको नाईं

रोकि लेते हैं हजारन पर्वत लेते हैं सो अति शीघ्र समुद्र विषे बो-
रि धरते हैं जैसे थवई सूत धरि कै बनावत है तैसे तीन दिनके
भीतर में सेतु बांधि कै तैयार कीन्ह बाल्मीकि में पाँच रोज में कहा है
दश योजन विस्तारित सौ योजन लम्बा औ द्वै ढिग अति सुन्दर सम्पूर्ण मध्य
अति शय सम बीथीरु अति सुन्दर बनावते भये हैं ॥२॥
पृष्ठ (९६९) चौ० ॥ जे रामेश्वर दर्शन करिहैं ॥ ते तनु तजि मम धाम
सिधारिहैं ॥२॥ जे प्राणी रामेश्वर कर दर्शन करहिं ते अन्त काल विषे
तनु त्यागि के मेरे धाम को जाहिंगे यह मेरो सत्य संकल्प है
रामेश्वर कहो जो रामचन्द्र परमेश्वर हैं सर्व ईश्वरन के ईश्वर हैं
अरु जे श्रीरामचन्द्र के महादेव सरीखे परमानन्य भक्त हैं तिनहीं को श्रीरामचन्द्र
आपन ईश्वर करिकै पूजते हैं ताते रामेश्वर कहो अरु श्रीरामचन्द्र
जिन महादेव के ईश्वर हैं ताते रामेश्वर महादेव को कहो ॥१॥
पृष्ठ (१००४) दोहा ॥ सुनासीर शत सरिस सोइ सन्तत करै विलास
परम प्रबल रिपु शीश पर तदपि न कछु हृदय नहि त्रास ॥१॥
सुनासीर जो इन्द्र हैं तहाँ शत कहो सैकरा इन्द्र ते सरिस कहो अधिक लंका
विषे रावण निर्भय भोग करत है देखिये तो परम प्रबल रिपु श्रीरामचन्द्र
शीश पर आये हैं तदपि हृदय विषे तिनकी त्रास नहीं है तहाँ रावण जो अति

हर्ष ते चाव गान करावत है यह वीर रस स्थायी भाव है शत इन्द्र ते
सीस भोग कों कहा जाते रावण के पुत्र ने इन्द्र को जीति लियो
है अरु इन्द्र को दानव राक्षसन कोरिकै भय है अरु यहाँ काहूको
भय है तहाँ सुख कहाँ है अरु रावण निर्भय भोग करत है ताते शत इन्द्र सीस कह्यो

॥ पृष्ठ (१००६) ॥ चौ० ॥ **बिथुरे नभ मुकताहल तारा ॥ निशि सुंदरी केर शृंगारा ॥ ३ ॥** तहाँ सिंह जो मत्त हाथी को मस्तक विदारत है तब मुकता बिथुरि जाते हैं त्यहि भक्तन के कोई रानिन के गले का हार शृंगार होते है यहाँ नक्षत्र सोई मुक्ता हैं निशि सुन्दरता को शृंगार है ॥ ३ ॥

दोहा ॥ **कह मारुत सुत सुनहु प्रभु शशि तुम्हार प्रिय दास ॥ तव मूरति बिधु उर बसति सोइ श्यामता भास ॥ ४ ॥** तब स्वरूप निर्मल हनुमान जी अति रसोक्ति वाणी कहते हैं हे श्रीरामचन्द्र जी शशि तुम्हार प्रिय दास है तुम्हारी मूर्ति सदा हृदय मे राखत है अरु शशि कर आदर्शवत् है ताते आपु के स्वरूप कै श्यामता भासत है ॥ ४ ॥ हनुमान के वचन विषे यथार्थ उक्ति भासत है काहेते जब श्रीरामचन्द्र रास विहार करते हैं तहाँ पुरुष कारिकै अगोचर स्थान है पुरुष वर्ग एक चन्द्रमा रहते हैं ताते प्रिय दास कह्यो है अरु ताही को देखिकै श्री रामचन्द्र जी के विरह भयो है (प्रमाण हनुमत्संहितायाम्) ऐसा मगोचर स्थान केवल प्रेम रूपक ॥

१॥ तहाँ हनुमान् को वचन अति रसोक्ति सुनिकै श्रीरामचन्द्र भयेहैं॥ २॥

पृष्ठ १२७१ चौ०॥ पग्ग पाताल शीश अज धामा॥ अपर लोक

अँग अँग विश्रामा॥ २॥ इहाँ मन्दोदरी रावण को भय दर्शन देखावतीहै

हे प्राणपति मनुज रूप जो श्रीरामचन्द्र हैं तेई विश्वरूप हैं अपने भक्तन के हेतु अ-

वतार लीनेहै जिनके कटि ते पगतल ताई सातौ नीचे के लोकहैं अतल वितल

सुतल रसातल तलातल महातल पाताल अब पग ते वर्णन करतेहैं जिन के

पग को तल पातालहै १ अरु पद पीठि महातलहै २ अरु गुल्फ तलातलहै ३

अरु गुल्फ के ऊर्ध्व पिंडुरी के रसातलहै ४ अरु पिंडुरी सुतलहै॥ ५॥ अरु गाँठ ते-

तलहै ६ अरु जंघा अतलहै ७ अब कटि से शीश ताई कहतेहैं सात लोक

ऊपर के भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यलोक जिनके जङ्घ कै स्तम्भ

कही मृत्यु लोक है १ अरु कटि भुवः कही लघु स्वर्ग है जहाँ गन्धर्व किन्नर

इत्यादिक रहतेहैं २ कटि के ऊर्ध्व पृष्ठ उदर स्वः कही स्वर्ग लोक है जहाँ इन्द्र रहते

हैं ३ दो भुजा के मध्य वक्षस्थल पृष्ठ महर्लोक है जहाँ कश्यप रहतेहैं ४ अरु

ग्रीव जन लोक है जहाँ ऋषि मुनि रहतेहैं ५ अरु त्याहि के ऊर्ध्व शीश के अर्ध

मध्य तपलोक है जहाँ परम तपस्वी रहतेहैं ६ अरु शीश सत्य लोकहै जहाँ

ब्रह्मा रहतेहैं ७ अरु अपर लोक अंग अंग मे आश्रित हैं॥ २॥

दोहा॥ अहंकार शिव बुद्धि अज मन शशि चित्त महान॥ मनुज

वास चर अचर मय रूप राम भगवान॥ २॥ शिव जिनके अहंकार हैं

अरु ब्रह्मा जिनके बुद्धि हैं अरु चन्द्रमा जिनकर मनहै अरु महान् कही आत्मा जिन

को चित्त है अरु कहुँ कहा विष्णु को महान चिन्ह करिकै कहा सो ही तत्व एकही हैं ये जो मनुज वेष रूप की राशि श्री रामचन्द्र हैं तहाँ चराचरमय वास किहेहैं किन्तु मनुष्य इत्यादिक जो चराचर हैं ते सब विराटहीं के रूपहैं राशि कहीसमूह

(२००) चौ० ॥ बिहँसा नारि बचन सुनि काना ॥ अहो मोह महिमा बलवाना ॥ १ ॥ तब रावण मंदोदरी के बचन सुनिकै बिहँसि कै यह कहत है अहो नाम आश्चर्य करिकै मोह को महिमा बड़ी बलिष्ठ है देखिये तो सुत नाती धन धाम इत्यादिक सब स्वप्न इव सुख वृथा है त्याहि के विषे सबी दृढ़ ममत्व सत्य करिकै मान्यो हैं यह जीव का मोह देखिये तो अनित्य को नित्य मानै है इहाँ यह अभिप्राय है कि मोको परमेश्वर की शीघ्र प्राप्ति है त्याहि को आक्षेप करिकै कहती है कि भजन करो तहँ भजन किये ते को जाने कब प्राप्त होहिंगे अपने अहिवात के स्वार्थ हेतु मोह करिकै इतना विक्षेप करैहै ॥ २ ॥

चौ० ॥ सहसा अनृत चपलता माया ॥ भय अविवेक अशौच अदाया ॥ ३ ॥ सहसा अनृत चपलता अरु माया अविवेक अशौच अदाया सहसा कहीं बिना विचार जल्दी काम करना अनृत कही मिथ्या कहना चपलता कही चंचल स्वभाव माया कही छणक मे रोइ देन छणक मे हास्य विलास कटाक्ष करिकै व्यामोहित करती है अरु सदा सब प्रकार ते भय करिकै डरत रहती है अरु जो कहै करै सो अविवेकमय विवेक रहित है अरु सदा अशौच रहती है अरु दया रहित है ताते स्त्री की कवनिउ बात कबहूँ न मानिये ॥ ३ ॥

चौ० ॥ तव बतकही गूढ़ मृग लोचनि ॥ समुझत सुखद सुनत भव मोचनि
॥ टी० ॥ हे मृग लोचनि तोरि बतकही एक विभाति भयानक रस वर्णन कियोहै ताते
गूढ़ काहा अरु तिन परमेश्वर के युद्ध विषे वाण लागते मोक्ष होतहै ताते
भव मोचनि कहाहै सो मैं करौंगो जाते शीघ्र मोक्ष को प्राप्त होउंगो अरु को
रानी कहा कि तुम रघुवीर के पद भजहु सो भी भव मोचनि वाणी है पर सो
भजन करिकै एतो देर करिकै मोक्ष है अरु मोसे भजन नहीं बनैगो यह रावण अपने
मन मे कहैहै कि तोरि बतकही भव मोचनि है सो सुनि कै मैं निर्भय भयोहौं ॥ ०॥
५८ (१०१२) चौ० ॥ काजु हमार तासु हित होई ॥ रिपु सन करेहु बतकही
सोई ॥ टी० ॥ हमार कार्य होय अरु त्याहु को हितकार होइ रिपु से सोई वार्ता करु
याहि चौपाई मे अभिप्राय बहुत हैं श्री रामचन्द्र कहतहैं कि हमार कार्य यहहै कि
हम संकल्प कीन्हहै कि पृथ्वी राक्षस करिकै हीन करि देउंगो यह हमारो सं-
कल्प है ताते रिपु रूप सम्मुख वार्त्ता करब अरु रावण को संकल्प है
कि समर करिकै आपन हित करौंगो ताते रावण किस को कहौ समाने
जो रिपु रूप वार्त्ता करैगो तैसेही तुमहूं वार्त्ता किहाउ अरु जो यह अर्थ
करिये कि रावण से सो वार्त्ता किहाउ कि रावण जानकी को लैकै हमको
मिलै आइ सो रघुनाथ जी यह न कहैंगे काहे ते यामे हीनता कादर्पता
सूचित होतहै ताते यह अर्थ कछु नहीं है ॥ ० ॥
५८ (१०१५) चौ० ॥ उठे सभा सद कपि कहं देखी ॥ रावण उर भा क्रोध
विशेषी ॥ टी० ॥ तहाँ कपि कहं देखि कै सम्पूर्ण सभा उठत भई है तब रावण के मनमें

शोन्त संयुक्त बोध होत भयोहै विशेषि के यहां सद सभा क्यो कहाहै जाते ॥

अंगद को देखिकै सब उठत भयेहैं किन्तु सद अंगद सभा को जात भयेहैं

किन्तु भक्ता को अपकार लैकै असद सभा उठत भई किंतु सद सभा कहीहै ॥

चौ॰ ॥ अंगद वचन सुनत सकुचाना रहा बालि वानर मै जाना ॥ ४ ॥

तब अंगद के वचन सुनिकै सकुचाय कै कहतहै बालि वानर अच्छा वीर रहा

सो जानतहौं जहां रावण सकुचत्यो कि कोई कल्प विषे त्रेता के युग विषे

कोई रावण भयो हे हिरण्य कशिपु हिरणाक्ष किन्तु शिव के दूत दूनो नारद

को हँसे हैं किन्तु जलन्धर ये तीनिउ लोग कल्प मे रावण भये हैं तिनसे

कोई एक रावण ताही कल्प के युग मे सो वह रावण बालिको काँखे

मे रह्योहै ताते रावण यहि नाम की लघुता समुझिकै सकुचाय गयो है ॥ ४ ॥

पृ॰ (१०८७) चौ॰ ॥ देखउ नयन दूत रखवारी बूड़ि न मरेउ धर्मव्रत

धारी ॥ ६ ॥ हे रावण तोर दूत जो बगीचा रखावत रहैं तिनको सहित बाटिका

श्री हनुमान जी नाश करि दीन अरु तुम्हारे देखत सन्ते सो तुम क्षमा

करि गयो धर्म नीति विचारि कै ऐसे तुम्हारे धर्म नीति मे धिक है तुम

ऐसहु पर बूड़ि न मोह ॥ ६ ॥

दोहा ॥ पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन पर वास शो-

भित भयो मराल इव शम्भु सहित कैलास ॥ २ ॥ पुनि मेरे भुजनकोंहै

हैं नभ जो आकाशहै सोई एक सरोवर तेहि विषे मोर जो कर बल संयुक्त

सो कमल की नाल हैं अरु कर कमला जो हथेरी है सोई फूल हैं तिन पर

तिनपर कैलाश सहित महादेव शोभित भयेहै जैसे अरुण कमल के फूल फूले पर हंस बैठत शोभित होतेहैं यहाँ ध्वनिहै जैसे कोई सरोवर मे कमल फूले हैं तेहिं पर हंस बैठते शोभित होतेहैं तैसे ब्रह्माण्ड कोश सागर विषे मेरे उदर को अब्ज कमल इव फूलि रह्यउ है सो को नही जानतेहैं सो हंस जानि कै जल्प बाद न करै॥२॥

पृष्ठ(१०२८) चौ०॥ कौल काम बस कृपण विमूढ़ा॥ अति दरिद्र अयशी अति बूढ़ा॥२॥ जो कोऊ काहु ते कौल कहो कौनो करार करतेहैं कछु देइ कहतेहैं अरु वह बात नही करतेहैं पुनि जीव हिंसक हैं अरु चौर हैं मिथ्या वादी पाखंडी इनको कौल संज्ञा है अरु कामी जेहैं काम अरु कामना के बश हैं अरु कृपण जे लोभी हैं अरु मद जे मूर्ख हैं अरु अति दरिद्री जेहैं धन करिकै हीन हैं अरु अतिशय असन्तोषी हैं अरु अयशी जिनकर यश जगत मे नहीहै अरु अति वृद्ध जेहैं॥

पृष्ठ(१०२९) चौ०॥ डोलत धरणि सभा सद खसे॥ चले भागि मारुत भय ग्रसे॥४॥ तब पृथ्वी अति कापत भई है सुमेरु आदिक पर्वत देवलोक सहित डगमगाए रहेहैं समुद्र को जल उछलत है लंका के कँगरा गिरि परतेहैं तहाँ सभासद काए को आकार विषे दुइ आकार लैके असद सन्न होतेहैं सो रावण के असद सभा सभा खसे कहो सब गिरि परेहैं अरु भय करिकै भागि चलेहैं जैसे प्रबल मारुत को प्रेरणा से वृक्ष के सब पत्ता उडि जातहैं॥४॥

पृष्ठ(१०३०) चौ०॥ जो मम चरण सकसि शठ टारी॥ फिरहिं राम सीता

पुस्तक भण्डार
अयोध्याजी।

मैं हारि ॥८॥ हे शठ जो मोर चरण टारि सकसि तौ श्रीरामचन्द्र फिरि जाय
श्री जानकी जी को मैं हारि चुकों यहाँ यह अभिप्राय है कि रामके प्र-
ताप कर ध्रुव विश्वास है कि मोर पग न टरैगो अर्थ यही सिद्धांत है पुनि
सामान्य अर्थ करतेहैं कि हे शठ जो मोर चरण टारि सकसि तो रामसीता
तोको मारि फिरबे करैंगे पर मै तोसे हारि चुकों संग्राम विषे मैं तेरे
सम्मुख न होउंगो किन्तु यहाँ काकु शब्द करिके अर्थ करतेहैं जो मोर
चरण टारि सकसि न टारि सकैगो काहेते जो राम सीता मोसे फिरि होहिं तो
तैं टारि सकै सीता रामचन्द्र तो मेरे सम्मुख हैं ताते मै तोसे कैसे हारौंगो॥८॥

पृष्ठ (२०४०) चौ० भयो प्रकाश कतहु तम नाहीं॥ ज्ञान उदय जिमि
संशय जाहीं॥४॥ तहां श्री राम चन्द्र के बाण करिके महा प्रकाश होत भयो
राक्षसन की माया कर अन्धकार अरु सहज रात्री कर अन्धकार सो सब मि-
टि गयो जैसे ज्ञान के उदय सन्ते सम्पूर्ण संशय नास ह्वै जातेहैं ज्ञान कहो
आत्मा विषे निश्चै बुद्धि विशेष अरु संशय जेहैं ते अनात्मा जो है शरीर
त्यहि के धर्म हैं संशय कहो सदसद् विषे संकल्प बार बार उठा करैहैं ते
तहां शरीर को कर्तव्य मे दुइ भेद हैं एक वैराग्य मय संशय है अरु एक परमे-
श्वर प्राप्ति हेतु संशय है तहां जब याको आत्मज्ञान भयो ज्ञान को प्रकाश भयो
अज्ञान अन्धकार नाश भयो तब वैराग्य जनितजेसंशय बाह्यान्तर मे रहो सो नाश
को प्राप्त भई है परमेश्वर के प्राप्ति को संशय है चतुष्टय अन्तः करण की वृत्ति बाह्य
इन्द्रिन कै वृत्ति संसार ते उलटि परमेश्वर विषे प्राप्ति भई जाए जैसे श्रीरामचन्द्र के बाण

श्रीसीतारामजी

शान्तं) यथा) राजु सुनाइ दीन्ह बनवासू इत्यादि) पुनः नारद जो मग भागि कीन्ह लीला

भै हरिखेला ॥१॥ शाश्वत यथा निरंतर) जो तिहुँ काल एकरस अहही ॥अप्रमेयं॥

(यथ) आदि अन्त कोउ जासु न पावा मति अनुमान निगम अस गावा ॥अनघं॥

(यथ) कर्म शुभाशुभ तुम्हहि न बाधा) अनघ अनेक एक करुनामै) पुनः कर्म

असुर मारि थापै सुरन्ह) इत्यादि) वं) सो मनन करना चाहिए) [illegible]॥ निर्वाण॥

शान्तिप्रदं) यथा अबश नाथ सुरन्ह दुख पावा नाना तनु // असुर मारि थापहिं सुरन्ह //

(पुनः) ब्रह्मा शंभु फणीन्द्र सेव्यमनिशं) यथा) शारद शेष महेश विधि आगम निगम

(इत्यादि) पुनः) वेदान्त वेद्यं) यथा) ज्ञान अगम्य जय रघुराई ॥पुनः ज्ञान नयन निरखत

(इत्यादि) पुनः // विभुं) प्रभु समरथ कौशलपुर राजा (इत्यादि) रामाख्यं (यथा)

वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं (जगदीश्वरं) यथा लै नररूप चराचर

ईशा (पुनः) राम स्वाइ वी राम बहिं के (सुरगुरुं) जगत गुरुं च शाश्वतं ॥पुनः तुम्ह निगम

नगर इत्यादि [illegible] वयहु को गरुसवो पारिहु (माया मानुष्य हरिं) कृपासिंधु मानुष

तनु धारी (पुनः इच्छा मैं नर भेष सवारे होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे इत्यादि //

(पुनः) करुणाकरं यथा। करुणासिंधु करुणा कारि रामनमामि सदा (रघुवर) यथा

रघुकुलमणि दशरथ के जाये (पुनः) रघुकुलमणि मम स्वामि सोई कहि शिव नायउ

(इत्यादि) भुपालचूड़ामणिं (यथा) भूपमौलिमणि मंडन धरणी (पुनः) भूमि सप्त सागर

सुमेरवला ये कभु परश्चपति कौशिलार

शब्द

पुनः हरिं तहां हरि शब्द अनेक हरि सब्द का बोध होता है (यथा) हरि सिंह हरि मान

इस श्लोक में निवासी अर्थ रघुवर विशेषण दिया रघुवर में चारिउ भाइ का बोध होता है

तब भूपाल चूडामणि कहे (यथा) नृप मौलिमणि मनुज धरेउ देह भेष इत्यादि)

इससे श्रीरामचन्द्र का बन्दना पाया जाता है (यथा) जेह स्वामि सेवक लघु भाइ इत्यादि

नान्या स्पृहा रघुपते हृदये स्मदीये सत्यं वदामि च भवान खिलान्तरात्मा

नान्या स्पृहा (यथा) अर्थ न धर्म न काम रुचि गति इत्यादि (पुनश्च विनय

पांडुना समालेसु गति सम्पति वादु रीधि सीधि विपुल वडाइ इत्यादि)

(पुनः) सत्य वदामि // यथा सत्य कहु लिखि कागज कोर

(भवान खिलान्तरात्मा) यथा अन्तरजामी प्रभु सब जाना इत्यादि

मुख्य (नान्य स्पृहा, कोव कोइ इच्छा नहीं है, सत्यं वदामि) पुनः अखिला

न्तरात्मा कहा इस प्रकार अपने को भक्ति का अधिकार पुरा कर तब भक्ति माग ले है

क्योंकि जो और कछु नहीं चाहता उसी को भक्ति मिलती है) यथा बहुत कीन्ह

सिया तब साक्षमु नहीं कछु कवट लेन्ह - बिदा कीन्ह करुनायतन भक्ति

विमल बर देह इत्यादि

१५/२ श्रीसीतारामजी

महाकारण(५) तत्वको है। कौन(५) तत्व ब्रह्म वो जीव वो माया विद्या तहां जो
ब्रह्म जीव विद्या माया शरीर में है सो शरीर लेकर ४ चार हुये और पांचवां कौन है चाह
चाह स्वसुख की चाह होय, तत सुख की चाह हो (इति) ५॥ (श्रीसीतारामजी) १५/
पुनः कैवल्य ४ तत्व को है अर्थात शरीर की चाह निकल गया तब रहा ३ तत्व
ब्रह्म जीव विद्या माया ३ रहे जब जीव विद्या माया श्रीमहारानीजी ने जो जीव का अनुगामी
है हुक्म माया के कार्य करती है उसको कैवल्य कहते हैं ॥इति॥ २॥ पुनः महाकैवल्य
(२) तत्व का है तहां ऐसा तत्व कौन है खाली शुद्ध स्वरूप जीव स्वासा इत्यादिक
सं रहित क्यों कि स्वांसा तो शरीर सम्बन्धी है इससे रहित है जीव भाग कहते हैं [illegible]
देह कोई सम्बन्ध नहीं है ताते इसको महाकैवल्य कहते हैं सो इस दरजा को श्री
महाराज मिथिलाधिराज प्राप्त भये हैं॥ [illegible]

॥ पुनः देह बुद्धि जीव बुद्धि और आत्मा बुद्धि को कहते हैं॥

तहां देह बुद्धि किसको कहते स्थूल शरीर को क्योंकि जो दश इन्द्रीन विकार है
विषय से भरा हुवा जिससे दशों ~~[illegible]~~ इन्द्रियां विषय के वास्ते आपनो आपको
तरफ खींचता नी किया करती हैं सो जब बैखरी वाणी से राम २ का जाप हुवा तब
(१)
इन्द्रियों का विषय दूर हुवा तब शुद्ध जीव हुवा ॥इति बैखरी का दरजा १
पुनः पैसन्ती वाणी का काम है कहते हैं जो जब शुद्ध जीव हुवा तब पैसन्ती वाणी
मेरमा अर्थात स्थिर हुवा उसको रम शब्द कहते हैं सो स्वांसा में रमा शुद्ध
स्वरूप से तब हृदय से पैसन्ती वाणी स्वांस और के नाम को उच्चारन किया
तहां जब स्वांस के साथ उच्चार किया तब स्वांसा और जीव दोनों एकाकार
हुये॥ इति पैसन्ती वाणी का दरजा।

पुनः मोचिमा वंतो को कंठ में बासदे तहां मोचिमा कारके कंठ से शब्द ऊंडा

क्योकि (रा मा) कंठ से शब्द ऊंडा वो मोचिमा है जब कंठ से नाम उच्चारन किया

तहां नाभोपर अष्ट दल कमल है और अष्ट दल कमल पर ब्रह्मा जो जीवों का स्थान है

तहां पर पेकगाट हूये तब प्रवति रूप से स्वांसां ये सावन नामें उच्चारन किया

~~[illegible]~~ प्रवृत्ति माने जीव का उत्पति पर वानी कहते है उसी वानी से उच्चारन

~~[illegible]~~ स शब्द करते हुये ब्रह्मांड मे पहुचा (दुरा शब्द) ओर मा शब्द लेकर अर्थात

~~[illegible]~~ कहते हुई बोट ~~अर~~ और बोवानी तहां माया शिव का करके

मोतमे है सो दूर हुवा ~~[illegible]~~ जो तम कारके जोहा छिपो रहो सो तम हटा तब

जोहा खुले जो जो हो चनाके छोटो ओतर है कंठमे सा उचरो तब

उस जोहा कारके (स) मा को उच्चार हुवा (पका) जोह नाम जपि जागे योगी

विरति विरंचि परपंच वियोगी इत्यादि तो रा मा का शब्द नाभोपर आया

और नाभीसे उठा तो ब्रह्मांड को गया तब तिनो पेकगाट हुये कोन पेक

नाम हूये तो त्रय अजीव स्वांस इति ३ // तब (इस) जीव कोसा ब्रह्म हुवा

इस जीव के सल नेमें ब्रह्म देखता है सो जीव स्वांस करके राम नाम उच्चारन

करतो है कोन से जब इस रीति से बना तो उसको ररं शब्द कहते है तहां

रमु जपु रर तिनि हू सिद्धि हुवा तहां जब तिनिऊ सिद्धि हूये तब यह

दरजा आया // पका नाम जोह जपि जागे जोगी // बिरति बिरंचि

प्रपंच वियोगी // इति तिन प्रकार का जाप कहा है

[illegible]

श्रीसीतारामजी

स्थूलशरीर २४ तत्वको है सो वो जाग्रत अवस्था कहाती है उसके भोक्ता विस्वदेव भगवान कहाते हैं सो श्री भरतजी है और जाग्रत अवस्था श्री मांडवीजी है तहां बिना मांडवीजी की सेवा किये श्री भरतजी नहीं प्राप्त होते है अर्थ की क्रिया बार्ता है बिना बार्ता किये अर्थ की प्राप्ती नहीं है तथा बिना मांडवीजी के सेवन किये श्री भरतजी का प्राप्ती नहीं है (१)

पुनः सुक्ष्म शरीर १७ तत्वको है कर्म भोगन हारे है वो ह शरीर छुटता नहीं है जम यातनामई है तहां कामै की क्रिया दंड है बिना दंड के काम नहीं निकला है सो सत्रुहनजी है (यथा) जाके सुमिरन ते रिपु नाशा नाम सत्रुहन बेद प्रकाशा इत्यादि तहां ताके विभु तैजस है भोक्ता श्री सत्रुहनजी है तिसकी क्रिया श्रुतिकीर्तिजी है शांत शोक समन करने वाली तहां बिना श्रुतिकीर्ति की शरणागती भये दंड नहीं शांत होता है वो स्वपन अवस्था कहाती है (२)

पुनः कारण शरीर २ तत्वको है अविद्या माया मय है दुख है दुखरूप है भव कूप मे डालती है तहां तिस बन्धन काटने के लिये वैराग्य धर्म है सो श्री लक्ष्मणजी है ताकी क्रिया उर्मिलाजी है बिना उर्मिलाजी की शरणागति भये श्री लक्ष्मणजी का मिलना दुर है तहां क्रितिका कुल त्याग कर श्री राम जानकीजी को प्राप्त होने की इच्छा किया तब कर्म से विरागी भया तब राम मिलन की इच्छा किया तब कारणरूप कर्म बन्धन से छुटता भया तब कारण शरीर भस्म भयो - तब कर्म बन्धन से निरमुक्त भयो। तब स्वतंत्र होकर सुख पूर्वक सोता है तिसे सुषुप्ति कहती है - तहां तिस अवस्था भोक्ता प्राज्ञ भगवान कहाते हैं (यथा) राम मिलन बिरहानल छावे तब कारण शरीर जरि जावे होइ महाकारण रस रूपा जीव भाव निज सहज स्वरूपा इत्यादि ===

[illegible]

खबर कर दो रघुनन्दन को खेड़ा है दर पर दर्शन को।
लख चौरासी रूप धारि नाना कष्ट उठाए- जनम मरण के ही
दुखी गिरे चरणों में आप बुलाए हुए हैं गरीबन का खेड़ा है-
खेल तमाशों में सदा दौड़ दौड़ मन जाए- भजन समय टला लगै
बुद्धि भ्रष्ट हो जाए कहाँ तक रोवें कर्मन को - खेड़ा है -
यद्यपि आपने ही दिया नाम रूप गुण धाम - किन्तु एक भी काम
किया ना ऐसा है ले नाम कहूँ क्या लेकर इस धन को - खेड़ा है
नैया पापों से भरी डूब रही मँझधार - कुछ डूबी डूबन
चाहे एक तुम्हीं आधार पुकारे राधेश्याम जन को
खेड़ा है ~~[illegible]~~ दर पर दर्शन को - खबर कर दो रघुनन्दन को।

श्रीसीतारामजी

श्रीसीतारामरसिकाचार्येभ्यो नमः अथ लिख्यते श्रीसीताराम युगल नाम -
रूप लीला गुन धाम सर्वोपरपर तत्व अनन्य भक्ति भावना उपासना रस भेद सर्वो
पर वेदसार सिध्यांत मत सीताराम अनन्य रसिकजनन को सार सिध्यांत भावना सनकमाने
अष्टयाम श्री सतगुरु जिग्यासु को उपदेश है दास्य साख्य सम्बन्ध नाम करन जन्म पत्रि को
है जिग्यासु प्रथम श्रीसीताराम नाम गुन लीला धाम की परत्व सतग्रंथन को रसिकजन अनन्य
संतजनन को संग करि सुनि समुझि सर्वोपरि सार सिध्यांत मत भक्ति भावना में दृढ़ होना
सजाती संत अनन्य उपासकन को संग करना विशेष पुनः विजातीयों को संग त्याग करना इति
तहां अस्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण कैवल्य महाकैवल्य ये षट् शरीर
को आभवाना मानना तहां तीनि अस्थूल सूक्ष्म कारण इनि तीन शरीर
को अविद्या माया मई महा मलीन विषय वासना कर्म बन्धन त्रिगुन
मई जिनमें बंधे है नाना योनि जन्म मरन को कारन मूल है तहां अस्थूल
२५ पच्चीस तत्त्व को है पांच भूत पृथ्वी अकाश वायु अग्नि जल औ
पांच विषय रूप रस गंध स्पर्श शब्द औ पंच प्रान - प्रान
अपान समान व्यान उदान औ चारि अन्तःकरण मन बुद्धि चित्त
अहंकार इति पुनः षट विकार काम क्रोध लोभ मोह मान मत्सर
ये सब मिलि पंच्चीस तत्त्व को अस्थूल शरीर है औ सूक्ष्म १७
तत्त्व को है १० इन्द्रिनि मन बुद्धि पंच विषय इति सत्रह तत्त्व है
इति सूक्ष्म = ताको शरीर कारण शरीर १० इन्द्री ये का मन अहं औ
ग्यारह तत्त्व को कारण शरीर विषय वासना महा त्रिगुनमई कर्म

श्री सीताराम रसिका धिजाय नमः। अथ लिख्यते सीताराम युगल नामरूप लीलाधाम गुन सर्वो पर तत्व. अनन्य भक्ति भावना उपासना रसभेद सर्वोपर वेदसार सिध्धान्त मत सीताराम अनन्य रसिकजननको सार सिध्यान्त भावना सतक श्री सतगुरु जिग्यासू को उपदेस हास्य सख्य सम्बन्ध नामक रनजन्म पत्रिका है जिग्यासू प्रथम सीताराम नाम रूपलीला गुनधाम को परत्व सतमन्थन को रसिकजन अनन्य सन्तजनन को सङ्ग करि सुनि समुझि सर्वो पर सार सिध्यान्त मतभक्ति भावना में दृढ़होना सजाती संत अनन्य - उपासकनको संगकरना विसेषि विजाती को संग कभी न करना अस्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण कैवल्य महाकैवल्य पे छसरीर को आपनो न मानना तीनि अस्थूल सूक्ष्म कारनसे तीनि सरीर अविद्या माया में महा मलिन विषै बासना कर्म बन्धन त्रिगुन मई रजुमेबंधे है नाना योनि जन्मन को कारन मूलहै अस्थूल पचीस तत्वको है पंचभूत पृथवी १ आकास २ वायु ३ अग्नि ४ जल पंचविषय सब्द १ रूप २ रस ३ असगन्ध ४ अस्पास ५ पंचप्रान - प्रान १ अपान २ समान ३ व्यान ४ उदान पे चारि अंतः करन मन १ बुद्धि २ चित्त ३ हंकार ४ खटविकार काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४.

मान ५ मत्सर ६ ये सब मिलि पंचवी ससतत्व को अस्थूल सरीर, सूक्ष्म दस इन्द्री

१० मन १ बुद्धि १ पंचविषै ये सत्रहि तत्वको सूक्ष्मसरीर ताको सरीरी कारन है

सरीर दसइन्द्री १० एक मन असवैं अग्यारहि तत्वको कारन सरीर विषै वासना

भई त्रिगुन भई कर्म भ्रमजाल में फंसा जन्मनको कारन मूल एतीनि सरीर कारन

सरीर को सरीरी महांकारन सरीर अविद्या माया ते मुक्त त्रिगुन मड्लकपरे विषै

वासना ते मुक्त सुद्ध सतोगुन भई कर्म कारनहारो विद्या माया भई सरीर मुमुक्ष मुक्ति

कांक्षी भौ क्रम क्रम मोक्ष होइगो त्रिगुन ते विरागी महांकारण सरीर अविद्या ते

मुक्त विद्या के आधीन परम वैराग्य रूपसो महा कारन सरीको सरी विद्या माया

ते मुक्त मूल प्रकृति में सरीर दिव्य साध्यो मुक्त महान भई दिव्य

दृष्टि सत असत को ज्ञान होगे ब्रह्म जीव मे अभेद दृष्टि ग्यानी

अभिमानी भक्ति ते विमुख कैवल्य मोक्ष सुख भोगी महां जोगी

राज ग्यान रूप कैवल्य सरीर है सो भक्ति विमुख जानि माया महानदी

ताको मोहिलेती है पुनि संसार सागर में बोरि देती है ताको

प्रमान जे ग्यान मान विमत्त भवभयहरनि भक्ति न आदरी ते पाइ सुर

दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी यहसाम वेद श्री राजेन्द्र राघ

वेन्द्र जी के पास आय रिग वेद स्तुति में कहा है मतं

ग्यानी कै सुर दुर्लभ पद कैवल्य मोक्षसुख भोगी कैवल्य शरीर पाय सुख
भोग करि भक्तिते विमुख ग्यानाभिमानी संसार मे पुनि आवते है पाय
बद्ध पाय मोक्ष होते हैं कैवल्य शरीर कैवल्य मोक्ष सुख भोगी है तोते
एहू शरीर में जब वैराग्य होइ आपनो न मानै ताको प्रमान श्रीमुख वचन
श्री राघवेन्द्र जी के लखनलाल प्रतिकहे तात सो परम विरागी तिनसम सिद्धि
तीनि गुन त्यागी, तीनि गुन त्यागी सिद्धि कहे त्रिगुण के परे मूल प्रकृति
विस्तार शून्य सिंधु के उपर सुरदुर्लभ कैवल्य पद मोक्ष परा प्रकृति मैं
लोक लोकेसनके समीप को प्राप्त होते है ते कैवल्य मोक्षाधिकारी
कहावते हैं तेऊ पतित होतेते बद्ध मोक्ष सो होते रहते हैं ताहू में
वैराग्य करि कैवल्य सरीको त्याग छठो सरीर महाकैवल्य सरीर को पाय
शुद्ध सच्चिदानन्द मय देह महानिग्यान स्वरूप महानि जो रासो ब्रह्म सुखभोगी
जाको अगुन सगुन ब्रह्म वेद कहते है अकल अनीह अज अद्वैत व्याप्य
व्यापक निर्गुन सगुन जाको नाइ तिकहि वेद से महेस गणेश गावते ध्यावते हैं
निर्गुन के भीतर सगुन बहुरूप महानारायनादि कृष्णादि सगुनब्रह्मन के
बहुरूप है निगुन ब्रह्म के भीतर जाको सनकादिक ध्यावते हैं
ब्रह्मसुख सिन्धु में बूड़े मगन रहते हैं सो महा कैवल्य शरीर कहावै
है छठो ब्रह्मसुख भोगी सच्चिदानन्द मै देह मायारहित ब्रह्मानंद सुख
भोगी संजोग वियोगते रहित सदा एकरस सोऊ सरीर महा

प्रधान माय मैं पुरुष है ताहू मे जव वैराग्य होवै ताव सीताराम नामरूप

सीलाधाम गुन मे होवे महा प्रधान मायामई महा चैतन्य है मय

विग्यान धाम रूप मे वैराग्य होवै तव सीता रामजी मिलने को विरहाग्नि

की ज्वाला उठै तबद्रवी सरीर जो गैजावे तबसीता राम को परम सुखी ज्ञान

अनपारनी भक्ति मे निजरूप जीव आपनो सतमा स्वरूप तुरीय को

पाय अचल भक्ति को पाय सीताराम समीप निरन्तर परम उत्तम

परम शरीर परम प्रीपते पुये गोप्यहू ते गोप्य रसमई विर्जा

नामको सरित जाको दशकोटि जोजनको पाट महा उज्जल

जल सीताराम सरीर ऐसा सेरवरूप द्रवजल ताको उतीर पार होवै

तव महा माया छूटे तव स्वयम महा प्रकाशी श्री सीता की सन्मुख

महा परमा नन्दरूपिनी ताको महा ऐस्वर्ज विभौ मईधाम सीताराम

स्वयमधामको प्राप्त होवे जव ब्रम्हानन्द सुखको तुच्छ करि त्यागै तव

सीताराम रूपमे महानुराग आवै तव निज रूपको पावै ताको

प्रमाण भी है श्री मन महाराज मिथिलेश के वचन (जथा)

इनहि बिलोकत अति अनुरागा - बरबस ब्रम्ह सुखहि मन त्यागा

पुनि सनकादिकन की दसा ऐसी होती भई (यथा)

मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी । भये मगन मन सके न रोकी ।

पुनि दसों अवतार परशुराम जी की दसा क्या हुआ देखे (यथा)

रामहि चितै रहे थकि लोचन । रूप अपार मार मद मोचन ।

पुनि महा बृष्णु इत्यादिक की दशा ऐसी हुई कि । हरि हित सहित

सहित राम जब जोहे । रमा समेत रमापति मोहे । पुनि भरत जी प्रति

वचन है (यथा) रमा बिलासु राम अनुरागी - तजत वमन इव

जन बड़ भागी श्री जनक जी महाराज पूरी अभिमान न रहित रहे

ताते बिदेह कहावते रहे पै बिशेष बिदेह नहीं रहे एक यही लिये रहे कहते

कि महा कैवल्य यही जो न होता तव ब्रह्म सुख को भोग को करता

जब श्री राघवेन्द्र ब्रेशा रामचन्द्र जी को देखते भये अति मधुर मूरति

तव ब्रह्म सुखभोगी औ महा बिग्यान मई महा कैवल्य देह ताको

त्याग होइ जाता भया तव बरबस बिदेह भये (यथा) मूरति मधुर -

मनोहर देखी - भये बिदेह बिदेह बिसेखी सो जोग बैराग्य ग्यान बिग्यान

बिग्यान कहीं बिशेष ग्यान जो आत्मा आपनो रूप परमात्मा जो ब्रम्ह ता

रूप प्रथक देखना ब्रह्म संघाती जीव सो बिग्यान कहावै है

ताके परे प्रधान रूप भक्ति महारानी को रूप है ताके प्राप्ति भये
जोग बैराग ग्यान महां बिज्ञान सब तुच्छ होइ जाते हैं श्री सम्मन
को सम त्याग कौ भक्ति महारानी की सरन होते हैं तब निज
स्वरूप जीव को भक्ति महारानी देती हैं तुरीया रूप महा माया ते
मुक्त नित्य अखण्ड अनन्त शक्ति धाम रूपी ब्रह्मांजस विहार
लीला तहा तस रूप इच्छानुसार सो नित्य मुक्त परमानन्द रूप
वेन जीव निज रूप स्वट सरीर को सरीरी सक्षम सरीर ज्ञाना
है जिग्यासु अपने रूपको पहिचानो सतगुरुन सो संग करि महां
माया भ्रमजाल मृगछी मृग वारि सम जानि कै त्यागौ विरजा सरि
येही पार महां माया को विभव विस्तार है महा माया की
आठ महा प्रकृति सखी हैं अंसजा हैं ते अनन्त कोटि ब्रह्माण्डन
को कारण महां विराटादिक रूप व्हाइ समस्त अवतार लेके
लोकन को रचती हैं तहां जौने रूप नामको भजन करते हैं
जीव ते तौने निज प्रभुनके लोकन में बसत हैं बैकुण्ठ पर
बैकुण्ठ महां बैकुण्ठ गोलोक पर गोलोक ब्रह्म लोक आदि
बैष्णु महा बैष्णु श्री मन महां लक्ष्मी नारायण के लोक
मत्स्य नृसिंहादिक सब तारन के लोक सदा शिवन के
लोक कैलास पर कैलास महां कैलासादिकन के लोक परम
प्रकाश महां ते जो चौरासी निर्गुन ब्रह्म के पेट के भीतर
सब भरे हैं अनन्त कोटि सगुन ब्रह्म के रूप जब ब्रह्म ज्ञानी
होती है तब ओई सगुन ब्रह्म बोलते हैं वोई पृथवी
भूमि मे अवतार भू भार हरते हैं सन्त सुर गौ ब्राह्मनन की
रक्षा देव असुर राक्षसन को वध करते हैं वेद मर्याद धर्म
अस्थापन करते हैं नाना चरित्र लीला करते हैं सोलीला

गुनशाप नाम जापे रूपध्य जीवजाल त्रिगुण मद्र अविद्या माया ते मुक्त होते हैं ते मुमुक्षु कम मुक्त कैवल्य मुक्त महा कैवल्य पद मोक्षको प्राप्त होते हैं ते सब अवतार कार्य रूप कहावते हैं सो अपने अपने लोकन में कार्य की बसेक हैं ते प्रभुके विभव रूप कहावते हैं ताही श्री मन महाराज के समीप सर्व अवतार विष्णु नारायण कृष्णादि सब अवतार आवत भये सो दैन के वास्ते पैमन महाराज उनको बाहू को नमस्कार सी त बोल भये बाबा मानन क्या कहे सोहोत नभये कहते हैं इन सब महाप्रधान माया मई लोकन में बसते माया विभूति सुख भोगी हैं उनलोगन को ऐस्वर्य रमाविलास विभूति कहावै है स्वर सरी धारी जीवबसते हैं सदसरी धारी वैल के रूप हैं एकसब जीवन ब्रह्म महासिन्धुसम व्यापीत पीरबा है वामे भीतर सगुन ब्रह्म सदा माया महाजोव तीनों कोटी बसते हैं एकते एक अधिक जैसे सिन्धुके भीतर नाना रत्न भी हैं एकते एक अधिक मोल के रत्न जेनु बसते है एकते एक बड़ी कामा बदले ते सिन्धुसे जन्म मान होते रहते हैं ते जीव माया हैं रत्न रूप सगुन ब्रह्म है उनको जन्म मान नहीं प्राप्त होत है गुप्त प्रगट होत रहते हैं कभी भीतर कभी वाहर अवतीर्ण होते हैं यही प्रकार ब्रह्म जीव महा माया को विस्तार विभव वैजर्य नाम की सरित के यहि पार हैं तहाँ के लोकन मे बद्ध मुक्त जीव बसते हैं विरजा सरित के पार भय जीव येहि पार कभी नहीं आवते

१।५।१८

३०

ते मिल स्वयम मुक्त नीच कहावते हैं बीर्जा सहित यमना को पहुंचाए रहती है दसकोटि योजन के पार तादे मध्य हृदय मे स्वयम सीता राम धाम गोलोक देस है तामे सखा बसते हैं तहा सीताराम चरण नख चिन्हन ते उपजे महा स्वयमे चौदंह हरि हरादि सेश महेश गणेशादि रवि शशि अग्नि इन्द्रादि देव गण स्वयम लक्ष्मी नारायनादि मत्स्य कच्छादि नृसिंह वामनादि माधव समस्त भगवान महा स्वयम गया द्वेबाल्दि सबके कारण बीर्ज रूप सब सामीत सहित बसते हैं सीताराम जू सबके स्वामी प्रभुन के प्रभु हैं तिनकी सेवा सुमिरन सब करते हैं तिनमे राधा कृष्ण सीता राम के अति समीपी हैं रूपमे अद्भ माधुर्यता मिल ती है श्री वृन्दा वन विहारी राधा कृष्ण गोपिन ते सहित रासलीला करते हैं स्वयम गोलोकमें वृन्दावन जमुना की पुलीन मे विहार नित्य करते हैं सीता राम ध्याय सीस और कार्य करते हैं मध मांध्यो रास अधिकार दीनगा है सो स्वं गो लोक के मध्य वरन के मध्य हृदय महां स्वयं प्रकाश मय साकेत पुर है पड़ओ चका कार कोट पड़ओ पा दरवाजे द्वार पाल सखा वीर सब बसते हैं तहां सीताराम अनन्य उपासक सन्त जन बसते तामे प्रीते सखा वाते है प्रमोद वन कमला मायके मध्य हृदयमे जुगुल निज धाम परम गोप्य ते गोप्य पृथइ ते परम प्रियतम सर्व धामन के अधिपति सब को कारन बीर्ज स्वयं प्रकाश मय धाम श्री मिथिला

श्री अवध सीताराम नित्य विहार भूमि है यहां सोने माणिक हेम रत्न रचित चित्र विचित्र भूमि स्वयं दिव्य रचनामय चोर चहुओर दरवाजे द्वार द्वार पात सुर सचिव सेनाधिपतीन के महलप्रवासीन के महल साहु महाजनन के महल चौहट बजार अनेक वाजिराज साले रघु वंसी तिमि कोसीनन के महल श्री महाराज चीज महा चक्र चूड़ा मनि महा नरेन्द्र तारा नागेन्द्र महां सुर मोद्र महा चीधी हरी हरेन्द्र महांन नारायनेन्द्र वंदित पदाम्बुज श्री मन महाराज परमा नंद रूप नीव्य रंग: महारानीन पुत्रन पुत्रिन पुन वधुन सहित विराज मान श्री लाल मिथिलेस श्री जनक राज सिरधुजी श्री अवध मे श्री महाराज दशरथ जी कौशल्यादि सुनयनादि रानीन सहित मिथिला अवध में अभेद सर्यू कमला सी प्रमोद वन अन्त पूर्व दीसी मिथिला पच्छिम दीसी अवध नित्य विहार सीताराम को दोऊ में पल भी विलग नही पंच भाव के रसकन के सुख हेत लीला पांचो रस के करते है मिथिला अवधे वासीन को परमा नन्द सिन्धु मे बोर रहते हैं सदा नित्य विहारी सीता राम जी महा माधुर्य मई लीला चीत्र करते हैं गुप्त प्रगट लीला दुहु को स्थान जहा जौन लीला को स्थान तौन तहा नित्य करते हैं मर्म का कोई नहीं पावै जे जौने लीला के अधीकारी हैं ते तौनै देखते

जहां सुख सीन्धु में बूड़े रहते हैं पांचो रस के चलन बसते
हैं सो जानना है जिग्यासु शिष्य गोप्य लीला श्री सोता।
राम महल मिथिला अवध के मध्य हृदय में है युगल
धाम मे जुगल महल ताको विस्तार शेश संहिता
सीव संहिन में लीख मीलता है अनन्त (अर्बुद परार्द्ध)
पद्म कोटिन जोजन अपरमित कोउ इति नही-कोई सके
सोम वेद शीवादी ही हारि के सप्रीत मे इतना लीख मिलता है
- इति नहीं तहां महल के भीतर अनन्त महल सब रानीन के सीता
जी स्वामिनी सबों पर तीन की सखिन सहेलिन सहचारीन
- अलिन मंजरिन के महल असंख्य कोटि परिकर नीमि राजा किशो
सब श्री राम लाल की पाल्ही सब श्री जानकी जीव
लघु भागिनी सागी सहोदरि तीन के महल आठो पटरानिन के
महल के मध्य हृदय में श्री महां मुख्य सबों पर नवों महां
छवि सागरी सुख सागरी महां गुन सागर महां नट नागरी
श्रृंगार रस सागर श्री सीता राम जी को महल विचित्र
रचना महा चीन्ता मनी मय दिव्य विभौ भोग सौख्य जौ
की सखिन की खीभूती रचना महा रिद्धि सीद्धिन की
रचना महा स्वयम सरयू हृदय मध्य अशोक वन का सोम
वार पूर्ण शशि सम पत्र सुधा वरसत कल्प लतन की
कुंजनी कुन्ज सरयू पुलीन मे तहाँ महांरास कुंज अनन्त कोटि
जोजन विस्तार तहा असंख्य परार्द्ध कोटिन सखिन सहित
महां रास मंगल महारस सागर नित्य निरंतर होता रहता
है तहां पुरुष एक श्री रासेश्वर महाराज विहारी लाल

रूप श्रीराम रसिक मनि राज कुमार श्री सीता मुख चन्द्र चकोर
नैन मन प्रान जीय जीवन सीता छवि रस रसिक राज मनि
एक पुरुष पुरान द्वितीय पुरुषन को तहां अधिकार नहीं सो गोप्य
लीला कहावै है हे जिग्यासु शीष्य जे सखी भाव के उपासक
रसिक सन्त जन श्री सीता राम जी के शरणागत चरण सेवी
तिनको वास तहां होता है श्री सीता जी के करुना कटाक्षन
को सो भावना गोप्य लीला यह मुख्य है सब लीलन का
कारन बीज रूप रास बिहारी जुगल रूप छवि सागर रस सागर
बिहारी सीता राम जी को शरण होना हे जिग्यासु शीष्य अन-
न्य रसिक जन को सार सिद्धान्त मत सर्वोपर यहै है सो
हे जिग्यासु शीष्य तुमको सतगुरु उपदेश देत है कि सीता
राम जुगल नाम के अन्शान्श ते असंख्य कोटि निर्गुन सगुन
ब्रह्म नाम उत्पन्न होते है जुगल सीता राम रूप के अन्श कला
कलान्श ते असंख्य कोटि ब्रह्म के रूप उत्पन्न होते है
सीता राम लीला गुन के अन्स कलान्स ते ब्रह्म के असंख्य
कोटि लीला गुन उत्पन्न होते है सीता राम जुगल निज धाम
श्री मीथिला श्री अवध के कला कलान्स ते असंख्य कोटि
ब्रह्म के धाम ब्रह्म धाम विराट महांपर लोक वैकुण्ठ पर वैकुण्ठ
महा वैकुण्ठ गोलोक पर गोलोक महा गोलोक असंख्य कोटि
धाम उत्पन्न होते है हे सिष्य ताको प्रमाण वेद संहिता
ब्रह्म संहिता महा विष्णु संहिता महा शीव संहिता महा शेष
संहिता महा नारायण संहिता वशीष्ठ संहिता अगस्त संहिता
बालमीक संहिता जाग वल्क संहिता भरद्वाज संहिता अत्री
संहिता सनत कुमार संहिता श्री सुकदेव संहिता नारद संहिता

श्री तुलसी दास गोसाईं संहिता सबको सार सिद्धान्त श्री-
मद् रामायण भाषा काव्य सेवी पर मुकुर मानी रामो उपासि
कन को जीवन धन ताको प्रमान विशेष श्री वशिष्ट संहिता
सीता राम नाम रूपंच लीला धाम परात परं ये तत्व तुष्ट
यम् नित्यं परमा नन्द विहं १ श्री ब्रह्म संहिता अयोध्या
मिथिला नित्या परमा नन्द रूपिनी जस्यां सोस गोलोक बैकु-
ण्ठादि प्रातिष्ठित: अगस्त्य संहितं अजोध्यांच परं ब्रह्म सरयू सगुन
उपमानतं निवासी जगन्नाथ सत्यं सत्यं नमाम्य हं ३ [illegible] म-
संहिता सीता राम मधुर्जुगुल रूपं परतमोतमं अजोध्यां
मिथिलांत्पन्य पाद मेके नगक्षति ४ वीमा सी चतुर्दिस्यां
मध्ये धाम परात्परम् स्वयं गोलोक हृदय में साकेत पुर मणितम
५ साकेत पुर स्वयं धाम सप्त वान मध्य में प्रमोद वन हृदय में
अजोध्या मिथिला पुरी ६ सीतायां नेत्रजा कमला सीतां मं
चतुंर्दिसां कमला हृद्यां मध्ये पुरी मिथिलां परात्परं श्री राम
दूतांन्ता नी राजा सीतास्वरा चतुर्दिस्यां हृद्यां मध्य पुरी अजोध्यां
माण्डुलम् गोप्य गोप्यतमं नित्यं परमं प्रियतमोत्तमं सीता
राम जुगुल धाम सर्व धामादीपं परम् ८ अजोध्यां मिथिलां
मध्ये हृदयेंच परमा मतं सीता राम महल जुगुलं गोप्य गोप्यत
मं प्रियं ९ गोप्य लीलास्थलं नित्यं रस श्रृंगार सागरं
अनन्त कोटि सखियां मध्ये सीता राम विराजितं १० महां
नटवर वनमाली नागरं छवि सागरं ११ महा रास रसो ल्लासैन
त्यागान कमलाम्बर: काम क्रीडा कला केलि महा रास रसो
सवे १२ अनन्त सखिनांमध्ये रास क्रीडा महारस: सीताराम
मधुलीला रसिकन प्रान जीवनम् १३ चतुर्पीकर सखी नांच
भिन्न भिन्नांच कोटिक: महा रास रसोल्लासी सखीनांच अनन्त
प:

१४ आदित कोरी सरवी सीता स्वागेज्ञा गनमालमजी सौदीत कोरी सरवी
सीतांविक जो चलामुजाम १५ जीव कोरी सरवी सीता तोसा वादी
[illegible] साजे माधर कोरी साव्हीं हीता पदामुजनल वाल जाम

जगत कार्य अर्थ ॐकार हुवा और रंकार श्रीरामजी के रूपका नाम है - और जिसको ब्रह्म कहते हैं और श्रीरामचन्द्र जी के नखरों के नखका तेज है ऐसा तेज है की निर्गुण कुछ कारे नहीं है और जीव का संघाती है अरूप है जीव के कर्मों का साक्षी है की जीव क्या काम करता है सो देखता रहता है तथा रंकार तो ब्रह्म दोनों स्वतः है परन्तु रंकार गुण में है और ब्रह्म निर्गुण है गुणों से रहित हैं अलख अज नाम नहीं है तहं निर्गुण इससे कहा की रूप होता तो नाम होता परन्तु जब रूप ही नहीं तो गुण कहां से होवै तहां निर्गुण॥ ब्रह्म जो सर्व साक्षी है सो यह गुण रंकार के प्रभाव से सर्व साक्षी गुण रंकार का दिया हैं इत्यादि॥ ॥ ॥ ॥

(२) वेद का मूल पेक ॐकार है ॐकार जो की वेद है किस रीति से तो रंकार का जो मकार है सो की ॐकार बना पुनः ॐकार मे तीन गुण दिया जातम सत इन्ही गुणों से ब्रह्मा विष्णु महेश हुवे जिस करिके जगत का कार्य परारम्भ हुवा इससे वेद का मूल ॐकार है और ॐ का मूल श्रीराम नाम है इत्यादि॥

चौ० निर्गुन ब्रह्म अलख अज जोई । भक्त प्रेम बस सगुन सो होई
अर्थ तहां निर्गुन मत वादी अयस अर्थ करते है की भक्तन के प्रेम
बस निर्गुन ब्रह्म सगुन होत है - तहां पर अर्थ करना ठीक
नहीं है क्योंकि निर्गुन ब्रह्म में जीव का प्रेम कैसे होगा क्योंकि
वोह ब्रह्म तो अलख है वो भजन और नाम रूप से रहित है
तो भक्तन का प्रेम होना कहां है - और जो कोई कहे की भक्त के
प्रेम बस सगुन हुवा पुनः निर्गुन हुवा तो उसमे यह शंका होता
है की जब सगुन हुवा तब रावण को घातना किया - तो निर्गुन
कैसे हो सकता है - तहां पर अथवा जान पड़ता है ब्रह्म श्री
रामजानकी जी के रूप के आधीन है और जब जीव का प्रेम अनु
राग राम रूप में हुवा तब वोह ब्रह्म श्री रामजी के हुक्म से
जगत के कार्य कारण करता हुवा इत्यादि (2)

तहां स्थूल का रूप तत्व है पुनः सूक्ष्म रूप कारण है तत्व का
महाकारण पूतत्व का है कैवल्य इस तत्व का है महा कैवल्य तत्व

श्री शिव जी ररर जाप करते है उसका कारण यह है की रकार
जो अकार है सोई शुद्ध जीव है और मकार मुक्ती को देने वाला है -
इसी कारण से श्री शिव भगवान मकार का उच्चारन नहीं करते है
कारण यह की मुक्ति नहीं चाहते है मुक्ती लेवें तो जगत का कार्य कौन
करे ? तहां रकार का अकार शुद्ध जीव है तो शुद्ध जीव होकर जब
ररर शब्द उच्चारन किया तब निर्गुण पद को प्राप्त हुवा और रकार शब्द
से जब जीव विमुख हुवा तब जो है माया नाम प्राप्त हुवा तब
प्रापंच सन्वकी का भाकारने लगा इत्यादि

पंन्च तत्व के विकार में कही छित जल पवक गगन समीर
इत्यादि करिके मनुष तन निर्मान है व्यष्टि रूप कही बना हुवा है
(पुनः) बेद प्रारा सो तहां बेद ऋग यजुर अथर्वण साम पुनः सूक्ष्म महा
कारण इत्यादि ये सब स्थूल शरीर है इन सबों का जीव आत्मा श्रीराम
नाम है रेफ रेफ का अकार मकार मकार का अकार हल अकार
इत्यादि बिना पेलो दिखा सुन नहीं बनि सक्ता इस्से राम नाम आत्मा है

तत्त्वमसी शब्द का अर्थ तहां तत कही ब्रह्म त्वं कही जीव और असि
कही माया तहां तीन कारिके तत त्वं असि तत्त्वमसी श्रुति है और
छन्दोग्य का बाक्य प्रधान है तहां तत जो ब्रह्म त्वं जो जीव और असि
जो माया इन्हीं तीन से जगत की रचना होती है और इसी को वैष्णो
लोग मानते हैं परन्तु अद्वैत मत बादी अयसा कहते है की सोहं जो
ब्रह्म है सो हम ही हैं (इति) इसपर द्वैत मत बादी कहते है की
सो शब्द सिर्फ होता तो मैं मानता सो ब्रह्म तुम ही हो परन्तु हं
शब्द जो है सो जीव वाचक है इस्से जीव ब्रह्म दोनो का होना
सिद्धि होता है कारण यह की अहंकार तो जीव ही मे होता है
ब्रह्म मे नहीं ।। इति ।। इसपर बशिष्ठ द्वैत मत बादी कहते है
द्वैत मत बादी से की तुम्हारा भी कहना नही ठीक है क्यों की सो
कही ब्रह्म है कही जीव और जो हकार शब्द मे बिन्दु है वो ही माया
है इस्से ब्रह्म जीव माया तिनो का होना सिद्धि होता है
और अनुस्वार जो माया है वो ही मुक्ति मे बाधा डालती है

(अग्निपुराणमें)

...कृशानु-भानु हिमकर... तहां इतिहास पुराणोंका विरदो...
यहां कृशानु कहते हैं तीन को और भानु कहते हैं १२ को और हिमकर
कहते हैं एक को (प्रमाण) अन्यच्चापि सकला प्रोक्ता - रामस्तु भगवान्स्वयम्
(पुनः) कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् रामचन्द्रः ... रामचन्द्रको बोधकरता है

इत्यादि

ये तिनौरूप सूक्ष्म ग्यान की संज्ञा शुद्ध रूप ॐकार में लक्षित होते हैं तहां पर
सब जो रूप सूत्र हैं उनमें लक्षित होते हैं - तहां एकार का उकार हुवा तब अ उ बना
पर बेत्ती कादिके तब उकार पीछे लौट आया ओर गुरात्र सूत्र कोर के तब उकार
भया ओर मकार के अकार का लोप हुवा मकार सब योमानि के अनुस्वार हुवा
ॐकार सिद्ध हुवा इत्यादि श्रीसीताराम जो (पुनः) भाव यह है कि राम शब्द से तो
ॐकार सिद्ध हुवा ओर यो ॐकार विधि हरिहर में नहीं पाया जाता तो जब
सप्तऋषि तापस्या कीने ओर ॐकार का जाप कीन तब [redacted] तिनौ देवता आये
तब सप्तऋषि कहे। की मैं तो केवल ॐकार जाप किया [redacted] परन्तु तिनौं देवता
आये हो इसपर ब्रह्मा विष्णु महेश कहे की [redacted] हम सब तो ॐकार से है इस
कारणसे तिनो देव आये है इत्यादि

श्री जानकी वल्लभो विजयते नमः

यह गोसाईं जी की रामायण विचारविहंरहित है जाते पूर्वपर लगाय ते इसी ग्रन्थ में समाधान बाहुल्य मिलत है ॥ परन्तु इस ग्रन्थ का प्रचार बहुत है इसे लोग शंका करते हैं जाते कुछ लिखते हैं ॥ शंका भाषा बद्ध करब मैं सोई। प्रतिज्ञा मे विरुद्ध काण्ड के आदि संस्कृत। कवि काहे लिखे। उत्तर ॥ देववानी अति मंगल रूप जान कर यह भाषा के खट लक्षण में संस्कृत हूं चा हिये। निज इष्टदेव त्याग कर प्रथम गणेश बन्दना किये। उत्तर गणेश का प्रथम पूजन सर्व सम्मत॥ प्र- थम पूजियत नाम प्रभाऊ २ सं· गोसाईं जू अनन्य दो भुज रघुवर उपासक पे नारायण जू को उर में ब साये सो क्या हेतु॰ उत्तर॰ दोऊ को अभेद जानि प्रमाण प्रगट भये श्री कान्ता ३ सं॰ माया जीव ब्रह्म जगदीश ए सब अनादि हैं विधि ने कैसे बनाए ॥ उत्तर॰ उपजाने में तात्पर्य नहीं है गुण औगुण

का परिवारण है प्रार्थना ते विधि उपजायो प्रमाण ॥
जै जै सुरनायक इत्यादि प्रार्थना और तुम्हहिं लागिधरि
हौं नरभेषा ४ सं० पुर्व अनेक बन्दना करि आये। अब
बन्दों प्रथम मही सुर चरणा। यह कैसे बने। उत्तर। चारो
वरन मे प्रथम कहीं आदि ब्राह्मण हैं ५ सं: बन्दों प्रथम
भरथ के चरना कैसे बने। उत्तर। तीनों भाइयों में ॥
मुख्य राम भक्त भरथ जू हैं ६ प्रथम नाम वन्दना में
चाप भंग में कहि दण्डक बन पाबन कहा या में काण्ड
क्रम भंग दोष होता है। उत्तर विबाहादि शेष बालि
काण्ड चरित्र चाप भंग अन्तर गत है। प्रमाण। टूटत
हीं धनु भयो बिबाहू। इत्यादि। और। समय अयोध्या
काण्ड आधा आरण्य दण्डक वन पावन में गतार्थ हैं।
प्र० मुनिगण मिलन विशेष बन इत्यादि व सम्म काण्ड
में तात्पर्य नाहीं किन्तु वाके प्रतापादि वर्नन में है ७
सं० गोसाईं जी कहूं कवि न होंहु कहत हैं कहीं

कवि तुलसी यामें क्या हेतु है। उत्तर। कवि न होहुं निज हीनता से औ कवि शम्भु प्रसाद सुमति हिय तुलसी इत्यादि। ८। सं० श्रप्प तो प्रसिद्ध है। बिन अघ तजी सतीयह कैसे। उत्तर। यहां अघ शब्द दुख वाचक है सतीत्याग में शिव जू के कछु दुख वरणन भयो दुखोंभयउं वियोग प्रिय तोरे यह भक्त विरह ते कहे पतनी भाव ते नहीं प्र० यदपि अकाम तदपि भगवाना भक्त विरह दुख दुखित सुजाना ९ सं० प्रजासहित रघुवंश मणि निजधाम किमिगए यह प्रश्न के उत्तर नाहिं सो क्या- उ० उपासकन के नित अवध विहार समझते है ताते वक्ता मौन रहे व उत्तर में गुप्त उत्तर दियो गयो जहां शालक अमराई बाग से फिर यह आगमन लिखे १० शं०

जो प्रभु मैं नहीं पूछीं सोभी कहना सो शिव जी कहां कहे। औरौ एक कहौं निज चोरी इत्यादि ११ शं०

सती मोह तो आरण्य काण्ड में भयो फूलबाटिका में

गिरजा नामसे पूजन कैसेकरे, उत्तर, देवता अनादि हैं ग्रन्थ में सबनाम सदा प्रसिद्ध हैं, प्र० सुर अनादि जियजानि

१२ शं० निसदिन नहिंअव लोकहिं कोका-उभय घरी में रातदिन कैसेबने, उत्तर, कोकनिसाहि में भोग करनेलगे दिन नाहीं देखत यह अचरज वाको पुरुष का स्त्री यह निजपत्नी सम्बन्ध के मर्यादा न रही १३ शं० काम की चर्चा तो शंकर के विनय हेतु है विस्व विजय गार सो क्या हेतु॥ उत्तर॥ विस्वविजयी कामके संहार से-शंकर के अति बड़ाई में तात्पर्य है॥ ॥

शं०१४ मनुसत रूपा के बरदान समय मे जुगल प्रगटे बरदान राघव जू दियो किशोरी जू न बोलीं सो क्या हेतु। उत्तर। दोनों का अभेद है। प्रमाण। कहियत भिन्न भिन्न।१५ शं० भानु प्रताप धर्मात्मा ज्ञानी थे सो श्राप से राक्षस भयो सो क्या हेतु जीव प्रारब्ध करम मुख्य है प्र० तुलसी जस भवतव्यता इत्यादि १६ शं० रावण के-

वरदान मे बानर मनुज दुइ को मांगा और मरयो एक मनुज राघव हाथ से सो क्या हेतु॥ उत्तर॥ रावण वध मे रामजू प्र० आपन वध मनुज करि बांची हंसो दू० राक्षस वध में ये- दोऊ भिन्न२ कारण हैं॥१७ शं० जन्म एक दुइ कहौं ब- खानी सो तीन कल्प की कथा शिव जू पहिले कहे चतुर्थ कल्पके प्रसंग में मनु के परिकरण मे आकाश बानी ते कहे कश्यप अदित महातप कीन्हा पुनः नारद ब- चन सत्यसब करिहौं यहपूर्व कल्प की कथा यहां कहां से आई॥ उत्तर॥ भेदसे यहां व्यवस्था॥ प्रमाण॥ कल्प- भेद हरि चरित सुहाये भांति अनेक मुनीसन गाये इत्यादि १८ शं०॥ श्रीरामादि चारो भाइन के नामकरण में कर्म भंग है॥ उत्तर यहां पाठ कर्मते अर्थकर्म बली है- व राम तापनी माण्डूकोप निषद मे क्रम बिपरजय है व लक्ष्मण के बिशेष गुण कहिने थे पाते भरत के लिखे नहीं शत्रुघ्न की आड से लिखे १९॥ शं०॥ माता को यह

अलौकिक बिबेक दिये रहे अब सो भूलो यो बिश्वरूप दिखायो

यामे क्या हेतु ॥ उ० ॥ वात्सल्य की अधिकता से माता भूली

प्रभु विश्वरूप दिखाय के पूर्व बिबेक दृढ़ कराइन ॥ २० शं ॥

बिश्वामित्र पहिले ही जानते रहे तब ऋषि निजनाथ चीन्हे

यह कैसे बने ॥ उ० ॥ राहमे ऋषि बाल बिनोद देखि भूले-

ताड़का वध से पुनः ईश्वर जाने ॥ प्र० ॥ गाधिसुत प्रगट सोहें

सुहाये इत्यादि ॥ २१ ॥ शं० ॥ ऋषि दोऊ भाइन को यज्ञ रक्षा

हेतु लाये राजाज्ञा बिना मिथिला को क्यों गये ॥ उ० ॥ अब

मुनिही पिता हैं ॥ प्र० ॥ राजा बचन- तुम मुनि पिता आनहीं

को ॥ २२ ॥ शं० ॥ मिथिलेश जू प्रथमही बिश्वामित्र से राम

प्रताप जाने रहे तब सभा मे अनादर बचन सबके साथ

क्यों कहे ॥ उ० ॥ राम रूप मोहनी से जनक जू राघव का

ऐश्वर्य भूले यहां वात्सल्य रस प्रधान है ॥ २३ ॥ शंका सीय

स्वयंबर देखिय जाई पन नाही बनत जाते सिया जू स्वतंत्रवर

नाहीं बरा ॥ उ० ॥ स्वयंबर दुइ बिधि हैं प्रण स्वयंबर द्रोपदी आदि

का स्वतः स्वयम्वर द्रोपदी दमयन्ती आदि ॥२४॥ शं०॥
जनकनाम दिशि सोइ सुनैना और स्मृति में अष्ट लोक में
दक्षिण दिशि पावृपत है तो क्या हेतु ॥ उ०॥ बाम कहो
शिव शिव कहो कल्याण दिशा अर्थ ते कल्यान दिशि
आवत है वा जनक का बामगामी सुनैना सोइ दिशि -
दक्षिण दिशा अथवा जनकहै बामदिशि जोहिके ऐसी
सुनैना ॥२५॥ शं० जबतेराम ब्याहिघर आये नबते अयो-
ध्या में सब आनन्द बसे तो आगे क्या आनन्द नहीं
है ॥ उ०॥ आल्हादनी शक्ति सीता जू आइके अनन्द पूर्ण
भयो पहभाव है॥२६॥ इति संक्षेप बाल काण्ड॥
॥ ॥अथ अयोध्या काण्ड॥ शंकावली॥ शं०॥ ॥
पूर्ण बाल काण्ड मेंही श्री गुरुपद रजते विवेक नेत्र निर्मल
करे पुन इहां निज मन मुकुर सुधार काहे लिखे॥ उ०॥ भरत
महिमा वर्णन आगम जानि पुनः मन निर्मल कीन्ह॥ प्र०॥

भरत परम महिमा सुन रानी॥ जानहिं राम न सकहिं बखानी॥ अयोध्या-
काण्ड मे मुख्य भरत चरित्र॥ प्र०॥ भरत चरित करि नेम तुलस्यादि वा
महाराज दशरथ आदि सबका मनोरथ भंग इसकाण्ड मे बिचार
रजते शोकमल दूरकीन॥ २७॥ शं० दशरथ जू रामजू को बि-
श्वा मित्र के साथ भेजे तब तनु त्याग न करे बन यात्रा मे कीन्ह
सो क्या हेतु॥ उ०॥ बिश्वा मित्र के साथ गये तहा बशिष्ट जू
बचन ते सन्देह नाश और मुनि सहायक व कदोष तनु के नृप
निज प्राण धारण करि बचे॥ प्र०॥ तुम मुनि पिता आन नहि कोऊ
पुनः सुत उर लाई मृतकजन भेंटे बन मे सब विपरीति तेहि ते
तनु त्याग॥ २८॥ शं० श्री जानकी जू बन यात्रा समय मे सेवा
करें को कहो और ग्रन्थकार सेवा न लिखे सो क्या हेतु॥ उ०॥
पिता बचन मे तात्पर्य प्राण पति के साथ जाने को है बसुत्याहा
सेवा भी लिखे॥ प्र० बट छाया बेदिका सुहाई इत्यादि॥ २९॥
शं० रामजू कैकेई बरदान तो तापस बेष बिशेष उदासी है

तो धनुष बाण धार जो रथ चढ़े वा मृगया आदि कैसे बने
॥उ०॥ कैकेई का वरदान ध्यान भीर है अवतार धारि स्वतंत्र
लीला कीरबो मुख्य राम जन्म जगमंगल हेतु वा मुनिव्रत
और स्वधर्म दुनो निबाहे॥३०॥ प्र०॥ प्रयाग वासी भारत की
बड़ाइ करते हैं राम गुण ग्राम सुनिबो कैसे॥उ०॥ निज-
बड़ाई सुन मुख्य उपासक स्वामी के गुण समुझत हैं
वा बेणी के कूल में हरिकथा से रामगुण ग्राम सुनके
चले॥३१॥प्र०॥ भरद्वाज के शिष्य पचासक आये और
सब रामप्रेमी मुनि चारेक बटु संग दिये में क्या हेतु॥उ०॥
सीतासमादि चारिबटु भी वा चार सबसे अधिक सुकृती
चार वा चारवेद यथारथ मार्ग ज्ञाता॥३२॥ श्री राघव-
का शिवपूजन अयोध्या और लंका में लिखे और मे
नाही सो क्या हेतु॥उ०॥ श्री राघव जू के कुल देव शंभु
जू हैं और संकट में आराधे शंकर जू पासे अनेक
प्रमाण पढ़ो गवम में बाल उत्तर में संकट है नहीं

आरण्यादि में सीताविरह सो राम जू विकल ॥३३॥ शं० ॥ श्रीराघव के वनयात्रा मे पगमें झलका न लगाये भरत के कोर सो क्या हेतु ॥ उ० ॥ रामगवन पर्यन्त है और वसंत ऋतु, भरतको यात्रा ग्रीषम मे और विरह संताप ते ॥३४॥ शं० ॥ भरद्वाज भरत के पहुनाई मे ऐश्वर्य दिखाये सो क्या हेतु ॥ उ० ॥ भरत के वैराग्य की परीक्षा अर्थ पयारस भई ॥ प्र० ॥ मुनि आयसु खेलवार ॥३५ शं० ॥ भरद्वाज से भरत की भेटगाये महामुनि बाल्मीक सो नाहीं सो क्या हेतु ॥ उ० ॥ भरतजी विरही हैं रामदर्शन की आतित्वरा हैं भरद्वाज पहुनाई बत कदाचित विघ्नकरैं ताते कोवि भेट न गाये ३६ शं० ॥ निषादराज तो- यमुना तीर ही से फिरा भरतयात्रा में देखावत हैं कि ये पय सरित समीप रघुवर पर्ण कुटी है तो या कहांते जान्यो ॥ उ० ॥ निषाद फिरा तो बीचही ते ये भय भर के भीतर के कवार गयो वा सेवकन द्वारा प्रतिदिन की खबर लगायेही राम जू के भरतागमन को पहिले विचार पुनः निश्चय है ॥

॥३८॥ शं०॥ खलन के बल हृदय खभारे लखे यामें क्या हेतु॥उ०॥ लक्ष्मण राम प्रेमाधीन हैं राघव को क्लेश नाहीं सोई सकल तु॥ प्र०॥ मातुपिता नोहेजानो काहु॥३८॥
॥इति अयोध्या काण्ड शंका वली॥ ॥
॥ अथ आरण्य काण्ड ॥ ॥ शंका॥
लक्ष्मण जू प्रयास निषाद ज्ञान वैराग्य भक्ति उपदेश कीन फिर राम जू से फिर षट प्रश्न किये को क्या हेतु॥ उ०॥ सबबात के ज्ञाता भी बड़ेन को प्रश्न करत हैं वा आगरघुपति ललित नरलीला करेंगे सबभाव पूछ राखे तातें मोह न होय॥३९॥ शं०॥ सूर्पनखा तो परम सुन्दरी बनके गई। लक्ष्मण जू रिपु भगिनी कैसे जानी॥उ०॥ अगस्त के बचन से वा सूर्पनखा के बचन ते तीनलोक में खोजेउ नाहीं मिला ताते अबलगि कुआरी रही इत्यादि बचन॥४०॥ शं०॥ रामजू सूर्पनखा ते लक्ष्मण को कुंवारे कहे येतो बिवाहे हैं॥उ०॥ हास्यरस और बिबाह राज्य नीति आदि में झूठ का

दोषनहीं कुमार अवस्था॥४१॥ शं०॥ काम लोभादि कोई रीति

सों जीव सम्मुख जाय ईश्वर त्याग नहीं करत तौ सूर्पनखा के

से कर त्यागी विरूप करी॥ उ०॥ सीताविरोधनी अति बूझी सत्रु

भगिनी रही॥४२॥ शं०॥ मारीच तौ कपट मृगरहा ताको चर्म

रामजू कैसे लाये॥ उ०॥ प्रभुसत्य संकल्प है ताते मृगतन रहा

॥प्र॥ राम कीन चाहै सो होई॥४३॥ शं०॥ मृगछाला लाये कि

नाही यह कुछ कवि न लिखे सो क्या हेतु॥ उ०॥ जोईप्रिया के

अर्पचर्म लाये सो चोरी गई ताते कवि चर्म ग्रन्थ मे प्रगट न कहे

अवसर पाइके कहे॥प्र०॥ तापर रुचिर मृदुल मृगछाला॥४४॥

॥शं०॥ रावण तौ मन मे अनुमान कीन गृद्धराज सुनत धायो यह

कैसे बने॥ उ०॥ सुनत पद मे रावण कछु कटु वचन कहे यह

जानतु॥४५॥ शं०॥ रामजू गृद्धराज से कहे कि सीता हरणपि-

ता सो न कहना जो मै राम तौ कुल सहित रावण कहैगो या

मे क्या हेतु॥ उ०॥ सीता हरण सों पिता को स्वर्गै मे अति

दुःख होइगो रावण तौ मरे पर कहैगो ताते सौ प्राप्ति सत्रुवध

आदि से अति सुख हाइगो॥४६॥ शं०॥ सेवरी को रामगृह म
कथा भक्ति कही सो भागवत आदि ग्रन्थ से विरुद्ध है॥ उ०॥ यह
ग्रन्थ नाना पुराणा गम निगम है॥४७॥ इति आ० का०॥ शं०॥
अथ किष्किंधा काण्ड॥ शं०॥ हनूमान विप्र रूप धरि सबीको
राम को माथ नायो सो क्या हेतु॥ उ०॥ राम तेज नसहि सके
वा नेत्रसुख द्वारा कपट लखि परैगो ताते माथा नौने कीन्हे
॥४८॥ शं०॥ लक्षमण ते दूना प्रिय हनूमान को काहे कहे
॥ उ०॥ लोकरीति सों कि तुम हमारे प्राण हुं ते अधिक
हो वा कपि केवल दुख मे सहायक है लक्षमण दुखसुख
में वा लखण रामके सेवक है या दोनौं के सेवक वा
लखण द्वारा पूपा बियोग इनद्वारा प्राप्त॥४९॥ शं०॥
महांबीर ने ये प्रभु कैसे पहिचाने॥ उ०॥ दशरथ के जाये
इत्यादि बचन ते वे बड़े पण्डित हैं॥५०॥ शं०॥ राघव
अरु सुग्रीव अनेक देव छांड़ि कै पाव क साखी क्यों दिये
॥ उ०॥ मित्रता बचन द्वारा वा सोंदूप को देवता अग्नि

ग्रा शुद्धता और सपथ और साखी यो आगे मुख्य ॥ प्र०॥
त्रवकृशानु सब की गति जाना ॥ ५१ ॥ शं० ॥ राघव सकरूप दो-
ऊ भाइन के कहे जिनमे अन औ माला आगलिये सबमे
क्या हेतु ॥ उ० ॥ नरनाट्य में सब बनत है ॥ ५२ ॥ शं० ॥ रामजू प्रथम
बालीवध के एकबाण ते प्रतिज्ञा कीन फिर दूसरा बाण चढ़ाये
सो क्या हेतु ॥ उ० ॥ बानरराज बाली तेहिके सद्गति-
निर्वाणार्थ बाण की अमोघता रामसंकल्प के आधीन ॥ ५३ ॥
॥ शं० ॥ रामजू भर तानके बालिके हृदय मर्मस्थान में मारयो ज-
ल्दी न मरयो सो क्या हेतु ॥ उ० ॥ रामरूप दर्शन सम्भाषण अंगद
सो पवन आदि हेतु राम इच्छा ५४ ॥ शं० ॥ जेहि सायक मैं मारा
बाली तेहि बाण ते मैं बाहुबद को हतौं पाने सत्य प्रतिज्ञा और
शरणागत पालाव कैसे बने ॥ उ० ॥ वोहीं दिन सुग्रीव आप
आय मिले ॥ ५५ ॥ शं० ॥ और दिशा में कोटि बानर साथ समुद्र पार
गये दक्षिण में सब सुभट वहां निज निज बल कहे अंगद आ-
व में संशय कहा सो क्या हेतु ॥ उ० ॥ अतिबली रावण को

भय वा गुप्त मुद्रिकादेत आदि हनुमान को जानत हैं॥
इतीति किष्किन्धा शंका वली ।।५६॥ अथ सुन्दर काण्ड ।।शं
।।शं०।। महावीर अशोक वाटिका में सीता जी का रख
।।उ०।। अशोक
वाटिका से सुन्दर रहा महलकों खोजे काहे गये
वाटिका उनको नहीं जानी रही आगे बिभीषण कहेंगे।।५७॥
महावीर को लंका जाते में पुर्ष बाधक न मिले तीन स्त्रियें
मिली सो क्या हेतु ।। उ० ।। भवसागर के पार जात मुमुक्ष के
व तीनों लोक के स्त्री बाधक स्वर्ग की सुरसा पाताल की-
पासैनी सिंही का मृत्युलोक के लंकिनी ।।५८।। गयो दशानन म-
न्दिर माहीं इहइ भ्राता के एक एक शिर पांकेश्वर क्यों भये
।। उ० ।। ब्रम्ह बिचार कीन्ह विद्या १४ हमारे गुरुनार दश विद्या के
अर्थ दशानन कीन्ह यह भाव मुरारी नाटक में व पंसोरी रामायण
में रावण मोहरूप है दश इन्द्रिय आनन है ।।५९।। शं० ।। राम-
लक्ष्मण जो राक्षसी माया देखन गये औरमाया ने अस रचे नहिं

नांइ पर कैसे ॥ उ०॥ मुंदरी में रामनाम है नाम दूनो प्रभु से बड़ा है

॥६०॥ प्रं०॥ सुग्रीव को बालवध करिराज दीन्ह और विभीषण को रावण

जीवित तिलक सारे यामें क्या हेतु ॥ उ०॥ सीता भी बेद धर्म ... पा

नीबत ... चौदह प्राणों न ... करे मरे या आंखों

ते ॥६१॥ प्रं०॥ समुद्र राम दूत के तो ... सेवा कीन्हे

और रामके ... बीने न आपो न सेवा ... याम

हेतु ॥ उ०॥ दूत का पराक्रम देखा और रामके ... वचन

ते. भक्त भयो ... १० हजार उत्तर तक्षाती आभीरों के ... तात्पर्य है

॥६२॥ इति सुन्दर काण्ड शंकावली ॥ अथ लंका काण्ड ॥ प्रं०

समुद्र के यह पार शम्भु थापना में क्या हेतु ॥ उ०॥ सब तीर्थ में

समुद्र और अष्टमेकुण्ड अन्तरगत द्राविड़ देश जानिके व रावण

शम्भु भक्त है शम्भुको यहिपार राखे जाने उसका पक्ष न करे

॥६३॥ प्र०॥ पहिले सेतु के हेत तीन को नलोध १ नलनील २

राघव ३ सेतु बांधे पर श्रीरघुवीर प्रतापते पाषान तरे सो क्या हेतु

॥उ०॥ और उपाय साधारण मृत्यु हेतु सर्व शक्ति युत ईश्वर नाम
आल नरत सुभट बिजय मालिक राजा ॥६४॥ शं० ॥ सेतुबाधा
के फिरे तीन मार्ग कहे सो क्या हेतु ॥ उ० ॥ भवसागर पार
के तीन मार्ग कर्म ज्ञान उपासना ३ जलचर कर्म मार्ग आकाश
निर्मलता ज्ञान सेतु सम उपासना ॥६५॥ शं० ॥ सुबेल
पर राम के सिंहासन कहे और रावण के नृत्यादि
समाजे श्री सोहिया हेतु ॥ उ० ॥ रावण विराट यह राज
श्री धन धर्म सम्पत युत सान्त आस्री सम्पत
चंचल राम के सवन कुटि नाम नग
सह साखा निवासर छिपाइ कै श्री राम कहैं सो चन्द्र
वर्णन और छत्र भंग से अस्पष्ट ॥६६॥ शं० ॥ फिरैं
राम सीता मैं हरी - सीता हरने वाले यह कौन हैं
॥ उ० ॥

श्रीसीतारामजी

श्रीराम-चन्द्र नख-चन्द्र चारु अति चरण पदि अति भ्राजै (१)
कमठ पदि सम परम मनोहर काम रंग रुचि राजै (२)
अरुण तलिते सम सुभग चरन तल रेख देख अति लोहै (३)
रथ ध्वज अष्ट कोन हल मूशल श्री अम्बर मनमोहै (४)
चवर छत्र नव कंज अष्ट दल अंकुश नीमै लेखौ तिन के (५)
पवि स्वस्तिक सुन्दर सिंहासन मुकुट चक्र सम पेखौ (६)
सर्प बाण धम दण्ड चिह्न पग दक्षिण पद पद माला (७)
बायें पद गोपद सरजू छित कुम्भ त्रिकोण विशाला (८)
जीव आतमा बिन्दु शक्ति शुचि काम बाण बिच राखो (९)
जम्बु फल घट कोण अर्द्ध शशि शंख सुगन्ध पताका
त्रिबली बीरा चन्द्र का नग [illegible] सुधा कौन धनु हंसा (१०)
सुशोहित उन्चास चिन्ह ये दुख दल हरत विश्वासा (११)
जो दक्षिण पद रेख कुवेरे तो अर्द्ध उपर बायें
रामसखे भव भूलि गात है — नहि लोमें प्रातकाले

चन्द्र चन्द्रिका कुन्ड मुकुट [illegible] मुकुट बाँसी चिन्ह [illegible] १९

श्री गणेशायनमः अथ आरण्यकाण्ड रामायणजू के शंका समाधान
प्रबोधार्थ लिख्यते॥ चौपाई पृष्ठ ८०९॥ सुरपतिसुत धरि वायस वेषा।
शठ चाहत रघुपति बल देखा॥ तहाँ सुरपति कर पुत्र वायस कहे
काग का वेष धरि के काग रूप ह्वै गयो है ऐसो शठ श्री रघुपति
कर बल देखा चाहत है तहाँ देखिये तो महाराज श्री दशरथ ताई
अपने प्रताप बल ते इन्द्रादिक दिक्पालन की सदा रक्षा करत आ-
ये हैं अरु श्री राम चन्द्र तिनके पति तिनकी परिक्षा लेन आयो है ऐसो
शठ जयंत महा मन्द है (५) जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा
मन्द मति पावन चाहा॥ दो॥ जिमि पिपीलिका समुद्र को थाह लेवा
चाहति है तैसे मूढ़ श्री रामचन्द्र को बल देखि के पार पावा चाह-
त है (६)

चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष शायक संधाना ८

श्री जानकी जीके चरण मे रुधिर चल्यो श्री रघुनाथ जीने जानि

वो सींक को धनुर्वाण संधान कियो है काहेते सींक के धनुष

वाण! से आपनो प्रभाव देखावते हैं॥ ८॥ पृष्ठ ८९०॥ मातु मृत्यु

पितु शमन समाना। सुधा होइ विष सुनु हरि याना॥ ६॥ हे हरिया-

न श्रीरामचन्द्र ते विमुख जे जीव हैं तिनको तिनकी माता तो मृ-

त्यु की समान है अरु पिता शमन कहो यम के समान है काहेते

कि माता पिता ने श्रीराम चन्द्र को पदार्थी न हो उपदेश कियो है

अरु सुधा विषके समान होत है हे हरि यान काहेते कि सुधा देव-

तन पान कीन है परि फिर पतित होत हैं श्रीरामचन्द्र ते विमुख म-

ये सन्ते यानि मे भ्रमते हैं॥ ६॥ मित्र करे शत रिपु के कर-

णी। ताकहँ विबुध नदी वैतरणी॥ ७॥ अरु मित्र शत कहो सो

रिपु के करणी करे हैं काहेते श्री राम चन्द्र ते विमुख जानि कै

सुमित्र कुमित्र ह्वै जाते हैं चौरासी जीवे को उपदेश करै हैं अरु त्रिदिवो
विबुधनदी कही गंगा हैं सो वैतरणी जो यमपुर में है तेहि के समा
न ह्वै जाती हैं अरु जे सरयू गंगा जी को जल लैके शौच कर्म करै
तेहैं तिनको विना भाव वैतरणी ह्वै जाती है (७)

पृष्ठ (८१५) जो सिय सकल लोक सुखदाता। अखिल लोक
ब्रह्माण्ड कि माता॥४ हे गरुड देखिये तौ जो जानकी सकल लोकन
की माता सुखदाता अरु अखिल कही समूह लोक एक ब्रह्मा
ण्ड के भीतर है ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड तिनकी माता कही अने
क ब्रह्माण्ड की कारण हैं श्री जानकी जी आद्या शक्ति जाको मू
लप्रकृति कही ते श्री जानकी जी अनसूया के पद गहती भई है
आशीर्वाद चाहती हैं तहाँ बडेन की यही बड़ाई है॥(४)॥

पृष्ठ (८२८) जासु कृपा अज शिव सनकादी। चाहत सब परमा

५
रथवादी ॥ हे रामचन्द्र जे मुनीश ब्रह्मवादी हैं शुक सनकादि नारद शेष शिवादिक सर्व त्यागी के तुम्हारी कृपा अरु चरणारविन्द की प्रीति को चाहना करते हैं ते तुम हो तुम्हारी कृपा ते मैं तुम को जानता हौं तुम्हारी कृपा को ब्रह्मा शिवादिक परमार्थवादी जे हैं ते चाहते हैं ताते मो पर कृपा करत रहव परमार्थ परम अर्थ जे तुम हौ सो है वाद कही प्राप्ति जिनको (५) अब जानो मैं श्री चतुराई। भजिय तुमहि सब देव विहाई ॥७॥ श्री कहिये यश अरु तेज अरु प्रताप अरु ऐश्वर्य अरु शोभा अरु तप अरु दान अरु सम्पूर्ण सिद्धि अरु नवो निद्धि अरु वेद व्याकरणादिकन में प्रवीनता अरु चौदहौ विद्या चौंसठ कला संयुक्त योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधि अरु दया कृपा करुणा अरु धर्म अरु शरणपाल अरु सर्व जीवन के गति को जानिवे की सर्वज्ञता अरु सर्व को प्रेरक अरु सदा एकरस आनन्द स्वरूप इत्यादिक सर्व श्री के अंग हैं सो तुम्हारे

आश्चर्य है तुम्हारी कृपाते यह चतुराई मैं जाना ऐसे श्रीमान एक
आपही हो ताते सर्व देव विहाय के एक तुमही को भजिये किन्तु श्री
लक्ष्मीजी हैं तिनकी चतुराई मैं जानी है अब कि सर्व देव को विहाय के
एक तुमही को भजती है ताते भजबे योग्य एक तुमही हो ॥(७)
प्रश्न (८२०) उभय बीच सिय सोहहिं कैसी। ब्रह्म जीव बिच
माया जैसी ॥(२)॥ हे गरुड उभय कहो दुइ श्री रामचन्द्र श्री लक्ष्म-
णजी के बीच मे श्री जानकीजी जाती हैं सो कैसे शोभित हैं जैसे ब्रह्म अ-
रु जीव के बीच में माया शोभित है यहां शोभित पद कहा है यह माया
दुइ प्रकार की एक अविद्या एक विद्या तहां सर्व जीवन के अरु ब्रह्म के
बीच मे अविद्या है सो अशोभित है काहेते कि जीव ब्रह्म ते विछेप किहे है
तहां जीवन्मुक्त जे जीव है अरु ब्रह्म दोउ के बीच मे जैसे विद्या माया शोभि-
त है काहेते कि ब्रह्म को ब्रह्मानन्द सुख जीवन को विद्या प्राप्ति कीहै ताते
शोभित है तैसे श्रीरामचन्द्र मे भाव सेवा परमानंद सुख श्री लक्ष्मणजी को
श्री जानकीजी प्राप्ति किये हैं ताते शोभित कहो है दृष्टिये तौ ब्रह्म जीव अरु

दिव्य माया तीनहुँ को वाचक कह्यो है अरु श्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणजी जानकी को वाच्य कह्यो है अरु ब्रह्म जीव विद्या माया को उपमान कह्यो है अरु श्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणजी श्री जानकी जी को उपमेय कह्यो है यहाँ उपमान ते उपमेय को अधिक जानब अरु दृष्टान्त ते दृष्टान्त अधिक होत है उपमान दृष्टान्त लक्षण है अरु उपमेय दृष्टान्त लक्ष्य है पर यहाँ न्यूनाधिक्य रूपालंकार जानब

(२) पृष्ठ (८२१) जात रहेउँ विरञ्चि के धामा सुनेउँ श्रवण वन ऐहैं रामा (२) हे रामचन्द्र मैं ब्रह्मा के स्थान को तुम्हारे स्वरूप के भजन के सत संग हेतु जात रहेउँ है तब मैं यह मुनीश्वरन ते वेद करिके सुनेउँ कि श्रीरामचन्द्र जे परमेश्वर हैं ते राजा दशरथ के गृह में अवतीर्ण होइ कै वन लीला करि हैं गे यह सुनिके बैठि रहेउँ कि न्तु मैं ब्रह्मा के इहाँ जात रहेउँ कहा प्राप्त भयो जाइ ब्रह्मे कह्यो कि परमेश्वर तुम को आरण्य मे मिलैंगे ॥ (२)

पृष्ठ (८२१) सो कछु देव न मोर निहोरा निज प्रण राखेउ जनमन चोरा ॥(५)॥ हे देव कछु मोर निहोरा नहीं है काहे ते कि जो मोहि मे कछु करतव्य होय तो निहोरा होइ तुम तो अपनो विरद प्रण राख्यो है तुम्हारे दीन दयालु अशरण शरण पतित पावन

इत्यादिक बाना है अपने जनन को मन हरि लेते हो यह सत्य वचन में षट्शरणागत जो

है अनुकूल में संकल्प प्रतिकूल में त्याग गोप्तृत्व वरणं रक्षामे विश्वास आत्मसमर्प

ण कार्पण्य इनका स्वरूप बालकाण्ड में कहि आये हैं यहि चौपाई के पूर्वापर प्रसं

ग में रीझत राम सनेह निसोते को जग मंद मलिन मति मोते ॥ (५) ॥

तब लगि रहहु दीन हित लागी जब लगि मिलौं तुम्हें तनु त्यागी ॥

(६) पृष्ठ (८२९) शरभंग कहते हैं कि मैं जो दीन हौं तो हित हेतु यहां धीर स्व

रहौ जब लगि मैं तन त्यागि के तुमको प्राप्त होऊँ ॥ (६)

पृष्ट (८२९) चौ० ॥ योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा । प्रभु कहँ देइ भक्ति वर

लीन्हा ॥ (७) हे गरुड़ मुनि योग यज्ञ जप तप व्रत इत्यादिक कीन्हे सो पूर्ण श्रीराम

र्पण करिके भक्ती बरदान मांगि लीन्हे कहते कि धर्म काण्ड को फल है अरु

योग वैराग्य विज्ञान ज्ञान काण्ड को फल है अरु उपासना काण्ड जो भक्ती सो

रस है ॥ (७) चौ० ॥ यहि विधि सर रचि मुनि सरभंगा । बैठे हृदय छाड़ि सब संगा

॥ (८) यहि प्रकार ते सम्पूर्ण बाह्यान्तर को इन्द्रिय विषय संयुक्त तेहिं को लकड़ी

करिके चित्त को सर (चिता) बनाया कै ताहि पर आत्मा की वृत्ति श्रीरामचन्द्र

स्वरूपमें समाधान करिके अरु चारिउ वासना के फल का संग छाड़ि के दृढ़ समाधि करिकै बैठत भयेहि॥(२) पृष्ठ (२२२) चौ०॥ अस कहि योग अगिनि तनु जारा। राम कृपा वैकुण्ठ सिधारा॥१॥ तब मुनि अस कहि के मेरे हृदय में बसहु यह कहि योग रूप अग्नी उत्पन्न करिकै शरीर को भस्म करि दीन्हे तहां समूह मुनि खड़े रहे हैं पर शरभंग के शरीर को काहू न लखा परम दिव्य विमान पर चढ़ि के वैकुण्ठ को प्राप्त भये शरभंग शरीर को कैसे त्याग कीन्हे जैसे सर्प केंचुले त्याग करै है अरु जैसे नर नवीन वस्त्र ग्रहण करै है पुरान त्याग करै है तहां परमेश्वर के दासन का शरीर ऐसेही ग्रहण त्याग ना जानब (प्रमाणं भगवद्गीतायाम् २) क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति २ वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि॥ तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही २(२) चौ०॥ ताते मुनि हरि लीन न भयऊ। प्रथमहि भेद भक्ति वर लयऊ॥(२) हे गरुड़ मुनि का योग सिद्ध रहा है अरु योग को फल सायुज्य मुक्ति है चाही कि हरि में लीन होइ जाइ परश्री रामचन्द्र का दर्शन पायो तब योग के फल को फल रस सेवक सेव्य भाव भेद भक्ति सो वर मांगि लियो है अभेद भक्ती कहो विज्ञान ब्रह्मलीन

मिश्रित अरु केवल भक्ति सेवकसेव्य भावानन्य यह भक्ति अभेद भक्ति रसका स्वादहै

ताते यह जानिकै हरि मे लीन न भयो ॥(२)

पृष्ठ (८२४) चौ०॥ मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे। बिकल हीन मणि फणि। बिनु जै

से ॥२९॥ आगे देखि राम तन श्यामा सीता अनुज सहित सुख धामा ॥२०॥

तब बिकलतासे मुनि के नेत्र खुलि गये हैं तब जो प्रथम श्री रामचन्द्र स्वरूप श्याम

सुन्दर हृदय मे देख्यो सोई स्वरूप बाह्य नेत्रन के आगे देख्यो लक्ष्मण श्री जानकीजी

श्री रामचन्द्रजी सुख के धाम तिनको देखिकै अति आनन्द को प्राप्त भये हे पार्वती

वोई श्री रामचन्द्र प्रथम मुनि को निज नित्य द्विभुज किशोर धनुर्द्धर दर्शन देन पुनि

वोई श्री रामचन्द्र चतुर्भुज ह्वइके मुनि के हृदय मे देखावत भये तहाँ श्री रामचन्द्रजी

रूपनको दर्द उपासना ताकी परीक्षा लीन है तब मुनि अकुलाइ उठे हैं तहाँ तत्व

स्वरूप तो एकही है द्विभुज चतुर्भुज को भेद है तहाँ मुनि क्यों अकुलाइ उठे तहाँ

हे पार्वती जे परमानन्य उपासक हैं ते एकही स्वरूप मे अनन्य हैं रूपान्तर नहीं

सहि सकते हैं देखिये तो जब विष्णु भगवान नृसिंहरूप को अतिशय प्रज्वालित धारन कीन

तब ब्रह्मे कहा कि हे लक्ष्मीजी तुम्हारे पति हैं तुम जायके शांत करहु तब लक्ष्मीजी समीप

नहीं गई यह कहा कि यद्यपि वोई भगवान हैं तदपि यहि स्वरूप की उपासक मै नहीं हौं ताते मुनि

हृदय मे अकुलाइ उठे हैं ॥(२०)

पृष्ठ (८२७) चौ०॥ श्याम तामरस दाम शरीरा। जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा

॥(३)॥ हे श्री रामचन्द्र तामरस कही कमल नील तद्वत आप श्याम हो अरु दाम कही

वोही नील कमल के रंग की छटा लालित्य चमक भालकी माल पुनि दाम कही पदार्थ

के अन्तर की कोमत जैसे नील मणि के ढिग लाल मणि को प्रकाश नील के अन्तर भासत है पुनि दाम कही दामिनि मानो नील घन के अन्तर तड़ित थिर है यह सम्बन्ध अर्थ जानिबलाहु ते अधिक शोभा आपु के तनु कि ता लित्यो है अरु सा ति कन जैसे नर निरेशन अतिभलक ऐसे जटा के मुकुटाकार अति शोभित हैं अरु परिधन कही कटि विषे मान चीर भाजु धनादिक मुष्टु वल्कल शोभित है ॥(३)॥ चौपाई॥ धर्मवर्म नर्मद गुण ग्रामं। संतत संतनोतु मम कामं॥(२६)॥ अरु धर्म जो है सोई वर्म कही तुम्हार बाल्तर है किन्तु तुम्हारे धर्म है तुम्हारे दासन को किन्तु तुम्हार गुण ग्राम धर्म को वर्म वाल्ला है अरु तुम्हारे गुण ग्राम नर्मद कही अन्तःकरण की कठोरता नाश करिके कोमल करि देत हैं सुख शांति समा आनन्द करि देत है अथवा धर्म विषे अहं मम मद सो तुम्हार गुण नर्मद कही मद तें रहित करि देत है हे श्री रामचन्द्र संतत कही निरन्तर नोतु कही मैं नमस्कार करत हौं किन्तु संतल कही सम्यक प्रकार सुख आतनोति कही विस्तारित (२८) चौ०॥ जे जानहिं तेहिं जानहु स्वामी सगुण अगुण उर अन्तरयामी॥(२९) जे स्वामी जे तुम को विष्णु रूप सगुण जानै किन्तु विराट जानैं निर्गुण रूप अन्तरयामी जाने तिनको तुम जस जानहु तस जानहु जाइ॥(२९)
पृष्ट (२३०) चौ०॥ एवमस्तु कहि रमा निवासा। हर्षि चले कुम्भज ऋषि पासा॥(११) तहां रमा कही श्री को है ये यश तेज प्रताप शोभा तप धन सम्पति सिद्धि अरु नवनिद्धि अरु चारिहु वेद के तत्व अरु षट काव्य अरु नव व्याकरण षट्शास्त्र अठारहो पुराण अठारहौं स्मृति उप पुराण अठारहौं संहिता बानबे उपनिषद् अरु चारिउ फल अरु योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधि पांचो मुक्ति नवधा प्रेमा पराभक्ति इत्यादि सबन को सिद्धांत ताको श्री कहिये पुनि रमा श्री लक्ष्मीजी तेहि सबके निवास कर्ता

प्रकाश कर्ता श्रीरामचन्द्र तिनसे जो मुनि माँगा तिनको एवमस्तु कहिकै श्रीरामचन्द्रजी

श्रीअगस्त मुनिके यहां चलत भये ॥ (४)

पृष्ठ [illegible] चौ० ॥ तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी जानौं महिमा कछु

क तुम्हारी ॥ (५) तब अगस्त्यजू बोले हे प्रभु तुम्हारे प्रभाव को कोई नहीं जानतै

पाहे अघारी कहौ मन वच कर्म से अघ के हरैया तुम्हारे भजन के प्रभाव से तुम्हारा महि

मा मैं जानत हौं ॥ (५)

चौ० ॥ ऊमरि तरु विशाल तव माया फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥

(६) हे श्रीरामचन्द्र जहां तक कोटिन जीव हैं तिन सबको तुम्हार जानन दुर्लभ है जहां

तक आप मोको जनावो है सो सुनहु तुम्हारी माया ऊमरि कहो विशाल गूलरि का

वृक्ष है अरु तामें अनेक ब्रह्माण्ड समूह कहो विस्तार फल है ॥ (६)

चौ० ॥ जीव चराचर जन्तु समाना भीतर वसहिं न जानहिं आना ॥

(७) अरु ब्रह्माण्ड प्रति जेते जीव हैं ते हि फल के भीतर के जन्तु हैं वही फल के भीतर

की जानते हैं बाहर को नहीं जानते हैं अरु तुम ब्रह्माण्ड के परात्पर हो ॥ (७)

चौ० ॥ ते फल भक्षक कठिन कराला तव डर डरत सदा सो काला ॥

(८) अरु जैसे गूलरि के पके फल सहित भूमि को छुधित दश बीस पचास खाइ जाते हैं

तैसे तुम्हारी माया में अनेक ब्रह्माण्ड हैं अरु ब्रह्माण्ड प्रति ब्रह्मा को एक दिन हजार चौकड़ी

युग हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग इतने को ब्रह्मा को एक दिन

होत है अरु इतने रात्रि होति है ऐसे सौ वर्ष ताई ब्रह्मा की आयुर्वल होति है

तहाँ ब्रह्मा की आयुर्वल बीते तव महाकाल को एक दिन होत है वे दिन

विषै महत्तरूप ब्रह्माण्ड अनेक पकि जाते हैं तहाँ ब्रह्मादिक सर्व जीव सुद्धा अनेक ब्रह्मा-
ण्ड काल नित्य भक्षण करै है सो काल आपके डरते डरते है अरु सोई काल तुम्हरी
भृकुटी निरखत रहते है ॥८॥ पृष्ठ (८३४) चौ० ॥ थोरे महँ सब कहौं बुझाई
मैं अरु मोर तोर तैं माया। ज्याहि वश कीन्हे जीव निकाया ॥२॥ गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानहु भाई ॥३॥
सुनहु तात मन चित मति लाई ॥१॥ हे पार्वती श्री रामचन्द्र बोले श्री ल-
क्ष्मणजी के प्रश्न को उत्तर देते हैं हे तात जैसे तुम थोरे प्रश्न मे महत्पदार्थ बूझे है
तैसे मैं थोरे में समुझाइ के कहत हौं ते तुम सुनो पर मन चित्त लाइ कै सुनहु इहाँ द-
शान्वय के कर्म ते अर्थ सिद्ध होते है सुनो कही श्रवण अरु मन को लाव ध्यान करो
मनन करो चित्त करिके चिन्तवन करो निदिध्यासन कही अभ्यास करो (१) प्रथम श्री लक्ष्म-
णजी के प्रश्न मे ज्ञान पूँछा पुनि वैराग्य पूँछा पुनि माया पूँछा तहाँ श्री रघुनाथजी
तीन प्रश्न के प्रतिलोम क्रम से कहते हैं हे तात प्रथम माया को रूप सुनो पुनि
वैराग्य सुनो पुनि ज्ञान सुनो माया कही मैं अरु मोर तोर तैं इत्यादिक अहं मम
ताई को माया कही जीव निकाय कही समूह जीवन को वश कियो है तेहि सब को
कारण सुनो यहाँ (२) गो गोचर यह चौपाई लैकै अविद्या अविद्या ताई चार
चौपाई को एक कही अन्वय जानव हे तात गो जे हैं पाँच ज्ञान इन्द्री पाँच कर्मेन्द्री
श्रवण त्वक् नैन रसना नासिका ये पाँच ज्ञानेन्द्री हैं पुनि पग गुदा लिंग कर
मुख ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं तिन सब को कही तहाँ एक अगोचर कही अदृश्य को
अरु एक गोचर कही प्रत्यक्ष देखिबे को अरु चर गमन भक्षण विषे होते है सोइ-
न्द्रिय को विषय ताको भक्षण करै ताको चर कही क्रम ते जानव सो कहते हैं श्र-
वण को दिशा देवता त्वक् को वायु नेत्र के सूर्य जीभ को वरुण नासिका को अश्विनी-

कुमार सर्ये के पुत्र अह (कर्मेन्द्रिय के देवता) पग के देवता यज्ञ विष्णु गुदा के देव-
ता यमराज लिंग के देवता दक्षप्रजापति हाँथ के इन्द्र मुख के अग्नि ये दशौं देव-
ता दशौ विषय बार भक्षण करतेहैं ग्रामही से जानब शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये
ज्ञान इन्द्रिन विषय हे पुनि चलन विसर्ग मैथुन व्यवहार भक्षण ये कर्म इन्द्रिय
विषयहैं तहां गो गोचर जो जो इन्द्रिय तिनकी विषय मे जहां लक देवतन के भा-
ग हेतु मन जाइ है भाई सो सब माया जानब हे तात यहि मे तुम सन्देह न करो
हम कहतेहैं (३) चौ०॥ एक दुष्ट अतिशय दुख रूपा जा वश जीव
परा भव कूपा॥(४) हे तात एक जो अविद्या सो अति दुष्ट हे त्याहि विषे जो
इन्द्रिन के द्वारा इन्द्रिन के विषय अविद्या मे जात भई तब तिसके संग मन जाइ के उस अ-
विद्या को विषय भोग करत भयो तब सो मन अविद्या मय है जातहे त्याहि के सम्बन्ध के
वश जीव भव कूप मे पत्तो है भव कूप कहो देव दानव मनुष्य इत्यादिक जेते जीव हैं
चर अचर आदि सब ब्रह्माण्ड कोश जो त्रय गुणमय हैं सो भव कूप है तामे अवि-
द्या वश सब जीव परे हैं॥(५) चौ०॥ एक रचै जग गुण बस जाके प्रभु प्रे-
रित नहिं निजबल ताके॥(६) अरु हे तात एक विद्या है जब विद्या केवल
मन परो तब वहे विद्या मन को मिलि के इन्द्रिन के द्वारा जीव विषे यहि जगत मे
दिव्य गुण को रचै है कौन दिव्य गुण है प्रभु प्रेरित गुण सो कौन गुण है योग वैराग्य
ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधि चतुष्टय अन्तः करण की वृत्ति मन राम गुण मनन करै है
अहंकार ते विषय को त्याग करै मनमान मोह इत्यादिक अरु बुद्धि ते राम गुण तत्व म-
नन निश्चय करै अरु चित्त से राम स्वरूप को चिन्तवन करै है विद्या गुण करि के अन्तः करण

वे वृत्ति संसार ते उलटि कै ऐसी होति है जैसे कहि आये हैं पुनः विद्या को गुण दिखा-
वत हैं इन की वृत्ति सो कहते हैं श्रवण अमृत मय प्रभु की कथा सुने है अरु नेत्र ते भग-
वान की प्रतिमा मृत्तिका चित्र दारु शिला धातु श्री विग्रह लीला विग्रह शालिग्राम इत्यादिक
प्रभु की प्रतिमा अरु चरणचिन्ह ईश्वर व्यापक भाव समेत बाह्यान्तर नेत्रन ते देखते हैं
अरु प्रतिमा के गुरुन के संतन के ब्राह्मणन के शीश नवाय के प्रीति समेत नमस्कार करै हैं अरु
जीभ ते श्री भागवत् यश अहर्निशि करते हैं अरु राममन्त्र जपते हैं नाम रटते हैं अरु मुख ते
महाप्रसाद सेवन करते हैं तहाँ बिना प्रसाद अमृतौ होइ तो ना छुऐं अरु नासिका ते भगव-
त्प्रसादी तुलसी दल फूल सुगन्ध ग्रहण करते हैं अरु बिना प्रसादी जो इत्र फुलेल आदिक
होय तो छुवै नहीं अरु करते भगवत् भागवत गुरु आचार्य तिनके कैंकर्य भाव समेत सम्पूर्ण
करते हैं अरु पग ते हर्ष के चलि कै भगवत् तीर्थ सत्संग दर्शन सेवा सब करते हैं यह विद्या
माया के गुण हैं भगवत् कृपा अरु प्रेरणा ते होते हैं मन माया के निज बल ते नहीं होते हैं
अब दृष्टान्त करि कै अनात्मा के स्वरूप लक्षित कराते हैं तहाँ अनात्मा शरीर अरु
आत्मा जीव दूनौ बराबरि मिलि रहे हैं अनात्मा स्थूल अरु आत्मा सूक्ष्म दूनों के एक
ह्वै रहे हैं अनात्मा अविद्या को ग्रहण किये है जैसे दूध में घृत अरु फूल में सुगन्ध तहाँ
दुग्ध फूल स्थूल है अरु घृत रस सुगंध तिनमें सूक्ष्म व्याप्त है पर सर्वांग पूर्ण ह्वै कै व्याप
व्याप्त है तहाँ यत्न ते दुग्ध ते घृत भिन्न ह्वै कै स्थूल ह्वै जात है अरु फूल ते रस सुगन्ध भिन्न ह्वै कै
अन्तर स्थूल ह्वै जात है पुनि दुग्ध में फूल में नहीं मिल सकै है तैसे अनात्मा विषे
आत्मा अविद्या के आवरण ते सूक्ष्म दर्शित ह्वै रह्यो है तहाँ विद्या के
यत्न ते वेह आत्मा स्थूल सूक्ष्म विग्रह वान ह्वै जात है अविद्या छूट गई

जैसे दुग्ध ते घृत निकालि ते जल रहत है सर्प तो मात्र देखवे मे आवै है तैसे अना
त्मा बिषे आत्मा सूक्ष्म व्यापक है तहाँ प्रभु के प्रेरणा ते जो मन में विद्या
गुणन को यत्न होइ तो वहे सूक्ष्म आत्मा मूर्तिमान ह्वैके परमेश्वर के स्व
रूप को प्राप्त होइ है तब अविद्या रूप अनात्मा निर्जीव रहिजात है जैसे
घृत के निकासे ते दूध छाछ मात्र रहिजात है पुनि जैसे सर्प बिषे केंचु
लि जब सर्पाकार स्वरूप अन्तर स्पष्ट निर्मल भयो तब अनायास कें
चुलि छूटि जाती है सर्प निर्मल ह्वैके निकसि जात है तैसे अविद्या
रूप अनात्मा छूटि जात है अरु आत्मा को विद्यामय विग्रह परम
दिव्य रूप परमेश्वर को प्राप्त होत है पुनि जैसे रूसा अरु करंज का
पेड़ ऊपर ते काटिकै उसका थान तीन बार उलटि कै लगाया जा
य तब बेला गुलाब ह्वै जात है पुनि जैसे पारस के स्पर्श ते अरु रसा
यनो के संग ते मैल छूटि ते धातु तांबा रांगा पलटि जात है सोना चाँदी
ह्वै जात है तैसे भगवत भागवत के निष्कुल कैंकर्य सेवा किहे ते अविद्या
मैल छूटि जात है यहाँ आह्लादिनी विद्या सकहिं जानब तेहि के वश आत्मा
मूर्तिमान है तहाँ अविद्या के विशेषन काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य
हर्ष शोक हानि लाभ मित्र अरि मानाऽपमान अहं मम इत्यादिक अनेक
हैं ताको फल चौरासी है तहाँ कर्मकाण्ड अविद्याही को विशेषण है
तहाँ एक अशुभ है अरु एक शुभ है शुभ कीन्हे स्वर्ग होत है पुनि पतित होते
हैं ताते अविद्या है पुनि विद्या के विशेषण योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान ध्यान
समाधि नाम स्मरण शांति संतोष शील दया इत्यादिकन को फल मोक्ष है
तहाँ विद्या आत्मा की सत्यता ते चैतन्य है जैसे चुम्बक शिला की सत्यता
ते लोहा स्फुरित होत है पुनि जैसे कोई मिठाई इत्यादिक पदार्थ है तामे
स्वाद है पुष्टि है जल स्वादगत रस भयो तब पदार्थ नष्ट होइ गयो

जैसे अनात्मा विद्या विषे विद्या स्वादहै आत्मा पृथ्वी है स्वाद पृथ्वी एकही
है अरु पदार्थ अनित्यहै जैसे विद्या आत्मा एकही सम नित्यहै पुनि यों
मे अनात्मा आत्मा एकही संग हुइ भागहैं कैसे जानिये जब इन्द्री अविद्या
के गुनन मे चलै अरु उसको मन भोग करै तब अनात्मा को इन्द्री मन
जानिये अरु जब इन्द्री विद्या के गुनन मे चालैं अरु इन्द्री पनि आत्मा
मन भोग करै तो आत्मा को इन्द्री मन मानिये ताते आत्मा विग्रहवान
है परम दिव्य ऐसे अनेक दृष्टान्त ते अनात्मा आत्मा अविद्या विद्या को भेद
विवेकी जन जानते हैं तहाँ गीताम भगवान ने कहाहै (श्लोकार्द्धम) कौन्तेय प्र
ति जानीहि नमे भक्ता प्रणश्यति॥ तहाँ चौबीस तत्व करिकै अनात्मा है तहाँ
पाँच तत्व पाँच ज्ञानेन्द्रिय पाँच कर्मेन्द्रिय अरु पाँच ज्ञानेन्द्रिन के विषय अरु
चतुष्ट अन्तःकरण ये चौबीसो अविद्या मय हैं जिनके वश आत्मा सूक्ष्म
है अरु आत्मा पचीसवाँ तत्व है विद्या वपु दिव्य विग्रहवान है दुइ
चरणहैं कटि है दुइ भुजहै मुख नासिका नैन कोश संतोष परम दिव्य
हैं (प्रमाण श्रुतिः साम वेदे) दश हस्तांगुलयो दश पाद द्वा बुरुद्वौ बाहु आत्मैव पंच
विंशकः (६) हे तात ज्ञान कहौं जहाँ एको मान नहीं है जाति को मान कुल को
मान युवा को मान धन को मान विद्या को मान वैराग्य को मान ज्ञान
ध्यान को मान इत्यादिक जे मानहैं ते बाह्य अन्तर ते त्याग होइ अरु
सम्पूर्ण जगत मे चराचर विषे समान चित्त करिकै बाह्य नैन च-
रिकै ब्रह्म मय देखते हैं ताको विशेष ज्ञानी कहौ (७) कहिय तात
सो परम विरागी तृण सम सिद्धि तीन गुण त्यागी॥ (८)
पुनि हे तात वैराग्य कहते हैं परम वैराग्य ताको कहौ जे तीनि
उँ गुण अरु तीनिउँ गुण सम्बन्धी सिद्धिन को तृण के स-
मान त्याग करैहैं तहाँ सिद्धि तेइस हैं तामे पाँच सामान्य

सिद्धि हैं अरु दशगुण सम्बन्धी सिद्धि हैं अरु अष्ट भगवत सम्बन्धी सिद्धि तिनमें
आठ करि त्याग नहीं है पन्द्रह को त्याग है सिद्धिन के नाम रूप कहते हैं
सिद्धिन के नाम अणिमा१ महिमा२ लघिमा३ गरिमा४ प्राप्ति५
प्राकाम्य ६ ईशिता ७ वशिता ८ ये आठो भगवत प्राधान्य हैं
भगवान विषे स्वाभाविकी हैं निरतिशय हैं अरु दश सिद्धि गुण
सम्बन्धी अनूर्मिमत्वम् १ दूरश्रवणम् २ दूरदर्शनम् ३ मनोजवः ४
कामरूपम् ५ कायप्रवेशनम् ६ स्वच्छन्द मृत्युः ७ देवानां सहक्रीडा-
नुदर्शनम् ८ यथा सङ्कल्पसंसिद्धिः ९ आज्ञाप्रतिहता गतिः १० पाने
पाँच क्षुद्र सिद्धि हैं सो वर्णन करते हैं त्रिकालज्ञत्वम् १ अद्वन्द्वः २
परचित्ताद्यभिज्ञता ३ अग्न्यर्काम्बु विषादीनां प्रतिष्टम्भः ४ अप-
राजयः ५ इति पञ्च अब सिद्धिन के स्वरूप कहते हैं अणि-
मा महिमा लघिमा ये तीन सिद्धि देही की हैं जिस सिद्धि
करिके देह अनुरूप को धारण करै सो अणिमा सिद्धि
कही १ ज्याहि सिद्धि करिकै देह स्थूल शरीर को प्राप्त होइ
ताको महिमा सिद्धि कही २ ज्याहि सिद्धि करिकै देह लघु
भाव को प्राप्त होइ ताको लघिमा सिद्धि कही ३ जेहि सिद्धि
करिकै देह गुरुता को प्राप्त होइ ताको गरिमा सिद्धि कही ४
जेहि सिद्धि करिकै सब प्राणी मात्र तिनको जो इन्द्रिय तिन करिकै
सहित इन्द्रिय के देवता रूप ह्वैके इन्द्रिन मे प्रवेश करै ताको प्राप्ति

सिद्धि कही ॥५॥ जोहि सिद्धि करिके सुनवेमे आवे इन्द्रादिक लोग अरु पृथ्वी
के विवर सप्त पातालादिक लोक अरु पर्वतन के विवर तिन करिके ढके
देखने लायक जे पदार्थ तिनको भोग दर्शन को सामर्थ्य तिस करिके
होइ सो प्राकाम्य सिद्धि कही ॥६॥ अरु माया के अंश उनकी प्रेरणा
करना माया की प्रेरणा ईश्वराधीन है अरु अंश की प्रेरणा जीवाधीन
है यह भेद ज्ञान सो ईशता सिद्धि कही ॥७॥ विषय भोग मे असङ्ग होने
को वशिता नाम सिद्धि कही ॥८॥ ये आठो भगवत सम्बन्धी सिद्धि हैं बन्धन
रूप नही हैं ताते इन कर त्याग नही है जोहि करिके क्षुधा पियासादिक
रहित होइ ताको नाम अनुर्मिमत्व सिद्धि कही ॥१॥ दूर की वस्तु देखना ताको
नाम दूर दर्शन सिद्धि कही ॥२॥ दूरि ते सुने पेर ताको नाम दूरि श्रवण सिद्धि
कही ॥३॥ मन के बराबर देह को गति होना ताको नाम मनोजव: सिद्धि कही
॥४॥ जैसा रूप चाहै तैसा रूप धारि लेना ताको नाम काम रूप: सिद्धि कही
॥५॥ पराई देह मे प्रवेश करे ताको पर काय प्रवेशन सिद्धि कही ॥६॥ स्वेच्छा
मृत्यु होय ताको नाम स्वच्छन्द मृत्यु सिद्धि कही ॥७॥ अप्सरन के संग मे जो देवतन की
क्रीडा प्राप्ति होना ताको देवानां सहक्रीडानुदर्शन सिद्धि कही ॥८॥ जैसा संकल्प करै
ताके अनुरूप पदार्थ की प्राप्ति होना ताको नाम यथा संकल्प संसिद्धि कही
॥९॥ जाको आज्ञा निवारण न होइ ताको नाम अज्ञा प्रतिहता गति सिद्धि कही
॥१०॥ क्षुद्र सिद्धि (पञ्च) भूत भविष्य वर्तमान जानना ताको नाम त्रिकालज्ञत्व सि-
द्धि कही ॥१॥ शीत उष्ण करिके पराभव नही होना ताको नाम अद्वन्द्व सिद्धि कही ॥२॥

परिचितादिकनको वस्तु जाननो ताको नाम पर चित्ताद्याभि ज्ञाता सिद्धि कही ॥
३॥ अग्नि सूर्य जल विष इत्यादिक को थाम्हना ताको नाम अग्निकोमविषय
नां प्राकेष्य सो सिद्धि कही ॥४॥ काहुकरिके पराजय न होइ ताको नाम अपराजय
सिद्धि कही ॥५॥ भगवत सम्बन्धी जो अष्ट सिद्धि कहि आये हैं त्याहि को त्याग नही
है अरु दश सिद्धि जो गुण सम्बन्धी हैं अरु पाँच क्षुद्र सिद्धि हैं तिनको वैराग्य
वान तृण समान त्याग करते हैं ताको परम वैराग्य कही अवाधि वैराग्य नही
वैराग्य मे चारि भेद हैं ॥(८) अब भूमिका कहते हैं जो लक्ष्मण जी यह प्रश्न कीन्हे
(दोहा) ईश्वर जीवहि भेद प्रभु सकल कहो समुझाइ जाते होइ
चरण रति शोक मोह भ्रम जाइ ॥१॥ कि हे प्रभु ईश्वर जीव का
भेद कहहु सकल कही सब प्रकार ते सब मत करिके ज्याहि को सुनिके
तुम्हारे चरणारविन्द मे रति होइ अरु शोक मोह भ्रम जात रहे तहाँ शोक
जो काहु पदार्थ की चाहना भई है अरु नही प्राप्त होत है अरु तेहीको
कल्पना शोक कही अरु मोह कही देहादिक स्नेह सही विषय हैं त्याहि मे
अपनपौ मानना ताको मोह कही भ्रम को कही असत्य जो यह सम्पूर्ण शरीरादि
का विषय हैं तामे सत्य भाव करना अरु सत्य आत्मा मे असत्य भाव करना जैसे
रज्जु मे सर्प भाव करना ताको भ्रम कही तहाँ आपके मुख ते सुनि के यह शोक मोह
भ्रम नाश होइगो तहाँ लक्ष्मण जी सर्व जीवन के आचार्य हैं ताते सर्व जीवन
के हेतु श्रीरामचन्द्र ते प्रश्न कीन है अरु आप तो निर्मल हैं तहाँ शोक
मोह भ्रम एक विषय मे होत है सो कहि आये हैं अरु एक ईश्वर मे होत है
सो कहते हैं ॥ ईश्वर जीवहि भेद प्रभु सकल कहौ समुझाय ॥ हे प्रभु ईश्वर अरु
जीव कर सकल भेद कहहु सकल कही स्वरूप ईश्वर अरु जीव के ऐके

सकल है कि भिन्न भिन्न है सो भेद कहहु जो सुनिके ईश्वर विषे
जो शोक मोह भ्रम होत है सो जात रहै तुम्हारे चरणन में प्रीति होइ
तहाँ जो सत गुरुन करिके प्रथम ईश्वर तत्व जानी गई है अरु कोई
कुसंग योग ते वह तत्व जाती रही पुनि कहूं सत्संग के योग ते वही
तत्व की सुधि आई तब कल्पना भई सो शोक कहो पुनि मोह कहो
ईश्वर के जानिबा विषे अपनपो मानिके मैं ईश्वर तत्व बहुत जान्यउ है
और किससे का पूछें न अपनी बुद्धि की प्रवीणतामें अपनपो मानै ता-
को मोह कहो अरु भ्रम कहो जो ईश्वर के स्वरूपमें भ्रम प्राकृत भाव
आरोपण करै ताको भ्रम कहो तहाँ सलीजो कहै तीनिउ भय रहै है श्रीरामचन्द्र
आपके मुख ते सुनिके जामें शोक मोह भ्रम जाता रहै हे नाथ जोहि
जीव को शोक मोह भ्रम नाश ह्वैके तुम्हारे चरणारविन्द में प्री-
ति है ऐसे शुद्ध जीव तेहि को सकल अरु ईश्वर को सकल
तेहि को भेदाभेद कहहु यह लक्ष्मण जी के प्रश्न को उत्तर श्रीराम
चन्द्र देते हैं हे तात पहिले सकल कहो सब मत बाद सुनो
कै मुनीश्वर अस कहते हैं कि माया ईश न आप कहं जानै कहो
सो जीव माया को ईश जेहि अपने स्वरूप को जानै सो ईश
ते अभेद है अरु न जानै ताही को जीव कहो यह ईश्वर जीव ते
भेदाभेद मानते हैं पुनि बद्ध मोक्ष प्रद सर्व पर माया प्रेरक सीव
जो अपने सरूपको माया कर ईश जानै सोई ज्ञान मोक्ष को प्रद
कहो जाता है अरु जो अपने स्वस्वरूपको ईश को ज्ञान न जानै
वहै अज्ञान बद्धदाता है अरु वहै ज्ञान माया प्रेरक है अरु वहै अज्ञान

पर माया प्रेरक है वह सर्व पर है जो जानै अरु न जानै कोई होइ सोवे कहो
यह मर्यादा है ताको अद्वैत मत कहो तहाँ विशिष्टाद्वैत मत वादी बोल्यो
कि तुम जो कहा कि माया कर ईश जो अपने स्वरूप को न जानै ताको जी-
व कहो तहाँ अब हम पूछते हैं कि यह जीव माया कर ईश कबहू रहा है
कि नहीं रहा है तब अद्वैत मत वादी यह विचारते हैं कि जो मैं कहौ कि
यह जीव माया कर ईश कबहू नहीं रहा तौ पुनि माया कर ईश काहू
होइगो तहाँ मेरा कहना असिद्ध है जाइगो तब यह उत्तर देतहैं कि यह जीव
माया कर ईश अनादि है ताते ईश्वर अरु जीव ते अभेद है जैसे जल तरंग
जैसे घटाकाश मठाकाश महदाकाश घट मठ भंग भये ते केवल आकाशही
है पुनि जैसे समुद्र मेघ के बिंदु अरु सिन्धु तरंग उपाधि मिटे ते तत्व एक
ही हैं तैसे माया की उपाधि ते ईश अपने स्वस्वरूप को भूलिगयो ताते जीव कह्यो
जब अपने स्वरूप को ज्ञान भयो तब उपाधि मिटि गई तब जीवत्व मिटि गई
ईश को ईशही है तहाँ हम पूछतेहैं कि जो ईश मे उपाधि लगी सो ईश कैसाहै
काहेते कि उपाधि ईश के आधीन है अरु ईश उपाधि के अधीन नहीहै अरु
जो उपाधि के अधीन होइ तो ईश ते उपाधि प्रबल होतीहै यह दूषण है तहाँ पुनि
अद्वैत वादी कहतेहैं कि हम कहतेहै कि ईशने अपनो संकल्प आप विषे लय
करि लियो तब ईश को ईश है जैसे मकरी अपने जाला को उत्पन्न करतीहै वहीमें
विचरतीहै जब चाहा तब अपनो सब अपना मे लय करि लियो शुद्ध मकरी
रहिगई तैसे जीव ईश ते अभेद है पुनि वादी प्रश्न करतेहैं कि तुमने ईशको

मकरी को दृष्टान्त दियो सो हम कहतेहैं कि ईश ने कौने काल में माया को संकल्प कियो है तेहि संकल्प विषे ईश जीवत्व को प्राप्त भयो सो को जानै केते काल रहैगो पुनि जब ज्ञान होइगो तब ईशत्व को प्राप्त होइगो ताते बद्ध मोक्ष तो बनो रह्यो सो ईशत्व को कैसे प्राप्त भयोहै तहां यह नहीं सम्भवै है पुनि अद्वैत मत वादी कहतेहैं कि पुनि नहीं संकल्प होत है जैसे जैसे कोई बमन करैहै पुनि वहि दिशि नहीं देखैहै सो सत्य है तहां हम यह कहतेहैं कि जीवन की दिशि नहीं देख्योहै तौ भोजन कियो है ताहि को दिशी विषे तौ मन जाइगो तबहीं भोजनको ग्रहण करैगो तब फेरि कोई कालमें बांत होइगो ताते यह तो तुम्हारे कहेमें बद्ध मोक्ष बन्यो रहाहै तहां पुनि बादी कहतैहैं कि यह जीव ईशही है अपनी ईशता ते जड़को चेतन किहे है जैसे चुम्बकशिला लोहा को स्फुरित करैहै अरु आप भिन्नहै ऐसो आत्मा है तहां पुनि वादी बोल्यो कि यह भी नहीं बनैहै काहे ते कि यह कहत सन्ते ईश की परिपूर्णता नहीं होती है अरु ईश जो ब्रह्म है सो अखंड परिपूर्ण एक रस है काहेते कि ईश एक देशी हुइ जातहै ताते ईश ईशै है अरु जीव जीवै है यह सिद्ध जानहु और वादविवाद लौ चले आवत है पर जीव ईशत्व को नहीं प्राप्त होतहै परन्तु ज्ञान भये ते मोक्ष होतहै तहां (श्रीरामोपनिषद् प्रमाणहै) ३ जीव माया ईश्वरास्त्वेत्रय तत्ता नादयोऽखण्डा श्चैक रसाः सर्वे देवता इति श्रुतिः ॥१॥ तब अद्वैतवादी बोल्यो कि हम तुम ते प्रश्न करतेहैं तुम ईश को अर्थ का करते हो तब उन कहा कि हम यह अर्थ करत हैं कि तुमने दण्डान्वय करिके अर्थ कीनहै अरु हम अखण्डान्वय करिके अर्थ करतेहैं

तहाँ माया ईश न आप काहँ जानि त्यहिको जीव कहौ जो माया को ईश ईश्वर है
ताको ताहौ जानते हैं आपहीं को ईश्वर जानतेहैं ताको जीव कहौ माया ईश
के जो हैं बद्ध मोक्ष कर प्रद कहौ दाता है अरु माया प्रेरकहै अस सबै पर है
अरु सौक कहौ सब कर मर्याद है ईश्वर है तहाँ वादी पुनि बोल्यो कि तुम कहा कि
माया को ईश न जाने ताको जीव कहौ सो हम पूँछते हैं कि जब मायाके ईशको
जान्यो तब कहौ जो ईश को जाने तो जीव को ईश कहौ सो हमार मत
सिद्ध होतहै ताते तुम दूसरा काहे को देतहौ अरु जो कहौ कि ईश को
जानै तो जो जीव ईश रहतहै तो यामे विवाद तो व्याघात ह्वै जातहै काहे
ते कि ईश को जाने तौ जीव कहौ अरु न जाने तो जीव कहौ अरु तुम
जो कहौ कि एक बद्ध जीव है अरु एक मुमुक्षहै एक मुक्तहै एक कैवल्य है
एक नित्यहै तहाँ ईश को जानेते बद्ध मुमुक्ष मुक्त मुक्त कैवल्य कैवल्य
नित्य होतहै किन्तु ईश को जानते बद्ध नित्य जीव होतहै अरु बद्ध
जीव न जाने ते होत है तहाँ तो श्री लक्ष्मण जी केवल जीव ईश कर
प्रश्न कीन्हे अरु बद्ध मोक्ष कर इहाँ कछु प्रयोजनै नहीहै तब उत्तर
न आयो तहाँ कोई मतवादी पुनि बोल्यो कि हम कहतेहैं कि माया ईश न
आप कह जानि न माया को स्वरूप जानै अरु न ईश का स्वरूप जानै
अरु न आपन स्वरूप जाने ताको जीव कहौ तहाँ वादी कहैहैं कि यह
भी नहीं बनैहै काहेते कि जो तीनिउ को जाने तब का कहैंगे सो तो वही
आयेहै तब उसको उत्तर न आयो तब चुप ह्वै रह्यो है तब द्वैतवादी बोल्यो

वादी इम कहते हैं कि माया ईश न आप कहं जानि चाहिए सो जीव माया
ईश कहं अरु आप कहं जीव जाने है लछमण यह हम तुमसे कहा
जीव आप कहं जीव जानि अरु ईश कहं ईश जानि माया न जानि पुनि
वादी बोल्यो कि तुम कहा माया न जाने तहां जो पदार्थ नहीं ताको निषेध
का करना अरु जो माया नहीं है तो बद्ध मोक्ष प्रद क्यों कहा अरु जो माया
नहीं तो प्रेरैगो किसको इससे उत्तर नहीं आयो पुनि द्वैत मत वादी बोल्यो
कि हम कहते हैं कि माया ईश न आप कहं जानि माया कर ईश न आप
कहं जानि तब जीव ईश द्वैत है अरु माया ईश अपने स्वरूप कहं जानै
तब अद्वैत है यह अनादि है तब वादी बोल्यो कि यह कौन कहना है
कि दुइ को मत लैके एक मत सिद्धि करना यह भी नहीं बनै है
तहां हे श्री लछमण जू अपने अपने देश में सबको मत सिद्धि
है कैसे जैसे एक सोना है तिसको काहू कुण्डल करिके पहिरो
है अरु काहू कंकण करिके पहिरो है अरु काहू मुकुट करिके पहिरो
है काहू मे मोती रत्न जड़े हैं अरु काहू मे केवल रत्न जड़े हैं अरु काहू
मे केवल सुवर्णही है पर सब सोना है इसी प्रकार सबको मत तत्व एकही है
पर मिलके एक नहीं होइहै तातें हे तात ऐसे मत वादी हैं (प्रमाण श्री मन्म-
हा रामायणे पार्वत्युवाच श्लोकः) केचिद्दास सखा केचित्केचिद्ब्र
ह्म वदन्तिहि॥ किं स्वरूपस्य जीवस्य स्वामिन् कथय विस्तरात्
॥१॥ (श्री शिवोवाच) राम रूपस्य तेजोयं जीवो वेदः प्रमा-

षितस॥ भेदो मत्तस्य सर्वेषा माचार्याणां वदामिते॥२॥ दास म
ये भि जानन्ति तेष्मां दास इति स्मृतः॥ ये जानन्ति सखा तु
त्वं सखा वच्च यथोदितः॥३॥ ये पश्यन्ति मुखो भाव स
खित्वं प्राप्नुवन्तिते॥ ब्रह्मात्मकं च ये जीव तेषां ब्रह्म
इति स्मृतः॥४॥ श्रीरामं येच हित्वा खलु मति निरता
ब्रह्म त्वन्यद्वदन्ति॥ ते मूढा नास्तिकास्ते मम गुणरहि
ताः सर्व बुद्ध्यातिरिक्ताः॥ पापीष्ठा धर्म हीना गुरुजन
विमुखा वेद शास्त्र विरुद्धा स्ते हित्वा गांग मंभो रवि
किरण जले पातु मिच्छन्ति त्रस्ताः॥५॥ अब अपने प्रश्नको
दूसर अर्थ सुनो यामे एक देश लेके सब को मत एक जगह सिद्ध
होतहै माया ईश न आप कहे जानि कहिय सो जीव माया ईश न
आपकहु जानै तातै है तात तुम आपहिं को जानो जीव मायाको ईश
नहीं है अरु ईश माया को ईश है ईश बद्ध मोक्ष दातोप्रेरक है सबके परे
है अरु सबको मर्यादाहै अरु जीव मे येतो सामर्थ्य नही है इतना जीव ईश ते
भेद है हे लक्ष्मण देखो तो मै माया को ईशहों अरु तुम माया केईश नही हो
अरु हमारी तुम्हारी सकल एकही है तीते ईश्वर जीव में सकल कही रूप तत्व
को भेद है अरु सर्वज्ञ अल्पज्ञ सामर्थ्य असामर्थ्य में भेदहै काहेते कि हे
तात तुम निर्मल जीव ते अरु ईश्वर ते सकल कर भेद पूंछेउ है तहां हे तात
शोक मोह भ्रम तुम्हारो सब प्रकार ते जाइ रह्यो है तातै तुम्हारे समान
निर्मल जीव अरु मेरे चरणार विंद रति दूसर नहीं है पर तुम माया ईश नहीं
हो अरु मैं माया ईशहीं इतना भेदहै तहां सब मत वादौन को मत एक देश लै
के सिद्ध भयो तहां अद्वैत वादी बोल्यो कि हमारे मत सिद्ध भयो काहेते कि

रामचन्द्र परमेश्वर निज मुखते कहते हैं कि जीव ईश्वर को सकल अभेद है
पुनि विशिष्टा द्वैत वादी बोल्यो कि हमारो मत सिद्ध भयो है काहेते कि
श्री रामचन्द्र जी निज मुख ते कहा है कि जीव माया ईश नहीं है ताते जीव
माया ईश्वर त्रय तत्त्व अखण्ड एक रस है अरु नित्य जीव ईश्वर को सकल
तो एकही है यह तो हम भी कहते हैं पुनि द्वैत मत वादी बोल्यो कि हमारो
मत सिद्ध भयो काहेते कि श्रीरामचन्द्र कहा कि जीव माया ईश नहीं है
जो जीव माया कर ईशे नहीं है तो जीव तत्त्व सदा शुद्ध है ताते जीव ईश्वर
द्वै तत्त्व सदा अखण्ड एक रस हैं अरु ईश समर्थ है चाहै सो करै हम तो
यह कहते हैं कि जीव माया न जाने जीव माया को न जाने एक ईश द्वै
तत्त्व है पुनि द्वैताद्वैत वादी बोल्यो कि हमारो मत सिद्ध भयो काहेते कि श्री
रामचन्द्र निज मुख ते कहा कि जीव ईश्वर को सकल एकही ताते अद्वैत
है अरु कहा कि जीव माया को ईश नहीं है ताते द्वैत है यह प्रकरण
राम गीता में है ताते मति के अनुसार हमने कहा है (१)॥

पृष्ठ (८४५) चौ०॥ ताते अब लगि रहिउँ कुमारी॥
मन माना कछु तुमहिं निहारी॥४॥ तहाँ जब तीनिउँ लोक
विषै मेरे अनुरूप पुरुष न ठहरेउ ताते अब ताईं कुमारि रहिउँ हौं तुमको देखि
के कछु मन माना है ताते तुम मोर विवाह करौ देखिये तो राक्षसी
कैसा मिथ्या युक्ति बनाय के कहती है तामसी बुद्धि परमेश्वर ते कुल
कारिके वार्त्तालाप करती है पर श्रीरामचन्द्र के संभावणा ते राक्षसी को वा-
णी सत्य ह्वै गई है तहाँ न तौ अनेक ब्रह्माण्ड अरु ईश्वर तत्त्व विषै श्री-
रामचन्द्र के समान उत्तम पुरुष है और जीव तत्त्व को कवनि चली है
अरु ब्रह्माण्ड कोश मे सूर्पणखा की समान दुष्ट स्त्री नहीं है यह साँची

कहेउ है सो आहेउ कि तुम्हारी शोभा देखिके कछु मन मान्यो है यहाँ पर भी सत्य है काहेते कि यहि के द्वारा कार्य लेना है ताते श्रीरामचन्द्र की इच्छाते कछु दुष्ट भाव लिहे विमोहित भई है ताते कछु कहेउ है याही ते द्वापर विषे कुब्जा होइगो तब कछु अनुराग का पूर्ण फल पावैगी (८)

चौ०॥ लोभी यश चह चार गुमानी॥ नभ दुहि दूध चहत जे प्रानी॥२०॥ अरु लोभी ह्वैकै यश को चाहै अरु चार कही चार गमन विषे होत है तहाँ जिनको मन चलायमान चञ्चल ह्वै रह्यो है ते गुमानी कही उत्तम गति को प्राप्त होवा चाहैं तो नहीं ह्वै सकै हैं किन्तु चार कही सुष्ठाचरण (भक्ता आचरण) अरु गुमानी कही अशास्त्र कल्पित गति करै तो सुष्ठाचरण नहीं होइहै तहाँ जो नभके दुहेते दूध निकसै तो यहि प्राणिन को यह पदार्थ प्राप्त होय तहाँ नतो नभ विषे दूध है अरु ना इन प्राणिन को यह वस्तु की प्राप्ति है॥१०॥

चौ० पुनि फिरि राम निकट सो आई॥ प्रभु लक्ष्मण पहँ बहुरि पठाई॥११॥ ताते हे सुन्दरी हमारे सम्बन्ध ते ताक क्लेश है ताते उ-नहीं के पास जाउ तब पुनि श्रीरामचन्द्र के समीप जाती भई है तब श्री-रामचन्द्र फिरि कहाकि उनही के पास जाहु वे तेरी परीक्षा लेते हैं यह नीति है कि पुरुष अपने विषे कन्या कै दृढ प्रीति करिकै तब अंगीकार करत है तहाँ कोई रीति से ताको लक्ष्मण जी अंगीकार करिहैंगे तब लक्ष्मण जी के पास जाती भई॥११॥

चौ०॥ सीतहिं सभय देखि रघुराई कहा अनुज सन सैन बुझाई॥(१४) तब श्री जानकी जी को सभय देखिकै श्री-रामचन्द्र लक्ष्मण के समीप कहि यत्न ते फेरि पठयो है अरु अनुज ते सैन बुझाइ के कहा कौनि सैन लक्ष्मण जी ले बुझायो है तहाँ तर्जनी अँगुली को आकाश विषे घुमाय दीन है याम का अभिप्राय है

कि आकाश को नाम नाक काटि लेहु अरु तहाँ आकाश तत्वकी
इन्द्रिय कान है अरु तेहिं को देवता दिशा है ताते नाक कान
काटि लेहु संज्ञा जनाइ दीन तर्जनी नभमें उठाये ते नाक ग
नब घुमाये ते दिशा देवता के इन्द्रिय कान जानब इहाँ संज्ञा-
लंकार है तहाँ ॥दोहा॥ शूर्पणखा गइ राम पहँ अति भय बेष बनाइ
॥रामचन्द्र लखि अनुज दिशि तर्जनि गगन घुमाइ॥ पुनिनखासपमाना
॥वेदनाम कहि अँगुरिन चितै अकास॥ शूर्पणखै प्रभु पठई लक्ष्मण
पास॥ वेद कही श्रुति कान अरु आकास नाक (२४)
प्रष्ठ (८५३)॥चौ०॥ धुँआ देखि खर दूषण केरा॥ जाय
शूर्पणखा रावण प्रेरा॥५॥ तब खर दूषण आदिक वीर जे
दग्ध भये तिनकर धुँआ देख कर कि ये तो सब जरि मरि गये तब
शूर्पणखा रावण के यहाँ जाय के पुकारती भई किन्तु धुँआ जस बूते
गये सो देख कै प्रेरे कहो रावण को पठवा चाहति है॥५॥
प्रष्ठ (८५६)॥चौ०॥ लक्ष्मणहुँ यह मर्म न जाना॥ जो कछु
चरित रचा भगवाना॥५॥ हे पार्वती यह मर्म श्री लक्ष्मणहू
ने नही जाना जो कछु चरित श्री रामचन्द्र कीनहे तहाँ जो
कोई कहे कि लक्ष्मण जू जो यह चरित नही जाना तो कविन
कैसे जाना है तहाँ कविन के हृदय में श्री रामचन्द्र अपनी कृपा
ते जनाइ दीनहे अरु लक्ष्मण जी को यहि ते नही जनावा है कि
यह चरित जानैंगे तो श्री जानकी जी विषे इनकी जो प्रीति
आसक्तता जाती रहेगी यह जानैंगे कि जानकी जी तो अग्निमें वास
कर गई यह तो सब श्री राम जी माया है ताते नही जनावा॥५॥
चौ०॥ भय दायक खल को प्रिय बानी॥ जिमि अकाल के
सुमन भवानी॥८॥ हे पार्वती खल के वाणी विशेष भय दायक है

जैसे आकाश के फूल तहाँ आकाश मे फूल होत नहीं हैं तैसे खलन को बाणी हितकार नहीं है केवल क्षोभ है किन्तु आकाश के तारा जे तारा टूटते हैं किन्तु जो राहु केतु उदय होतेहैं सो सबहीं को भय दायक हैं तैसे खल की बाणी है अरु कहूँ अकाल के कुसुम पाठ है सो अर्थ अच्छा नहीं है॥८॥

पृष्ठ (८५८) चौ०॥ शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी॥ वैद्य बंदि कवि भानस गुनी॥४॥ सो नव कौन कौन हैं जे शस्त्र बाँधे है १ अरु मर्मी कही अपनो गुप्त लक्षण इत्यादिक जो धर्म जान किन्तु मर्मी कही कपट घाती २ अरु जो अपनो प्रभु हैं ३ अरु शठ जे हैं ४ अरु धनी कही धनवान् जे हैं ५ अरु वैद्य जे हैं ६ अरु बन्दी कही भाट जे हैं ७ अरु कवि जे हैं ८ अरु कोविद कही पण्डित गुणवान् जे हैं ९ इन नव ते विरोध किये ते हानि है काहे ते शस्त्री शस्त्र ते मारते हैं मर्मी जो अपना गुप्त नही कहिबे मे योग्य सो कहि देइ अपना प्रभु देश ते निकासि देइ जड़ मूर्ख इकान्त पाइ के मारै विष देइ आगि लगाइ देइ धनवान् द्रव्य करिके जो चाहे सो करै वैद्य कछु कुपथ्य करि देइ बन्दी भाट निन्दा करत फिरै कवि अगण डारिके श्लोक कवित्त मे खराब करै पण्डित प्रयोग करै किन्तु सबको अपने गुण ते परास्त करै याते इन नव ते विरोध अवश्य न करो देश काल अवसर विचारि कै आपन कार्य करै याते रावण एक तो त्रैलोक्य को राजा अरु शस्त्र धारी अरु धनी अरु पण्डित अरु कवि वेद पर तिलक कियो है अरु वैद्यक पढ़ अरु बन्दी सबके निन्दा करै अरु सब मर्म जानत है अरु शठ है तहाँ रावण नवो गुण युक्त है तात अब जो मैं कछु कहौं तो मोर वध करैगो अरु जो मृग होउँ गो तो श्रीरामचन्द्र मोर वध करैंगे॥४॥

पृष्ठ (८६०) चौ०॥ सत्य सन्ध प्रभु वध करि येही॥ आनहु चर्म कहति वैदेही॥(५)॥ हे पार्वती वैदेही कहती हैं हे प्रभु सत्य सन्ध कही सत्य संकल्प यहि को बधि कै चर्म आनि के देहु सत्य सन्ध जो

श्रीजानकी जी कहाहै तामे यह ध्वनिहै कि मोर निज स्वरूप आपि को सौं-
प्यहुहै अरु मैं त्यहि स्वरूप को प्रतिबिम्ब माया हौं ताते मोर ग्रहण जो
पूर्व जानकी स्वरूप मे रहै तैसे याहि नित्य एक रस स्वरूप को ग्रहण बना
रहै त्याग न होइ जो मैं आपसे निवेदन करतीहौं सो सब क्षमा करिके समी-
प लव मात्र को न छूटे आप सत्य सन्ध हो पुनि लीला उपरान्त दोऊ स्व-
रूप एक ह्वै रहैं यह अर्थ सम्बन्ध सिद्ध है ॥(५)॥ चौ०॥ लक्ष्मण कर
प्रथमहि लै नामा॥ पाछे सुमिरेसि मन महँ रामा॥
(१५)॥ प्रथमहिं श्री लक्ष्मण जी को नाम पुकारत भयो पुनि श्री रामचन्द्र
को नाम अन्तःकरण मे सुमिरत भयो मारीच ने प्रथम लक्ष्मण जी को
नाम को उच्चारण कियो तहाँ लक्ष्मण जू सर्व जीवन के आचार्य
हैं प्रथम बिना आचार्य्य की शरण भये परमेश्वर नहीं जीव को
ग्रहण करैहै ताते प्रथम श्री लक्ष्मणजी की शरणागत भयो तब श्री
रामचन्द्र परम पद दीन्ह किन्तु श्री रामचन्द्र इच्छा ते इहाँ ऐसे सब
कारण हैं कि लक्ष्मण इहाँ आवहिं (१५)
पृष्ठ (२६२) चौ०॥ भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई॥ सप-
नेहु संकट परै कि सोई॥४॥ जिन श्रीरामचन्द्र की भृकुटी के
विलाससे अनेक ब्रह्माण्ड उत्पति पालन प्रलय होतेहैं ते श्रीरामचन्द्र
सब जीवन के संकट के हरैया तिनको स्वप्नेहुँ संकट नहीहै॥४॥
चौ०॥ मर्म वचन सीता तब बोली हरि प्रेरित लक्ष्मण
मति डोली॥५॥ तब श्री जानकी जी लक्ष्मण जी को मर्म वचन
कहती भई काहेते माया रूपहैं अरु चरित्र कौन चाहती हैं ताते
लक्ष्मण जी से यह मर्म कहा कि तुम्हारे मनमें हमारे लेवेकी
इच्छा है तब श्री रामचन्द्र की इच्छा ते लक्ष्मण जी की मति फिरि-
गई श्री रघुनाथ जी की यों का इच्छा है॥५॥

ेज चौ०॥ इमि कुपन्थ पग धरत खगेशा रहत न बुद्धि लव लेशा॥१७॥ अक्षरार्थै॥

चौ० नाना विधि कहि कथा सुनाई राज नीति भय प्रीति देखाई॥(१८) तहाँ रावण श्री जानकी जी से नाना विधि की कथा सुनावत भयो, तहाँ यह अभिप्राय है कि रावण ने जो यती का वेष कीन है सो यती को धर्म भिक्षा मांगना है ताते रावण श्री जानकी जी से यह भिक्षा मनमे मागत है कि मेरी तामसी देह है मोसे कछु ऊपर ते कहत करत नही बनत है सो आप क्षमा करब मैं केवल मनते आप की शरण हूँ अस कहिकै राजनीति भय प्रीति कहि२ देखावत भयो॥१९॥

चौ०॥ सुनत वचन दश शीश लजाना॥ मन महँ चरण वंदि सुख माना॥१६॥ यह श्री जानकी जी का बचन सुनिकै ऊपर ते बहुत रिसात भयो और अन्तःकरण में श्री जानकी जी के चरण वंदि कै हृदय मे धरिकै अति सुख को प्राप्त भयो मनमे यह कहत भयो कि हे मातु मैं यह चाहत हौं कि श्री रामचन्द्र के हाँथ ते शीघ्र मोर काल होइ॥

(२६) दो०॥ क्रोधवन्त तब रावण लीन्हसि रथ बैठाय॥ चला गगन पथ आतुर भय रथ हाँकि न जाय॥२१॥

हे गरुड तब रावण क्रोधवन्त है कै जामे श्री जानकी जी को छुइन जाय ताते जहाँ तक श्री लक्ष्मण जू धनुष के कोश ते श्री जानकी जी के रक्षा हेतु रेख खचाइ गये थे सो रेखा भरि पृथ्वी उखारि लियो काहे ते यामे बहुत हेतु है मुख्य तो यह है कि श्री जानकी जी की माता पृथ्वी है जाते माता की गोद मे सदा बैठी रहैं ताते कुश देकै आसन भरि पृथ्वी उखारिकै रथ पर बैठावत भयो लंका को लै चलत भयो आतुर नभ पंथ विषे

भय ते रथ नही हाँकि जायहे तहाँ कोई कहते हैं कि माया रूप श्री जानकीजी लंका को नही गई साक्षात गई है जो माया रूप जानकी लंका को जायँ तो सम्पूर्ण लीला अरु श्री रामचन्द्र मोहमयी है जायँ तातें साक्षात गई है अरु लक्ष्मण को अपमान कीन्हे है ताते भागवत अपराध भयो है ताते लंका को गई है तहाँ पर इनो कहना नही बनत है काहे तें कि रावण ने केवल अपने मुक्ति हेतु उपाय कीन है तहाँ श्री रामचन्द्र केवल विद्या माया करिकै जीवन को मोक्ष देते हैं तहाँ अविद्या माया श्री जानकी का प्रति विम्ब है सो लंका को रावण लै गयो है अरु साक्षात श्री जानकी जी को लै जावेको अधिकारी रावण नही है यह धुव जानव साक्षात श्री जानकी जी के प्राप्ति के अधिकारी श्री जनक जी व दशरथ हैं अरु जेहि जीव को विद्या माया भई तेहि को तो श्रीरामचन्द्र आपही चलिके मोक्ष देत हैं किन्तु जहाँ वे हैं तहाँहि स्वभाविक मोक्ष देते हैं काहे ते विद्या माया आत्मा के गुण है अरु श्री जानकी जी अरु श्री रामचन्द्र एक भिन्न नही होते हैं देखिये तो सती के मोह के प्रसंग मे श्रीजानकी जी को खोजते है पुनि शृंगार भाँति श्री जानकी जी संयुक्त सती को दर्शन दीन है पुनि आपनी परम दिव्य लीला ते श्री जानकी जी को अपने विषे अन्तरध्यान करि लीन है पुनि वरे लीला करने लगे तहाँ सब लीला स्वरूप सत्य नित्य ब्रह्म मय जानिये अरु जो कोई कहै कि श्री जानकी जी भागवत अपराध ते लंका को गई है तहाँ श्री जानकी जी के लक्ष्मण जी शिष्य तहाँ गुरु आपनी रक्षा के कर्तव्य विषे शिष्य को शिक्षा हेतु तिरस्कार करै तो अपराध कहाँ है यह सब श्रीराम इच्छा अभीष्ट है जो चाहै सो करैं तब रावण रथ पै बैठाय कै लै चलत भयो

तहाँ माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी को श्री जानकी जी को रावण हर्यो है मत अग्निवेश रामायण को अरु कोई मुनीश्वर के मत में चैत्र शुक्ल अ-ष्टमी को होउ है तहाँ प्रमाण (कूटश्लोकः) अर्द्ध रात्रौ दिनस्यार्धे अर्द्ध-चन्द्रेऽर्द्ध भास्करे॥ रावणो न हृता सीता शुक्ल पक्षे सिताष्टमी॥१॥ तहाँ पितृन को एक मास को दिन रात्रि होत है तहाँ अमावस २ महीना कोई माने मानत है तहाँ मनुष्यन को कृष्ण पक्ष सो पितृन को एक दिवस होत है अरु शुक्ल पक्ष रात्री होति है ताते अष्टमी पितृन को अर्द्ध रात्रि है अरु देवतन को षट् मास दिवस रात्रि होति है तहाँ कर्क संक्रान्ति ते लैके धन की संक्रान्ति ताईं रवि दक्षिणायन सो रात्रि होति है अरु मकर की संक्रान्ति ते लैके मिथुन की संक्रान्ति ताईं रवि उत्तरायण सो दिवस होत है तहाँ चैत्र शुक्लाष्टमी मीन की संक्रान्ति ताईं देवतन को मध्यः दिवस होत है तहाँ आठौं चन्द्रमा अरु मध्याह्न में सूर्य्य अरु पितृन की कृष्णाष्टमी अरु नरन की शुक्लाष्टमी ब्रह्म नाम मुहूर्त विषै श्री जानकी जी लंका विषै गईं तहाँ माघ शुक्लाष्टमी अरु चैत्र शुक्लाष्टमी तहाँ मास घटै बढ़ै है मुनि को एक हीं मत है किधौं कल्प भेद है (१)

पृष्ठ (८६४) चौ०॥ हा लक्ष्मण तुम्हार नहि दोषा॥ सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा॥ (२) हा लक्ष्मण जी तुम्हार कछु दोष नही है मैं जो तुम्हार तिरस्कार अरु रोष कीन्ह तेहि कर फल पायो है इहाँ जो एह कहिये कि केवल लक्ष्मण के तिरस्कार हीं को फल है तौ रघुनाथ जू की दीन दयालुता करुणा निधानता मे दूषण होइ गो काहेते कि श्री रघुनाथ जी को भी कहा है कि मोरे ऊपर दया कों वि-

सारि दियो है अरु पूर्वहीं श्री रघुनाथ जी श्री जानकी जी से
यह सब चरित्र कहा है ताते लक्ष्मण के तिरस्कार को सिद्धान्त
इहां नहीं है यह विरह की दशा है विना विलाप किहे विरह नहीं
सिद्ध होत है ॥३॥

पृष्ठ (२६७) चौ०॥ खंजन शुक कपोत मृग मीना
मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥१०॥ इहां उपमेय लुप्ता-
लंकार जानब श्री रामचन्द्र विरह संयुक्त कहते हैं कि हे जनक नन्दिनी
खंजन नयनी शुक नासिका कपोत ग्रीव मृग नयनी यही दीर्घ नेत्र
अरु मीन कहो चपलता पुनि खंजनि कों फिरकनि अरु मधुप
की अवाले इव भृकुटी अरु अलक हैं कोकिला को ऐसा बोल
ऐसी तुम प्रवीण ॥(१०)॥

चौ०॥ कुन्द कली दाड़िम दामिनी कमल शरद शशि
अहि भामिनी ॥(११)॥ अरु कुन्द के फूल की कली ताहि की
उज्वलता अरु दाडिम कहो अनार के बीज की सघनता उज्वलता अरुण
की झलक लिहे दशन ऐसे हैं अरु दामिनी की द्युति को हरत है दशन अरु
देह अरु शरद ऋतु के कमल इव नेत्र हैं अरु शरद को पूर्ण चन्द्र
तद्वत् मुख है अहि की भामिनी नागिनी तद्वत् वेणी बनी है ॥११॥

चौ०॥ वरुण पास मनोज धनु हंसा गज
केहरि निज सुनत प्रशंसा ॥१२॥ अरु वरुण को
पास तद्वत् नेत्र को कटाक्ष किन्तु नाभी अरु मनोज कहो काम
को धनुष इव वंक भृकुटी है हंस इव गवन है किन्तु विवेक है

अरु गजको ऐसी चाल है मंदर अरु केहरि कहो सिंह ऐसो कटि है हे जानकी जी ये सब तेरे अंगर की प्रशंसा कहो स्तुति करते हैं तातें ते सब बहुत प्रसन्न भये हैं अब आपनी प्रशंसा करवे हैं मान लिये ताते तुम शीघ्र प्रगट होहु ॥२२॥

चौ०॥ श्रीफल कनक कदलि हर्षाहीं नेक न शंक सकुच मन माहीं ॥ (१३) अरु श्रीफल कहो बेलको फल तद्वत् लक्ष्मी राग भरे हैं अरु कनक कदली तद्वत् जंघा है हे जानकी जी तेरे वियोग ते ये सब हर्षित भये हैं काहेते तेरे अंग की शोभा के आगे इन की छवि मन्द भई है ताते तेरे गये ते हर्ष को प्राप्त भये हैं इनके नेकहू शंका संकोच मनमे नहीं है यह जाने हैं कि श्री जानकी जी भले गई अब नहीं आवेंगी यह निश्चै कौन है काहेते कि श्री जानकी जी के प्रगट भये ते हमारी शोभा को निरादर होइगो ताते हे प्रिये तेरे गये ते शंका संकोच रहित हैं ॥१३॥

चौ०॥ पृष्ठ (२०१) छं०॥ जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा ॥ पश्यति यं योग इत्यादि ॥

जो तुम्हारा स्वभाव अति निर्मल अगम है अरु सुगम है अरु सम है अरु असम है अरु सदा एक रस शीतल है तहाँ आपने जानिवेको अगम है अरु हे श्री रामचन्द्र तुम्हारी कृपा ते तुम्हारा स्वभाव सुगम जान पड़ता है अरु जीवन को कर्मानुसार फल देवे को तुम्हारा स्वभाव असम कहो विषम है अरु वह फल सम कर देते हो अरु आपनी कृपा स्वभाव ते भक्तों देते हो ताते सम हो अरु असम कहो अपने क्रोध स्वभाव ते मोक्ष देते हो ताते सदा शीतल हो ऐस जो तुम हो तिनको अनेक यत्न करिके

मन इन्द्रियन को वश करिके योगी जन अपने हृदय विषे प्रसन्न करि राखते हैं ॥

पृष्ठ (८७४) चौ०॥ पूजिय विप्र शील गुण हीना। शूद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीना ॥२॥ हे गन्धर्व जो ब्राह्मण शील गुण इत्यादिकन ते हीन होइ तौ भी पूजा करिबे योग्य है अरु जो शूद्र अनेक गुण गण करिके सम्पन्न होइ तौ भी पूजा करिबे योग्य नहीं है तहाँ भेद है जे शूद्र अपनो वर्णाश्रम धर्म लिये हैं ते अपूज्य हैं अरु जे शूद्र वर्णाश्रम छोड़िके श्री भगवच्छरण होय सो पूजनीय हैं अरु जे विप्र भगवत् से विमुख हैं तहाँ पूज्यमान तो हैं पर तोहि विप्र ते भगवद्भक्त श्रेष्ठ हैं तहाँ प्रमाण है (श्लोकः एकः) ये शूद्रा भगवद्भक्तास्ते वै भागवताः स्मृताः॥ सर्व वर्णेषु ते शूद्रा येन भक्ता जनार्दने ॥१॥ (पुनः श्री भागवते एकः श्लोकः) विप्राद् द्विषड् गुण युता दरविन्द नाभा पादार विन्द विमुखा च्छ्वपचो वरिष्ठम् ॥ मन्ये तदर्पित मनो वचने हितार्थः प्राणं पुनातु सकुल नतु भूरि मानः॥२॥ श्री रामचन्द्र कहते हैं कि हे गन्धर्व ब्राह्मण कैसे पूजन करिबे योग्य है जैसे गऊ दुष्टो होइ तौ भी दुही जाती है अरु रासभी कहीं गदही बहुत दुग्ध दात्री शान्ति मती होइ पर दुही नहीं जाइ है तहाँ प्रमाण है (अन्यच्च एकः श्लोकः) पतितोऽपि द्विजः श्रेष्ठो नच शूद्रो जितेन्द्रियः॥ अदुग्धा सुरभी पूज्या न खरी घट दोहना॥३॥

दो०॥ कन्द मूल फल सरस अति दिये राम कहँ आनि॥ प्रेम सहित प्रभु खाय बारहिं बार बखानि॥२॥

पुनि शवरी के हृदय मे यह आवत भयो कि दूनो भाई मग के श्रमते क्षुधित
तृषित हैं यह विचारि के वात्सल्य रस भरि आयो है तहां हे पार्वती
शवरी से जो मतंग मुनि कहि गये हैं कि श्रीराम लक्ष्मण दोउ
भाई यहां आवहिंगे तब शवरी वन से जाइ कै कन्द मूल फल लै
आई है पर फलन को आप अपनो मुख लगाइ के चीखि लेती
रही है जो रसमय अति मधुर२ कन्द मूल फल पावै सो श्रीरघुनाथ
जी के हेतु धरे जाति रहे तहां प्रेम की दशा मे अपने जूठे की खबर
ही नही रही तहां प्रेमा परा भक्ति की यही दशा है तहां पुनि कोई
कहते हैं कि जौंहि वृक्ष को फल एक चाखै अरु मधुर लागै तब
उस फल को डारे देइ अरु उस वृक्ष के फल श्री रघुनाथ जी के
हेतु अमनिया धरि राखे है ऐसेही कन्द मूल फल धरे है तहां
याहि को तौ कर्म मिश्रा भक्ति कहो तामे यह सामान्य अर्थ है
अरु यह कहत सन्त प्रेम की दशा मे विरोध आवै है काहेतें
जो चीखवे की पेड़ को असमनिया फल धरि राख्यो है तहां असतो
हमी पच करते हैं याम शवरी के प्रेम की अधिकता का भई कछु
न भई ताते जूठही मे प्रेम को लक्षण होतो है अरु शवरी तौ गुरुन
की कृपा ते अरु श्री राम चन्द्र के कृपा ते केवल शुद्ध प्रेमाकार उत्तम
भक्ति को प्राप्ति भई है ताते मधुर फल जूठ धरि राखवे है काहेते श-
वरी जो फल चीखे ताही को ज्ञान रहा है ताते कन्द मूल फल
सोई श्री राम चन्द्र के आगे दोनन भरि२ धरत भई है तौहू फल को
श्रीराम चन्द्र श्री लक्ष्मण जी बार२ बखान करि खाते हैं अरु शवरी
अपने हाथन ते दिये जाती है तहां श्रीरामचन्द्र श्री लक्ष्मण जी

ते सरते हैं कि हे भाई ऐसो स्वादु तिरस्कारन के आठ जनके आस
दशरथ के यहां न मिले हैं न खाये हैं तब श्री रामचन्द्र शबरी की
दशा देखि के कहते हैं कि हे शबरी ये जो कटे फल हैं सो तुमिन
पक्षिन की चोच लगी है जो अमृत मय ह्वै गये हैं अति मधुर प्रिय
लगते हैं तहां कोई श्री मट्ठामायरा मे कोई साधुक (चौपाई) ये फल
किन पाक्षिन के खाये अति प्रिय लाग न जात बखाने
(पुनि श्री सूर सागरोक्त पद) कवन कवन गुरा बरनौं
श्याम तिहारे। शबरी के फल जूठे खाये गुरा अवगुरा
न विचारे॥ तब शबरी को सुधि आई कि ये सम्पूर्ण कन्द मूल
फल मेरे दांतन के लागते कटे हैं मेरे जूठे हैं हाय २ सो मैं स्वामी
को खवाये हैं इतना मनमे आवत सन्ते कम्प भाव को प्राप्त भई
है अति विरह प्रेमाकुल ह्वैकै शरीर को त्यागा चहाते है तब श्री
रामचन्द्र धैर्य देते हैं यहां प्रेमा परा मिश्रित भक्ति है (२)
पृष्ठ (८७६) चौ०॥ पारो जोरि आगे भै ठाढी प्रभुहि
विलोकि प्रीति अति बाढ़ी ॥१॥ हे शबरी चिन्ता न कर मो
को केवल प्रेम प्रिय है मै केवल भाव को भूखा हौं जो कदाचित मो
का बिगर जाने प्रेम ते देखै भोग लगावै ताको मै बड़ी प्रीति ते
पावत हौं अरु अपने दास को वहे प्रसाद अमृत कर देत हौं यह
अनेक जगह शास्त्र मे प्रमाण है अरु तू काहे विषय चित्त कै वृत्ति
लगाइ कै मोर नाम अहर्निशि प्रेम समेत जपै है. ताते तोर मुख परम
अमृत को भाजन होत भयो है ताते तोर दशन के काटे फल अमृ-
तहूं ते अधिक स्वाद को प्राप्त भये (श्लोकः) ज्ञाने नन्दध्यान वि

श्रीसरस्वती पुस्तक भण्डार

राग योग नेच क्रिया भिर्नतपो भिरुग्रैः॥ प्राप्त न्नमावैहि च कोटि यत्नैः सर्वात्मकं प्रेम सुसूत्र बद्धम्॥१॥
तब शबरी धैर्य धारिकै उठिकै दूनो कर सम्पुट कीरिकै श्रीरामचन्द्र को अति मधुर स्वरूप देखिकै नेत्रन के पुट भरि२ पान करती है जैसे श्रीरामचन्द्र जू शबरी के फल खात२ नही अघाते हैं तैसे शबरी श्री राम रूप को नेत्रन द्वार अति अनुराग ते पान करती नही अघाती है॥(२)
चौ०॥ केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी अधम जाति मैं जड़ मति भारी॥२॥ तब धैर्य्य धरिकै शबरी अपनो नीचानुसन्धान कार्पण्य शरणागत अरु आत्म समर्पण जामें सब शरणागत हैं तहाँ सब मिश्रित प्रेम ते सानी वाणी बोलती भईहै हे श्रीरामचन्द्र अधम उधारण पतित पावन दीन दयाल करुणानिधान अशरण शरण तुमहो तातें मैं तुम्हारी स्तुति केहि विधि ते करौं सकती मोरि अधम जाति अरु जड़ मति ऐसो मैंहौं॥(२)
चौ० भक्ति हीन नर सोहै कैसे॥ विनु जल वारिद देखिय जैसे॥(६) पर मेरी भक्ति ते जो नर हीन होय सो यद्यपि सब गुण करिकै पूर्ण है पर कछु नहीहै कैसे जैसे विना जलको मेघहै पुनि जैसे दिवस मे चन्द्रमा पुनि जैसे विना लोन के व्यंजन पुनि जैसे विना जल की नदी इत्यादिक जैसे तैसे विना रामभक्ति मनुष्य अशोभित कोई होइ तहाँ प्रमाण है (श्री मद्भागवतस्कः
श्लोकः) विप्राद् द्विषड् गुण युता दरविन्द नाभ पादार विन्द विमुखा च्छ्वपचं वरिष्ठम्॥ मन्ये तदर्पित मनो वचने हितार्थ प्राणं पुनाति सकुलं न तु भूरि मानः॥(१)॥

तहाँ बारह गुण ब्राह्मण मे स्वाभाविक रहते हैं ताको कहते हैं ॥
जाति पाति कुल धर्म बड़ाई॥ इत्यादिक करिकै उत्तम होइ याको प्रथम
गुण कही १ अहंकार मन बुद्धि चित्त सम होइ २ अरु नेम होइ जो नेम
करै तामे प्रत्यवाय विघ्न हो ३ अरु यम अल्प भोजन निद्रा को जीते ४
अरु इन्द्रिय दमन होइ ५ तपस्वी होइ ६ आचार धर्म मे आरूढ होइ ७
अरु शान्त मन होइ द्वन्द्व धर्म आवत सन्ते क्षमा करि जाइ ८ आर्जव
कही दयावान होइ दीन को देखिकै हृदय ते द्रवि उठै तहाँ आर्जव
तेज को भी कहते हैं ताते तेजस्वी होइ सब कोई देखिकै डरै स्वा-
भाविक डरिकै अपने कल्यान हेतु प्रीति करै ९ अरु ज्ञानी होइ
तहाँ ज्ञान दुइ प्रकार कर एक शास्त्र जन्य ज्ञान अरु एक आत्म
ज्ञान आत्मा अनात्मा कर स्वरूप जाने सत्य असत्य जाने आ-
त्मा को सत्य जाने अनात्मा को असत्य जाने अच्छी प्रकार ते
जानिकै सत्य मे आरूढ होइ अरु असत्य को त्याग होइ तहाँ
जो प्रवृत्ति मे होइ तो फल को त्याग करै अरु जो निवृत्ति मे
होइ तौ स्वरूप को त्याग करै ऐसी दशा मे आरूढ होइ ताको
ज्ञान कही १० पुनि विज्ञान कही विशेष ज्ञान कहो दुखसुख विषे
सम होइ स्थिति रहै अरु कञ्चन माटी इत्यादिक को लोष्ठ इव
त्याग करै जैसे चौका देकै लोभी फेंकि देते हैं पुनि नहीं
मन चलै है अरु प्रिय अप्रिय सम होइ अरु निन्दा स्तुति मे
धीर होइ हर्ष शोक न आवै अरु मानापमान तुल्य होइ यह
समुझिकै कि अपमान तो अनात्मा को धर्म है अरु मान
आत्मा को धर्म है यह दूनो समुझिकै तब मानापमान तुल्य रहै

अरु शिव और तुल्य होइ ऐसा गुणातीत विज्ञान होइ किन्तु जीव
ब्रह्म की एकता मानिकै ब्रह्मास्मि वृत्ति ताको विज्ञान कहो ११
अरु ब्राह्मण आस्तिमान होइ जाको शाप आशीर्वाद फलै १२
एते द्वादश गुण करिकै ब्राह्मण युक्त होइ अरु श्रीरामचन्द्र की
भक्ति ते विमुख होइ तेहिं ते स्वपच श्रेष्ठ है पर ज्वइ स्वपच
मन वचन कर्म करिकै परमेश्वर विषै आत्म समर्पण कीन्हे है
तहाँ सो सर्वोपाय शून्य भक्ति है ते श्रेष्ठ हैं कोई होइ तहाँ जो
कोई कहै कि ब्राह्मण के बारहों गुण का भगवत सम्बधी
नही है तहाँ नही काहेते इन गुणान में अहं कर्ता माने है श्री
रामाश्रय नहीहै कर्म ज्ञान मय है ताते भक्ति अरु स्वपच के
सर्व धर्म को त्यागे केवल अनन्य भक्ति भई है ताते श्रेष्ठ कहाहै
काहेते भगवत को अनन्य भक्ति बहुत प्रिय है काहु मे होइ
(प्रमाणं श्री भगवत गीतायां श्लोकार्द्धम) सर्व धर्मान्परि-
त्यज मामेकं शरणं व्रज॥ काहेते सर्व जीव श्री रामचन्द्र के
हैं अरु वर्णाश्रम धर्म एतो गुण मय हैं अरु अनन्य उपासक
गुणातीत हैं (तत्र प्रमाणं श्री महा रामायणे एकः श्लोकः)
न विधि नं निषेधश्च श्री राम विरहान्वितः इन्द्रिया-
णाम् भावः स्यात्सोऽनन्यो पासकः स्मृतः॥१॥ (६)
पृष्ठ (२७८) चौ०॥ मम दर्शन फल परम अनूपा॥
जीव पाव निज सहज स्वरूपा॥ टी॥ हे भामिनि मेरे
दर्शन कर फल परम अनूपम स्वाभाविकहि जीव अपने सहज
स्वरूप को प्राप्त होते हैं यहाँ दर्शन साधन फल भयो अरु जीव को
सहज स्वरूप की प्राप्ति सो सफला भयो ताते यह सिद्ध है पुनि
अन्वय ते अर्थ सिद्धि करते हैं मम दर्शन कर फल परम अनूप

है पर जब जीव अपने स्वरूप को सत्संग करिके प्राप्त होइ तब मोर
दर्शन अनूप होइ। पुनि तीसरा अर्थ तहाँ जीव का सहज स्वरूप श्रीराम
चन्द्र हैं काहेते जीव रूप है अरु रामचन्द्र रूपी हैं जैसे सूर्य आप रूपी है
अरु रूपी को प्रकाश सूर्य को सहज स्वरूप है जैसे सूर्य ही के प्रकाशते
सूर्य देख परते हैं तैसे श्री रामचन्द्र जी रूपी हैं अरु जीव श्री रामचन्द्र को स-
हज स्वरूप है ताते जब जीव अपने निज स्वरूप को योग ज्ञान भक्ती क-
रिके प्राप्त होइ तब वाको दिव्य दृष्टि होती है तब श्री राम चन्द्र के द-
र्शन का अनूप फल ताहि को प्राप्त होत है जब यह जीव को श्रीराम
चन्द्र को दर्शन भयो तब सम्पूर्ण विकार जीव के मिटि गये तब जीव
शुद्ध सहज स्वरूप रामरूप ताको प्राप्त भयो तब वाको श्रीरामचन्द्र के
स्वरूप फल प्राप्त होत है तहाँ दर्शन साधन भयो प्राप्त फल भयो ताते
मोर दर्शन जीव को परम अनूप है अरु जीव को सहज स्वरूप जो मैं हूँ
सो मोरि प्राप्ति परम अनूप फल है यहाँ साधन सिद्धि एक ही है जैसे कर-
ह को फूल फल एक ही है तहाँ प्रमाण (श्री मन्महा रामायणे पार्व-
त्युवाच श्लोका:) केचिद्दासं सखायंच केचिद् ब्रह्म व-
दन्तिहि॥ किं स्वरूपोऽस्य जीवस्य स्वामिन्कथय वि-
स्तरात्॥२॥ (श्री शिवोवाच) राम रूपस्य तेजोऽयं जीवो
वेद प्रभाषितम॥ भेदं मतस्य सर्वेषां भाषायां शृणु व-
रानने॥२॥ दास वद्योऽभि जानाति तेषां दास इति स्मृतः
॥३॥
॥सखि वद्योभि जानाति सखित्वं यान्ति ते जना:॥३॥
ये पश्यन्ति सखो भावं सखोत्वं प्राप्नुवान्ति ते ब्रह्मा-
तमकमये जीवं तेषां ब्रह्म इति स्मृत:॥४॥ श्री रामं यच्च
हित्वा स्वल्प मति निरता ब्रह्म जीवं वदन्ति तेमूढा

नास्ति कास्ति शुभ गुण रहिता स्सर्व बुद्ध्याति रिक्ताः पापिष्ठा धर्म हीना गुरु जन विमुखा वेद शास्त्रे विरुद्धा स्ते हित्वा गांग मम्भो रवि किरण जलं म्पातु मिच्छान्ते तृष्णाः ॥५॥ अरु यह अर्थ करिये कि श्री रामचन्द्र के दर्शन ते जीव कौ निजसहज स्वरूप, शुद्ध निर्मल चेतन रूप, सो स्वरूप योग ज्ञान ताको प्राप्त होतहै तहां नहीं बनै है काहेते कि जीव का सहज स्वरूप ते प्राप्त होत है, पर जब योग ज्ञान विज्ञान अच्छी तरह से प्राप्त होइ तब श्रीरामचन्द्र को दर्शन परा भक्ति प्राप्त होति है तहाँ वाटिका मे सनकादिन मे व सुतीक्षन मे देखि लेव तहाँ प्रमाण है (श्री मद्भगवद्गीतायाम्) ब्रह्म भूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ॥ समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥२॥ किन्तु सहज स्वरूप जीव कर सो अनेक जन्म के ज्ञान सिद्धि भये ते प्राप्त होत है सो दर्शन मात्र ते भयो तब ताहो क्षण श्री रामचन्द्र के स्वरूप विषे अखण्ड पराभक्ति को प्राप्त होत है तहाँ प्रमाण (श्री मद्भगवद्गीतायां) अनेक जन्म संसिद्धि स्ततो यान्ति परां गतिम ॥ जो कोई कहै जनक पुर मे सब राजन दर्शन कीन है तहाँ ज्ञानी अज्ञानी सब रहेहैं तहाँ ज्ञानी अज्ञानी दूनो श्री राम दर्शन ते शुद्ध है तुरंत स्वरूप से भक्ति भई है फल को प्राप्त भये हैं सबही यह विचार कीनकि श्री रामचन्द्र कैसे प्रसन्न होहि अपनी २ कन्या देइ तुरंत मगाइ कै देखिये तौ अज्ञानी शुद्ध भये हैं तबतो यह भांति आई है (प्रमाण श्री मम-हा रामायणे श्लोक द्वयम) सप्त द्वीपेषु ये सर्वे साधवो ऽसाधवो पिवा विदेह कुल सम्भूता येच सर्वे नृपोत्तमाः रम्य रूपार्णवे रामे दत्ता कन्या निजा निजा अत एव रमु क्रीडा राम नाम्नैव वर्त्तते ॥२॥ (६) पृष्ठ (८८२) चौ० ॥ विविधि भाँति फूले तरु नाना जनु बानैत बने बहु बाना ॥(३) हे तात विविध प्रकार के फूल

फूलि रहे हैं जनु तरु बानेत हैं अरु तिनके शाखा धनुष हैं अरु फूल विविध प्रकार के बाण हैं ॥ ३ ॥

पृष्ठ (२२४) चौ० ॥ सन्त हृदय जस निर्मल बारी बांधे घाट मनोहर चारी ॥ (७) त्यहि को कैसो निर्मल जल है जैसे सन्तन के हृदय निर्मल हैं अरु चहुं दिशा मे चारि घाट मनोहर बंधे हैं जैसे साधुन के हृदय मे योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान शोभित हैं अरु भक्ती जल है अनेक दिव्य गुण जे हैं सो कमल भृङ्ग विहंग आदिक हैं ॥ ७ ॥

पृष्ठ (२२६) चौ० ॥ मोर शाप करि अंगीकारा सहत राम नाना दुख भारा ॥ ६ ॥ नारद विचार करते हैं कि देखिये तो मोर शाप अंगीकार कीन्हे श्री रामचन्द्र नाना प्रकार के दुःख का भार सहते हैं तहां नारद के शाप को अवतार लो अपर कल्प मे गोसाईं जी वर्णन कीन हैं तहां प्रमाण बालकाण्डे चौपाई (नारद शाप दीन यक बारा ॥ कल्प एक तेहि लगि अवतारा) ॥ अरु यह कल्प विषे तो स्वयम्भुमनु के हेतु अवतार भयो है तहां नारद अपने शाप को रोपण करते हैं तहां नारद की वाणी मे यह ध्वनि है कि मैं तो शाप दीन है कौनो कल्प मे त्यहि परमेश्वर श्री रामचन्द्र जो ऐसे कृपाल हैं कि मेरे शाप को यह अवतार मे परमपरमात्मा मानि लीन है ॥ ६ ॥

पृष्ठ (२२७) चौ० ॥ तब नारद बोले हर्षाई ॥ यह वर मागौं करौं ढिठाई ॥ ६ ॥ तब नारद हर्षि के बोलते भये मै ढीठ ह्वै के अस वर मागौं तहां यह ध्वनि है कि यद्यपि तुम्हरो राम नाम वेद कहते हैं सो आपके परोक्ष (परम्परा) वाक्य है पर त्यहि अनस्यूत मैं आप को प्रत्यक्ष वाक्य वरदान चाहत हौं कि मोहि आदि जेते जो ब्रह्माण्ड कोश मे हैं तिनके मुखन ते एक बार केसेहु धोखेहु ते राम नाम ऐसो शब्द उच्चारण होइ त्यहि के मन वचन कर्म के अघ अरु जन्म मरण सम्पूर्ण नाश होइ के

तुम्हारे पद को प्राप्त होइ ऐसे चारिउ युग मे होइ सदा यह वर पावौं जामे सबै जीवको सहज मे कल्याण होइ ॥ ६॥

पृष्ठ (८८८) चौ०॥ यद्यपि प्रभु के नाम अनेका ॥ श्रुति कह अधिक एक ते एका ॥७॥ हे प्रभु यद्यपि तुम्हारे नाम अनेक अरु एकते एक अधिक है यह वेद वेद कहतेहैं इहां प्रभु कहत सन्ते जेते परमेश्वर के स्वरूपहैं तिनके सब के नाम आइ गयेहैं अरु प्रभु के स्वरूप सब एकहीं हैं ताते सब प्रभुके स्वरूप की एकता करिके श्री राम चन्द्र से कहते हैं कि यहां श्री रामचंद्र प्रभु हैं परात्पर ब्रह्म मूर्ति ताते कहाहै ॥ ७॥

चौ०॥ राम सकल नामन ते अधिका॥ होहु नाथ अघ खग गण वधिका॥ ८॥ ताते तुम्हारेसकलनामन ते राम नाम अधिक है सो नाम कैसो है कोउ कैसहू उच्चारण करै शोक ते धोखे ते प्रीति अनप्रीतिहु ते राम कहै त्यहि के मन वचन कर्म के अनेक अघ सोई विहंग हैं तेहि के नाश करिवेको वधिक हैं ऐसे सब जीवन को सब काल मे एक रसहै यह वर पाऊं ॥ ८॥

दोहा॥ राका रजनी भक्ति तव राम नाम सोइ सोम॥ अपर नाम उडगण सरिस वसहु भक्त उर व्योम॥१॥

हे श्री रामचन्द्र श्री रामचन्द्र राका कही पुणिमासी की रात्रि सोई तुम्हारी भक्ति है अरु राम नाम पूर्ण चन्द्रहै अरु सन्तन का अन्तःकरण जोहै सोई आकाशहै तहां वसहु यह वर देहु अरु अपर नाम जो तुम्हारे अपर स्वरूप के हैं सो विमल नक्षत्र हैं तिन संयुक्त वसहु चन्द्रमाउडगणोंका

राजा है जैसे परमेश्वर के जे अनन्त नाम हैं तिन सब नामन को राजा
राम नाम है पर चन्द्रमा अपने ऐश्वर्य से नक्षत्रन के ऐश्वर्य मन्द करि
देतहै अरु राम नामन के ऐश्वर्य पति राखैहैं (प्रमाण श्री महा रामायणे
शिव वाक्य पार्वती प्रति श्लोकः२२) भृणुष्व मुख्य नामानि वक्ष्ये भगवतः प्रिये॥
विष्णुर्नारायणः कृष्णो वासुदेवो हरिः स्मृतः॥१॥ ब्रह्म विश्वंभरोऽनन्तो विश्व
रूपः कलानिधिः॥ कल्मषघ्नो दयामूर्तिः सर्वगः सर्व सेवितः॥२॥ परमेश्वर ना-
मानि सन्त्यनेकानि पार्वति॥ एका देके महा स्वच्छ मुक्ति मोक्ष दायकः
॥३॥ नाम्ना मेवच सर्वेषां राम नाम प्रकाशकः॥ ग्रहाणाञ्च यथा भानु र्न-
क्षत्राणां यथा शशी॥४॥ देवानांच यथा शक्रो नराणां भूपतिर्यथा॥ सर्व लो-
केषु गोलोकः॥ सरयू निम्नगासु च॥५॥ निर्जराणां यथानन्तो भक्ता ना मंजनी-
सुतः॥ शक्तीनांच यथा सीता रामो भगवता मयि॥६॥ भूधराणां यथा मेरुः
सरसां सागरो यथा॥ काम धेनु र्गवां मद्धे धन्वीनां मन्मथो यथा॥७॥
पक्षिणां वैनतेयश्च तीर्थानां पुष्करो यथा॥ अहिंसा सर्व धर्माणां साधुत्वेपिस्त्री
यथा॥८॥ मेदिनी क्षमिनां मद्धे मणीनां कौस्तुभो यथा॥ धनुषांच यथा सा-
र्ङ्गः खड्गानां नन्दको यथा॥९॥ ज्ञाना नां ब्रह्म ज्ञानं च भक्तीनां प्रेम लक्ष-
णा॥ प्रणवः सर्व मन्त्रानां रुद्राणां महमेवच॥१०॥ कल्पद्रुमश्च वृक्षानां
यथाऽयोध्या पुरीषुच॥ कर्मानां भगवत्कर्म अकारश्च स्वरेष्वपि॥११॥
कि मत्र वहु नोक्तेन सम्य गभगवतः प्रिये॥ नाम्ना तथाच सर्वेषां राम
नाम परं महत॥१२॥ (९)॥

पृष्ठ (२८८) चौ०॥ गहि शिशु बच्छ अनल अहि
धाई॥ तहँ राखै जननी अरगाई॥६॥ जब शिशु

बालक वच्छ कही ताकी वाक्य (श्री अयोध्या काण्ड दोहा) वहां वच्छ कहि लाल कहि॥ शिशु पाँच वर्ष ताईं जो उहे शिशु कहूँ सर्प अरु अनल धरे को धायो है तब माता हजारन कार्य छोड़ि के बालक को अगार कही पकरि लेती है कहूँ २ दूसर पाठ कहते हैं (चौपाई) गाहे शिशु वच्छ अनल अहि धाई॥ तहँ राखे जननी अरु गाई॥७॥ तहाँ यह अर्थ होत है कि जो शिशु मनुष्य को बालक अरु गऊ को वछरा तहाँ शिशु वछरा जो अनल अरु अहि को धाइ के धरे तो तहाँ जननी अरु गऊ राखि लेती है धरिलेती है तहाँ पर अर्थ मे दूषण है काहेते कि वछरा अग्नि अरु अहि पकरिबे को प्रयोजन ते नहीं सम्भवे है अरु गऊ को बछरा धाइबे को नहीं सम्भवे है ताते पूर्व पाठ सिद्ध है॥६॥

चौ०॥ प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता॥ प्रीति करै नहि पाछिल बाता॥७॥ हे नारद जब उहे बालक प्रौढ़ कही सयान भयो तबै तेहि सुत पर माता प्रीति तो करती है पर पाछिल बात नहीं मन मे ल्यावती है सो कवनि पाछिलबात जब बालक रह्यो तब अग्नि सर्प को ज्ञान नहीं रह्यो तब माता रक्षा करती है अरु जब सयान भयो अग्नि सर्प को ज्ञान भयो तब माता को पुत्र भाव को प्रीति तो है पर अज्ञान को डर नहीं है काहेते कि जब बालक सयान भयो तब वाको अग्नि सर्प

को ज्ञान है ताते माता को बोधहै ॥७॥

चौ०॥ मोरे पौढ तनय सम ज्ञानी॥ बालक शिशु सम दास अमानी॥८॥ तैसे हे नारद ज्ञानी जेहैं ते मेरे सयान पुत्र हैं अरु मेरे दास जेहैं अमानी सो मेरे बाल पुत्र हैं काहेते कि सवे मान रहित हैं॥८॥

चौ०॥ जिनहि मोर बल निज बल ताही दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आही॥९॥ हे मुने जैसे बालक के केवल माता को बल है तैसे अमानी दासन के मोर बल है अरु जैसे सयाने पुत्र के आगि सर्प ते बाचिबे को आपन बल है तैसे ज्ञानी मेरे सयान पुत्र हैं काम क्रोध के बचिबेको उनको आपन ज्ञान है अरु जैसे आगि औ सर्प छोटेहुँ बालक को अरि है अरु बड़ेहु बालक को अरि है पर छोटे बालक को रक्षक माता है अरु बड़ा बालक बचै तौ आपना ते बचै अरु न बचै तो आपना ते तैसे काम क्रोध भक्त ज्ञानी दूनौं के रिपु हैं तहाँ भक्त को तौ मै बचावत हौं अरु ज्ञानी आपना ते बचै तो बचै न बचै तो न बचै काम सर्प है अरु क्रोध आगि है (प्रमाण भगवद्गीतायाम्) दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया॥ मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतान्तरन्ति ते॥९॥

पृष्ठ (२६२) चौ०॥ श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया मुदिता

मम पद प्रीति अमाया॥ ४॥ श्री रामचन्द्र जी नारदजीसे कहतेहैं कि हे मुनि मेरे सन्त कैसे हैं श्रद्धा क्षमा अरु मैत्री अरु दाया त्य-हि करिके युक्त हैं श्रद्धा कही वेद गुरु वाक्य मे प्रतीति क्षमा कही पृथ्वी समान मैत्री कही सर्व जीवन विषे परमेश्वरी दृष्टि करिके सबते यथा योग्य मित्रभाव सबते निर्वैर अरु दाया कही काइ जीव का दुःख नही सहि सकैं सामर्थ्य ते जरूर उपकार करते हैं अरु मुदित कही आनन्द से मेरे चरणारविन्द विषे प्रीति अति प्राय पर अमाया कही निष्काम किन्तु अमाया कही माया त्यहि ते सब प्रकार ते रहित हैं हे मुनि ऐसे मेरे भक्तनके लक्षणहैं

चौपाई॥ बिरति बिवेक बिनय बिज्ञाना बोध य-थारथ वेद पुराना॥ ५॥ पुनि कैसे हैं मेरे भक्त बिरति कही वैराग्य वान् हैं अरु विवेकीहैं अरु विनय मयहैं अरु विज्ञान मयहैं वैराग्य कही त्रैगुण्य जनित जो विषय तेहि के स्वरूपहीं को त्यागे हैं अरु विवेक कही सारासार को जानिके सार को ग्रहण असार को त्याग करैं हैं जैसे क्षीर नीर मिलेते हंस क्षीर को ग्रहण नीर को त्याग करैहै तैसेहीं चित्त बुद्धि को हंस हंसिनि करिकै आत्मा दुग्ध ताको ग्रहण अरु अनात्मा वारि ताको त्याग पुनि वि कही विकल्प दुइ को तहां द्वैत जो है तै मै मोर तोर इत्यादिक अहं मम देहाभिमान जासे मति रति नही है सर्वथा त्याग है अरु शान्ति संतोष शील करुणा उदार इत्यादिक परम उत्तम आत्मा के गुण तेहि का ग्रहण स्वहिते अनन्य

भाव यह श्री रामचन्द्र कहते हैं ताको विवेक कहो जैसे हंस
कार अरु बाह लिलेते पिपीलिका शक्कर ग्रहण करै है बाहु को त्याग करै है
ताको विवेक कही विनय कहो संसार को दुःख रूप मानि कै मोसे
विनय करते हैं अरु चराचर विषे मोको व्याप्त जानिके सर्व भूतते
दीन ह्वै रहे हैं अरु विज्ञान कहो विशेष ज्ञान अनात्मा को विषय
त्याग अरु अपनो आत्मा अरु सर्व भूत को आत्मा से सम दृष्टि
सम बुद्धि ब्रह्मानन्द की प्राप्ति ताको विज्ञान कहो अरु वेद पुराण विषे
यथार्थ जो तत्व है तेहि विषे बोध कहो ज्ञान॥५॥

चौ॰ दम्भ मान मद करहिं न काऊ॥ भूलि न देहिं
कुमारग पाऊ॥६॥ अरु हे मुनि मेरे सन्त कैसे हैं दम्भ
मान मद तेहि का त्याग दम्भ कहो अशास्त्र कर्त्तव्य अरु मान
कहो हमको कोई बड़ा करिकै माने मद अष्ट हैं जाति कुल विद्या
धन रूप युवा वैराग्य ध्यान येते अष्ट मद है अरु कुमार्ग कहो
राजस तामस करिकै मलिन कर्त्तव्य काम क्रोध लोभ इत्यादिक
त्यहि को भूलिहु नहीं करते हैं तेहि को मन वचन कर्म ते त्याग देते हैं
अरु त्याग को अभिमान नहीं है॥६॥

दो॰॥ रावणारि यश इत्यादि-(रावण और को कहा? तहँ भविष्य
कहा है कि रावण के वध के हेतु अवतीर्ण भयो ताते कहा पुनि मुनिन
के समाज मे संकल्प कौन है (निशिचर हीन करौं महि इत्यादि पुनि जयपु
ते कहा है (जो मैं हम तो कुल सहित इत्यादि) आरण्यकाण्ड समाप्तोयम्॥

॥ अथ किष्किन्धा काण्ड शंका समाधान प्रारम्भः ॥

चौ०-अति सभीत कह सुनु हनुमाना॥ पुरुष युगुल बल रूप निधाना॥२॥ अति भयते सुग्रीव श्री हनुमान जी से कहते हैं कि ये महा बल रूप के निधान द्वै पुरुष आवते हैं सो को हैं तहाँ यह आशय है कि श्री राम चन्द्र जी आपनी बल वीरता सुग्रीव के हृदय विषे प्रथमहीं जनाय दीन है ताते भय संयुक्त कहा है॥३॥

सो०-मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर जहँ बस शम्भु भवानि सो काशी सेइय कस न॥१॥ पुनि श्री गोसाई तुलसी दास जी शिव पार्वती को नमस्कार करते हैं तहँ काशी विषे शिव पार्वती कैसे हैं कि मुक्ति की जन्म भूमि है अरु ज्ञान की खानि है अरु समस्त अघ कहो पाप कों हानि करती है जेहि काशी विषे शिव पार्वती सदा बसते हैं तेहि काशी को महादेव सहित कस ना सेवन करो पुनि दूसरा अर्थ श्री रामायणजी कैसो है कि मुक्ति की जन्म भूमि है अरु ज्ञान की खानि है अघ को नाश करती है जेहि रामायण विषे शम्भु भवानी अन्तःकरण से सदा बसते हैं। पुनि रामायण कैसो है सो काशी कहो शोक नाशिवे को प्रकाश [illegible] है तेहि रामायण को कस न सेवन करो॥१॥

चौ०-धरि बटु रूप देखु तैं जाई। कहेसु मोहि जिय सैन बुझाई॥४॥ अति भयते श्री हनुमान जी ते कहते हैं कि हे पवनतनय (बटु कहो ब्रह्मचारी अवस्था हैं अरु मंगल रूप हैं) ताते तुम बटु को स्वरूप धारिके देखो अपने जी मे विचारिके जैसा होइ तैसा मोको सैन कहो इसारा से समझाय के जनाय देना॥४॥

चौ०-पठवा बालि होइ मन मैला। भागौ तुरत तजौं यह शैला॥५॥

जो कदाचित अपने मनको मलिन करके मेरे मारिबे हेतु महा वीर को वालि पठवा होइ तौ मै तुरन्त यहि शैल को छोड़ि के भागि जाउँ किन्तु जो वालि के पठये हुओ महाबली आये होइ तो जानि के सेनसे मन मलीन कर लेना तो मै इस शैल से तुरन्त भाग जाऊँगा - अथवा जो मन मैला वालि का ताके पठये हुओ महावीर आते होइ तो मैं इस शैल को छोड़ि के तुरन्त भाग जाऊँ ॥

चौ०-विप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ॥ माथ नाय पूछत अस भयऊ॥६॥ तहाँ ब्राह्मण (ब्रह्मचारी) को रूप धरिके हनुमान जी जात भये हैं माथ नाइ के अस बूझत भये ब्राह्मण ह्वैके माथ को नवायो है तहाँ हनुमान जी यह जाना कि कोई ब्रह्म ऋषि के वालक हैं किन्तु श्रीरामचन्द्र के दर्शन करत सन्ते परमेश्वरी बुद्धि आइ गई है किन्तु सुग्रीव के माथ नाइके चलिके रघुनाथ जी ते बूझत भये हैं॥ पुनि श्री रामचन्द्रजी को तेज प्रचंड देखि नीचे को माथ कीन, पुनः कपट रूप छिपाइबे को नीचे का माथ नवायो. किन्तु हनुमान जी ब्रह्मचर्य को वेष बने रहे अरु श्री रामचन्द्र जी वाणप्रस्थ रहे याते अपने से बड़े को माथ नवाना सम्भव हीं है यथा - ब्रह्म चर्य हनुमान हैं वाण प्रस्थ रघुनाथ ऊँचो आश्रम जानिकै तातें नायो माथ॥६॥

चौ०-कठिन भूमि कोमल पद गामी कवन हेतु बन बिचरहु स्वामी॥७॥ कंकर कंटक युक्त कठोर भूमि अरु तुम्हारे कोमल चरण हैं कौन हेतु करिके बन मे विचरते हो हे स्वामी को कहा तहाँ हनुमान जी तो श्री रामचन्द्र के परा विभूति के नित्य पार्षद हैं अरु प्रकृति मण्डल मे पवन पुत्र हैं पर प्रकृति तत्व जो पवन तेहि के पुत्र नहीं हैं परम शुद्ध कारण प्रणव रूप जो पवन है तेहि के शीतल मन्द सुगन्ध पुत्र

हैं ताहीते श्री हनुमान् जी को प्रकृति को पवन नही लग्यो है ताहीते
नित्य पर लीला विभूति मे स्वरस श्री रामानन्द हैं ताते श्री राम कृपा ते
जातिके स्वामी कहा है अरु जो पद गामी कहा है अरु विचरत कहा
है सो पुनरुक्ति न जानव भाव भिन्न है किन्तु जेते कोमल पद गामी हैं
तिन सबकै कोमलता तेहि को स्वामी तुम्हारी कोमलता है किन्तु को-
मल चरनानि के गवन कर्त्ता तुम सो कठोर अयनि मे क्यों विचरते हो ॥ ९ ॥

चौ०- की तुम तीन देव महँ कोऊ नर नारायण की तुम दोऊ
॥ १० ॥ श्री हनुमान् जी प्रथमहि संदेह लंकार करिके कहा है श्रीराम-
चन्द्र के आश्रय सब स्वरूप कहैंगे पुनि मध्य मे कारणालंकार कहते हैं
पुनि पर विषे पर कारण कहते हैं कि तुम तीनहु देवता ब्रह्मा विष्णु
शिव विषे कोई इह स्वरूप करिकै अपनी त्रैगुणमय रचना देखत
फिरते हो कि तुम नर नारायण दोऊ स्वरूप तप मूर्ति मुनि वेष धरिकै
जगत की रक्षा हेतु विचरते हो ॥ (१०) ॥

दो०- जग कारण तारण भव भंजन धरणी भार की
तुम अखिल भुवन पति लीन मनुज अवतार ॥ १ ॥
याहि दोहा विषे पूर्व के अर्थ विषे पूर्व के अर्थ के अन्वय पर
सिद्ध होत है पर कर पूर्व सिद्ध होत है कि तुम अखिल भुवन के
उत्पत्ति कर्त्ता हो अखिल अनेकन ब्रह्माण्ड विषे पृथ्वी के भार उता-
रिवे हेतु मनुज अवतार लीन है पर मो सिद्धान्त में यह है मनुज अव-
तार कहि मनुज इव लीला परम दिव्य करतेहो सब ईश्वरके स्वरूप के

कारण तुमही हो अरु सम्पूर्ण जगत् के महा कारण आपही हो अरु भव जो संसार तेहि के तारिवे को आपहो॥ ४॥

पृष्ठ (८९८) चौ०॥ नाम राम लछमण दोउ भाई संग नारि सुकुमारि सुहाई॥ २॥ हे हनुमान् हमारो राम नाम है इन कर लछमण नाम है दोऊ जने भाई हैं यहाँ यह अभिप्राय है कि जीव अरु परमेश्वर को अनादि सम्बन्ध है भ्राता भ्रातृ सम्बन्ध सखा सखित्व सम्बन्ध है पिता पुत्र सम्बन्ध है राजा प्रजा सम्बन्ध है अंश अंशी सम्बन्ध है प्रकाश्य प्रकाशी सम्बन्ध है पति पत्नी सम्बन्ध है इत्यादिक अनादि सम्बन्ध हैं श्री रामचन्द्र कहते हैं कि हमारे संग अति सुकुमारि नारि श्री जानकी रही है॥ ३॥

चौ०॥ तव माया बश फिरौं भुलाना ताते मै नहिं प्रभु पहिचाना॥ ६॥ भावार्थ है॥ ... ॥ ...

पृष्ठ (८९९) चौ०॥ सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना तैं मम प्रिय लछमण ते दूना॥ ७॥ हे कपि तुम अपने मनमें ऊन कहो सन्देह न मानो तुम हमको लछमण ते दून प्रिय हो दून को कहा हे कपि लछमण जो अति प्रिय हैं अरु तुम हम दोऊ भाइन को अति प्रिय हो ताते दून कहा है॥ (७)॥

पृष्ठ (९००) दोहा॥ सो अनन्य जाके असि मति न टरै हनुमन्त॥ मै सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवन्त॥ ३॥ हे हनुमन् अनन्य ताही को कहो जाकी ऐसी मति न टरै दृढ़ रहै कैसी मति कि स्वामी जो श्री रामचन्द्र भगवन्त तिनकर रूप चराचर विषे चैतन्य

मय व्यास है जड़ को चैतन्य विहै है तहाँ चराचर भगवन्त स्वामी कर रूप है तेहिं भगवन्त को मैं दास हौं इहाँ भाव सिद्ध है (प्रमाण महारामायणे शिव वाक्यं भाविते भलि श्लोकः) भूमौ जले नभसि देव नरा सुरेषु भूतेषु देव सकलेषु चराचरेषु॥ पश्यन्ति शुद्ध मनसा खलु राम रूपं रामस्य ते भुवितले समुपासकास्यु॥२॥ कोई कहै कि चराचर मे तो सब हैं यह कौन दास भयो है पुनि दूसरा अर्थ जाके अरि भटि न टरै सो सेवक सचराचर तेहिं आदि दै जीव जे हैं ते सब सेवक हैं श्री राम स्वामी भगवान स्वामी हैं मैं दास हौं भगवन्त को रूप चराचर मे व्यास है अरु भगवन्त रूपी हैं अरु जो जाने सोई मेरो अनन्य सेवक है॥२॥

पृष्ठ (६०२) दोहा॥ तब हनुमन्त उभय दिशि कहि सब सुनाइ॥ पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढाइ॥२॥ तब हनुमान जी श्री रामचन्द्र कर गुण प्रताप सुग्रीव से कहत भये हैं अरु सुग्रीव के सेवकाई शरणागत श्री रामचन्द्र से कहत भये है अस कहि के अग्नि को साखी दैके दोऊ दिशि प्रीति दृढाइ करिके कहत भये है अग्नि को साखी क्यों दिया यह लीला विषे अग्नि कारण है काहेते श्री जानकी जी को सौंपा है अरु अग्नि करिके लंका दहन करेंगे अरु अन्त मे अग्नि श्री जानकी जी को देइगे अरु श्री जानकी जी के हेतु मित्रता भई है ताते पावक को साखी दियो है॥१॥

चौ०॥ कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा लक्ष्मण राम चरित सब भाखा॥२॥ अति प्रीति कीन कछु बीच न राखा है तब लक्ष्मण जी श्री रामचन्द्र कर चरित्र सुग्रीव से कछु

कहतेहैं हे सुग्रीव तुमको शरणागत लैकै यही तनु में सखा कीनहै अरु रावण को वधिके दूसरे तनुमें सखा करिकै परविभूति को तुरन्त प्राप्ति करेंगे ताते तुम अब श्री राम प्रताप ते निर्भय ह्वैकै श्री रामचन्द्र कर कार्य मन वचन कर्म ते करो॥२॥

पृष्ठ (९०२) चौ०॥ बालो ताहि मारि गृह आवा॥ देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा॥२०॥ तेहि दानव को बधिकै बालि गृहको आवत भयोहै मोको राज गद्दी पर बैठ देखिके अनेक भेद बढ़ावत भयोहै भेद कही सब मंत्रिन अरु काज कामिन को फोरि घाेरि बाँधि अलग करि दियोहै॥२०॥

चौ०॥ इहाँ शाप वश आवत नाहीं॥ तदपि सभीत हौं मन माहीं॥२३॥ ऋष्यमूक पर्वत विषे कोई मुनीश्वर को शापहै ताते बालि अरु तेहिं के दूत नहीं आइ सक्तेहैं तदपि अपने मनमे मैं सभीत रहतहों काहेते बालो को बड़ा प्रतापी बली जानिकै हे श्री रामचन्द्र मेरो औ बालि को चूक अचूक आप समुझिकै तेहि को तस फल देइ काहेते आप अनेक ब्रह्माण्ड के राजा हैं सबको नीति मे चलावते हो॥(२३)॥

पृष्ठ (९०४) चौ०॥ दुंदुभि अस्थि ताल दिखराये॥ विनु प्रयास रघुनाथ ढहाये॥४॥ हे श्री रामचन्द्र दुंदुभी नाम को जो दानव रहाहै तेहिं की अस्थि पर सप्त ताल जामे हैं ते मंडलाकार हैं तहां कोई मुनि को वचन है कि जो सातों ताल को एकहीं वाण ते एकहीं वार नाश करि देइ तेहिं के मारे बालि

मैरेगो मोको तो आपु के बल की परीक्षा लेबे को न चाहिये ... ये सातों ताल वृक्ष काहू मुनि के शाप ते देव लोक ते च्युत भये हैं आप के बाण लागिते कृतार्थ ह्वै जाहिंगे यह सुनि के श्रीरामचन्द्र ने एकबार एकहीं बाण ते उन्त ढहाइ कही काटि के गिराइ दीन हैं ते सातों दिव्य स्वरूप धरिके अरु दुंदुभि आस्थि दिव्य स्वरूप धरिके परम पद को प्राप्त भये ॥ ४॥

चौ०॥ सुख सम्पति परिवार बड़ाई सब परिहरि करिहौं सेवकाई ॥ ८॥ श्री रामचन्द्र को परब्रह्म चीन्हत भयो है दर्शन ते आत्मज्ञान परमात्मा श्री रामचन्द्र विषे होत भयो है तब बोलो हे नाथ अब मोर मन आपकी कृपा ते निर्वासिक अडोल भयो है अब आपु ते बिनय करत हौं कि मोपर ऐसी कृपा करहु कि सुख संपति परिवार त्रिलोक की बड़ाई सब त्यागि के आपकी विशेषि कै सेवकाई करौं सुख कही इन्द्रिन कर भोग सम्पति द्रव्य अरु लोक राज्य तप दान इत्यादिक परिवार कही सुत दारा माई भाई कुल नात कुटम्ब इत्यादिक बड़ाई कही वर्णाश्रम धर्म लोक मर्य्याद मान बड़ाई इत्यादिक चारिउ अर्थ जहां तक धर्म वेद कहतेहैं ते सब विना त्यागे आप की अनन्य शरणागत को नहीं प्राप्त होतेहैं ताते सब त्यागिके आप की शरण होऊंगो ॥ ८॥

चौ०॥ बालि परम हित जासु प्रसादा मिल्यउ राम तुम शमन बिषादा ॥ ९॥ हे श्री रामचन्द्र बालि तो मोर परम हितकारी भयो है जेहिं के प्रसाद ते तुम प्रथमहि मोको मिलउ हौं

जो बालि मोको दूरि न करत तो आप के चरण के शरण मे कैसे प्राप्त होतेउँ आप के दर्शन होते सन्ते सम्पत्ति विषाद सिद्धि गोरि आगु योगेश्वर को दुर्लभ हो इहाँ यह अभिप्राय है कि मेरे हेतु बालि को न मारउ मेरे राज्य इत्यादिक के कछु बासना नही है ॥११॥

पृष्ट (६०५) चौ० जो कछु कहाउ सत्य सब सोई सखा बचन मम मृषा न होई ॥१५॥ श्री रामचन्द्र बिहंसि के कहते हैं हे सखा तुम सत्य कहते हो सिद्धान्त विषे ऐसे है पर मेरे संकल्प वृथा नही होते हैं बालि को बधौंगो अरु तुमको राज्य देउँगो अरु तुम मेरे शरणागत सत्य हो पर राज्य कर विषय भोग तेहि कर फल जन्म मरण सो तुमको न होइगो तुम मेरे नित्य विभूति के सखा हो यह कहि के सुग्रीव को ज्ञान गम्य-ता-कालीन है ॥१५॥

दोहा॥ कहा बालि सुनु भीरु प्रिय समदरशी रघुनाथ॥ जो कदापि म्वहि मारिहैं तो पुनि होव सनाथ ॥२१॥ बालि तारा प्रति कहत भयो हे प्रिया भीरु कहो तू भय को प्राप्त भई है किन्तु भीरु कही स्त्री को सो तू न डरै श्री रामचन्द्र परमेश्वर हैं जो कहै तो उनके सब जीवन पर सम दृष्टि है जो कदाचित अपने संकल्प हेतु मोको बधैंगे तो मैं सनाथ होउँगो ज्याहि पद के प्राप्त होवे को मुनीश योगीश इच्छा करते हैं तेहि पद को मै विना श्रम प्राप्त होउँगो ॥२१॥

पृष्ट (६०७) चौ०॥ एक रूप तुम भ्राता दोऊ त्याहि भ्रमते नहि मारेउँ सोऊ ॥५॥ श्री रामचन्द्र कहते हैं हे सुग्रीव

तुम दुनौ भ्राता एक रूप हो ताते मोको भ्रम भ्रम भयोहै कि कौन सुग्रीव कौन बालि है ताते मैं नही मार्यो है तहाँ श्री रामचन्द्र परमेश्वर अरु कहते हैं कि मोको भ्रम भयोहै यह आश्चर्य है तहाँ यह अर्थ सिद्ध होत है (चौपाई) प्रणत कुटम्ब पाल रघुराई। इहाँ श्रीरामचन्द्र जी सौशील्य गुण दिखावते हैं सुग्रीव को भ्राता कौन है अरु सुग्रीव अरु भाई वानराकार जेतेहैं ते सब मेरे सखाहैं अब मैं बालि को कैसे मारौं अरु मैं मारिवेको संकल्प करि लियो है तहाँ यह भ्रम भयोहै अरु ताही समय मे श्री रामचन्द्र ने विटप की ओर ते बालि को मारा है सखा मानिकै शील के वश सन्मुख नही मारि सकेहैं ऐसे शील के निधान हैं अरु यह जो अर्थ करते हैं कि बालि के सम्मुख युद्ध कियेते आधा बल हरि जातहै मुनि के आशीर्वाद है तहाँ जीव केवल आकर्षण होतहै परमेश्वर कर अमोघ बल है कि श्री रामचन्द्र कहते हैं हे सुग्रीव तुम भ्राता कहाउ रहे किन्तु बालि मोर परम हितकारी है ताते अबहीं ताई मै नही मारउँ है अब तुम बैरी कहाहै अब मारौंगो ॥५॥

चौ०॥ मेली कण्ठ सुमन की माला पठबा पुनि बल देइ बिशाला ॥७॥ तब श्री रामचन्द्र फूलन कर प्रसादी माला सुग्रीव को पहिरावते भये हैं संस्कार करि दीनहै जब वैष्णव द्रोह करैगो तब श्रीरामचन्द्र मारहिंगे काहेसे कि भागवतापराध नही सहि सक्तेहैं पुनि विशाल बल देके पठवत भये ॥७॥

पृष्ठ (६०८) चौ०॥ अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुन शठ ये कन्या सम चारी॥ह॥ श्री रघुनाथ जी दोषारोपण करिके कहते हैं हे शठ अनुज वधू अरु भगिनी अरु सुतकी नारी अरु कन्या ये चारि मानिवे को सम हैं॥ह॥

दोहा॥ सुनहु राम इत्यादि॥ तहाँ श्री रघुनाथ जीने चारि दोष बालि विषे आरोपण कीनहै कहाहै तेहिको उत्तर बालि देतहै हेस्वामी आपकी कृपा ते मैं आप को जानिके यह चतुराई कीनहै कि आपके वाण करिके शरीर को त्याग करौंगो अरु मोको आप पापी कहतहैं सो अन्तकाल विषे जेहि जीव को केवल आपकी गति है सो पापी कैसे रहैगो॥२॥

पृष्ठ (६०९) चौ०॥ जन्म२ मुनि यत्न कराहीं अन्त राम कहि आवत नाहीं॥३॥ मुनि जन्म२ यत्न करते हैं परन्तु मरण समय राम नाम के दो अक्षर मुख से नही निकलते हैं किन्तु अन्तमे रामनाम कहि के आवागवन से रहित होतेहैं (प्रमाण वाराह पुराणे) दंष्ट्राच्छकर शावकेन निहतो म्लेच्छो जरा जर्जरो हारामेति हतोस्मि भूमि पतितो जल्प स्तनुं त्यक्तवान्॥ तीर्णो गोष्पद वद्भवार्णव महो नाम्नः प्रभावात्पुनः किं चित्रं यदि राम नाम रसिका स्ते यान्ति रामास्पदम्॥३॥ पृष्ठ (६११) चौ०॥ प्रगट सुतनु तव आगे सोवा जीव नित्य तुम काहि लगि रोवा॥४॥ हे तारा जेहि शरीर के हेतु तुम रोदन करती हो सो तो तुम्हारे आगे परा है अरु जीव तो मेरो है

नित्य है एकरस है न काहू को पति है न काहू को पुत्र है न काहू को पिता है न काहू को मित्र है न काहू को वैरी है सब ते भिन्न है यह देह करि सम्बन्ध सब विषे है सो नाशवान् है मोह को सहाय करिके यह मन में अपनपो मानि लियो है अरु हे तारा जबते तुम्हारा बालि को सम्बन्ध भयो है तबते बालि विषे जो जीव रहा है त्यहिको कबहुँ तुम देखो है कैसो रूप है का नाम है का रंग है सोतेतुम एको देख्यो नहीं है सो नहीं त्यहि को न आवत देखो न जात देखो न रहत देखो तेहिकर शोच वृथा है का करिये अरु जो देह को तुम देख्यो है सो तुम्हारे आगे परा है अरु जीवात्मा तो मेरो है तुम्हारो नहीं है ताते पराई वस्तु को काहे को शोच करिये तुम अपने मन में विचारि देखो देव दानव मनुष्य आदि सबको देह नाशवान् है ताते परमेश्वर को भजन करहु मोह को त्यागि देहु ॥ ५॥

पृष्ठ (६१२) चौ०॥ उमा राम सम हित जग माहीं॥ गुरु पितु मातु बन्धु काउ नाहीं॥ १॥ हे उमा श्री रामचन्द्र के समान हितकारी जगत् विषे कोई नहीं है न गुरु न पितु न मातु न बन्धु इत्यादिक कोई नहीं है जो कोई कहै गुरु भी नहीं है गुरु को ईश्वर शास्त्र कहते हैं (श्लोक प्रसिद्ध हैं ३) गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः पुनः अखण्ड मण्डलाकारं० पुनर्यथा- अज्ञान तिमिरांधानाम् इत्यादि ताते गुरु तो श्री रामचन्द्र के समान हैं ताते हितकारी कौन होइहै सो सत्य है पर गुरु अपने शिष्य को ईश्वर है अरु ईश्वर

सब को ईश्वर है पुनि ईश्वर चराचर के हितकारी हैं अरु गुरु अपने शिष्य के हितकारी हैं अरु गुरु जीव हैं अपने शिष्य के मानिबे को ईश्वर हैं ताते श्री रामचन्द्र के समान कैसे हितकारी होइँगे (प्रमाणं श्री भागवते पंचमस्कन्धे ऋषि वाक्यं) गुरुर्न स स्यात् स्वजनो न स स्यात् पिता न स स्यात् जननी न सा स्यात्॥ दैवं न तत्स्यान्न पतिश्च स स्यान्न मोचयेद्यः समुपेत मृत्युम्॥१॥ तहाँ श्री रामचन्द्र निज विरोधी कोटिन कोल भिल्ल कीट पतंगन को परम पद दीन्हे अरु गुरु वशिष्ठ ऐसे समर्थ ते राजा त्रिशंकु को परम पद नहीं दे सके हैं ताते श्री रामचन्द्र के समान हितकारी कोई नहीं है अरु गुरु श्री रामचन्द्र की प्राप्ति हेतु शिष्य को उपदेश करते हैं आगे शिष्य के कर्तव्य है पुनि दूसरा अर्थ (चौपाई) उमा राम सम हित जग माहीं॥ श्री रामचन्द्र के समान जगत में हितकारी एक गुरु हैं और कोई नहीं है पुनि तीसरा अर्थ गुरु कही श्रेष्ठ को जैसे श्रेष्ठ हैं पिता माता बन्धु मित्रादिक श्री रामचन्द्र सब के सम हितकारी हैं पुनि चतुर्थ अर्थ - हे उमा श्रीरामचन्द्र सब जीवन पर सम कही एक रस सबके हितकारी हैं अरु गुरु पितु मातु बन्धु मित्र इत्यादिक सबके हैं परकोऊ रहि नहि जात ताते श्रीरामचन्द्रसों सबके हितकारी हैं॥२॥

पृष्ठ (६१५) चौ०॥ नव पल्लव भये विटप अनेका। साधक मन जस मिलहिं विवेका॥२॥ अरु नवीन पल्लव

तरुन विषे शोभित हैं जैसे परमेश्वर पदार्थ के साधक जे हैं तिनके मन विषे विवेक प्राप्त भयो है पुराण वेत्ता जे पुराण के जाननवाले अर्थ धर्म काम त्रिवर्ग फल के वासना के जैसे साधना है ते सब झरि गये हैं विवेक पल्लव को प्राप्त भये हैं ताते शोभित हैं॥२॥

चौ०॥ अर्क जवास पात बिनु भयऊ। जिमि सुराज्य खल उद्यम गयऊ॥३॥ अर्क जो है मदार अरु जवासा जो है ते वर्षा विषे बिना पात ह्वै गये हैं जैसे सुराज्य पाइके खल कर उद्यम जात रहे है किन्तु मन विषे ज्ञान के राज्य भई तब काम क्रोध लोभ मद मत्सरइत्यादिक खलन के कर्म जाता रहे है॥३॥

चौ०॥ महा वृष्टि चलि फूटि कियारी॥ जिमि स्वतंत्र है बिगरहिं नारी॥४॥ दासिये तो महा वृष्टि होने से कियारी कही मेड़ डाड़ फूटि जाती है जैसे स्वतंत्र भये ते स्त्री बिगड़ जाती हैं किन्तु स्वतंत्र कहीं जब आत्मा इंद्रिन के वश नहीं है तब इंद्रिन के नारि जे हैं भय संदेह विषय वृत्ति सो बिगड़ जाती है ज्ञान में डूब जाती है॥४॥

चौ०॥ कृषी निरावहिं चतुर किसाना॥ जिमि बुध तजहिं मोह मद माना॥८॥ अरु चतुर किसान जे हैं ते कृषी को निरावत हैं धान मात्र रा-खते हैं विजाती घास निकाल डालते हैं काहे ते कि धान की वृ-द्धि मारि जाति है तैसे बुध पंडित विवेकी ते मोह मद मानइत्या-दिक विवेक ते निकारि डालते हैं काहे ते मोह मद मान ज्ञान के बाधक हैं॥८॥

पृष्ठ (२२६) चौ०-विविध जन्तु संकुल महि भ्राजा प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥१०॥ विविध प्रकार के जन्तु महि विषे भ्राजते हैं जैसे सुराज पाइके प्रजा बाढ़ते हैं किन्तु जेहि के हृदय विषे सुराज कहे रामराज भयो तब ज्ञान वैराग्य जोग विज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक जे हैं परम दिव्य गुण जे हैं सो बढ़ते हैं ॥१०॥

चौ०- उदित अगस्त पंथ जल सोखा जिमि लोभहिं शोखे संतोषा ॥३॥ अगस्त उदय भये ते पन्थ को जल शोषत भये हैं जैसे संतोष के भये ते लोभ का शोषण होत है अरु लोभ के भये ते संतोष का शोषण होत है अन्वय है ॥३॥

चौ०- जानि शरद रितु खंजन आये पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये ॥६॥ अरु शरद ऋतु पाइके खंजन जे खड़ैचा हैं ते प्राप्त भये हैं जैसे समय पाइ के प्रानिन के सुकृत सोभित होते हैं तहाँ दृष्टान्त है कि राजा रन्ति देव राज्य को त्याग के ऋषि धर्म लैके आकाश वृत्ति लीन तहाँ अड़तालिस दिन बीते भोजन प्राप्त भयो ताही समय विषे एक ब्राह्मण आइ के बोल्यो कि मै पचास दिन का भूखा हूँ तब अपनो भोजन ब्राह्मण को उठाइ दीन आप भूखे रहि गये ताही समय मे राजा को भगवान् प्राप्त भये ऐसो समय पाइ के सुकृत सुशोभित होत है ॥६॥ चौ०- गुंजत मधुकर मुखर अनूपा ॥ सुन्दर खग रव नाना रूपा ॥३॥

पृष्ठ (२२८) चौ०-फूले कमल सोह सर कैसे निर्गुण ब्रह्म सगुन भये जैसे ॥२॥ सागर विषे जो कमल फूले हैं तिन पर भ्रमर गुंजार करते हैं

सरस कहि बोली सुन्दर लागती है यहाँ पाछिलो उपमा के अभि-
प्रायते उपमा देतेहैं श्रीरामचन्द्र कहतेहै हे तात भ्रमर कमलन पर
गुंजार करते हैं मकरन्द पान करतेहैं जैसे मेरे जन अपने चित्त
को भ्रमर करिके मेरे चरण के मकरंद को पान करतेहैं अरु परा
वाणि ते मेरो नाम उच्चारण ध्वनि करतेहैं अरु अनेक रंग रंग
के सुन्दर विहंग बोलतेहैं जन मेरा यश गाइके मोको प्रसन्न करतेहैं ॥३॥
॥ अरु कमल फूले सर कैसे शोभितहैं जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण होत-
हैं तहाँ सागर विषे जल अन्तर कमल बीज मात्र रह्यो है शरद्काल
पाइके जलके ऊपर फूलिकैसे शोभित होत हैं जैसे निर्गुण ब्रह्म संसार
के अन्तर भूत व्याप्त हैं कोई कालविषे अपने भक्तन के हेतु सगुण
स्वरूप धरिके संसार को शोभित करैहैं जैसे प्रह्लाद हेतु नृसिंह प्रत्यक्ष
भयेहैं। दूसरा अर्थ मूर्तिमान जो ब्रह्म हैं निर्गुन कहे तीन गुणके परेहैं
पर नेत्रन के आगे गोचर भयेहैं जैसे जलके अन्तर
सो अपने भक्तनके हेतु प्रकृति मंडल विषे प्रत्यक्ष होतेहैं पर
कमल के बीज शोभित मूर्तिमान् सो बोजव है अरु जलके ऊपरफूलेउ है तवहूं तो
बोधव है ॥२॥
(पृष्ठ ६०८)
चौ० - जेहि सायक मै मारा बाली। त्यहि शर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥५॥
हे लक्ष्मण जी जेहि बाण ते मैं बालि को मारा है तेही बाणते मूढ़
जो सुग्रीव है तेहि को मारौंगो काल कहे कि श्रीरामचन्द्र के सत्य संकल्प
है सुग्रीव का वध क्यो नही कियो है तहाँ कालिह कहा विरहन के
दिन को संकल्प कियो है अरु सुग्रीव तो आजुहीं मिलैगो तहाँ श्री
रघुनाथ जी के सत्य संकल्प हैं किन्तु आजु नहीतो कालिह उसकी मूढ़ता

होंगो ॥५॥

१२ (९२०) दोहा- तब अनुजहिं समुझावा रघुपति करुणा सींव
भय देखाय लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥२१॥ श्रीरामचन्द्र करुणा के
के सींव कही मर्याद ते अनुज को समुझायके कहते हैं हे तात भय देखायके
सुग्रीव को लै आवौ सुग्रीव मेरो सखा है पर समुझायो है हे तात सुग्रीव
तौ प्रथमादि सर्व त्यागि के मेरो शरण भयो है पर राज्य तौ मैं अपनी
इच्छा ते दीन है जो राज्य के विषे सुख मे मोको भूलि न जाय तौ
जीवन विषे मोरि माया प्रबल कैसे करावे तहाँ सुग्रीव को विषय
बाधा न करैगो काहेते सुग्रीव मेरे शरण अरु विभूति मेरी दई है तहाँ
जे जीव मेरे शरण हैं तिनको विषै नहीं बाधा करै है और जानिके का-
हेते कि मै तीनहूँ काल मे तिनको रक्षा करौ हौं यहै मेरो प्रण है
(प्रमाणं बाल्मीकीये श्लोकः) सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते॥ अ-
भयं सर्व भूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम॥२॥

चौ०- करि विनती मन्दिर लै आये चरण पखारि पलंग बैठाये
॥५॥ विनती करिकै लक्ष्मण जी को मंदिर मे लेआये हैं चरण प-
खारि के पलँग मे बैठावते भये हैं यह अति आदर कहावत है लक्ष्मण
जी पलँग पर क्यों बैठे हैं तहाँ श्री रघुनाथ जी ने कहा है कि सुग्रीव
का निरादर न करब अंगीकार करब ताते श्री रामाज्ञा ते बैठे हैं॥
दूसरा अर्थ- पल अंगस्य पलँगः अर्थात् जाके अंग मे पल (आमिख)
होय (प्रमाण अनेकार्थः) पल आमिख को कहत कवि घट उसाँस पल सोइ।
पल उपलक्ष हरि बिच परे गोपिन युग सम होइ॥२३॥ ताको पलँग कहो किन्तु

मृग चर्म पर बैठाये (प्रमाण) कस्तूरी यांके बसे मर्म न जाने कौन ॥ प्र ५० ॥

वाके चर्म को पलंग कहावत तौन ॥ २ ॥

पृष्ठ (९२२) चौ०- लोभ फांस जेहि गर न बँधाया ॥ सो नर तुम समान रघुराया ॥ ५ ॥ लोभकी फांसी तेहि विषे जिन अपने गरे को नहीं बँधायो है ते नर तुम्हारे समान हैं जीव को परमेश्वर समान क्यों कहा यह ध्वनि है कि जे काम क्रोध लोभ हैं तहाँ काम को सहायक मद है अरु वनिता स्थायी है अरु क्रोधको सहायक मोह है अरु अहंकार स्थायी है और लोभको सहायक मात्सर्य कही ईर्षा है अरु दम्भ स्थायी है इनको जो जीते अरु श्रीरामचन्द्र कर भजन करें ते सारूप्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं ताते जीव को राम समान कहा है ॥ ५ ॥

पृष्ठ (९२४) चौ०- भानु पीठ सेइय उर आगी स्वामी सेइय सब छल त्यागी ॥ ४ ॥ सुग्रीव कहते हैं हे वानर वीरहु सुनो जैसे भानु को पृष्ठ दैके अरु अपने उर विषे आगि को सेवन करते हैं तैसे स्वामी को सर्व भाव करिके सेवन करिये सर्व भाव छल छोड़ि के तहाँ भानु पृष्ठ कही सूर्य मुखी चश्मा होत है जब सूर्य के सम्मुख करहु तब अग्नि उत्पन्न होत है पर चश्मा से सूर्य की टेढी किरण न परै शुद्ध सम्मुख गोल बिंदु परै तब तुरन्त अग्नि उत्पन्न होत है अरु जो किञ्चित् टेढ़ी लकीर होय तो अग्नि न उत्पन्न होय अरु सधी गोल होय तौ सूर्य आगि देते हैं

तब वहि अगिन ते जितना कार्य चाहो तितना होतहै सूर्य
के सम्मुख भयेते अगिन सूर्य हैके कार्य करतेहैं अरु नाम
चश्मा को होतहै प्राणी कहतेहैं कि हम चश्मा ते अगिन क-
रिके अपनो कार्य कीनहै यह दृष्टान्त है अब दृष्टान्त जौकै
कहतेहैं यहाँ सर्व भाव कहो सर्व छल कपट त्यागिके मन वचन
कर्म ते अपर पदार्थ दृष्टि न आवै एक श्री सीतारामके स्वरूप
सागर विषे जीव मीन ह्वै रहैहैं ऐसे सम्मुख जब तुम ह्वैके श्रीराम
प्रताप को मन वचन कर्म ते भरोस केवल राखहुगे अपनपौ
छुइ न जाय अरु पौरुष बिन ते अधिक करहुगे है वीरहु
यह बात हृदय मे दृढ़ करिकै श्रीराम कार्य करहुगे तहाँ सर्व
श्री रामचन्द्र आपु करि लेहिंगे नाम तुम्हारा होइगो यह विशे-
षार्थ जानब पुनि दृष्टि नाम आसन कर भानु है जिनके आसन
प्रमाणम् (श्री राम स्तव राजे श्लोकाईम्) सूर्य मण्डल मध्यस्थं रामं सीता
समान्वितम्।। अरु सेई उर आगी उर विषे आगिन वैश्वानर रूपह्वैके
सेवन कहौ सब कर पालन करत है प्रमाणम् (श्री भगद्गीतायां)
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देह माश्रितः।। प्राणापान समायुक्तः
पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।१।। पुनि भानु पृष्ठ तहाँ अरुण जो सा-
रथी है तौ भानु को अपनी पृष्ठ पर सेवन करते हैं इहां अभा-
व ते संचित होतहै जे स्वामी अर्थी है ते पाछे परतैहैं अरु सारथी

घोड़न के सम्मुख हैं तहाँ सर्व भाव ते स्वामी कर कार्य करते हैं आत्मा समर्पण करिकै ननु सुर्यन के तेज करिकै जरिबेको डरै कोहै ते सूर्यन की अग्नि अपने उरमे सेवन कहो जानत हैं अरु पाछे परे ते न अभाव को डरै पर स्वार्थ परमार्थ वासना शून्य भार कहावत है हे वानरहु तुम ऐसे स्वामी के श्री रामचन्द्र कर कार्य करौ ॥४॥

चौ०- तजि माया सेइय परलोका मिटहि सकलभव शोका ॥५॥ हे वानरहु माया तजिकै परलोक कर सेवन करिये परलोक मोक्ष सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य त्योंहि चारिउ के पति श्री रामचन्द्र तिनका सेवन करिये जातेभव जो है संसार त्योंहिते संभव कहो उत्पन्न कामक्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक अनेक शोकजो हैं सकल परलोकसेवत करत सन्ते नाश ह्वैकर जीवका मोक्ष होतहैं (५)

पृष्ठ (६२६) दोहा- देखि जाइ उपवन सुभग सर विकसित बहु कंज॥ मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज॥२॥
यह तपस्विनी जो कन्दरा विषे तप करती रही है सो विष्णु की माया है जोहि नारद को व्यामोहित कियोहै तहाँ नारद जो भागवतहैं तिनकर अपराध कियो है यद्यपि भगवत प्रेरित माया है तद्यपि भगवान् भागवतापराध नहो सहि सक्ते हैं ताते भगवान आज्ञा दीन है कि तुम तप काहु जाइ यह अपराध मिटि जाइगो तब और कल्प त्रेता के चौथे चरण विषे श्री राम चन्द्र परब्रह्म परमात्मा तोको मिलहिंगे सो तपस्विनी श्री रामचन्द्र के चरण विषे प्राप्त भई जाय अनेक स्तुति करत भई हैं तब श्री रामचन्द्र प्रसन्न मन विहँसि के अनपावनी भक्ति देते भये हैं अनपावनी कहो अचल

को अरु जोईं ते पावन दूसर पदार्थ कोई नहीं है सो भक्ति पाइके॥ ८॥
पृष्ठ (२२८) चौ०- हम सब सेवक अति बड़ भागी। संतत सगुण ब्रह्म अनुरागी॥ १३॥ तहां ऐस सगुण ब्रह्म कहो जिनके अनन्त गुण ब्रह्म रूप हैं ताते सगुण ब्रह्म कहो तिनके हम सेवक चरण कमल के निरन्तर अनुरागी ताते हम अति बड़भागी हैं॥ १३॥
दोहा- निज इच्छा प्रभु अवतरेउ सुर महि गो द्विज लागि। सगुण उपासक सबै तजि रहहिं मोक्ष पद त्यागि॥ १॥
प्रभु अपनी इच्छा ते अवतीर्ण भये हैं देव महि कहो पृथ्वी गो द्विज गुरु अरु विप्र संतन के हेतु लीला करते हैं जैसे सगुण ब्रह्म के उपासक हैं ते अर्थ धर्म काम मोक्ष पद सब के त्यागी हैं॥ १॥
चौ०- कपि सब उठे गृद्ध कहँ देखी जामवन्त मन शोच विशेषी॥ ६॥ गृद्ध कहँ देखि के सब कपि उठे हैं डरि गये हैं जामवन्त मनसे शोच करते हैं कि एक गृद्ध कहँ देखि के सब कपि डरि गये हैं आगे रावण के संग्राम विषे कैसा होइगो यह शोच भयो है॥ ६॥
चौ०- सुनि खग हर्ष शोक युत बानी आवा निकट कपिन भय मानी॥ ९॥ तब कपिन के बाणी सुनि के गृद्धराज के हर्ष शोक भयो है भ्राता के मरे कर शोक भयो है अरु हरिपुर जावे को हर्ष भयो है तब कपिन के निकट चलत भयो है महा पर्वताकार देखि के कपिन को भय भयो है तहां कपि तो महावीर हैं बार बार क्यो भय मानते हैं तहां श्री जानकी जी की खबर नहीं पावते ताते मन मलीन है रहो है श्रीरामचन्द्र के भयते अरु सुग्रीव के भय ते ताते यहे डर हृदय मे समाय रहो है ताते गृद्ध को देखि के भय मान्यो है॥ ९॥

पृष्ठ (२३०) चौ- गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रह रावण सहज अशंका ॥२१॥ गृद्ध कहते हैं हे वानरहु त्रिकूट पर्वत है तोहपर लंकापुरी है अगम गढ़ है तहाँ रावण सहज अशंक बसत है (कहु वार्तिक) इतिहास है कि त्रिकूट कहो कोइ समय विषे गरुड़ जो समुद्र विषे एक महा सर्प बड़ा होवे तोहि का घीरके ले उड़े है सुमेर के शृंग पर आत दीर्घ विस्तरित एक तरु है तापर गरुड़ बैठि के सर्प को खान लगे सर्प ने तरु को लपेट लियो है तब गरुड़ अरु सर्प कर भार तरु शृंग ना सम्भारि सक्यो है तब गरुड़ जो पुनि सहित पर्वत वृक्ष शृंगके सर्प को लेके उड़ तहाँ सर्प के भक्षण करिबे का ठाँव न पायो तब सूर्य के सारथी अरुण ते गरुड़ के भ्राता हैं तिन अपनो भुजा पर बैठाय लीन है तब गरुड़ ने भक्षण करिके सर्प कर हाड़ अरु तरु अरु शृंग समुद्र विषे डारि दीन है सोई अति विस्तारित त्रिकूट पर्वत है तापर लंका पुरी है ॥२१॥

पृष्ठ (२३२) अंगद कहा जाउँ मैं पारा। जिय संशय कछु फिर तीवारा ॥२॥ तब अंगद बोले कि पार को मैं जाऊँगो पर फिरती बार जिय विषे कछु संशय आवत है यह संशय कौन है कि लंका जाय के मैं काहू का कहौंगो अरु का करौंगो अरु लौरके का कहिहौं आप पर संशय है अरु कहूँ ऐसा भी लिखा है कि अंगद अरु अक्षय कुमार एकहो गुरु के पास पढ़ते रहे तो कहूँ अंगद ने अक्षयकुमार को मार दीन तब गुरु ने

क्रोधकारे के शाप देदीन कि अक्षय कुमार से जो तुमसे भेट होइगो तो तुमको मारि डारेगो सोई संशय कहते हैं याते श्री हनुमान जी अक्षय कुमार को जातही मारि डार्यौहै कि अंगद सो न मारि सके अरु तीसरा अर्थ यह है कि मुनि लोग समुद्र के तट पर स्नान करने जावे तो अंगर मुनियों की लगोटी वहि पार धरि आवैं तो मुनियों ने क्रोधवश है शाप देदीन कि जो उहि पार जावगे तो लौटवे की सामर्थ तुममे ना रहैगी याते संशय बतायो है प्रमाण (अंगद कह्यो सकोपि तब अवशि जाउं मे पार॥ साधे आवे मुनि शाप को संशय फिरतेवार ॥२॥ और चौथा अर्थ यह है कि अंगद कहते हैं कि जाते समय तो श्री महारानी जानकी जी के सम्मुख होइ गा ताते चला तो जाउंगा परन्तु फिरती समय मे विमुख होकर नहीं लौट सकौंगो कौंकि जनक नन्दिनि शक्ति रूप हैं ताते संशय है पुनः पंचमार्थ- अंगद कहते हैं कि मै पार चला जाऊंगा जो आपलोगों के जिय मे कछु संशय होय तो फिर फिर तीवारा कहे तीन बार आपर पार चला जाऊं ॥ ऐसा अंगद का पराक्रम देख और सुन कर फिर जामवन्त सत्य मान कर बोलते भये- जामवन्त कहइ तुम सब लायक। किमि पठवों सबही कर नायक

॥१॥ इति श्री तुलसीकृत रामायणे किष्किन्धा काण्ड समाप्तम

हस्ताक्षर बद्री दास दासः रीवायां नगर बासिनः

दोहा - सम्वत ऋषि बसु अंक विधु कुज सित अश्विन मास॥
शरद पूर्णि पूरण कियो लिपि कृत बद्री दास ॥२॥

अथ सुन्दर काण्ड शंका समाधान प्रारम्भः

दोहा- सात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला यक अंग॥ तुले न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत संग॥१॥ हे तात सात स्वर्ग जे हैं भू भुवः स्वः महः जनः तपः सत्य एते सातों स्वर्ग के सुख जेहैं अरु अपवर्ग कही मोक्ष सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य सार्ष्टि कही सामान्य ऐश्वर्य तिनकर सुख जेहैं सो तुला कही तराजू के एक पलरा पर धरै अरु सत्संग जो सुख कर समुद्र है त्यहिको एक कण मात्र कही त्यहि कर सुख एक पलरा पर धरै त्यहि लव मात्र के सुख को स्वर्ग अपवर्ग को सुख नही तुलैहै तहाँ सत्संग विषे वह कौन सुख है जहाँ स्वर्ग अपवर्ग का सुख सवासिक है अरु सत्संग विषे निर्वासिक सुख है जाको परमानंद कहा (श्रीभागवतेश्लोकः) तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवम्॥ भगवत्सङ्गि सङ्गस्य मर्त्यानां किमुताशिषः॥१॥

दोहा- रामायुध अंकित गृह शोभा बरणि न जाय॥ नव तुलसी के वृन्द तहँ देखि हर्षि कपिराय॥२॥ जो मंदिर को दरवाजा श्री रामायुध जो धनुबाण त्यहि करिकै अंकित है सो शोभा वर्णिवे योग्य नही है अरु आगे नवीन तुलसी के वृन्द लगे हैं सो देखिकै हनुमानजी प्रसन्न भयेहैं यहाँ यह अभिप्राय है जहाँ भगवान् का मंदिर है अरु जे भ-

न्दिर के अधिकारी हैं ते दोऊ जो धनुर्बाण करिके अंकित नहीं हैं ते
अशोभित हैं तहां प्रमाण है श्रुति स्मृति रामायण पुराण इत्यादिक ॥
इति यजुर्वेदे उत्तरार्धे एकोन विंशत्तमेऽध्याये श्रुतिः॥ धन्व नांकितो धन्वनाग
धन्वना जिश्रयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम॥ धनुः शत्रोरपकामं कृणोति
धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम १ स संसारं तरति स भगवदाश्रितो भवति स-
भगवद्रूपो भवति २ अथर्ववेदे उत्तरार्द्धे॥ श्री मन्महा रामायणे शिव वाक्यं
पार्वतीं प्रति॥ ये जापका भगवतश्च तपस्विनो ये पूजा रता शुचि रता-
श्च विराग युक्ताः॥ सर्वे गुणो नियम संयम नित्य युक्ताः निष्कल्मषाः सकल
सिद्धि कराश्च नित्यम्॥३॥ यो नांकितो धनु शरै नैव मंत्र राज स्योपासको
न सजनो रघुनंदनस्य॥४॥ श्री राम संस्कार विवर्जिता ये निष्पुच्छ शृंगाः
पशवो नरास्ते॥ शक्ता न वेद अभिवर्णितुं यं त्वत्तो मया ख्यात मविस्त
रेण॥५॥ बाहु मूले धनुर्बाणो नांकितो राम किंकरः॥ शोलले नाथ तत्तेन
तस्य मुक्ति न संशयः॥६॥ नांकितो चाप बाणाभ्यां न मंत्रोक्ति षडक्षरः
॥ न नाम राम सम्बन्धी न रामोपासको भवेत॥७॥ इत्यगस्त्य संहितायां
श्री राम गीतायां श्री रामचन्द्र वाक्यं वाशिष्ठं प्रति॥ धनुर्बाणादि चिह्ना
नां धारणं तिलकान्वितम्॥ तुलसी काष्ठ मालाढ्यं तं जानाति सु-
वैष्णवम्॥८॥ कि जो सो योजन के मध्य विषे एक वैष्णव रहे तो
सबको कृतार्थ करै है॥९॥

पृष्ठ (२४३) तृण धरि ओट कहति वैदेही॥ सुमिरि अवधपति परम सनेही॥ ६॥ श्री जानकी जी अवध पति परम सनेही श्रीरामचन्द्र को सुमिरिके तृण ओट धरिके कहती हैं यहाँ तृण नाम माथे को पट घूंघट करिके कहती हैं किन्तु तृण उठाके लक्षणा कोन है कि हे खल तैं तृण के समान है किन्तु तृण नाम पृथ्वी का है पृथ्वी के ओट से अर्थात् पृथ्वी की ओर नीचा शिर करिके बोलीं - मुख टापन सारँग दहन चन्द्र अँगोछा जोन॥ विनय करन अरु छे कने तुलसी तृण है तीन॥ वो हाथ मे तिनका लेकर सूचना देती हैं कि श्री रामचन्द्र के सामने तू तिनका के समान है॥ ६॥

चौ॰- सुनु दशमुख खद्योत प्रकाशा॥ कबहुँ कि नलिनी करहिं विकासा॥ ७॥ श्री जानकी जी कहती हैं हे दशमुख मै तेरी रीति का देखौं तैं मोरी कृपा कर पात्र नही है नलिनी कही कमल सो खद्योत के प्रकाश ते कहं विकसत है।आशय यह कि मै रामरूपी सूर्यहीं से प्रसन्न हूँ

त तो खद्योतही के समान है॥ ८॥

चौ॰(२१८-१४४) नाहिं तो सपदि मानु मम बानी॥ सुमुखि होत नतु जीवन हानी॥ २॥ सुमुखि से यह भाव होलहै कि आप इस दास पर विमुख हैं अब सुमुख कहि प्रसन्न ह्वै जाउ शीघ्र मुक्ति करौ नहीं तो मेरे जीवन की हानि है॥ २॥

चौ॰- श्याम सरोज दाम सम सुन्दर। प्रभु भुज करि कर सम दशकंधर ॥३॥ तब श्री जानकी जी कहती हैं कि हे दशकंधर श्याम जो कमल है ता-म कहि पंक्ति तेहि की आभा छुटा तद्वत् रघुवीर श्याम अति सुन्दर हैं ऐसे प्रभु जिनके भुज करि कर कहि हाथी के सुंड सम है॥ ३॥

चौ॰- सो भुज कंठ कि तव असि घोरा॥ सुनु शठ अस प्रमाण पण मोरा॥ ४॥ कि तो सोई भुज मेरे कण्ठ विषे लागैंगे की तो घोर तलवारि लागैगी हे शठ ऐसो प्रमाण है ऐसो प्रण है यह अर्थ करत सन्ते श्री जानकी जी विषे अति दीनता आवति है अरु पतिव्रत पर विरोध होतहै श्री जानकी जी ने पूर्वहीं रावण को खद्योत करिकै कहा है अरु याविषे

शठ कौरिकै कहाहै तातै आर्त्त वचन श्री जानकी जो न कहैंगी तातै
यह अर्थ अच्छा नहीं है यहाँ खण्डान्वय व्यंजना कौरिकै अर्थ सिद्ध
होतहै श्याम सरोज सुन्दर ऐसे प्रभु जिनकर कौरिकर सम भुजदण्ड
हैं (चौपाई) सो भुज कंठ कि तव असि घोरा॥ सोई भुज कै असि घोर
कंठ कि तो त्यहि भुज के असि घोर कि तोरे कण्ठ विषे ला-
गहिंगे इहाँ को पद जो कहाहै सो संदेह विषे न जानब क्रिया
विषे जानब तातै त्यहि भुजकै असि घोर तोरे कंठ बिषे लागिहैं
हे शठ ऐसो शास्त्र कर प्रमाण है अरु ऐसो मोर प्रण है॥४॥

चौ०॥ चन्द्रहास हरु मम परितापा॥ रघुपति विरह अनल संतापा॥
५॥ चन्द्रहास नाम तरवारि त्यहितै मोर परिताप जो दुःख सो हरु
मोको मारि डारु श्री रामचन्द्र के बिरह की अग्नि विषे मै तप्त हौं
इहाँ पूर्व आधी चौपाई को अर्थ विरोध कैरहै तातै यह अर्थहै
कि चन्द्रहास जो तेरी तरवारि है सो चन्द्रहास कहो चन्द्रमाकी किरण
तद्वत है तौहितै तैं मेरो दुःख हरैगो अरु रघुपति प्रबल अग्निकी ज्वाला है
ताहिं विषे तेरो चन्द्रहास भस्म ह्वै जाइगो॥५॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भः ११४६

सगुन होहिं सुन्दर सकल मनप्रसन्न सबकेर।।। प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँफेर।।

अरु अनेक प्रकार के सुन्दर सगुन होते हैं अरु प्रातःकाल श्री कौशिल्या जो उठी हैं प्रसन्न हैं। मानो प्रकाश मय मन्दिर नाम वोत हंश के बच्चा मध्य आनिर में बैठे हैं आनि सुन्दर देखकै श्री कौशल्या नो आश्चर्य मान्यो है तिनको दूध पिवायके मुख चुम्मन कियो है पुनि ब्रम्हा ब्राह्मण रूपते तीन कल्प वृक्ष के फल श्री कौशिल्या जी को देता भयो प्रसन्न मनते सुमित्रादिक रानी प्रसन्न भई पुर के चहुँदिस ते हजारन ग्वालिनी तरुण तनु सम्पूर्ण अलंकार कीहे दधि भाजन भरे शीश पर लिये आवती हैं पुनि पुर के दक्षिण दिसा से तीन ब्राह्मण के बालक सुन्दर तिलक भाल निर्मल वस्त्र रामायण की पुस्तक हाथ मे लिये गानकरते आवते हैं वाटिका प्रफुल्लित बसन्त ऋतु होय रहा है भ्रमर कोकिला मयूर इत्यादिक मधुर मधुर बोलत है।

आकाश निर्मल है रहा है काग दक्षिण भाग सुखेरा बोलत है

अनेक सगुन स्वरूप धरि धरि श्री अयोध्या को आये है।

श्री रामचन्द्र जी का आगमन जनावते हैं आप सफल होते हैं।

सब के मन प्रसन्न हैं शुभग अंग फरकते हैं ॥ चौपाई ॥

जो करणी समुझै प्रभु मोरी। नहिं निस्तार कल्प

शत कोरी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जो मेरो अवगुण श्री रामचन्द्र समझैं तो शत कल्प करोरिन लों नि-

स्तार नहीं है कल्प कहो हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग

हजार चतुर्युग जब बीतते हैं तब ब्रम्हा को एक दिन होत है हजार चतु-

र्युग रात्री होती है दिन रात्री को एक कल्प कहिये शत लक्ष को

एक कोरि कहिये यहाँ तांई जीव को कल्याण नहीं है जो जीव को

दोष श्री रामचन्द्र देखे काहेते जीव सदा सदोष है श्री रामचन्द्र नि-

र्दोष हैं ॥ चौपाई ॥ बीते अवधि रहैं जो प्राणा। अ-

धम कवन जग माहिं समाना ॥ ॥ ॥ ॥

श्री रामचन्द्र की विरह सो समुद्र भयो तामें भरत जी मग्न कहिये डूबते हैं।

तहाँ हनुमान जी ब्राह्मण रूप धारण करिके आनो नौका ही के तुल्य आइ

गये तब ब्राह्मण को रूप क्यों धारण किया मंगल को समय है।

तातें ब्राह्मरा को दर्श स्पर्श संम्भाषरा मंगल मय है ग्रनेक दुःख को निवृत्त करें है ग्ररु संसार सागर तरिबे को जहाज है तातें पिप्र शान्त का होइ ग्ररु जहां मंगल कार्य होय तहाँ जाबे को ब्राह्मरा को ग्रधिकार है ॥

॥ दोहा ॥ राम विरह सागर महँ । भरत मगन मन होत ॥ पिप्र रूप धरि पवन सुत । ग्राइ गये जनु पोत ॥

पुनि बैठे देखि श्री हनुमान जी श्री भरत जी को मानहुँ तप ग्ररु शान्त रस की मूर्त्ति है दास्यरस परिपूर्ण है खड़ाऊँ को माथ शीश पर दक्षिरा मुख श्रीरामचन्द्र सम्मुख राज्य के विषय पाछे देके साढ़े तीनि हाथ भूमि खनि कै कुशासन कीन्हे है कमलासन दृढ़ कीन्हे है शीश जटा मुकुटाकार बाँधि रहा है शरीर दुबला है रहा है श्री राम राम रघुपति रघुपत्ति रट लागि रही है प्रेमप्रवाह नेत्र कमलावत जिनसे जलधारा चली जाती है श्री भरत जी ऐसे बैठे है ॥

पृष्ठ॥ ९९५॥ चौपाई ॥ रिपु रण जीति सुयश सुर गावत । सीता ग्रनुज सहित प्रभु ग्रावत ॥ (५) ॥

काक भुशुण्डि कहते है हे प्रभु गरुड़ जब श्री हनुमान जी के व

चन सुनिके श्री भरत जी के मन ते सम्पूर्ण दुख मन में जो रहा

बिसरि गयो है कैसे जैसे कोई तृषा वन्त कहौ अति सय पियासा

ताको पीयूष नाम शीतल जल मधुर संगन्ध अमृत तद्वत् प्राप्त भयो

जैसे वह सुखी भयो तैसे वह सुखी भये तेहिते अधिक श्री भरत जी को

सुख भयो " " " " " " "

नम्बर(६) ॥ चौपाई ॥ दीन बन्धु रघुपति कर किंकर।

सुनत भरत भेंट्यो उठि सादर " " " "

पुनि दीन बन्धु जो श्री रघुनाथ जी है तिनका किंकर हूँ सो श्री

रघु नाथ जी पठयो है कुशल कहिवे को कुशल लाइबे को और

हे भरत जी तुम शन्देह मत करो पुनि रघुनाथ जी क्यों नहीं आय

सो सुनिये श्री रघुनाथ जी मोसे कहत भये है कि हनुमान जी

जब दुइ पहर दुइ घरी दिन बाकी रहा तब अयोध्या ते

हम गमन कीन रहा चित्र कूट को गमन ताते जब उतने दिन

चढ़ैगा तब हम अयोध्या में प्राप्त होय गे हनुमान तुम प्रातही

जौं हु आमें भरत जी व्याकुल न होहिं सो आप जानिये प्रयाग ते दुइ दण्ड में आयो हे पुनि तुरत जाऊंगा यह बात श्री भरत जी सुनत सन्त तुरत अति हित प्रीत आदर ते निर्भर ते उठ के श्री हनुमान जी को मिलत भयो ॥ नम्बर (९२) म चौपाई ॥ यहि सन्देश सरिस जग माहीं करि विचार देखौं कछु नाहीं ॥ ॥

सो बहुत का कहौं मैं तुम से लोक परलोक हूँ में उरिण नहीं हूँ अब श्री राम चरित्र सम्पूर्ण सुनावहु अब तो मैं तुम्हारा ऋण दाता हूँ

छन्द ॥ काहे न होहु विनीत परपुनीत सद गुण गाथ सो ॥ तुम सो कस न विनीत होहु कस न सद गुण के गाथ कहीं ग्रन्थ होहु सद् गुण कहीं समीचीन भगवन्त के गुण ॥५३

अवधपुरी प्रभु आवत जानी ॥ भई सकल शोभा कै खानी ऐसी जो श्री सरयू हैं सो पुनि अति निर्मल होत भई शीतल मन्द सुगन्ध में धारा बहत भई तैसे परम सुहावन त्रिविध पवन बहत भयो पै सब सूक्ष्म रूपते श्री रामचन्द्र जी के संग गये रहैं जब श्री रामचन्द्र लंका जीत कै अवध को

मारुती तब आज्ञा संयुक्त आगेहि प्राप्त भये आइ तांत सब प्रकार तें शोभा के खानि होत भये ॥ दोहा ॥ सचिव गुरु पुरजन अनुज भूसुर वृन्द समेत।
चले भरत अति प्रेम मन सम्मुख कृपा निकेत (१) ॥ ॥ ॥
बहु तक चढ़ीं अटारिन निरखत गगन बिमानन ॥
देखि मधुर सुर हर्षित करहिं सुमंगल गान (२) ॥
राका शशि रघुपति पुरी सिन्धु देखि हरषान ॥ ॥ ॥
बढ़ेउ कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥ (३) ॥ ॥
श्री अयोध्या की जे नारि ते बहुतक तो मंगल साजे श्री रामचन्द्र के सम्मुख चली है अरु अनेकन महलन पर चढ़ि गगन में बिमानन निरख तीं हैं सो देखि परेउ जाको अनेक सूर्य चन्द्रमा को प्रकाश है लघु दीर्घ को प्रमाण नहीं जैसे इच्छा होय तैसे होत हैं पुनः स्फटिक मणि वत श्वेत निर्मल तापर चित्र रंग अनेक है कहूं सात खण्ड वरणित है कमला कार है बाहर को खण्ड बत्तिस दल को सोई कोण है मध्य को खण्ड सोरह दल को सोई कोण है अन्तर खण्ड अष्ट दल है सोई कोण जानिये सर्व कोणन प्रति मणिन के दण्डा लगे हैं तीनहूं खण्ड में चतुरि चित्र विचित्र बनी है विमान को अग्रह भाग जो है सो युग हंसा कार है अरु युग बाहर के खण्ड में असख्य वानर राक्षन की सेना चढ़ी है मध्य खण्ड कछु ऊंचो है तापर अठारह पद्म राजा आरूढ़ हैं मध्य खण्ड के ऊपर अन्तर खण्ड कछुक ऊंचो है सो सिंहासन महादिव्य है

तापर श्री सीताराम विराज मान हैं श्री लक्ष्मणजी हनुमान विभीषण सुग्रीव
अंगद इत्यादि बहुत पारषदन संयुक्त शोभाय मान हैं जो सबके सिर पर
विराजते हैं सो विमान देखिवे की पुनि संमत ...
अगस्त संहितायां उत्तरार्धे २॥ राकानाम पूर्णमासी को चन्द्रमा ताको देखिके सिन्धु
जो है समुद्र सो मगन है बढ़त है तरंग उठती हैं गम्भीर शब्द होत है
जैसे चौदा दिनके पश्चात पूर्णमासी होती है तैसे चौदा वर्ष के अन्तर की
जो सोई पूर्णमासी रही है ... पर प्रभु सोई समान शोभा हैं
आगमन उदय है पुरी जो श्री अयोध्या सोई सिन्धु है पुरी को जो
कोलाहल हर्ष गर्जादिक सोई गम्भीर शब्द है सुख उमगत है बढ़त है
नर नारि जो हैं सो अति सोभित तरंग हैं ॥ ११५५ ॥ ... ॥
यहां भानु कुल कमल दिवाकर ॥ कपिन दखावत नगर
मुभाकर ॥ हे भरद्वाज अब श्री रामचन्द्र के यहां सुनो भानुकुल कमल
के प्रफुल्लित करता दिव्य सूर्यरूपी श्री रामचन्द्र जी सुग्रीवादिक जो ...
कपि हैं जामवन्त इत्यादिक ... जे ऋक्ष हैं विभीषणादिक जो राक्षस हैं
तिन सबन को आपनो जो परधाम है ताको देखावत हैं जब शृंगबेर
पुर से विमान निषाद के स्थान से उठा है तब से विराजमान भयो है
तब श्री रामचन्द्र बोले हे सुग्रीव विभीषण निषादादिक अनन्त सखा
उत्तर दिशि देखो जो कोटि सूर्य चन्द्रमा ते प्रकाश अधिक शोभित हैं
रहो है सोभाकार कहो सो मोर स्थान भा कहो शोभा ते हिस्को आकार
कहि देखान ऐसो श्री अयोध्या जी सो देखो प्रमाणं नाम मास्ता । ॥

भा फही अमा सोभा कही प्रभा सुखमा कही कान्ती पुनि श्रृंगार करें ते
संयोग ते सुभाकके अर्थ करते हैं शुभाकर कही सम्पूर्ण शुभाकर क-
ही सम्पूर्ण शुभ जे पदार्थ ताकीखानि पुनि सुभ कही सुन्दरता जो है
अनेक मंगल मुक्ति भुक्ति इत्यादिकन की खानि श्री अयोध्या जी
सो तुम देखहु १ ॥ सुनि कपीश अंगद लंकेशा ॥ पावनि पुरी
रुचिर यह देशा ॥ श्रीरामचन्द्र जू कहते हैं हे कपीश सुग्रीवादि
जामवन्त लंकेश यह जो श्री अयोध्यापुरी है सो पावनि कही पवित्र
है निर्मल है त्रिगुण रहित है अयोध्या कही जाते काल न युद्ध करि
सके अरु जाके आगे जो आहै त्याहि कीरके कही अमर होई पुनः श्री
रामचन्द्रके बसी बनी रहत हो अरु ब्रम्हा ब्रष्णु महेश जाको आवते है
अरु मुक्ति को खानि है जाको ध्यावत अवलोकत तीनहु तापको-
पाप्मजनित विकार मिटिजात है पावन निर्मल शुद्धस्वरूप सदा एक
रस शुद्ध ब्रम्हस्वरूप हैं सहित सरयू अरु अवधवासी जगन्नाथ-
स्वरूप है ताको प्रमाण कहो (प्रमाणं पद्मपुराणे श्लोक) अयोध्याच पर-
ब्रह्म सरयूः सगुणः पुमान् तन्निवासी जगन्नाथस्सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥
अरु कोशल देश सर्व है पर कछु श्री अयोध्या की मर्याद कहि कै
कहते हैं श्री अयोध्या श्री दशरथ राजमहल ते द्वादश योजन पश्चिम
द्वादश पूर्व द्वादश दक्षिण पर ऐसे ही आठौ दिशा जानब यह देश
रुचिर कहो अति सुन्दर भूमि सो सब दिशा हैं कहीं कंटक नहीं है
कोमल तृण पुष्प संयुक्त शोभित है शुभगुण मय है हे सखे ऐसो

देखें तुम देखहु (२७)॥ यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना ॥
॥ वेद पुराण विदित जग जाना ॥
इस अवर चौपाई को एकही अन्वय है श्री रामचन्द्र कहते हैं यद्यपि सब कोई वैकुण्ठनाथ बखानते हैं वेदपुराण सब गावते हैं तिस करिके सब जगत जानते हैं एक वैकुण्ठ सब पेसे हैं (२८)॥
॥ अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ ॥
॥ यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
पर अवध समान मोको वैकुण्ठ हू प्रिय नहीं है पर प्रसंग को इ जानेंगे जो मेरे विशेष शरण होहिंगे तहां जो कोई कहै कि श्री अयोध्या श्री राम जन्मभूमि है जहां नर लीला कीन्ही है ताते अवध बहुत प्रिय है जो यह अर्थ सिद्ध करी तो यह कहा है कि (यह प्रसंग जानै कोउ कोइ) पाइ यह ते विरोध होत है श्री रामचन्द्र की जन्मभूमि सब जानते हैं इहां कोऊ कोऊ विशेष यह क्यों कहा देखो वोही विशेष वचन आपने मुखते कहे हैं (प्रमाणं श्री भगवद्गीतां माम)
मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये (। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ? ताते श्री रामचन्द्र जापर अति कृपा करते हैं ताको श्री मुखते आपनो तत्त्व बतावते हैं ताते परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर ताके चरित तत्त्व जानिवे को गूढ है नाम स्वरूप लीला धाम विशेष है तहां श्री रामचन्द्र कृपा करि कै

आनन्द सबको बनावते हैं तातें सब जीवन ते यहैं चौपाई चौबै अनूप आगे चौपाई में अपसिद्ध होत है यद्यपि सब बैकुण्ठ वेद पुराण बखानते हैं तिनहीं के द्वारा हैके जगत् सब जानत है सबकहीं बहुत बैकुण्ठ जो है तिन सब बैकुण्ठन में श्री अयोध्या मोंको बहुत प्रिय है पर अन्वय दूसरी चौपाई में है वेदपुराण बखानते हैं सर्व बैकुण्ठ जन्मभूमि मम पुरी यह श्री मुख वचन ताको अर्थ अयोध्या सब बैकुण्ठन की जन्मभूमि है कोई कहे कि अयोध्या ते बैकुण्ठ की जन्म कब भयो है तहां यह न कोउ के मन में आवै अनिर्वाच्य है इहां कारण कार्य अनादि है जैसे जीव ईश्वर माया को भूल कारण है पर यह नाहीं काहू कहा कि ईश्वर ते जीव भयो है ऐसे तीनहु तत्त्व अखंड अनादि हैं परबोध के हेतु कारण कार्य कहा जात है तैसे अयोध्या अरु बैकुण्ठ जानव ऐसेही नामरूप इत्यादिक जानव पर सब बैकुण्ठ श्री रामही के जानव पर अयोध्या सबते प्रिय है तहां (प्रमाण है ग्रन्थान्तरे एकसे आठ बैकुण्ठ भूपर है पांच बैकुण्ठ ऊपर हैं एक बैकुण्ठ नव नारायण निद्रा को प्रेरणा करते हैं तब ब्रह्मा निद्रावश स्वप्न अवस्था को प्राप्त होते हैं तब नारायण की इच्छा ते जगत् जलार्णव होत है सो नैमित्य प्रलय कही ताको कारण क्षीरसागर बैकुण्ठ है काहे ते ब्रह्मा नारायण के पुत्र हैं द्वितीय रमा बैकुण्ठ है तिहां सनकादिक श्राप होत हैं जयविजय को तृतीय कारण बैकुण्ठ जहां महाप्रलय में प्रकृति पुरुष सम्यता को प्राप्त होत है जहां तीनि गुण पांच तत्त्व सम है पुनि जब वही पुरुष महाविष्णु ईक्षणा करै है तब वैसही जगत् को होत है पुनः चतुर्थ बैकुण्ठ महाभगवान चतुर्व्यूह वासुदेव पुरुष प्रकृति

पर विराज मान है पंचमपद वैकुण्ठ विरजापार ताहि को पूर्ण अयोध्या कहत है तातें सब वैकुण्ठन को मूल श्री अयोध्या है सबस्वरूपन को मूल श्री रामस्वरूप है सबनाम को मूल श्री रामनाम है सबलीला को मूल रामलीला है सब प्रतापन को मूल रामप्रताप है तहां प्रमाण है (भार्गव पुराणे नारायण वाक्यं नरं प्रति श्लोकः सप्तसाहस्र ८॥) यद्देव पुरा ब्रह्म वैकुण्ठनगरे हरेः॥ सर्वेश्वरी - जगन्माता प्रत्यक्षक-मलालया १ त्रिपाद्वि भूति वैकुण्ठ विरजायाः परे तटे॥ पाद्देवानां पुराऽयोध्या ह्यमृतानां मूना-पुरी २ (अन्यच्च) वैकुण्ठ पंच विख्याताः क्षीराब्धिपद-मार्कजम्॥ महा कारण वैकुण्ठं पंचमं विरजापरम् ३ नित्या दिव्य मने क भागविभ वं वैकुण्ठरूपोत्तरम्॥ सत्यानन्द चिदात्मकस्वयमभूः मूलं त्वयोध्यापुरी ४ गोलो-काच्च परं ज्ञेया साकेतोन्तः पुरप्रिया॥ गोप्या गोप्यतरा गोप्या साऽयोध्यातीव दुर्लभा ५ (इति महा रामायणे शिव वाक्यम्) रामस्य नाम रूपं च लीला धाम-परात्परम्॥ एत च्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्दविग्रहम् ६॥ इति नारद पञ्चरात्रे (पुनि-वेद कहत हैं) याऽयोध्या पुरी सा सर्व वैकुण्ठानामेव मूलाधारा मूलप्रकृतेः परा सत्स द्ब्रह्म मया विरजोत्तरा दिव्य रत्न कोशाढ्या तस्या नित्यमेव सीता राम योर्विहारस्थलमस्तीति॥ इत्यथर्वशावेद उत्तरार्द्धे॥ या देवानां पुराऽयो ध्या तस्यां हिर रामयाः कोशः स्वर्गो लोको ज्योतिः प्रवृत्तां यो वै तां ब्रह्मणो नामृते नामृतां पुरी तस्मै ब्रह्मा च आयुः कीर्ति प्रजा ददुरिति साम वेदे तै-त्तरीय श्रुतिः॥ सर्व वैकुण्ठन की जन्मभूमि मम पुरी श्री अयोध्या सब

पर विराजमान है सुहावनी कही सुरमुनि नागनर सबके मनभावनी है अरु मेरे मन भावनी है अरु सबवैकुण्ठ मेरोई है सब वैकुण्ठन ते मेरोई स्वरूप है श्री रामचंद्र यह कहा जो कोई कहै कि भगवान के बहुत रूप हैं तहां भगवान को एकही है पर कार्यकारण करिकै बहुत हैं सदा अखण्ड एकरस हैं अरु भगवान अपनी इच्छा ते अनन्त कलाविच्छिन्न हैं भगवत शक्ति को वेद नेति नेति कहते हैं सोइच्छाते न्यतने पहले हैं त्यतने स्वरूप बनावते हैं तहां श्री रामचन्द्रने कहा है सो सुनिये (४)

जो मज्जन ते बिनहिं प्रयासा ॥ ममसमीप नर पावहिं वासा ॥

पुनि यहां के बासी मोको बहुत प्रिय हैं अरु पुरी जो अयोध्या सो मेरो धाम कही स्वरूप की देनहारी है (दूसरा अर्थ) पुरीको विशेषण कहिआये हैं अब पुरवासिन को विशेषण कहते हैं ताते अति प्रिया कहा जैसे एक गुरुके बहुत शिष्य हैं सो सबप्रिय हैं तिनमें एकको गुणवान विचारि कै समस्त अपने ऐश्वर्य को मालिक करिदियो है सो अतिप्रिय भयो है तैसे श्री रामचन्द्र कहते हैं मेरे बहुत पुरी हैं अरु पुरी के वासी जो हैं सो सबै मोको प्रिय है पर अवध के बासी मोको अति प्रिय हैं काहे ते कि मैं इनको इतनो अधिकार दियो है कि यहां के वासी समधामदा हैं मेरो धाम जो है परमपद किन्तु धाम कही मेरो स्वरूप सो मोक्षको दाता एकही है जीव मोक्ष दाता नहीं है अरु अवध बासी मो धाम जो यहाँ पुरी सुख कही मुक्ति भुक्ति के बासी ताके दाता अवध वासी हैं

तेरे समान ऐश्वर्य को प्राप्त हैं ॥

अतिप्रिय मोहि इहां के बासी ॥ मम धामदा पुरी सुख रासी ॥

श्री रामचन्द्र के बचन सुनिकै सब कोप हर्ष भयो धन्य श्री अयोध्या जी जाको श्री रामचन्द्र निज मुखते बखानते भये (८) ॥११॥ ॥०॥

जनुप्रेम अरु शृंगार तनु धरि मिलत बरु सुखमा लहीं ॥ ॥

भरत श्री श्री रामचन्द्र मिलत सन्ते जैसे शोभित हैं तो उपमा मोसे नहीं कही जाती है जनुप्रेम अरु शृंगार तनुधरिकै मिलत हैं बरनाम श्रेष्ठ सुखमा कहो शोभा पुन प्रेम की मूर्ति श्री भरत जी हैं अरु शृंगार का मूर्ति श्री रामजी है जबप्रेम अरु शृंगार एक रस भयो तब सुख शोभा आनन्द विविध भयो इसलिये श्री शंकर जी कहते हैं कि मोपै नही कहा जाता ॥ **॥ बूझत कृपा निधि कुशल भरथहिं बचन बेगि न आवहीं ॥ सुनि शिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान न पावहीं ॥** हे शिवा दो भाइन को परस्पर मिलाप का जो सुख है सो मनवचन ते भिन्न कैह न्यारो है तो नही जाना जाय है ॥ अथवा मनवचनते भिन्न जाको आत्मक अनुभव होय तो जानते जानिवे मे आवे है वाह सुखको ॥ अथवा मनवचन ते भिन्न जाना कहो भिन्न तो कावेन को प्राप्त होय यहां दोऊ भाइन के मन वचन के भीतर रहिगयो इससे नही कहेने मे नाही आवत है ॥

भरथ अनुज लक्ष्मण पुनि भेंटे॥ दुसह बिरह संभव दुख मेटे॥

पुनि शत्रुहन लक्ष्मण जी मिले दुसह बिरह जो है सो नाश ह्वैगयो है कैसे दुसह बिरह सम्भव नाम जो दुस्सह विरह ते उत्पन्न दुःख है सो समस्त मिटिगयो पुनः द्वौ भाइन में किसके दुःख रहे जो सो शत्रुहन मे दुख कहो तौ श्री रामचन्द्र के मिलेते दुःख नाश ह्वै गयो भाई के मिलते दुःख गयो तौ शत्रुहन में लघुता आवती है अरु लक्ष्मण जी श्री रामचन्द्र के संगही रहे तहां दुःख कहां है नहीं है तहां श्रीरामचन्द्र के बनगमन को संयोग बिरह रहेउ ताके कारण कैकेई पुत्र भरत जो तिनको सेवामें शत्रुहन रहे, ता शत्रुहन पर लक्ष्मण जी को दुःसह दुःख रहेउ जब श्री भरत जी कोशला श्री रामाकार देखत भये तब शत्रुहन को मिलत भये सो समस्त दुःख मिटिगयो अरु जब श्री भरत जी चित्रकूट को गये रहैं तहां रघुनाथ जी के मनाइबे को समय रहै ताते भरत जी के ऊपर श्री लक्ष्मण जी को पूर्ण बोध नहीं भयो ॥(१)॥

छन महं सबहि मिले भगवाना॥ उमा मर्म यह काहु न जाना॥

तहां एक क्षण मात्र में सबको मिले पर हे पार्वती यह मर्म काहू नहिं जान्यो यह सब ही जान्यो की श्री रामचन्द्र प्रथम हमहीं को मिलते हैं आपु आपु को धन्य मानते है ऐसो चरित्र श्री राम चन्द्र क्यों कियो कृपालु है सबके अन्तर बसते है सबके सुखदाता है परब्रह्म हैं पूर्ण भगवान हैं भगवान शब्द को अर्थ करते हैं भगवान कहो षट भाग संयुक्त ॥ ऐश्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष तिनको स्वरुप कहते हैं ऐस्वर्य जाको कहो जाके नेक

ब्रम्हाण्ड हैं पुनिधर्म कही सत्यवाक्य सर्व दाता निष्कलङ्क सङ्ग कर्म होवै ताको धर्म कही पुनि जस काको कही उदार अनप जाको कोई गीत नसके सील निधि होय अत्यन्त सुन्दर ताको देखके चराचर मोहै ताको यशकही पुनिश्री काको कही तेजको कही ताके तेज के आगे सूर्य-चन्द्र अग्नि दामिनि इत्यादिक छिपजाय पुनि श्री कही सोभा स्वरुप कीके सर्वगुण करिके शोभित है पुनि श्री कही प्रतापको ताको सबडेरें जाकी आज्ञा में पृथवी आप तेज वायु आकाश तीनोगुण देवदानव मानुष्य इत्यादिक चराचर वर्तमान है पुनि श्री कही लक्ष्मी जो की ताको आज्ञा अनुकूल है के कोटिन ब्रम्हाण्ड में सुखभोग करदियो है ताको श्री कही ॥ पुनिवैराग काको कही शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध चित्त बुद्धि मन अहंकार सात्त्विक राजस तामस इनसबको अपने वश किये है अरु इनके परे है ताको वैराग कही ॥ पुनिमोक्ष काको कही सलोक्य भगवान के लोक मे वसे सामीप्य सदा निकट रहै सारुप्य जैसो भगवान को रूप तैसो रूप होय सायुज्य कही अलंकार है कै रहै अथवा कोई के मतमे ऐसा है जैसे सूर्यको तेज घर घुरै सूर्य ही मे लीन होत है ताको सायुज्य कही पुनि सार्ष्टि मुक्ती सामान्य ऐस्वर्य अपने समान ऐस्वर्य देते हैं ये पांच मुक्ति हैं ताते ऐस्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष एते खटभाग जामे सम्पूर्ण होय अरु अपने जन की छोरके दाता होय ताको पूर्ण भगवान कही जो स्वरुप खटभाग मे कछुक कम होय ताको अन्शकला विभूति कही देखिपेती खट

भाग श्री राम चन्द्र के वाम चरण मे खटकोण अंक है ताको लङ्भागशाह्न कहेत हैं ताते श्री रामचन्द्र पूर्ण भगवान हैं ॥ श्री मन्महारामायणे शिव वाक्यम्) ऐश्वर्येणाच धर्मेण यशसा च श्रियैवच ॥ वैराग्य मोक्षद्वकोणौ संज्ञातो भगवान हरिः १ पोषणं भरणाधारं शरण्यं सर्वव्यापकम् ॥ करूणं षड्भिः पूर्णो रामस्तु भगवान स्वयम २ अनेक ब्रह्माण्ड को पोषण गुण भरणा गुणा आधार गुणा सर्वशरण्यत्व गुणा सर्वव्यापकत्व गुण एते षड्गुण परम दिव्य ते पूर्ण श्री रामचन्द्र हैं ताते पूर्ण भगवान कहा (८) याहि प्रकारते सब को मिलकै सुख रूप परमानन्द दै के श्री रामचन्द्र आगे चले शील इत्यादिक जे अनन्त गुण है केवल कल्याण रूप ताके धाम हैं। यहां प्रथम शील गुण क्यों कहा जेते श्री कौशिल्या जी के सम्बन्धी है अरु जेते कैकेई के सम्बन्धी है अपर समस्त ताको एक रस मिले अरु सब को एक होवार मिले ताते श्री रामचन्द्र को शील गुण धाम कहा ॥(८)

।कौशल्यादि मातु सब धाई ॥ निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई।

श्री कौशल्यादिक माता श्री रामचन्द्र के मिलिबे को धावती भई जैसे बछरा को देखि के लगती गऊ धावै है जो कोई कहै कि जवसवको मिले तव का श्री कौशल्यान मिलिबेको रहिगई हैं तहां यामे दुइ भाव सूचित है एक तो सबको मिलिकै तब श्री कौशल्या को मिलते हैं यामे अति आदर अतिअनन्द सबको प्रभु देते हैं अथवा सबके संग ही सबमातन को मिले अब क्यों माता धावती भई अब श्री रामचन्द्र एकरूप है मिलवछुरै कै सबदेखते हैं अरु सबमात अति आर्त हैं तहां पुनरुक्ति न कही बार बार मिलिबे को उचित है ॥(९)

जनुधेनु बालकबच्छ तोनिगृह चारनबन परवश गई ॥ दिन अन्त पुरख स्रवत थन
हुंकार कौर धावत भई ॥ सवमातनको दृष्टान्त देके अतिशय स्नेह जनावत
हैं जनुधेनु बालक बछरा को गृहमें छोड़ि के आपु परवश हैके बनमें चरवे
को गई है जब सूर्यअस्ता चलको गये तब गऊ जो अति स्नेहा रही सो घरको
धावती भई थनमें दूध स्रवत हुंकार करत मन्ते धाई तैसे ही चौदह वर्ष
दिनरूप उल्टा दुखदाता सो बीतत भयो तब श्री रामचन्द्र के भेटिवे को धावती
भई जो कोई कहै की माता तो घरही में रही है श्री रामचन्द्र बनको गये यह
उल्टे दृष्टान्त को एकदेश लेते हैं कहूं दुइ कहू तीन कहू चारि पद पूर्ण-
दृष्टान्त लेते हैं ताते यहां केवल स्नेह लियो है और दूसरा दृष्टान्त है
श्री अयोध्या काण्डे चौपाई ॥ तहींहि अवध जहं रामनिवासू ॥ तहींहि दिवस जहं
तरणि प्रकाशू ॥ जहां श्री रामचन्द्र हैं तहींहि श्री अयोध्या है ताते श्री रामचन्द्र
बछरा भाव घरही हैं माता गऊ भाव बन में रही ॥

दोहा ॥ भेटउ तनय सुमित्रा रामचरण रति जानि ॥ रामें मिलत कैकेयी
हृदय बहुत सकुचानि ॥ लक्ष्मण सब मातन्ह मिले हर्षि आसिष पाइ ॥
कैकेइ कहं पुनि पुनि मिले मन कर छोभ न जाइ ॥ श्री सुमित्रा जो लक्ष्मण जो
तिनको भेटती भई अतिप्रीति ते पर पुत्र मानि कै नहीं श्री रामचन्द्र जू
के चरणारविन्द मे रत नाम अतिप्रीति जानि कै भेटती भई यह
परमानन्द्य भाव कहावत है पुनि श्री रामचन्द्र को श्री कैकेई जो

मिल्तो भई॥ पर हृदय मे बहुत सकुचत भई आपनी करणी समुझकै सन्मुख
चितै नहीं सकै है अथवा श्री रामचन्द्र के मति सकुचत भई पहचानि कै
कि मैने कैकेयी के उपर बहुत भार दिया अब कैकेयी जी को उप-
कार मैं केहि विधिते करों यह श्री रामचन्द्र मनमे कहते है सो
आगे कहैंगे लक्ष्मण जू कौशिल्या आदिक मातन को मिलतभये
आशीर्वाद मातन ने दीन को तुम्हारी प्रीति अरु श्री सीता राम-
चन्द्र के प्रीति तुमपर बनी रहै सर्वकाल मे अखण्ड एकरस दिन
प्रति अधिकाय यह सुनिकै अतिसय आनन्द भयो श्री लक्ष्मण जी
कैकेयी को पुनि पुनि मिले पर लक्ष्मण जी के मन कछ क्षोभ न
भयो तहां क्षोभ कही सन्देह संयुक्त मन वचन मे नीक बेकार
न होय दोउन को गोल यन्द जाय तहां तो श्री लक्ष्मण जी के
मनमे क्षोभ रोपण करौ तो पुनः पुनः जो यह है सो अति प्रीति
प्रीति को उपजावत है तहां क्षोभ कहां है तहा कैकेयी के मन मे
क्षोभ रह्यो का क्षोभ रह्यो की लक्ष्मण जू मोको दुइ बार मिले एती
प्रीति कियो मोसे कछु न बन्यो अब का करौं यह क्षोभ रहा॥ अथवा
दुई बार बहुवार किसी को कोई बधाई देइ अथवा दुईवार बहुवार मिलाप
करै तहां प्रीत अरु व्यंग दुनौ सूचित होत है ताते कैकेयी के मन मे यह
रह्यो कि लक्ष्मण जू अबधौं का करैं पुनि श्री लक्ष्मण जी प्रीत

प्रीति ते ईईबार क्यों मिले श्री भरत को श्री रामानन्द प्राप्ति के कैकेयी श्री
रामचन्द्र को वनवास न देती तौ श्री सीतारामन के सेवा केवल नन्दी-
हम कैसे पावते तातें कैकेयी धन्य है अथवा तिनको माता जानि मिले
प्र क्षोभ कछु रह्यो कि अवकछु विघ्न न करै अथवा यह जानि कैकेयी
श्री कैकेयी श्री रामचन्द्र को मन मिलो सब सकुचाने तब श्री रामचन्द्र पूर्व
मिले अरु लक्ष्मण जी एकैबार मिले उलटे के अप्रसिद्ध होत है क्षोभ
क्षोभ लक्ष्मण जी को रहा यह जानि के श्री श्री रामचन्द्र अति प्रीति ते ईई
बार मिले अवधौं कैकेयी वा कौ है ॥ चौ० ॥

॥ कनक थार आरती उतारहिं ॥ बारबार प्रभु गात निहारहिं ॥

तीनसौ साठि श्री कौशिल्यादिक पट्टरानी रानी हैं तामें तीन महा मुख्य हैं
अपर को गानै केती हैं ते समस्त चहुँ दिशा ते कञ्चन के थारनमें अनेक मणि
माणिक तुलसीदल इत्यादिक मंगलपदार्थ भरे गोघृत कपूरयुक्त बाती
ते थारनमें आरोपित किये कोई के मतमें विषमवाती कह्यो है पांच सात इत्या-
दिक कोई मुनिके मतमें समवाती कह्यो हैं चारि आठ इत्यादिक अहमेर भाव मे
तौ सम आवै है काहे ते श्री रामचन्द्र श्री जानकी जी एकही हैं सर्व दिशा ते
मण्डलाकार ठाढी हैं आरती करती हैं श्री सीतारामचन्द्र सबके सम्मुख हैं चारि
चारि चरण में आरती करती हैं दुइबार कटि मे एक मुख मण्डल में सातबार
सर्वांग में आरती करिके श्री सीताराम के अवशिष्ट अंगअंग निरखती है ॥४॥

" हनुमनादि सब बानर बीरा ॥ धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥
हनुमत इत्यादिक जे बानरवीर हैं ते मनोहर मनुज शरीर धारण किये हैं मनोहर क्यो कहा जो मनको हरै ताको मनोहर कहो सो मनोहर श्री रामचन्द्र हैं जिन श्री रामचन्द्रने समस्त देवदानव सिद्ध मुनिमनुज जड़ चेतन इत्यादिकन के मन अपनो स्वरूप देखाइकै मोहिलियो तैसे हनुमान इत्यादिक जे वीर हैं अठारह पद्म अरु अपर सेना अनन्त तिनसबनको श्री रामचन्द्र अपनो स्वरूप दीन अरु लक्ष्मण को स्वरूप दीन सो इनको नित्यस्वरूप यही है अरु देवांश लीला हेतु बानराकार रहे हैं लीलान्त देवतनके अंश देवतन मैं गये यही जो नित्यस्वरूप सोई रहिगये हैं सो अब सबहीने लैके जब रावणको विजय कीन है तब सेना पुष्पकविमान परचढ़ी चली आवती है अयोध्या जहां राजाको नाम लियो तहां समस्त सेना जानिये तैसे हनुमदादि समस्त सेना जानिये कि श्री रामाकार हैं सोई श्री रामचन्द्र लक्ष्मण को स्वरूप है तैसे सब सैना हैं ॥२॥ " " " " " "

भरतसनेह शील व्रत नेमा " ॥ " सादर सब बर्णहिं अति प्रेमा "
श्री भरतजी को स्नेह शीलव्रत नेम जोहै श्री रामचन्द्र बिषे श्री सबसेना बर्ननै हैं आदर प्रेम संयुक्त स्नेह कहो प्रीति शील कहो यहां सहनशील हैं श्री रामचन्द्र के हेतु अनेक सीत उष्ण क्षुधा त्रिषा मानापमान निन्दादिक इनसबको सहिकै मनता करणे मे प्रसन्न हैं व्रत कहो एकादसी इत्यादिक श्री भरतजी कैसा व्रत कीन है कि श्री रामचन्द्र वनमे फलकन्द मूल इत्यादिक भोजन कीन है चौदा वर्ष

पर श्री भरतजी प्रह्वृतकौन है नन्दीग्राम मे बैठके गेठकी शुक्लपक्ष की परिवासो पैसा भरि जौ गोमुत्र मे भिजायके ताको मिजिके रसपान करते रहे एसेही तिन प्रति पैसा पैसा भरि बढावत जाहि पूर्णमासी लई पुनि एसे ही कृष्णपक्ष की परिवाते पैसा पैसा भरि घटावत जांय ऐसेही तीनवर्ष तीनमास पुनि तीन वर्ष तीन मास दुर्वादल के शाकके आधार रहे पुनितीनवर्ष तीनमास फलके आधार रहे पुनितीन वर्ष तीनमास जल के आधार रहे पुनितीन वर्ष तीनमास पौनके आधार रहे पुनि एक वर्ष निराधार रहे एसेही व्रत जबलग श्री रामचन्द्र को नही मिले तबलग कौन है पुनि कहीं प्रणको समस्त धर्म को प्रणकौन है पुनि नेम जम को एक साथही करै ये सब और करते है श्री रामचन्द्र के हेतु त्रिकाल संध्या पुनिकालकाल श्री रामचन्द्र के पादुका युगुल ताको पूजनपुनि श्री सीताराम युगल मन्त्र ताको जाप ताको नेम द्वादश सहस्र दिनप्रति अरु श्री राम सीता [illegible] बोधिरही है अनेकवार सो सवस्रावते हैं ॥३॥ ॥ ११६५ ॥

"ममहित लागि जन्माइन हारे॥ भरतहु से मोहिं अधिक पियारे"

(८) मम हित लागि जैसेसब सखा होते ते सब जनम को हारि दियो है आत्मा समर्पण कियो है ताते भरत जैते अधिक प्यारे हैं तिन अरु भरत श्री तो रामरूप ही हैं अरु एते सब वानर रिक्ष राक्षस तेसब तामसी तनमे श्री रामचन्द्र के अनन्य भये हैं देहआदिक सबसंसार भूलिगये हैं ताते भरतजी ते अधिक प्रिया हैं ताते श्री रामचन्द्र कहा है सत्यसंकल्प है जिनको आगे

चौपाई प्रमाण है अनुज राज सम्पति वैदेही देहिगेह परिवार सनेही
सब ममप्रिय नहि तुमहि समाना मृषा न कहउं मोर यह बाना।(८)
सुनिप्रभु वचन मगनसब भयऊ ॥ मग्न माने प्रसन्न होये। अथवा सु-
नत सन्तें जो आनन्द भयो तामे मग्न कहीं डूबिगयो फिरि श्री रघुना-
थजी की कृपाते निमिष कहीये जो पलक चलै सो निमिष २ ते
नये २ सुख उत्पन्न होते हैं नये सुख कौन हैं यह समझ कै कि
रघुनाथ जी अहेतुकृपालु हैं समस्त सखा दास अपने मनमे यह
कहते हैं कि हमकोन्यो लायक नहीं हैं अरु हमारी बड़ाई प्रभु
करते हैं तथा यह जानि परयो की हमारी सेवा रघुनाथ जी अंगीकार
कीन है पुनि श्री रामचन्द्र हमको आपन कीन है इत्यादिक-
नये २ सुख उपजते हैं ॥-७॥ कौशल्या के चरण युग पुनि ति-
नायो माथ आशिष दीन्हे हर्षि तुम प्रिय मम जिमि रघुनाथ:
समस्त सखाजन श्री कौशल्या जी के युगपद कन्ज तामे दण्ड इव परत
भये माताजी हर्षि कै अशीश दीन तुमसब मोको श्री रामचन्द्र
सम प्रिय हहु मानिबेको श्री राम अरु श्री रामदास एकही हैं
मानिबे की सेवक स्वामी हैं जब श्री कौशल्या जी सबको श्री
राम सम कह्यो तब श्री रामचन्द्र ने हृदय मे बिहसिकै संकल्प-
कीन है कि ये समस्त सैना मेरोई स्वरूप सदा बने रहै मैं
सबको संगही लेजाऊंगो अरु जब श्री कौशल्या जी के

बचन देवतनसुन्यो अरु श्री रामको संकल्प जान्यो तबतरमा अन्द्रभूत अरु परविभूति को प्राप्तभये पहजानिके कि श्री रघुनाथ जो अब हमको अपनों सेवक कीन्ह काहेते श्री रामचन्द्र के सखा शासके सम्बन्धते (१) ❁ नारि कुमुदिनी अवधसर रघुपति बिरह दिनेश ॥१॥ अस्तभये विकसत भई निरखि राम राकेश ॥२॥ श्री अयोध्या की नारिने समस्त है ते कुमुदिनी भई अयोध्याको सागरस्थाने जानिये श्री रामचन्द्रको विरह चौदह वर्ष सोई सूर्य स्थाने सो अस्तभयो श्री रामपूर्ण चन्द्र उदय करी प्राप्तभये जैसे सूर्य के उदयते कुमुदिनी सम्पुटित होती हैं चन्द्रमा के उदयते प्रफुल्लित होती हैं तैसे अवधके नारिन के आनन्द भयो है नारिही क्यों कहा पुरुषन कहा श्री रामचन्द्र स्वामी हैं सबके प्राण सबके प्राण नारिहीं रूपहैं अरु स्वामी के बिछुरते स्त्री की अति विरह होत है ताते नारिहीं कहा है ॥ अरु पूर्ण चन्द्रस्थाने श्री रामचन्द्र हैं सो कहते हैं चन्द्रमा आकाश मे उदय होता यहां श्री पुष्पक विमान आकाश मार्ग मे शुशोभित है वहां चन्द्रमा नक्षत्रों के मध्य में प्रकाशित होता है यहां श्री रामचन्द्र वानर भालुओं के मध्य में विराजमान हैं वहां चन्द्रमा बुध रोहिनी के सहित है यहां श्री रामचन्द्र चन्द्र श्री जानकी जी अरु श्री लक्ष्मण जी ते संयुक्त हैं वहां चन्द्रमा चौदह दिवश अतीत भयेपर पूर्णमासी को पूर्ण चन्द्र कहावै है ॥

यहां श्री रामचन्द्र जी चौदह वर्ष व्यतीत कर श्री अयोध्या जी में प्राप्त भये हैं याते राका शशि श्री रामचन्द्र जी को कहा है यह पूर्ण उपमा अलङ्कार है (१) **प्रभु जाना कैकेई लजानी॥ प्रथम तासु गृह गये भवानी॥** प्रभु जाना कैकेई लजाय गई तातें हे भवानी प्रथम कैकेई के भवन गये कैकेई यह लखि जानि कि मैंने श्री रामचन्द्र को वन दीन अरु मेरे ऊपर श्री रामचन्द्र की एक रस प्रीति बनी है अथवा लज्जा मिसु मानो याद करती भई कि श्री रामचन्द्र जी को याही ते बिछोह-कीन पुत्र ते बिछोह कीन त्रैलोक मे अजस लीन अरु मैंने सदा यन्ता अनुकूल ही रही है अथवा प्रभु जानो कैकेई को तातें श्री रामचन्द्र के जीत संकुच्यानि कि कैकेई ने मेरी आज्ञा केवल कियो है १॥ **ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीना॥ पुनि निज भवन गवन प्रभु कीन्हा॥** ताको प्रबोध विविध प्रकार से कीन हे मातु लंका विषै मैं दशरथ महाराज ते मांगि लीन है कि कैकेई को अंगीकार करो पै कर्तव्य सब मेरी है विवेकी जन जे हैं सो तेरी स्तुति करेंगे अरु भरत जु तुमको माता नहीं मानेंगे तौ आजु ते तुम हमारी माता हम तुम्हारे पुत्र भरत जु कौशल्या के पुत्र आज हम कौशल्या के महल को नहीं जायगे ऐसे ही विविध प्रकार ते प्रबोध करिके बहुत सुख देके श्री-रामचन्द्र ने हे पार्वती निज भवन को गवन कीन॥ **अब मुनि-वर विलम्ब नहि कीजै॥ महाराज का तिलक करीजै॥** समस्त ब्राह्मण कहते हैं कि हे मुनिवर मुनिन मे वर नाम श्रेष्ठ श्री

बशिष्ठजी अबविलम्ब जनिकरो महाराज को तिलक करो महाराज क्यो कहा अबही तो तिलक नहीं भयो तहां सब ब्राह्मण ब्रह्मवेत्ता हैं ब्रह्माण्ड के [illegible] त्रिकालज्ञ हैं तिन्हुं के राजा श्री रामचन्द्र हैं ताते महाराज कहा अपना महाराज गद्दी श्री अयोध्या ताको तिलक करो किन्तु भविष्यत कहा महाराज होयगे ॥

जहं तहं धावन पठयतब मंगल द्रव्य मगाय ॥ हर्ष समेत बशिष्ठ पद पुनि सिरनायउ आय ॥ तब श्री बशिष्ठ जी का आज्ञा पायके धावन जो रहे अनेक मंगलमय राज्याभिषेक के जेते द्रव्य चाहिये तेते तुरत आनि-दीन श्री बशिष्ठ जू के चरणगहे आय द्रव्य संज्ञा सबही की है सात स-मुद्र को जल ब्रह्माण्ड भरे के तीर्थ का जल अनेक औषधि औ व्याघ्र मृगन के चर्म अनेक उर्णवस्त्र बनात इत्यादिक अनेक सुगन्ध इत्यादिक फल पनस रसाल पुंगीफल इत्यादिक और पुष्प कमल गुलाब इत्यादिक मणि मानिक मुक्ता इत्यादिक अनेक रत्न मृग अनेक जाति के जेते वेद राज्याभिषेक के मंगल पदार्थ वर्णन हैं तिन सबन के द्रव्य संज्ञा है सो तुरन्त ल्याये ॥

॥ चौ० ॥ अवधपुरी अति रुचिर बनाई ॥ देवन सुमन वृष्टि झरि लाई ॥ पुनि श्री बशिष्ठ जी बोले हे सुमन्त श्री अयोध्यापु-री को सर्वदिशि ते अति रुचिर बनावहु ध्वजा पताका कलश कदली सुपारी नारियल बन्दनवार चौक इत्यादि सबौरहु जहां जस जोग चाहो तब सुमन्त कहा हे महा मुनीश आपके कृपा ते सब तैयार है तेहि समय मे आकाश ते देवता कल्पवृक्ष के फूल

बरसावने लगे गन्धर्व किन्नर अपसरा गानबजान नृत्य करते हैं॥

॥ चौ०॥ करिमज्जन प्रभु भूषण साजे॥ अंग अनंग कोटिश-त लाजे॥ हे पार्वती श्री भरतजी के भाग अरु श्री रघुनाथ जू के कोमलता यह हुनों नहीं कहिसकत जो सारदा अरु शेष कोटिन होहि॥ चौ०॥ तब भरत जी दोनो कर जोरि कै सन्मुख ठाढ़ होइके बोलतेभये अति आर्त मधुर बचन के करुणा निधान जो प्रभु की आज्ञा होय तो आपकी जटा निरुवारौं-तब श्री रामचन्द्र प्रसन्न होइके गुरु अज्ञा पायके एवमस्तु कहते भये तब भरत जी अति हर्ष ते श्री रामचन्द्र की जटा निरुवारते भये हैं भरत जी के निज जटा निरुवारि कै अगर चन्दन केशर कपूर मिस्रत श्री सरयूजल ते स्नान करावते भये हैं॥ ७॥ मज्जन कराय के श्री रामचन्द्र जी को भरत जी पीताम्बर पहिरावते भये पुनि अंग अंग प्रति परम दिव्य-

कंचन मनिन मय भूषण पहिरावते भये किरीट शीश पर सो-

परखण्ड पहुँफेरि है एक खण्ड मध्य मे है अरु छः खण्ड के बीच

बीच एक फणाकार झुकि रह्यो है अरु सब मोतिन ते सनटिकावोहि

रह्यो है अरु मध्य को खण्ड मुकुटाकार है अनेक रंग की मीन

जरित है कोटिन सूर्य के सम प्रकाश कोटिन चन्द्रमा सरिस

शीतल मधुर निर्मल अमृत मय ऐसो किरीट है ॥१॥

सनत्कुमार संहितायाम् ॥ भानुकोटि प्रतीकाशम् किरीटेन

विराजितम् ॥ रत्नग्रैवेय केयूरं रत्नकुण्डल मण्डितं १ ॥

(अन्यच्च) ॥ भानुकोटि प्रतीकाशं चन्द्रकोटि प्रमोदकम् ॥

किरीटं षट्खण्डंच मध्यइक मुकुटा कृतिम् ॥

पुनि कुण्डल मकराकृत ताको दुई अर्थ मकर जो है मीन तद्वत कुण्डल

है मीन को मुख पूंछ मिलित मुद्राकार मीन मुख मे झुमका कुण्डलाकार

है अथवा केवल कुण्डलाकार शान्ता हैममन्त मणि रंग रंग की

कणी छोटी छोटी मोतिन करिके शोभित है मीन को चपलता

लीन है श्री रामचन्द्र को स्वरूप सर्वांग मरकतमणि तद्वत आवरणरहित
है परमनिर्मल परमदिव्य चक्षुधारिकै दृश्यमान हैं तहां कपोलनिपर
अलकैं वंक्र कुण्डलसंयुक्त हलत है शोभित है ताकी अद्भुत उपमा है
जनुपूर्ण शशि ताके सुधा हेतु रबिसुवन अरु राहुसुवन समरकरते हैं
पुनि जनु मिलापकरते हैं पुनि जनु चन्द्रमा में अमृतकुण्ड तामें कामके
मीन अरु सर्पके बच्चा क्रीड़ा करते हैं पुनि जनु मैन आपहीं सर्पके फन
नन मणिन संयुक्त लिये नृत्यकरत हैं जनु नारिकै रघुनाथ जी के मुख
समीप पूछे हैं जो मोको आज्ञा होइ तौ ब्रह्मा की सृष्टि भरें को मन मोहि लेउं
ऐसी अनेक उपमा शोभा को कहि सकै कुण्डल अनेक सूर्यवत प्रकाशमान
है अनेक मणि बलु झिलमिलात हैं (श्लोकः सदाशिव संहिता याम्) सूर्य-
कोटि प्रतीकाशं कुण्डलाढ्यं श्रुतिद्वयम ॥ नासाग्रैक समायुक्तं मुक्ताफल-
स्फुरन्मुखम ॥ पुनि श्री रामचन्द्र की सदा मध्य किशोर अवस्था है पुनि नासिका
में एक मोती स्फुरित है जनु रातिने अपनी सेंदुरदानी चन्द्रमा को दीनि
है पूर्णशशि ने अल्पतडित ते पोहिकै अपने हृदय में पहिरो है-
जो कोई कहै कि यद्यपि बुलाक शास्त्रोक्ति है तदपि राज्याभिषेक में
न चाही तहां रसिक कविन की इच्छा जानव पुनि चिबुक में पीन बिन्दु है
सो पुनि श्री जानकी जी को चिह्न है पुनि सुग्रीवा में कुंकुम के कण्ठ श्री-

मित हैं पुनि कौस्तुभ मणि त्रिकोण है गुञ्जसमोद्द ... है कौस्तुभ के ता गुनड्डलर ताकेबीचमें एकमणि गुंनलर पादिक सों चौकोण हिमनमें मणि कणी नीरन हैं जनुपूर्णचन्द्र के चहुंफेर बृहस्पति शुक्र मंगल इत्यादिक नक्षत्रन की सभा बैठी है पदिकतर मोहनमाला सो तीनि रंग मणिमय है मुक्ता पद्म राग पिरोज मणि नाभीताई हैं पुनि वैजयंती माला पंचरंग हैं नील पीत रोहित श्वेत लाल मणिलागी है पुनि बनमाला रोहित (हरित) तुलसीदल पीत श्वेत फूलमय शोभित है पुनि किंकिणी क्षुद्र कंचन मणिकणिन शोभित है पुनि नूपुर तीनि अवलि कंचनमय इव मणि कणिनते रचित हैं पगपीठ पर जावक चित्रविचित्र हैं पुनि नखन की ज्योति जनु अरुण श्याम पंकज के दलन पर मुक्ता बैठे हैं कोटिन चन्द्रमा की द्युति हरत हैं पुनि चरण चिह्न स्वस्तिकादि चालिस अरु आठ शोभित हैं सो आगे इनके स्वरूप कहेंगो पुनि कंकण यवाकार तीनि आवृत्ति मणिकणिनते रचित हैं मणिमुद्रिका अति शोभित हैं इत्यादिक अनेक अलंकार षोड़शो श्रृंगार सो भिन्न करिके जनक पुर में कहे हैं पीताम्बर कोटि दामिनी की द्युति हरत हैं ऐसी शोभा देखिके आमित अनङ्ग लज्जित हैं अनंग जाके अंग नहीं सो क्यों मोहैगो तहां प्राकृत अङ्ग यिबनी नेजापै ऐसो दिव्य अंगते मोहित भयो है (८) दो० सासुन सादर जानकी हिं मज्जन तुरत कराय॥ दिव्य बसन वर भूषणनि अंग अंग सजे बनाय॥१॥

(॥टीका॥) श्री कौशिल्यादिक जे सासु हैं ते श्री जानकी जी को मज्जन करावती भई

अगरकपूर चन्दन केसर इत्यादिक अनेक सुगन्ध श्री सरयूजलमें मिश्रितताभें स्नानकरावती भई श्री जानकी श्री रघुनाथ जीके षष्ट अष्ट षोडस मुख्यसखी ते श्री कौशल्या जी की आज्ञा लै कै श्री जानकीजीको शृंगारकरती हैं (सखिनकेनाम) आह्लादिनी क्लीं-शिशि सहजानन्दिनी, मदनमञ्जरी, चन्द्रकला, चन्द्रावली, चन्द्रमुखी-इति षष्ट। पुनि अष्ट विमला, उत्कर्षिणी, क्रिया, योगा, पवी, ईशाना, ज्ञाना, सत्याइत्यष्ट सखी पुनिषोडश उज्वला, कांचनी, चित्रा, चित्ररेखा, सुधामुखी, हंसी, प्रहंसी, कमला, विशदाक्षी, सुदमका, चन्द्रानना, चन्द्रभद्रा, माधुर्य्या, सालिनी, कर्पूरांगी, वारोहा इति षोडश श्री जानकीजी की सखी इत्यादिक अनन्त-सखी हैं अब श्री रघुनाथजी की सखी षष्टसखी आह्लादिनी, सहजानन्दनी, क्लीशिशि पुनि चन्द्रार्कभा, चारुशीला, ऋतिशीला, सुशीला, हेमा, लक्ष्मणा इति षष्ट। पुनि अष्ट वागीशा, माधवी, हरिप्रिया, मनजोवा, नित्या, विद्या, सुविद्या, कूटस्था, इति अष्ट सखी पुनि षोडश शोभना, सुभद्रा, शान्ता, सन्तोषा, सुभद्रा, सत्यवती, चारुस्मिता, चारुरूपा, चार्वंगा, चारुलोचना, हेमांगी, क्षेमा, क्षेमदात्री, धात्री, धीरा, धरा-

ऐसी षोड़शा इत्यादिक अनन्त सखी ते सब श्री जानकी जी को शृं-
गार करती हैं युगल सेवामें तत्पर हैं सर्व प्रथम स्नान कराये पुनि
नीलसारी मे सुवर्ण मणिके फूल रचे हैं किनारी नगाऊ जड़ित हैं
सो पहिरावती भई दोऊ पगन में जावक जस चाहीं तस रचतभई नूपुरनिनि
आवृतिते पहिरावती भई अंगराग जहांजस चाहो तहातस करतीभई कटि-
में क्षुद्रघण्टिका तीनि आवृत्ति। पहिराये दोऊ करन में कङ्कण पहिराये
मुक्तन के हारपहिरावती भई अगर कर्पूर चन्दन केसर कस्तूरी लेपन-
करती भई कवरी की रचना चित्र विचित्र करती भई केसर अधर पर-
शोभित हैं श्रवण दोऊ में ताटंक शोभित है भालमें सिन्दूर शोभित है
नयनमे काजरदेती भई बेणी मुक्तन ते गुहती भई इति षोड़शो शृंगार करती
पुनि उपशृंगार भूषण कहते है दोऊ चरण अंगुली तप्तकञ्चन इन्द्रनील हरितमणि
पीतमणि नील मणिन की कणी जड़ित ऐसो विछुआ नाम मञ्जीर पहिरावती
भई (मञ्जीरस्यात् भूषण मित्यमर:) पुनि दोऊ करनमे चुरी हेम मणि कणिनते
चित्रविचित्र शोभित है मुद्रिका शोभित है दोऊ भुजन में अंगन विचित्र है
पुनि ग्रीव कण्ठी यवाकार है पुनि चम्पकली पुनि पदिक जैसे श्री रामचन्द्र के है
पुनि चन्द्र हार कैसो है मध्य में पूर्णचन्द्रवत मणि लगी है पुनि क्रम सो ते दोई-
नो ओर शुक्लपक्ष की चतुर्दशी वामादिशि कृष्णापक्ष की परीवा यही प्रकार

ते मानिलेव खोड़शौकला द्वौ पक्षके क्रमहोते मानिलेव शुक्लपक्ष के द्वितीया कृष्णपक्ष की तेरस ताही को सुमेरुस्थाने ऐसो चन्द्रहार है पुनिमणिन की कणोकई रंग लघुमोती ताको रचित मणिहार सारी को माई है जैसे श्री रघुनन्दन जू के बनमाल तैसे श्री जनक नन्दनी जी के मणिहार है पुनिबन्दो दुइलर की ताटंक मिलित बन्दीतर दी का सुवर्ण प्रकाश मैं ताके चौदिग रंगरंग को मणि कणी है जाके मध्य में एकमणि नीचे झुकित ललाटपर अत्यन्त शोभित है टीका के ऊपर चन्द्रिका सो श्री रघुवरशिसि झुकित हैं सो सुवर्ण के मध्य में एकमणि चढ़ा उतारकढ़वा बंके हैं अरुधौं किनारे मणि कणिनते रचित है ऐसी चन्द्रिका अनेकचन्द्र सूर्यअरु दामिनि के ज्योति प्रकाश को हरत है जेते श्री सीतारामके भूषण हैं चै-तन्यरूप पुनि नित्य जीव हैं जेंनोने रसमें अनन्य हैं ते ताही रसमें सा-युज्य होइके अंग अंग सेवन करते हैं रसे तो नव है पुनि तीनि मिले बारह हैं तिनमें पांच भक्तिरसयुक्त हैं सात वात्सल्य दास्य सख्य शृं-गाररस अथवा सबरसै माधुर्य भूषण रूप नित्य अंग अंग सेवन कर-ते हैं अथवा एक शृंगाररस अनेक अलंकार रूप नित्य दम्पति अंगन सेवन करतु हैं ऐसे परम दिव्य भूषण श्री सीताराम जी के अंग

अंगनमें आतेहीं परस्पर शोभाको पावते हैं (१) श्रीरामचन्द्रके वामभागमें
रमारूपगुण की खानि अत्यन्त शोभित है श्रीजानकीजीको रमाकाहेको कहा
रमानाम श्री लक्ष्मीजी. जेतीलक्ष्मी ब्रह्माण्डकोश में हैं अरु परधाम में त्रिपाद
विभूति जो परम दिव्य हैं तिनसबन विभूतिकी रमासंज्ञा है सो सबविभूति श्री
जानकीजीकी आश्रय है श्री जानकीजी सर्वविभूति में रमित हैं अरुसब विभूति
श्रीजानकीजीमें रमितहैं अरु जानकीजी सर्वतोभिन्न हैं जिनश्रीजानकी केचरणार-
विन्दको समस्तध्यावते हैं तहांप्रमाण है श्लोकतीनि (श्री हनुमत्संहितायाम्)-
जयति जनकजायाः पादपद्मं मनोज्ञं हरिहरविधिवंद्यं साधकानां सुसेव्यम् ॥ भ्रूव-
ल्लरीविलसितं जगदाद्यैरीश्वर्यां सादयो मुनिवरास्तुत एव नित्यम् ॥ पुनि श्रुति-
प्रमाण है ॥ जनकस्य गृहः सद्मनि सीतोत्पन्ना तां सर्वपरानन्दमूर्ति गायन्ति-
मुनयोपि देवश्चकारण कार्याभ्या मेव परां तथैव कारणकार्यौ शक्तिर्यस्याः विधात्री
श्री गौरीणां सैवकर्त्री सैव रामानन्दस्वरूपिणी जनकस्य योगफल मिव-
भातिइत्यथर्वशो उत्तरार्द्धे अथवा रमा जो है रूपगुणमय ताकी खानि-
श्री जानकीजी हैं बालकाण्डे चौपाई ॥ उपजहिंजासु अंश गुणखानी । अगणित-
लक्ष्मि उमाब्रह्मानी ॥ भृकुटिविलासजासु जगहोई । रामवाम दिशि सीता सोई ॥
अथवा श्री रामचन्द्र राज्यपर बैठते हैं सम्पूर्ण जो लक्ष्मी ताके ईश ताते रमाकहा-
काहेते श्री जानकीजी से समस्तलक्ष्मी श्री शोभित है अथवा कारण कार्य एक-
ही है ताते रमाकहा अथवा श्रीजानकीजी श्री लक्ष्मणजी को अभेद करिकैकहा

सामान्यअर्थ कैसो है रमारूप गुणखानि है श्री कौशल्या सुमित्रादिक मातु
हेरिबेके अपने जन्मको साफल्य मानतीभई यहयुगुल शृंगारमाला ग्रन्थमें
प्रमाण है ॥ दोहा ॥ सुनिखगेस तेहिअवसर ब्रम्हा शिव मुनि वृन्द। इत्यादिक।
(2) चौ० ॥ रविसम तेज सो बरणि न जाई ॥ बैठे राम द्विजन सिरनाई ॥ कैसो है
सिंहासन रविसमतेज है बरणिबे योग्य नहीं है रविसमकहा जो कहौ कि रविके
बराबर सिंहासन को तेज है तो बरणिबे में आवे है अरुकहा कि बर्णि न जाइ
ताते यहअर्थ नहीं है रविसम तेज रविको तेजसम होइगयो नामभर होइगयो
सिंहासन के तेजकेआगे रवितेज समकहो सामान्य होइगयो मन्दपरिगयो-
तो सिंहासन पर श्री जानकीजी समेते श्री रामचन्द्र बैठते भये श्री वशिष्ठ
के चरणमें माथनाइके समस्त ब्राह्मणन को नमस्कार करिके अथवा
जब श्री रामचन्द्र सिंहासन परबैठे तबसब द्विज सिर नावते भये
परमात्मा परब्रम्ह श्री रामचन्द्र को सब ब्राह्मण जानते हैं काहेते
सब ब्रम्हवेत्ता हैं अरु यह जानते हैं श्री रामचन्द्र हमारे लोक परलो-
कहू के रक्षक हैं हमारे हेतु अवतीर्ण भये हैं ताते सिर नावतेभये
अरु लीला प्रकरण में श्री रामचन्द्र सिरनावते भये काहेते श्री
रामचन्द्र ब्रम्हण्य हैं ब्राह्मण को बहुमानते हैं श्री अयोध्या के
मध्यमें कल्पवृक्ष हैं योजन पर्यन्त ऊंचो है तासु अर्द्ध विस्तार

हैं वज्राकार है हीरामणि इवपेड़ स्कन्ध शाखा है हीरामणि इव पत्र है पिरोजमणि इवपुष्प है लालमणि इव फल हैं श्री रामचन्द्र के कृपालु हैं ताके तर मण्डप हैं हजार खम्भा लगेहैं हेम रत्नमय हैं मुक्तन की झालरें लगी हैं मण्डप के तरे वेदिका है मणिमय है सहस्रदल कमलाकार है तापर सिंहासन है कल्पवृक्ष के पूर्व ताको स्वरूप कहते हैं तीनि खण्डलो है प्रथमखण्ड में बत्तीस पावा है बत्तीसै दण्ड लगेहैं पुनि मध्यके खण्ड में षोडश पावा षोडश दण्ड लगेहैं पुनि अभ्यान्तर के खण्ड मे अष्ट दण्ड लगे हैं ऐसी तीनिउ खण्ड मे शोभित है प्रथम खण्ड बत्तीस दल का कमलाकार है मध्य को खण्ड षोडश दल कमलाकार है तीसर खण्ड के मध्य मे हजार दल कमल मणिमय सो समस्त परमदिव्य हैं कमल के मध्य मे तीन मुद्रा हैं अग्निमुद्रा चन्द्रमुद्रा रविमुद्रा के मध्य में अष्टदल कमल है तापर श्री सीताराम बैठे भये चैत्रमास शुक्लपक्ष नौमी तिथि मंगलवार चारदण्ड दिन रहे सूर्यरस राज्याभिषेक होयवेको फिरि आपे मध्याह्न मे थंभि रहे षट्मास लोक काहु न जान्यो सब परमानन्द में भरे हैं ताते को जाने सोहिहोश में ग्रंथ जानव ॥ ब्रह्मानन्द मगन कीये सबके प्रभुपद प्रीति । जात न जाने दिवस निशि गये मास षट बीति ॥ इति प्रसंगे ब्रह्मरामायणे ॥ विमलकाल जो श्री रामजन्म मे योग लग्न मुहूर्त नक्षत्र घरी पल इत्यादिक सबकाल आपने साफल्य होब

हेतुप्राप्त भये श्री सीताराम सिंहासन पर बैठते भये जो कोई कहै
कि द्वादश सूर्यन के प्रकाश किरीट मे सोई कुण्डल मे अरु
सिंहासन के आगे सूर्यको तेजमन्द परिगयो वहां सूर्य के प्रकाश
ते दिनैवनो रहतहै तहा चाहिये कि श्री रामचन्द्र के राज्य में किन्तु
सदा ब्रह्माण्ड भरे में रात्री होवे नकोंई काहेते श्री रामचन्द्र को
किरीट कुण्डल सिंहासन अनेक सूर्यमय है सर्वकाल में एक
रसहै तहां रात्री कहां सम्भवित है तहां यह बात सत्य है परंतु ये
तौ श्री रामचन्द्र लीला पुरुषोत्तम अरु मर्यादा पुरुषोत्तम है ताते
श्री रामचन्द्र सूर्यकी मर्याद नहीं मिटावते है अरु सामर्थ्य तौ
ऐसी है (दोहा) मशकहिं करहिं विरञ्चि प्रभु अजहिं मशक
ते हीन ॥ उनकी गति कोऊ जानि सकै है काहेते अघट घटपटी-
यसी कोरिबेको ऐसी जाकी माया है ते श्री सीताराम सिंहासन पै
बैठते भये कोई मुनिके मतमे चैत्र के शुक्लपक्ष को अष्टमी को
श्री दशरथ महाराज अष्टमुनि बुलाईके विचार कीन श्री
वशिष्ठजी वामदेव मार्कण्डेय मौद्गल्य काश्यप कात्यायन
जाबालि गौतम एते अष्ट महामुनि पुनि अष्टमन्त्री सुमन्त्र वि-
जयो अयन्त राष्ट्रवर्द्धन सुराष्ट्र अशोक धर्मपाल एते अष्ट-
मन्त्री इत्यादिक सकल महामहा महाजन को बुलाईके श्री
दशरथ महाराज कहते हैं कि जो सब को सम्मत होइ तौ विशन

नवमी को श्री रामचन्द्रको राज्याभिषेक होइ सबहीं कहा कि शुभ स्वस्ति
मङ्गल होइ जबपचीस दण्ड दिनाबीते तब महांमंगल है तब राज्याभिषेक-
होइ चलनवमी को जबएकपहर छः दण्डदिन चढेउतब श्री रामचन्द्र स्वे-
च्छित श्री चित्रकूटको गमनकीन पुनिचौदावर्ष बीते वही रामनवमी को
उतनै दिनचढे श्री रामचन्द्रअयोध्याको आए मिलत मिलावत वहीदिनमें चारि
दण्डदिन रहिगयो तब राज्याभिषेक भयो पुनिकोई मुनिकोमत है किचैत्र के
शुक्लपक्ष को दशमीको गये पुनिदशमिहीं को आए तबै राज्याभिषेक भयो
पुनि कोई मुनि को मत है कि गयेदशमीको अरु आये दशमिहीको परबैसाख
शुक्लपक्ष सप्तमीको राज्याभिषेक भयो है अरुजौनी साइत श्री अयोध्या-
ते गये है वही साइत आए काहेते कि श्री भरतजीको संकल्परहा है
किजो वही साइतनहीं आवेंगे तो मैं आगिने प्रवेश करौंगो ॥ ॥ ॥
(इसविषय में मुनियोंका बहुत मत है इसलिये सूक्ष्म रूपसे लिखलियागया)॥

॥ जयसगुण निर्गुण रूपराम अनूप भूप शिरोमणे ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ दशकन्धरादि प्रचंड निशचर प्रबलखल भुजबल हने ॥
॥ अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुण दुख दहे ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ जयप्रणत पाल दयालु प्रभु संयुक्त सक्ति नमा महे ॥

(पदार्थ) प्रथम सामवेदने दोऊ करजोरिकै जय शब्द उच्चारण कियो जय कही
अतिशय उत्कृष्ट उत्कर्ष सर्वोपरि बिराजमान अथवा जय कही सदा चिरंजीव
पुनिजय कही जयमान सदा जाको पराजय कबहूं नहीहोइ महाकालहुते जाको

आज्ञानुकूल सदाकाल हैं वेद बोल्यो अरु सगुणरूप ब्रम्हांअरु निर्गुणरूप ब्र म्हां सो दूनोरूप तुमहीं हो कौनरूप तुम्हार यहजो अनूपरूप तुम्हारे समस्त- उपमा रहित ब्रम्हाण्ड मे जेते भूप हैं नरअसुर विधिहरिहर दिक्पाल इत्यादिक तिनसबनके शिरोमणि ऐसे द्विभुज स्वरूप तुमहो जहां सगुण निर्गुण दूनों स्वरूप एकही स्वरूप मे कैसे संभवे हैं यहतो विरोधा भास होत है अरु वेद कह्यो सगुणनिर्गुण रूप श्री रामचन्द्र ही हैं तहां विरोध मिटाइवे को अर्थकरते हैं सगुण काको कहो जो सात्विक राजसतामस इन तीनिउं गुण संयुक्त ईश्वर है ताको सगुण कहो सो कौनरूप है विराट्रूप जो ईश्वर है- अथवा एकगुण सात्विक को ग्रहणकिये है स्वेच्छित विष्णुरूप भगवान् चतुर्भुज जो संसारको पालनकरते हैं तिनको सगुणरूप ईश्वर कहो जो कहो कि ये दूनों स्वरूप मे कोइएक स्वरूपमें भक्तनके हेतु अवतार लीन सोई श्री रामचन्द्र हैं तो निर्गुण कैसेकहो अरु निर्गुण जो ब्रम्ह है सो निराकार है निर्विशेष है सर्वत्र व्याप्त है सर्वसाक्षी है सबको प्रेरक है सबते भिन्न है जैसे आकाश सर्वत्र परिपूर्ण है एकरस देशकालावच्छिन्न है अरु चैतन्यरूप है जो कहो कि सोई ब्रह्म भक्तनके निमित्त एकसगुणरूप होतभयो पुनि भक्तनको कार्यकरिके फेरि निर्गुण होतभयो जो अंश कहिये तौ सगुण सनातन कैसे होइगो- अरु वेदको सगुणनिर्गुण अखण्ड एकही रूपमे कह्यो है तहां श्री रामचन्द्र जो मायिक गुण जो सात्विक राजस तामस इन तीनिहूं गुणनते परे है ताते निर्गुण- कहो प्रानपंचमहाभूत करिके रहितआकार है ताते निराकार कहो अरु माया के विशेषणते रहित हैं ताते निर्विशेष कहो अरु घनीभूत तेजरूप सर्वत्र व्याप्त हैं

पूर्ण हैं एकरस सदा हैं तातें श्री रामचन्द्र को निर्गुण सर्वत्र व्याप्त कहा (श्लोकः)
ध्यायेत् पुण्डरीकाक्षं परं ज्योतिं परात्परम्॥ राम एव परब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहम् १ इति
ब्रह्मयामले॥ पुनि श्री रामचन्द्र को सगुण ब्रह्म कैसे कहा है जाते तीनि गुण ते परे हैं परम दि-
व्य गुण विशिष्ट हैं तातें सगुण कहा है सो कौन गुण हैं ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य तेज-
वीर्य सौशील्य वात्सल्य आर्जव सौहार्द सर्व शरण्यत्व सौम्य कारुण्य स्थिरता धैर्य दया
माधुर्य आर्द्रत्व एते अष्टादश गुण परम दिव्य तिनके स्वरूप विशेषण कहते हैं
क्रम ही ते सर्व देश काल वस्तु को। प्रत्यक्ष अनुभव सो ज्ञान है १ पुनि अघट घटना-
करने की सामर्थ्य सो शक्ति है २ पुनि विश्वधारणादि सामर्थ्य सो बल है ३ पुनि
सर्व नियमन शक्ति सो ऐश्वर्य है ४ पुनि काहू ते पराभव न होइ सर्व को परा-
भव करने की सामर्थ्य सो तेज हैं ५ पुनि अपरिमित श्रम के कारण प्राप्त होत
सन्ते श्रम न होय सो वीर्य है ६ एते षड्गुण सृष्टि आदिक के उपयोगी हैं
भगवत् शब्द को वाच्य है जो परब्रह्म तामें रहते हैं पुनि जाति वर्णाश्रम
इत्यादिक बड़ाई की उपेक्षा छांड़ि कै निष्कपट मन्द जनन के संग मिलि
रहना सो सौशील्य है ७ पुनि भृत्य के दोष न विचार करना सो वात्सल्य है ८
पुनि मन वचन काय को समान व्यापार सो आर्जव है ९ पुनि अपने जन को
अपना ते अधिक मानना सो सौहार्द है १० पुनि ब्रह्मादि स्थावरांत को सा-
धारण रक्षा सो सर्वशरण्यत्व है ११ पुनि ताही को नाम सौम्य है १२
पुनि परदुःख को दूरि करना सो करुणा है १३ पुनि दान युद्धादिक में अ-

चल सो स्थिरता है १४ प्रतिज्ञा पालन सो धैर्य है १५ पुनि कारण विना पराया दुःख देखिके दुःखी होइके ताके दुःख निवारण के इच्छा सो दया है १६ अमृतपानको नाईं स्वादरसना सो माधुर्य है १७ अपने शरणागत जनको दुःख आपु सहनो सो आर्द्रव है १८ पुनि षोडश गुण कहते हैं महाकुलीन १ सर्वरमण २ सर्वलोक प्रसिद्ध ३ नियतात्मा ४ महावीर्य ५ द्युतिमान ६ धृतिमान ७ वशी ८ बुद्धिमान ९ नीतिमान १० वाग्मी ११ श्रीमान १२ उदार १३ अदभ्र १४ शत्रुनिवर्हण १५ सर्वव्यापकत्व १६ तिनके विशेषण कहते हैं महाकुलीन सर्वोत्तमकुल १ पुनि सर्वरमण शब्दार्थ रमन्ते योगिनो यस्मिन् राम नाम संसार दुःख निवृत्ति पूर्वक अपने नित्यनैमित्तिक लीला में सबै रमण करावै सो राम अथवा रमणकरै योगीजनहियविषे सो राम अथवा स्वरूपलावण्य दर्शन ध्यानते सुखी करै जनमन जिनविषे सो राम २ सर्वलोक प्रसिद्ध आब्रह्मादि स्थावरांत प्रसिद्ध ३ नियतात्मा आब्रह्मादि स्थावरांत को खींच्यो है आत्मा अन्तःकरण जिनते ४ महावीर्य जिनके पराक्रम के कनमें अनन्तकोटि ब्रह्माण्डधारी महाविराटादि के पराक्रम लीन होइ जाहि ५ द्युतिमान सर्वकाल एकरस सुन्दर ६ धृतिमान हर्षशोक दुःख सुख रहित ७ वशी अपने गुण करिके सर्वजीवन को बाह्यान्तर वशीकृत कीन जिनने ८ बुद्धिमान प्रशस्त बुद्धि सर्वजीवन को निश्चयरूप है ९ पुनि नीतिमान आब्रह्मादि स्थावरांत अपनी मर्यादामें सबको राखे है १० पुनि वाग्मी जाकी सहजपरा वाणी हैं जावाणीते योगी स्मरण करिके रामपदको प्राप्त होते हैं अथवा वेद है सहजवाणी जाकी ११ पुनि श्रीमान अनेक ब्रह्माण्ड में जेती है विभूति त्रिपाद सहित जाको एक विलास है १२ पुनि उदार सर्व जीव जाही में प्रसन्न है सोई देते हैं पुनि सम्मुख होइके जोई पदार्थ चाहनाकरै सोई देते हैं १३ पुनि अदभ्र जाको

आदि अन्त [illegible] नहीं कोई माने अधिकाधिकतम है १४ पुनि शत्रु निबर्हण भक्तजनों के
आदि जो ब्राह्मण तिनके जो शत्रु तिनको नाश करि देते हैं, अथवा सन्तजन के
शत्रु काम क्रोध लोभ मत्सर इत्यादिक तिनको निर्जित करि देते हैं १५, पुनि
सर्वव्यापकत्व अपने चैतन्य गुण भूत से अनेक ब्रह्माण्ड चैतन्य किये हैं १६
एते अष्टादश षोडश इत्यादिक अनन्त गुण परमैश्वर्य विशिष्ट एक
श्री रामचन्द्र ही हैं तातें श्री रामचन्द्र को ऐसे सगुण स्वरूप कहा, ताते सगुण
निर्गुण रूप श्री रामचन्द्र ही हैं अरु जो कोई कहै कि तुमने कहा कि [illegible] रूप वि-
राट अरु विष्णु भगवान चतुर्भुज सात्विक गुण को ग्रहण किये सो सगुण रूप हैं अरु
ब्रह्म जो सर्वसाक्षी निर्विशेष सो निर्गुण है तहां श्री रामचन्द्र में विराट च-
तुर्भुज निर्गुण कैसे जानिए ताको उत्तर दूसर ग्रन्थ अवरेव करिके कहते हैं
वेद बोल्यो जय सगुण निर्गुण शिरोमणे यह जो भय रूप [illegible] नहीं सो सगुण
निर्गुण दूनों के शिरोमणि ही निर्गुण ब्रह्म सो तुम्हार रूप है, [illegible] है [illegible]
रूप जो है सोई [illegible] लक्षित होता है अरु सोई घनीभूत सोई गुणभूत एवं
तत्त्व एक ही हैं पुनि निर्गुण से तो हम आगे ही कहि आये हैं श्री रामचन्द्र को
घनीभूत तेज किन्तु व्यापकत्व गुणभूत सो घनीभूत गुणभूत एक ही हैं
अरु विराट चतुर्भुज भगवान गुणाभिमानी सो [illegible] है जो कहो कि
निर्गुण ब्रह्म नाम रूप रहित हैं अरु तुम रूप कहते हो, यह विरोध है सो सत्य है
तहां हम यह कहते हैं कि ब्रह्म कहना यह भी [illegible] है निर्गुण [illegible]

भी सामग्री है याविषे जौन उपदेश अधिकारी उपदेष्टा एते सर्व कालमें अनादि

परम्परा सनातन है अर्थसहित वेदमंत्र गुरुशिष्य रहित निरूपण सो तौ

नहीं है तातें नाम रूप सहित है अरु जो कोई नाम रूप रहित ब्रह्म कौं कहै

ब्रह्म कहैं तौ वेद कहत विरोध नहीं है परस्वरूप के आश्रय कहत हैं

श्रुति स्मृति प्रमाण है (सप्तश्लोकी श्री राम तापिन्याम्) ॐ वै श्री रामचन्द्रः

स भगवान अद्वैत परमानन्दात्मा यः परब्रह्म भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः

१ ॐ यो वै श्री रामचन्द्रः स भगवान अद्वैत परमानन्दात्मा यो ब्रह्मा

विष्णुरीश्वरो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः २ ॐ यो वै श्री रामचन्द्रः

स भगवान् अद्वैत परमानन्दात्मा यो ब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्व्याप्तो यो

विराट् भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः ३ परब्रह्म तत्तस्य तनुर्मता श्रुतिः ४

(अन्यच्च) अंशभूता विराड्ब्रह्मा विष्णु रुद्रास्तु धापरे॥ ब्रह्म तेजो

घनीभूतं वर्तते जानकीपतेः ५ सगुणं निर्गुणं चैव परमात्मा तथैव च

॥ एते [illegible] रामरूपं पूर्वमान्तेन मध्यतः ६ (सदाशिवसंहितायाम्)

आनन्दो द्विविधः प्रोक्तः मूर्तश्चामूर्त एव च॥ आमूर्तस्याश्रयो मूर्तः पर-

मात्मा नराकृतिः ७ (बृहत् पञ्चरात्रे) हे श्रीराम आप कैसे हो इस-

अन्धकारिक जे प्रचण्ड निशिचर बड़े प्रबल हैं तिन सबन को अपने भुजबल करिकै नाश कीन है (१) अवतारनर अवतार कहो अवतीर्ण जैसे कोई ऊंचे महल ते नीचे को उतरि आवै तैसे श्री अयोध्या में भक्तानुग्रहार्थ तुमनर स्वरूप परब्रह्म अवतीर्ण भये संसार को भार रावणादि तिनको विध्वंश कहीं नाश करि दीन अरु दारुण दुःख सबके दूर कीदीन ते तुम श्री रामचन्द्र अरु जयमान हु प्रणतपाल हौ पुनि दयालु हौ प्रभुकाहे सामर्थ्य अनन्त ब्रह्माण्ड के स्वामी हौ अरु जो तुम्हारी परम शक्ति जा शक्ति ते अनेक ब्रह्माण्ड की रचना है देव दानव मनुष्य चराचर जा शक्ति को एक लीला है ता शक्ति संयुक्त है श्री रामचन्द्र हम नमस्कार करते हैं नमस्कार तीनि प्रकार को एक सहज नमस्कार है जैसे कोई अपने बराबरि को है संजोग ते है चलत बैठे कहूं मिलि गयो परस्पर नमस्कार करते भये पुनि एक वाक्याभिनिवेश नमस्कार है जैसे कोई अपने ते बड़ाई कोई राजा इत्यादिक तिनके नमस्कार करत सन्ते राजा को प्रताप ऐश्वर्य वचन में प्रवेश होत है पुनि स्वरूपाभिनिवेश नमस्कार है जैसे अपने

गए हैं तिनन्तु इष्टदेवता हैं तिनको नमस्कार करत सन्ते गुरुदेवको
तेजप्रताप ऐश्वर्यसेवा स्वरूप मनवचन कर्म मे प्रवेश होत हैं अरु
नमस्कार प्रणाम दण्डवत वन्दना एही हैं तहां वेद जो हैं सो श्रीराम-
चन्द्रके स्वरूपाभिनिवेश पराबाणी ते नमस्कार करते हैं ॥ प्रथम
वेदका अस्तुति समाप्त ॥ २॥ पुनि यजुर्वेद बोल्यो हे श्रीरामचन्द्र तुम्हा-
री माया अतिविकट है जा माया ते पद्मा कीन्ह है सुर असुर नर नाग स्था-
वर जंगम समस्त तुम्हारी मायाके बशहै औ कहो संसार में काल
कर्म गुणन ते भरे भ्रमते हैं कालका को कहौ प्रमाण अरु लव निमेष
पल दण्ड पहर दिन मास वर्ष युग कल्प महाकल्प इत्यादिक कालचक्र
फिरा करते हैं जैसे कुम्हार को चाक जा काल चक्र मे इन्द्र वरुण कुबेर
ब्रह्मादि सुर असुर नर चराचर फिरते हैं कर्मका को कहौ इन्द्रियजनित
कर्तव्य अरु धर्म कामके वासना लिहे सो कर्म कहो गुण जप तप दान त्रिकाल संध्या
वेदाध्ययन इत्यादिक शान्तियुक्त करना सो सात्त्विक कहो अरु सोई कर्म करना तहां
मान संयुक्त अहंकर्ता मृत्युलोक मे राजादिकन के भोग वासना ताको राजस कहो
अरु तप करना मलिन क्रियाते यक्षराक्षस पिशाचादिकनको इष्ट करिके अपरको नाश
करिके भोगकी वासना सो तामस है वेद बोल्यो हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी अनादि माया काल कर्म
गुणको प्रेरकताके बस जीव संसारविषे अनेकन योनिनमें भ्रमते हैं (३) हे नाथ तावे
जो जीव तुम्हारे सन्मुख एकहूं बार कोई संयोगते भयो न व तुम्हारी कृपाते त्रिविधदुःख
ते निर्वाहि जाते हैं तीनि दुःख कौन हैं कालकर्म गुण याही के भीतर अनेक दुःख हैं सो

समस्तदुःख मिटिजाई हे नाथ आपतुम कृपाकरहु सो तीनिहु दुःखसे बुड़िजाई भवजो है संसार ताको ... खेद जन्म मरण तिनको हरन कहीनाश करिवे को तुमदक्षनाम बड़े चतुर हो अथवा- प्रत्यक्षतेतुम श्रीरामचन्द्र हमारीरक्षाकरहु हमतुम्हारी शरणहैं (४) पुनि अथर्वणवेद बोल्यो हे श्री रामचन्द्रजी जैसे पुरुष सम्पूर्ण मायाकेमान जे हैं तिहिते परे हैं सर्वथा ज्ञानी हैं ज्ञानकही अनात्माको असत्यजाने आत्माको सत्यजाने आत्मा जीव अन्तर्यामी ब्रह्म एकही हैं वासना संयुक्त जीव वासनाध्वंस ब्रह्म हैं द्वैतरूप कथन मात्र हैं " एकोब्रह्म द्वितीयो नास्ति ऐसो अभेदबुद्धि ब्रह्मानन्द को प्राप्ति हर्ष शोक दुःखसुख मित्रअरि कञ्चनमाटी समहैं जिनके स्वरूप परस्वरूप की ऐक्यता ऐसोज्ञान केवलजानिके मनमें अलमस्त हैं। प्रमाण (श्री भगवद्गीतायां श्लोकौ द्वौ) समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥ तुल्य प्रिया प्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः १ मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारि पक्षयोः ॥ सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते २ अरुजो तम्हारो भक्ति अतिशय शुद्धत्याहिको नही जो आदरकरते तुम्हारी भक्तिकैसी है भवजो है संसारत्यहिको हरणहारी विना श्रमही ऐसीभक्ति को आदरनहींकरते जो देवतनको दुर्लभपदहै वैहै ज्ञान सो ज्ञानच्युत ह्वैजाते हैं अथवा कैवल्य पद देवतनको दुर्लभ है सोपद ज्ञानीपायके आरूढ़भये आपनाम निश्चय करिके हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारीभक्ति निरादरकिरसन्ते हमारेदेखते२ गिरपरते हैं अथवा हमदेखत हमजोवेदहैं तिनकोअहर्निस देखतरहते हैं विचारते रहते हैं ज्ञानकोप्राप्त हैं अरु तुम्हारी भक्तीको आदरनहीकरते ते गिरपरते हैं ❀ ❀

(श्रीभागवते ब्रह्मणोवाक्यं श्लोकद्वयम्) येन्येरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्त
भावादविशुद्धबुद्धयः ।। आरुह्य कृच्छ्रेण परंपदन्ततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्रय,
१ पुनि (श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यम्) येराम भक्तिममलां सुविहाय रम्यां सन्तो
रताः प्रतिदिनं परिक्लिष्टमार्गे ।। आरामभैन्द्रसुरभीं परिहृत्यमूढा गर्द
भजन्ति सुभगे सुखदुग्धहेतुम् २ (५) विश्वास करिकै सब आस परिहरि कै
जे तुम्हारे दास होरहे हैं सब अथा कौन है स्वार्थ परमार्थ के साधन जहां
लगि लोक वेद हैं सो सब उपाय को त्याग उपाय शून्य शरणागत हैं एक
तुम्हारो नाम जपिकै बिना श्रम ही भवतरि जाते हैं वे तुम्हारनाम हम
स्मरण करते हैं (६) हे श्री रामचन्द्र तुम्हारे जो चरण दूनों हैं सो
शिव जे हैं महादेव अरु अज नाम ब्रह्मादिक देवतन करिकै पू-
ज्य मान हैं अरु जा चरण की रज अतिशय सुभग महा मंगलमय ता
रज को परसि कै मुनिपत्नी अहल्या पाषाण भई रही सो तरिगई पुनि
जेहि चरण के नखन के बीच ते श्री गंगाजी उत्पन्न भई अरु
मुनिन करिकै बन्दित हैं जाको सुरसरि कही त्रैलोक्य को पावन
करनिहारी ऐसे तुम्हारे चरण हैं (७) ध्वज कुलिश अंकुश कंज
इत्यादिक अंकन करिकै शोभित है सो पद वनमें फिरत सन्ते कंटकी नाम तामसी
जीव कुश कंटक सर्प विच्छू वनचर इत्यादिक अनेकन सर्प जीवनको जो पद ब्रह्मा-
दिकनको दुर्लभ प्राप्त भयो ऐसे तुम कृपालु हो किन्तु जे पद ब्रह्मादिकनको दुर्लभ सो
भक्तन हेतु वनमें फिरत कंटकन करिकै किनकहो क्लेश को प्राप्त भये हैं तव पद
कंज द्वंद्व नाम दूनों मुकुन्द कहे मुक्तिदाता अथवा हे मुकुन्द हे राम हे रमेश हम तुम्हारे पद
नित्य भजे (८) पुनि ऋग्वेद बोल्यो हे श्री रामचन्द्र हम तुमको नमस्कार करते हैं यह

संसार तुम्हारी इच्छाविभूतिहै किन्तुतुम्हारो विभूतिहीको नमस्कार करते हैं कैसो है यहसं-
सार एकविटपरूपहै जाकोमूल अव्यक्तहै अव्यक्तकहै अप्रकारहै नही देखिपरै ताही
को अव्यक्तकही पुनिमाया कही जाते मायाको कारणहै पुनिदैवहै ब्रह्मप्रेरित है
पुनि मूलप्रकिति कही परमपुरुषको आद्याशक्ति है पुनि अव्याकृत कही अ-
विनाशीहै सोरूप अदृश्य है पुनि अक्षरकही जाकोनाश नहीं है पुनिप्रधान
कही पुरुषाकारहै सर्वकोआधार भूतहै पुनि क्षेत्रकही पापपुण्यकोकारण-
है पुनि अजकही जाकोजन्म नहीं है पुनिअनादिकही जाकोआदिअन्त नहीं-
जानाजाय है इत्यादिक अनेकविशेषणहैं पुनि यों कहोतहै कहाताई हैं केतिक
विस्तारहै जाकोआदिअन्त मध्यजातो कहाजाय नतोजानाजाय वेद-
जाको अनिर्वचनीय कहते है ताहीको अव्यक्तकही यहजो संसार विराटरूप
है ताकोअव्यक्तमूल है पुनिअनादितरु है आदृष्य है अरुचारि त्वककहे
वकला जेहिविषे है गहड़ यह वेद शास्त्रकहते हैं ताहीत्वचको सब
मुनि कहते हैं कोईकहते हैं कि चित्तबुद्धि मनअहङ्कार यह जो चतुष्टअन-
न्तःकर्ण सोई त्वकहै अरुकोई चारिउ अवस्था जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति
तुरीय कोई चारिउजुग, सतयुग, द्वापर, त्रेता कलयुग कोई चारिउ फल
अर्थ धर्म काम मोक्ष कोई चारिउखानि, अण्डज,, जरायुज, उद्भिज,,
उष्मज कोई चारिउवेद सामऋग यजु अथर्वण तेहीको वकला
कोई सो कहते हैं इत्यादिक अपनी२ बुद्धी करिकै सबै कहते हैं अरु

सबकोबिचारकीन पूर्वापर मेरीसमझमे चारिकला हैं एक ॐकार तीनिउ गुण सात्विक राजस तामस ये चारित्वक हैं अब इन वृक्षन को अरु संसाररूप वृक्षको दृष्टान्तकी एकता कारिकै कहते हैं वृक्षमे बीज है लकड़ी के अवान्तर सम्पूर्ण वृक्षमे व्याप्त है बीजकी व्यापकता अरु लकड़ी आश्रय बकला पत्ता फूलफलरस एते बीजकरिकै प्रकाशक है दृष्टान्त तरु मे मूलहै संसार तरुमें मूल अव्यक्त है लकड़ी स्थाने जीव है बीज स्थाने ब्रह्म अन्तर्यामी सो ब्रह्मजीवके अवान्तर होइके सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें व्याप्त है बीजते वृक्ष होते हैं ब्रह्मते ब्रम्हाण्ड चैतन्य है यहितरुमें एक बकला सूक्ष्म अतिकोमल अतिश्वेत लकरीमे लपिटि रह्यो है तापर-मिलित एकबकला और है सो कछुमोटा है श्वेत है तापर मिलित एक बकला और है सो लाल रंग है तापरमिलित एकबकला और है काला है इनवृक्षनमें चारि त्वक प्रत्यक्ष देखि परे हैं दृष्टान्त संसार तरुमें प्रणव शुद्ध सात्विकरूप सूक्ष्म अति श्वेत जीवमें मिलित सो एक त्वक है पुनि तापर सात्विक गुण श्वेत पुनि राजस गुण लाल रंग पुनि तामस गुण कालारंग क्रमहीते त्वक जानब पुनि वृक्षमे स्कन्ध हैं पुनि शाखा बहुत हैं पुनि पत्र फूल बहुत हैं पुनि फल हैं पुनि लता चौंढ रही हैं अरु संसार तरुमे कौन स्कन्ध हैं का साखा है का पाता है का फूल है कौन फल है का बेलि है सो क्रमते कहेते हैं संख्यालंकार करिकै षटकन्धोते षटकन्ध कहे कोई षट. P 17

धातु एकधोइ कहेते हैं रक्तमास अस्थि वय काम मद एते षटधातु हैं धातुसाते हैं मज्जाको छोड़िदियो कोई षटविकार काम क्रोध लोभ मोहमद एते षटविकार कोई षटवर्ग को जन्मवृद्धि विवर्ण क्षीण-जरा मरण एते षटवर्ग है कोई षटशास्त्र को वेदान्त मीमांसा न्याय पा-तंजलि सांख्य धर्मशास्त्र एते षटशास्त्र हैं कोई पांच ज्ञान इन्द्रिय एक मन श्रवण त्वक नैंन जीभ नाशिका एते पांच ज्ञान इन्द्रिय एक मन इत्यादिक सब अपनी २ बुद्धि के प्रकाशते कहते हैं परजामे पेड़ स्कन्ध शाखा पत्र फल मिलित होइ सो अर्थ है तातेमेरी बुद्धि में तो पांचो तत्व एकमन एते षटस्कन्ध हैं मनमध्य को स्कन्ध है अरु इन्द्रिय विषय को अवान्तर किहे पञ्चमहाभूत सो गिरिधवलो के स्कन्ध हैं फैलरहे हैं षटकन्ध शाखा पच्चीस जो स्कन्ध प्रति पांच पांच शाखा गने तो तीस होते हैं जो चौचौ गनिये तो बीस होते है अरुयहां पचीस कहा हैं तातेमनरूप स्कन्ध ताको शाखा नहीं कहा है कोहेते मनको संकल्प विकल्प अनेक है पांच तत्व जो स्कन्ध रूप ताको शाखा कहेते हैं पांच पांच तो कौन हैं पांचहु तत्व में पांच पांच प्रकृति हैं सोई शाखा है आकाश तत्व असकन्ध रूप ताकी शाखा काम क्रोध लोभ मद मान एते पांच शाखा पुनि पवन तत्व मे धावन चलन हाथ पावको पसारब

पुनि उत्क्रमोणे कहो आविर उठै पुनि अग्नितत्व क्षुधा क्रान्ति निद्रा
आलस अमुहाई पुनि जलतत्व वीर्य पित्त पसीना रक्तलार पुनि
पृथ्वीतत्व हाडमास चर्मनसरोम एते पचीस शाखा हैं अरु
अन्तःकरणके जो शुभाशुभकर्म हैं अनेक विधिके सोई पत्र हैं अरु
कर्मन विषे जो फलकी अनेक वासना हैं सोई फूल हैं (८)
अरु दुइप्रकार को फल है एक कटु है एक मधुर है हानि लाभ शोक हर्ष
नरकस्वर्ग दुःखसुख इत्यादिक शुभाशुभ दुइ विधि सोई फल पुनि कटु मधुर
है अरु कर्मानुसार वासना सिद्ध सो है अरु बेलि अकेलि सो तरुके आश्रित हैं पर
ऐसो भासै है कि वाही संसार को प्रथम तरु कह पुनि अन्तमें बेलि कह्यो तहां जो कही
को पुल्लिंग स्त्रीलिंग एकही रूपमें कैसे कह्यो जाइ जहां ईश्वरत्व है तहां सब संभवत
है देखिये तो एकही तत्वको शक्ति कह्यो माया कह्यो पुनि वाहीको प्रधान पुरुषाकार कह्यो
पुनि जैसे भागीरथी को गङ्गा कही जल कही ब्रह्मद्रव कही तीनिहु लिंग सिद्ध होते हैं
तातें तरु बेलि संसार ही को कहा हैं पुनि फलबेलि के आश्रित कहा है किन्तु तरुके आ
श्रय फूल जानव अथवा संसार तरु रूप में माया कहे ममत्व तैं मैं मोर तोर सोई देव दानव
मनुष्य पशु कीटपतङ्ग जड़चेतन इत्यादिक त्रैलोक्य में अहं मम छाइ रह्यो है ऐसो
जो है ममता माया सोई बेलि है संसाररूप तरुके आश्रित है तरुपर चढ़ि रही है आच्छादित
करि रही है पुनि सर्वकाल सदा पल्लवित प्रफुल्लित है नवल कहे नित्य नवीन है नित्य कहे
सदा है अथवा नित्य कहे नित्य सनातन है अनित्य नहीं हैं ईशको जो त्रैगुण्य जनित
कार्य है सो अनित्य है ऐसो जो संसार विटप तुम्हारी एकपाद विभूति ते तुमको सहित

ऐश्वर्य श्रीरामचन्द्र हम नमस्कार करते हैं (१०) जोकोई कहै कि रामतो ब्रह्म हैं अद्वैत हैं मनवचन इन्द्रिन के परेहैं निराकार सर्वत्र व्याप्त है अनुभवते गम्यकहो प्राप्त है ऐसो मानिके जे ध्यावते हैं ते ऐसे कहहिं ऐसेजानोहि जे ब्रह्मअज अद्वैत मनभवगम्य मनपर तुमको कहहिं अरुजानहि अथवा तुमको अस कहहिं तुमजस मनमाने तसजानहु अरु हम जे हैं वेद सो हमारो सिद्धान्त परात्परतम तत्व जो है सो तुमजोही विद्यमान सिंहासन पर विराजमान धनुर्द्धर द्विभुजस्वरूप सोतुम कैसे हो नित्यचेतन जो ब्रह्म सर्वव्याप्तहै अरुतुम नित्यहु के नित्यही अरुचेतनहु के चेतनहो ताते तुम्हारो महिमा हमनहीं जानते हैं नेतिनेति करिकै तुम्हारो गुणगावते हैं अरु जो तुमको छांड़िकै अपरतत्व कहै तो वह वेदवेत्ता नहीं है औरउसको वेदको तत्व यथार्थ नहीं आवैहै हे श्री रामचन्द्र हम जो वेद हैं तिनको परमतत्व तुम्हींही (श्रुति कहते हैं) नित्योनित्यानां चेतनश्चेतनानामेको - बहूनां योविदधातिकामान् १ यस्यांशेनैवब्रह्मविष्णु महेश्वरा अपिजाता महाविष्णुर्यस्य दिव्यगुणाश्च स एव कार्यकारणयोः परः परमपुरुषो रामोदाशरथिर्वभूव इत्य थर्वणो उत्तरार्द्धे श्रुतिः २ ताते तुम्हारो जो है यश त्रिगुणातीत परमोदिव्य गुणमय ऐसो गुण यश हमगावते हैं (११) हे करुणाके आयतन कहा स्थान हे प्रभु सद्गुण के आकार कहे खानि सद्गुण जो षड़ैश्वर्य में प्रथम कहिआये हैं हे श्री रामचन्द्र तुम्हारी महिमा हमनहीं जानते ताते यह वर देहु मनवचनकर्मते आपके दोऊचरण में हमारो अखण्ड एकरस तैलवत धार अनुराग होइ समस्त विकार तजिकै अहर्निश तुम्हारो यश गावै है भरद्वाज ऐसे चारिहुवेद कहतेभये यथार्थ स्तुति करतेभये तब श्री रामचन्द्र सदा प्रसन्नरूप मनहीं में एवमस्तु कहतेभये (१२) दोहार्थ॥ सबके देखत सनो बेद उदारस्तुति करतेभये उदार कहो अमित सर्वोपरि वेदन अपनो विशेष सिद्धान्त श्री रामरूप पाइकै

कहो है श्री सीतारामस्वरूप को हृदय में धरिके अन्तर्ध्यान भये ब्रह्मलोकको जाते भये। बैनतेय कहो हे गरुड़ जबवेद स्तुति करिके जाते रहे तबमहादेव श्री रघुनाथजीकी स्तुतिकरिबे को आवते भये कैसे है महादेव जयके मुकुट सुन्दर बनिरहे हैं अरुललाटमे चन्द्रमा शोभित है अरुग्रीव में शेष शोभित है अरुतनुमें परमसुन्दरि विभूति शोभित है अरुकटिमें सिंहचर्म शोभित है अरुसिर में श्री गंगा शोभित हैं ऐसे जे महादेव सो कमल नयन ते श्री रघुनाथजीको स्तुति-शोभादेखि के पूर्णचन्द्रवदन ते अमृत मय गान करिके करमे डमरूबजाइके गद्गद गिराकही वाणीते पुलक शरीर ते स्तुति करते हैं ॥२॥ भूलसे ऐस्तर नहीं लिखागया इसलिये वेदस्तुति बादको लिखता हूं [signature] मास्टर ॥ ॥ पुनि यजुर्वेद बोल्यो ॥

तवविषम माया बश सुरासुरनागनर अग जगहरे ॥ भवपन्थ भ्रमत अमितदिवस निशिकाल कर्म-न गुण भरे ॥३ जेनाथ करिकरुणा विलोकेउ त्रिविध दुखते निर्वहे ॥ भवखेद छेदन दक्ष-हमकहं रक्ष रामनमामहे ४॥ (पुनि अथर्वण वेद बोल्यो) जेज्ञानमान विमत्त तव भवहरणि भक्ति नआदरी ॥ तेपाइसुर दुर्लभ पदादपि परतहम देखत हरी ५॥ विश्वास करि सब आस परिहरि दासतव जे होरहे ॥ जपिनाम तवबिनुश्रमतरहिं भवनाथ सो समरामहे ६॥ जेचरण शिव अजपूज्य रजशुभ परसि मुनि पतिनीतरी ॥ नखनिर्गता मुनिबंदिता त्रैलोक्यपावनि सुरसरी ७॥ ध्वज-कुलिश अंकुश कंजयुत बनफिरत कंटक किनलहे ॥ पदकञ्जद्वन्द मुकुन्दराम रमेश नित्यभजामहे ८॥ अव्यक्तमूलमनादि तरुत्वच चारि निगमागम भने ॥ षटकंध शाखा पंच-बीस अनेकपर्ण सुमनघने ९॥ फलयुगल विधि कटुमधुरबेलि अकेलिजेहि आश्रित-रहे ॥ पल्लवित फूलत नवलनित संसारविटप नमामहे १०॥ जेब्रह्म अज अद्वैत अनु-भव गम्य मनपर ध्यावहीं ॥ तेकहहुजानहु नाथहम तवसगुणयश नितगावहीं ११॥ करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देहुयह बरमागहीं ॥ मनवचन कर्म विकार तजि तवचरण-हम अनुरागहीं १२॥ (सबकेदेखत वेदन बिन्तीकीन उदार इत्यादि)

(वेद अस्तुति समाप्त)

॥ चौ॰॥ मनजात किरात निपात किये॥ मृगलोग कुभोग शरे नहिये॥ ७॥
हे रामचन्द्र मनजात जो है कामसोई है किरात निपात कहो मारते हैं कोई को लोग जे हैं प्राणी तेई हैं मृग तिनको कोहते मारते हैं कुभोग कहो परस्त्रीगवन इत्यादिक सोई है बाण तेहिकरिके हते हैं किन्तु मनजात कहो काम जो कहो कामना-सोई है किरात अरु कामना को कुभोग अनेकबासना सोई है बाण तेहिकरिके लोग जे है मृग तिनके हृदयको -जो विदीर्ण करते है॥ ७॥

(हति नाथ अनाथहि पाहि हरे॥ विषया वन पांवर भूलिपरे॥)
हे नाथ जिनके तुमनाथ नहीं हो तिन अनाथन मृगनको मारते हैं ताते हे नाथ मां पाहि हम तुम्हारी शरण हैं जे प्राणी पावंर मृग विषयरूप वनमें भूलिपरे ते मारे जाते हैं (८) चौ॰ जे सकाम नर सुनहिं जे गावहि॥ सुखसम्पति नाना विधि पावहि॥ अरु जे नर सकाम सुनते है गावते है ते अर्थ धर्म काम इत्यादिक अनेक विधि के सुख सम्पत्तिको प्राप्त होते है॥ ३॥
चौ॰ सुनहि बिमुक्त विरति अरु विषई॥ लहहि भक्तिगति सम्पति नित ई॥
तहां श्री रामचन्द्र के राज्याभिषेक की कथा जे विरक्त अरु विमुक्त सुनते हैं अरु तहा जे विषई मुमुक्ष सुनते हैं तिन सबनमे जे विमुक्त हैं ते भक्ति को प्राप्त होते है जे मुमुक्ष विरक्त हैं ते मोक्षको प्राप्त होते है अरु जे विषई हैं वे शुद्ध सम्पत्ति नित्य नवीन को प्राप्त होते है॥ ५॥
चौ॰ नित नव मंगल कोशलपुरी॥ हर्षित रहहि लोग सब कुरी॥

हे भरद्वाज कोशलपुरी विषैनित नवीन २ मंगल होते हैं तहा सवलोग कुरीके कुरी हर्षित है कुरीकही ब्रह्मणमें अनेकभेद सुग्रीपमे अनेकभेद वैश्यनमे अनेकभेद सूद्रनमे अनेकभेद जो चारिउ वर्णनमे अनेक भेद हैं ताको कुरी कही ते सब हर्षित हैं (८) चौ॰ ब्रह्मानन्द मगनकपि सवके प्रभुपद प्रीति॥ जातनजाने दिवश तिन गये मास षटवीति॥ ॥

अरु सुग्रीवादिक की सेना ते सब ब्रह्मानन्द मे मगन है अरु श्री रामचन्द्रके चरणन में अत्यन्त प्रीति है तहा यह सिद्धान्त है कि सम्पूर्ण कर्म को फल ब्रह्मज्ञानते फलको रस श्री रामचन्द्र के चरणारविन्दविषे प्रीति तहां सवकपिनको अरु श्री अयोध्यावासी इत्यादिक सवजीवनको छमहीना बीत गयो तिनदिवसनको ज्ञात न हो जान्यो कोहेते कि श्री रामचन्द्र के राज्याभिषेक विषे सूर्यको रथ छमहीना थम्हि रह्यो है तहा रात्रिको आगमनै नही है दिन कैसे जान्यो जाइ है॥

दो॰ जामवन्त नीलादि सब॥ पहिराये रघुनाथ
॥ हियधरि रामचरण सब चलेनाइपद माथ॥

श्री रामचन्द्र की आज्ञा ते तीनि उ भाई अरु परमचतुर जे सेवक हैं ते सबमिलि कै जामवन्त नलनीलादिक प्रथम सबराजन को वस्त्र अलंकार पहिरावते भये पुनि अठारहो पद्म यूथपन को पहिराये पुनि सम्पूर्ण सेना को परमदिव्य वस्त्र भूषण जो देवतन को दुर्लभ है सो यथा योग्य श्री रामचन्द्रकी प्रसादी पहिरावते भए ते सब हृदयमे श्री रामचन्द्र के चरण कमलों को धारण करिकै अरु पैरन मे माथ नवाई कै चले हैं॥९॥

सुनु सर्वज्ञ कृपासुख सिन्धु॥ दीनदयाकर आरत बन्धु॥
अब अंगद कहते हैं कि हे सर्वज्ञ कृपा अरु सुखकेसिन्धु हे दीनदयाकर आर्त के बन्धु इहांअंगद तीनिसम्बोधन दीन त्यहिको यहअभिप्राय है कि मेरे अन्तःकर्णको अभिप्राय तुमजानते हो ताते सर्वज्ञ कहाहै अरुतुमकृपाके समुद्रहौ मोपर कृपा काहेको छोड़तेहौ मोको विद्यान करो अरुतुम दीनबन्धु हौ मोको न त्यागहु ॥१॥ चौ॰ मरतीबार नाथमोहिबाली॥ गयातुम्हारे क्रोडे घाली॥ हेनाथ मरतीबार मोको बालितुम्हारे गोदमेडारे गयाहै॥२॥ चौ॰॥ अशरणशरण विरद सम्भारी॥ म्वाहिजनि तजहु भक्त हितकारी॥ अरुतुम अशरण शरण हौ तुम्हारोविरद कहावना ताको तुमसम्हारहु अरु तुम्हारविरद नित्यअखण्ड है हेभक्तहितकारी मोको जनित्यागकरो यहा व्यंग है किजो मोकोत्यागहुगे तौ तुम्हारा विरद छूटजायगो अरुतुम अपने-विरदको सम्हारत आयेहौ काहेतेतुम भक्तहित कारी हौ अरुमें तुम्हारे-भक्तहौं॥३॥ चौ॰ मोरे तुम प्रभुगुरु पितुमाता॥ जाउंकहा तजि पदजल जाता॥॰ पुनिअंगद कहतहै कि मेरे गुरु मातापिता तुमहो इहांभी व्यंग है कि पिताजोबालि ताको तुमने मारिके परमपद दीन अरु माता सुग्रीव नै लीनि है याते अब मेरेसब प्रकारते मातुपितु आपही हैं हे प्रभु इनचरण कमलको छोड़ि के कहांजाऊं॥४॥ चौ॰ नीच टहलगृह कै सबकरिहौं पदपंकज विलोकि भव तरिहौं॥ हेनरनाहराज आपही विचार करिकै कहौ आपको छोड़िकै घरमें मोर कौनकाजहै

राज्यघरमे मोरकछुकाजनहीं हैं ॥५॥ दो० निज उर माल बसन मणि बालितन-
य पहिराय ॥ बिदाकीन्ह भगवानतब बहुप्रकार समुझाय ॥ तबराज्य-
राज्याभिषेक बिषे श्री रामचन्द्रने भूषण बसण पहिरे उरहैं सोई अंगदको
पहिराबतेभये काहेते कि अंगदको बिदाकीन चाहते हैं तहा रा-
ज्याभिषेक बसण भूषण पहिराइके अपनो सारूप्य मुक्ति दियमान
दीनहै अरु याहिमे यह अभिप्राय है कि अपने सामान्य ऐश्वर्य को
सम्पूर्ण टहल दीनहै यहसबदैके अनन्तर अपने कण्ठकीमा
ला पहिरायके बहुप्रकारते समुझाईके श्री रामचन्द्र ने बिदाकीन॥२
चौ० भरत अनुज सौमित्र समेता ॥ पठवन चले भक्तकृतचेता ॥
तबरामकी आज्ञाते भ्रातनो लक्ष्मण शत्रुहण ते सब कपिनके पहुचाइबे कोचले कैसे
हैं तीनिउ भाई सर्वजीवन के आचार्यरूप हैं ताते सबभक्तन के बाह्यान्तर चैतन्य-
कर्त्ता हैं ताते भक्तकृतचेता कहा है (७) चौ० दिनदश करि रघुपति पद सेवा ॥
पुनि तव चरण देखिहौं देवा ॥ पुनि हनुमान जी बोले हे राजा सुग्रीवजी दिनदश
श्री रघुनाथ जी के पद पंकज सेवनकरिके हेदेव फिरि आपके चरण देखौंगो इहां
हनुमानने कहा दिनदश मे तुम्हारे चरण फिरि देखौंगो अरु रघुनाथजीको छोड़िके
अब जाउँगे नहीं तहायह वचन क्यों कहा तहां याहिबात में व्यंगार्थ है कि रामचन्द्रने
मोको आपन कीनहै तहांजो कदाचित मेरी अभाग्यते यहमेरे दिनदशा फिरि-
जाहि श्री रघुनाथजी मोको त्यागकरिहैं तो फिरि आपके चरण देखौंगो किन्तु
दिनदश कहना यह लोकव्यवहार वाणी हैं बड़ेन को समान है (८)
चौ० बैर नकर काहू सन कोई ॥ रामप्रताप विषमता खोई ॥ तहां कोई राम
चन्द्र के राज्यमे काहू ते बैर नाहीं करते हैं सबनिर्भै हैं इपे श्री रामचन्द्र के प्रताप

ने सम्पूर्ण विषमता जीवनकी मिटाई दीन्हीं है (२) चौ० दैहिक दैविक भौतिक तापा ॥ रामराज्य नहिं काहुहि ब्यापा ॥ हेगारुड़ श्री रामचन्द्र के राज्य विषे तीनिहु तापकाहु जीवन को नहीं ब्याप्यो है त्रैताप कवीन है दैहिक कहीं अध्यात्म देहसम्बन्धी तामेंहु भेदहै एकब्रह्मज्वार आदि अनेक रोग उत्पन्न होइ अरुमिथ्या वचन इत्यादिक पुनि एकअन्तर कामक्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य वासना इत्यादिक पुनि एकअन्तर दैहिकताप कहो पुनि दैविक कहो आधिदैवत जो देवतनकरिके विघ्नहोइ पाला पत्थर अति वृष्टि अनावृष्टि अरुवज्रपात इत्यादिक ताको दैविक कहो पुनि भौतिक कहो आदिभूत जीवनकरिके पीड़ित होय राजा चोर सर्प सिंह इत्यादिक करिके जो दुःखहोय ताको भौतिक कहो एते तीनिउ ताप हैं सो श्री राम-चन्द्रके राज्य में काहूजीवनको नहीं व्याप्त भयो (१) चौ० ॥ चारिउ चरण धर्म जगमाहीं ॥ पूरिरहा सपनेहु अघनाहीं ॥ श्री रामचन्द्र के राज्यमें धर्म के चारिउ चरण सत्य सौच तपदानसो सर्व विषे पूरिरहे हैं अघ सपनेहु विषे नहीं रह्यो है (२) चौ० ॥ रामभक्तिरत नर अरु नारी ॥ ॐ सकल परमगति के अधिकारी ॥ तहां श्रीरामकी भक्ति मे नौ को प्रकार प्री-ति पूर्वक रहत हैं सब नरनारी भक्ति कहो नवधा प्रेमापरा श्रवण कीर्तन स्मरण पाद सेवन अर्चन वन्दन दास्य सख्य आत्म समर्पण प्रेमा परा ऐसी भक्ति विषे श्री रामचन्द्र रहत हैं अरु सर्व जीव त्रैलोक्य विषे जेते हैं सब परम पद की गति के अधिकारी हैं ॥ ३ ॥ ॐ

॥ दो०॥ रामराज नभगेश सुनु सचराचर जगमाहिं॥ 卐

卐 ॥कालकर्म सुभाव गुण कृतदुख काहुहि नाहिं॥

हे गरुड़ श्री रामराज्यविषे जेते जीव चराचर जगत त्रैलोक्यविषे हैं तिन सबको काल कहा भूत भविष्य वर्तमान अरु कर्म सात्त्विक राजस तामस जे हैं अरु सुभाव कही जो बाहि पूर्वजन्म के लिये कर्म की सूक्ष्मता जो रहि गई है सो विना प्रयोजन इच्छितकरिके वर्तमान होतहै सुभावके द्वारा ह्वैके शरीर में भोग्य है ताको सुभाव कही पाणीगो को वीर्य नहीं रहतहै अरु पूर्वजन्मके कर्म शरीर में वर्तमान होते हैं ताको संस्कार अरु तीनिहुं गुणके प्रभाव करिके क्रमते देव मुनि नर दानव इत्यादिक चराचर सब हैं ऐसे जे काल कर्म सुभाव गुण ते सब श्रीरामराज्य में काहू जीवको नहीं व्याप्त भये हैं तहां काल कर्म सुभाव गुण के वश्य ह्वैकरिके जीवनको जन्ममरण बंधन होते हैं अरु जे पहिले रहित भये हैं ते त्रैलोक्य में जीवनमुक्त भये हैं अरु श्री रामचन्द्र के राज्य में ब्रह्माण्ड भरेके जीवनको ये चारिउ काल कर्म सुभाव गुण नहीं व्याप्त भये हैं ताते सर्व जीवन मुक्त हैं ताते यह समुझिये मैं आवत है कि श्री रामचन्द्र के राज्य में जगत में चराचर जीव सब परमपद को प्राप्त भये हैं जो कोई कहै कि पुनि कहां ते जीव जगत में प्राप्त भये तहां श्री रामचन्द्र की विभूति विषे अनन्त जीव हैं काहू के जानिबे जोग्य नहीं हैं परमेश्वर चाहै एक पल में कोटिन ब्रह्माण्ड की रचना करै पालन करै संहार करै पुनि नवीन करि सकै है ऐसे सामर्थ्य के चरित्र कौन जानि सकै है नाम कोई नहीं जानि सकै है॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

चौ० ॥ भूमिसप्त सागरमेखला ॥ एकभूप रघुपति कोशला ॥
हे गरुड सातोद्वीपको भूमिजोहै त्याहिविषे सातोसमुद्र मेखला कहीधेरे हैं तहद्वीपनके वरणनअरुसमुद्रके वर्णन बालकाणमे राजा भानुप्रताप केप्रसंग विषे कहिआयेहैं तिनसबके राजा श्री रामचन्द्रहै(१) चौ०॥ भुवनअनेकरोम प्रतिजासु॥ यहप्रभुता कछुबहुत नतासु॥ ,, तहां हेगरुड़ यहनैमित्य लीलाके प्रकरण में अनेकभागहै एकभागको किंचित प्रकरण कहेहैं नतुभुवन कही अनेकन ब्रम्हाण्डते श्री रामचन्द्रकी माया के विषे रोम२मे प्राप्ति हैं तहां याहि प्रभुता को का बड़ी बातिहै ॥२॥ चौ०॥ सो महिमा खगेस जिन जानी॥ फिर यह चरित तिनहु रतिमानी ॥,, हेखगेश जिन ब्रह्मवेत्तान-श्री रामचन्द्र की महिमाजानीहै तेउ श्री रामचन्द्र के एही-चरित्रमे रतिमा-नतेहैं॥ चौ० सो जानेकरफल यहलीला ॥ कहीहं महामुनि बर दम शीला ॥,, कहते कि सो महिमा जिनजानीहै ते परलोक के सा-धन जेतेकरते हैं तहां श्री रामएक कल्पतरु हैं परलोक के प्राप्ति की बासना सो फलहै अरुसो ऐश्वर्य महिमा श्री रामचन्द्रके रसनेफल है अरुपद महिमा जो दशरथ नन्दनकी परमदिव्यलीला सो सुमार पुछीहै यहबात नै मुनि दमशील कही आत्मदर्शी हैं ते कहते हैं॥

।

॥दोहा॥ दण्डपातिनकर भेदजहँ नैतक नृत्य समाज ॥
॥ ॥ जीतहि मनहि सुनिय अस रामचन्द्रके राज ॥

हे भरद्वाज चारोराजनीति सामदाम दण्ड विभेद ये चारिउ श्री रामचन्द्रके राज्यमें कैसे वर्तमानहै नाममात्र वर्त्तमानहैं कैसेजानिये कि अनीतितो कोई जीव मे है नहीं ताते दण्डजो राजनीतिहै सो कहांरहै संन्यासीके कर्ण में रहेउ अरु भेद कहीं कोई परते राजाजेहैं सो अवरे राज्यके काजकामो किन्तु भ्रातापुत्र इत्यादिकन को फोरिलेना सो भेद रामराज्यमे कोईजीव मे नहीरहा हैं पुनिकहां रहेउहै जो समाजनमे नृत्यकारकहै तिनके गानके भेद तिनके बाजाकेभेद अरुनृत्यकेभेद तिनके समाजनमे रहे हैं पुनि दामकहो द्रव्यहाथीघोड़ पैदर रथ आयुध अनेकन कोरिकै पराईराज्य धन धान्य इत्यादिक जीति लेइ किन्तु अपनो राज्यमे आपनाते कोई जबरदस्त आयो तौ उसको-द्रव्य देकै अपनोराज्यको रक्षाकियो किन्तु द्रव्य देकै पराई राज्यको लैलियो है तहां दाम जो राजनीतिहै तेहिको गुणकोई प्रकारते काहूको जीतिलेना सो श्रीरामचन्द्रके राज्य में सबतो सब पदार्थ से परिपूर्ण है कोकिसको जीतै है तहां साम जो राजनीतिसो कहां रह्योहै तहां जोग वैराग्य ग्यानविग्यान भक्ति इनदासनकोरिकै इन्द्रिन संयुक्त अपने मनको जीतते हैं पुनि सामराजनीति सर्व्वत्र पूर्णचराचर विषैहैं सामकहो साम सोतो सर्व जीवनविषे स्वाभाविके समता हैरहो है ताते हे गरुड़ सामदाम दण्डविभेद श्री रामचन्द्रके राज्यमें यही प्रकारते रहेहैं (१)॥ चौ०॥ फूलहि फलहि सदा तरु कानन ॥ रहहि एकसंग गज पंचानन ॥

अरु बसंत ऋतु विषे सम्पूर्ण बनस्पती फूले हैं सदापके हैं अरु एक संघ विषे गज अरु पञ्चानन कहीं सिंह विलास करते हैं तीहिके पांच आनन कहीं मुख हैं विशेष तो यहीं अर्थ है किन्तु गजेन्द्र एक मुख बीरसे पांच हाथी एकही बार मारत हैं ताते पञ्चानन कही किन्तु पांच मुख हैं परमेश्वर की लीलामें अनेक बहु मुखके हैं (१)

चौ०॥ कोटिन बाजिमेध प्रभु कीन्हे ॥ दान अनेक द्विजन कहं दीन्हे ॥

हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्रने राज्यपर बैठिके कोटिन अश्वमेध यज्ञ कीन है अरु द्विज जे हैं ब्राह्मण तिनको अनेक धन दीन्हे हैं अरु जो कोई कहै कि वर्ष दिनमे एक अश्वमेध यज्ञ होइ है पर बडे समर्थ राजाते अरु श्रीरामचन्द्रतौ ग्यारह हजार वर्ष राज्य कीन्ह अश्वमेध मेध यज्ञ कैसे कीन है यह संदेह है तहा एक अश्वमेध विषे जो पदार्थ खर्च होत भयो है सो एक सब अश्वमेध के पदार्थ कोटिन विधि विधानते ब्राह्मणनको देते भये हैं ताते कोटि बाजिमेध कहा है किन्तु श्रीरामचन्द्र सातहू द्वीपके राजा जे छोटे बडे हैं तिनको आज्ञा दीन है अश्वमेध करिबेको ते सब ग्यारह हजार वर्ष ताई यज्ञ करते रहे हैं किन्तु श्रीरामचन्द्र परमेश्वर हैं पलकमें कोटिन अश्वमेध करिसकते हैं (१)

॥चौ०॥ हर्षित रहहि नगरके लोगा ॥ करहि सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥

अरु सम्पूर्ण नगरके लोग अति हर्षित रहते हैं देवतनको जो भोग दुर्लभ है सो अवधवासी करते हैं काहेते देवता त्रैगुण्य जनित भोग करते है

अरु अवधवासी पर विभूति परमदिव्य गुणातीत परमानन्द सब भोग करतेहैं जो देवतनको दुर्लभहै ॥(५)॥ चौ०॥ दुइसुत सुन्दर सीता जाये ॥ लवकुश वेद पुरानन गाये ॥ तहांश्री जानकीजी अपनी इच्छाते मानसी दुइपुत्र उत्पन्नकीनहैं तिनके नाम लवकुश तिनकेरूप शोभा गुण प्रतापको वेदपुराण प्रशंसा करतेहैं (६)॥ चौ०॥ दोउ विजयी विनयी गुण मन्दिर ॥ हरिप्रतिबिम्ब मनहुं अतिसुन्दर ॥ तेदोउ बालक सबकेविनय कहिस्तुति योग्य सबप्रकारते प्रवीण अरु जगत विजयी दिव्यगुणके मन्दिर अरु श्री रामचन्द्रके प्रतिबिम्बवत् अति सुन्दर अपनी शोभाकरिकै कामहूंको लजावतेहैं इहांमानहु जो कह्योहै सोउत्प्रेक्षा लंकार वस्तुप्रत्यक्ष जानब (७)॥ चौ० दुइदुइ सुत सबभाइन केरे ॥ भये रूप गुण शीलघनेरे ॥ तैसेही दुइदुइ पुत्र सबभाइनके रूपशील गुणबल बुद्धिके समुद्र भये तिनके नाम भरतकेपुत्र पुष्कलतक्षक लक्ष्मणके पुत्र अंगद चित्रकेतु शत्रुहनके पुत्र श्रुतिसेन सुबाहु (८) चौ० दिनप्रतिशकल अयोध्या आवहि ॥ देखि नगर विराग बिसरावहि ॥ प्रतिदिन श्री अयोध्या को आवते हैं पुरीकीशोभा परमानन्द विलाश देखिकै वैराग्य बिसारिदेते हैं पुनि श्रीरामचन्द्र के दर्शनकरते हैं श्री रघुनाथजी तिनका अतिआदर पूर्वक पूजनकरते हैं दिव्यासनपर बैठावते हैं वशिष्ठजू वेदकरिकै श्री रामचरित बांचते हैं अरु श्री मद्रामायण महामुनि- बाल्मीकिकृत बांचते हैं ते सबमुनि अतिप्रेम प्रीतिते श्रवण करते हैं पुनि श्री रघुनाथजीके मनके आज्ञानुकूल निजनिज आश्रम को जातेहैं एसेही दिनप्रति परमानन्द होतेहैं आइबे जाइबेको मुनिसमर्थ हैं अरु सबसिद्धियां उनके हस्तामलक हैं ॥ चौ० गुरुहुंपास कोटि अति सुन्दर ॥

रचे कंगूरा रंगरंगवर ॥ अरुपुरके चहुंपासविषे कोट बनायो है त्योंहि कोट के दशहुंदिशा विषे कंगूरा रंगरंग के रचे हैं (४)॥ चौ० नवग्रह निकर अनीक बनाई। मनहुघेरि अमरावति आई ॥ तहां कोट कंगूरन विषेनवग्रह इत्यादिक नक्षत्रन-चिन्ह अनीक कही अवली की अवली बने हैं मानहुं अमरावती घेरिके टिक आन् इके किन्तु एकदेशी लक्षणा कीरके कहते हैं पुरके बाहर दशोंदिशा विषे नवोंखण्डके अरु सातोंद्वीपके राजा श्रीरघुनाथजीके दर्शनहेतु मिलिवेको आये हैं सो पुरके बाहर टिके हैं मानहु सम्पूर्ण अमरावतीके देवता श्रीरघुनाथजीका आज्ञा कीरके आयेहैं पुरी घेरिके टिके हैं ॥(५)॥ नवगृह निकर अनीक बनाई ॥ मनहु घेरि अमरावति आई ॥ तहां कोटकंगूरन विषे नवगृह-इत्यादिक नक्षत्रनके चिन्ह अनीक कही अवली की अवली बने हैं मानहुं

चौ० बहुमणि रचित झरोखा भ्राजहिं ॥ गृहगृह प्रति मणिदीप विराजहिं ॥ अरुबहु गृहप्रति अनेक झरोखा मणिमय भ्राजते हैं मानहु मन्दिरन के मंगलमय श्रवण नयन दिखा पुख है अरु गृहप्रति मणिनके दीपक भ्राजते हैं तहां मन्दिर तो सब मणिमय है अरु स्वतः प्रकाश है पर महामणिन के दीपकभाव स्थापना कीन्हे हैं (८)॥

छं० मणिदीपराजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ॥ अर्थ ॥ (दीपस्थाने यहां मणि है)

॥ चौ० शुक सारिका पढावहिं बालक ॥ कहहु राम रघुपति जनपालक ॥ ३५

अर्थ बालक जे हैं ते शुक सारिकन को पढावते हैं हे शुक सारिकहु श्री सीताराम कहहु रघुपति कहहु जनपालक कहहु रघुनन्दन कहहु रघुवीर कहहु भुवनेश्वर कहहु महाराजाधिराज कहहु कोशलेन्द्र कहहु कौशल्यानन्दन कहहु सीतापति कहहु कारुण्यकृपानिधान कहहु भरताग्रज लक्ष्मणाग्रज कहहु (श्रीरामाय नमः) यह कहहु पुनः श्लोक एकः (अन्यत्र) रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम् ॥ सुग्रीवं वायुसूनुञ्च प्रणमामि पुनः पुनः १ हे शुक सारिकहु यह पढ़हु अरु ॐ (सीता रामाभ्यां नमः) यह कहहु इत्यादिक श्री रघुनाथजी के गुणप्रताप लीला यश कीर्तनादि शुकसारिकन को बालक पढावते हैं अहर्निश रामाकार ह्वै रहे हैं (७) छः ॥ आरामरम्य पिकादि खगरव पथिकजात हँकारहीं ॥ अरु अनेक प्रकार के खग मधुप बोलते हैं गुञ्जारते हैं इहा एकवार बावली अरु तड़ाग वर्णन करि आये हैं अरु पुनि छन्द में वर्णन कीन तहा पुनरुक्ति न जानब यह सिंहावलोकनपद कहावत है आराम कहौ बहुबाटिका ते अतिरमणीय कहो अति सुन्दर हैं तहा पिकादिक पक्षी बोलते हैं मानहु पथिकन को बोलाइ लेते हैं कि आवो फल खाइ लेहु जल पिलेहु ऐसी मधुर वाणी बोलते हैं (२) चौ०॥ भजहु प्रणत प्रतिपालक रामहिं ॥ शोभा शील रूप गुण धामहि ॥ यह सिखावते हैं प्रणत प्रतिपालक श्री रामचन्द्र तिनको भजहु कैसे हैं श्री रामचन्द्र शोभा के धाम हैं जो श्री रामचन्द्र की शोभा को थिर ह्वैके मन में बसावहुगे तो ब्रह्माण्ड भरे की शोभा फीकी परिजायगी अरु शील के धाम हैं जहां कोई जीव अनेक अवगुण किहे होइ अथवा करत होइ अरु भेंटकरिके किन्तु

कछु स्वार्थ करिके किन्तु कछु प्रीति करिके एकहू बार शरणमाइ तौ ताको त्याग प्रान कबहूं नहीं होइ निज करिके आपन जानते हैं अरु मनोवाञ्छित दिव्य फल देते हैं अरु रूपके धाम हैं रूप कहौ नखन ते शिखलौं अङ्ग अङ्ग कौ गठीन एकरस सोइ अखण्ड एकरस नित्य अरु श्यामरूप शृङ्गारहूं को शृङ्गार मूर्ति है सो जो हृदय विषे ल्यावहु तौ संसारके विषयते निर्भय होहु अरु परमानन्द रसको प्राप्त होउगे अरु परम दिव्य गुणके धाम हैं सौशील्य भक्तवात्सल्य करुणा उदार दया इत्यादिक अनन्त गुण जो ऐसे श्री रघुनाथजीके गुण हृदय में ल्यावहु तो पै गुण तुमको प्राप्त होहिंगे ऐसे श्री रघुनाथजी को भजहु (२) चौ० कालकराल ब्याल खगराजहिं ॥ नमत राम अकाम ममता जहिं ॥ फिर कैसे हैं श्रीरामचन्द्र काल जो महाकराल व्याल है ताहिके भक्षण करिबे को गरुड़ हैं अरु जो एकहू बेर नमते हैं तिन प्राणीन के ऊपर श्रीरामचन्द्र की अति ममता कहौ प्रीति होती है फिर कैसे श्री रामचन्द्र हैं निष्काम ममता करते हैं अरु कछु इनसे चाहते नहीं हैं किन्तु जे नर निष्काम है के श्री रामचन्द्र की शरण है तिन पर ममता कहौ प्रीति प्रीति करते हैं किन्तु जहि कहौ ममता को नाश करते हैं (५) चौ० ॥ अघ उलूक जहं तहां लुकाने ॥ काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥ तहां श्री रामप्रताप सूर्यके उदयते अघ जे हैं सोई उलूक हैं सो जहां तहां लुकाइ रहै हैं अरु काम क्रोध कैरव कहौ कुमोदनी हैं ते सम्पुटित होत भये हैं (८) चौ० ॥ बिबिध कर्म गुण काल स्वभाऊ ॥ ये चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥ अरु विविध कहौ त्रैगुण्य जनित जे कर्म हैं ते अरु तीनों गुण अरु काल भूत भविष्य वर्तमान भूत कहौ जो पाछे है आयो है अरु भविष्य कहौ जो आगे होनहार है वर्तमान

कहो होतहै सोगलस्वभाव कहोजो अनेकजन्मकर संचितकर्मण के शेष कच्छराहे गयों है शरीरनेंसो भोगकरते हैं अनशक्षित स्वभावकेद्वार हैंके तेसवचकोर हैं रामप्रताप सूर्यकेउदयभयेते इनको कतहूं नहीं सुख है जेजातेहैं (२) दो॰॥ यह प्रताप रवि जासु उर जबप्रभुकरें प्रकाश ॥ पछिले बाढ़ोइ प्रथम जे कहेते पावहि नाश ॥ यह श्री रामचन्द्रको प्रताप रविरूप अर्थी- ति रामकृपाते ज्योहिके हृदय में प्रकाश होइ तोजो पाछेकहे है धर्मतड़ाग इत्यादिकतिनहुं को तो वृद्धि होइ अरुजेप्रथमकहे अविद्यानिशाके चोरइत्यादिकते सवनाशको प्राप्त होतभयेहैं तहां श्रीरामचन्द्रके राज्य विषे सर्वजीवन रात्रीरूप अविद्याके व्यवहारते सम्पूर्ण नासभये हैं अरु श्री रामप्रताप एकरसदिनरूप तहां विद्याकेव्यवहार को वृद्धिहोति भई है ताते ब्रह्माण्डभरे के चराचरजीव शुद्ध श्रीरामचन्द्रके राज्यविषे सुलक्षणको प्राप्त भयेहैं हे गरुड़ श्री रामचन्द्रके राज्यमें सर्वजीवनको श्रीरामधामके अधिकारी विशेष जानव ॥ चौ॰ जानि समय सन कादिक आये तेजपुंज गुणशील सुहाये ॥ तहां सनकादिक श्री रामचन्द्रको याह समयमे एकान्तवाटिकामे दिव्यदृष्टिते देखिके अरुयहजानिके कि याहिसमयमें श्रीरामचन्द्रके दर्शन अच्छीप्रकार होहिंगे अरुभक्तिवर्धन लेहिंगे यहसमुझिकै अतिआनन्द पूर्वक श्रीरामचन्द्र केसमीप आवतेभये कैसेहैं सनकादिक तेजकेपुंजमानहु बारहोंकला सूर्य तीन२कलाको एक२ मूर्तिचारिउ रूपधरिके श्री रामचन्द्रके दर्शनको आवतेभये हैं सनकादिक कैसे हैं दिव्य गुण शीलकरिके अतिशोभित हैं ॥३॥ चौ॰॥ तहारहे सनकादि भवानी जहंघटसम्भव मुनिवर ज्ञानी ॥ हे पार्वती सनकादिक श्री रामचन्द्र के समीप कहते आये हैं घटसम्भवकही अगस्त मुनि ज्ञानी तिनके यहां रहे हैं ॥४॥ चौ॰ मुनिरघुपतिछवि अतुल बिलोकी॥ भये मगन मन सकेनरोकी ॥ तहांजब श्री रामचन्द्र पीताम्बर बिछाई दीन अरु बैठिवेको कहातहां मुनि श्री रामचन्द्रकी अतुलितछवि विलोकिके श्री रामचन्द्रके मनमग्न कहो डूवगयो है पीताम्बर पर ठाढ़े है रहे हैं देहकी दशाभूल

गईहै तहासेवक स्वामी को भाव बिसरिगयोहै पराभक्तिको दशाको प्राप्त हैं जहासे-वककी सेवकत्व भूलिजाय अरुस्वामीकी स्वामित्व भूलिजाय ताकोपरा भक्तिकहीतहां प्रणाम है (भगवत्गीतायाम्)१॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न सोचीते न कांक्षति॥ समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिम् लभतेपराम्१॥ तहांयह सनकादिकनमें देखिलीजिये काहेते कि सनकादिक ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मनिष्ठी जीवनमुक्त परमहंस तिन सनकादिकके श्री रामचन्द्रकी छावि देखिकै बृतिनितनकी डूबिगईहै पराभक्तिकी दशाकोप्राप्त भये हैं तातेयह समुझिपरतेहै कि जबब्रह्मज्ञान तदात्मक होइ तब श्री रामचन्द्रकी शोभा छविरसको अधिकारी होइहै सो सनकादिक में देखिलीजिये॥२॥ चौ०॥ एकटक रहे निमेष न लावहिं। प्रभुकरजोरे शीश नवावहिं॥ तिन श्री रामचन्द्र की मनोहर मूर्ति देखिके एकटक रहिगये निमेष नहीं लागती है जैसे चित्रकी बेलि तैसे श्री रामचन्द्रजी की रूपदेखि कै सनकादिक रहिगयेहैं यहआश्चर्य देखिये कि सनकादिक शान्तरस के पूर्णस्वरूपहैं अरुश्रीरामचन्द्र शृंगाररसके सिन्धुस्वरूपहैं तब सनकादिक डूबिगये तबबिहांसिकै श्रीरामचन्द्र निकासि लियो है तब श्री रामचन्द्र अपने मनमें अपनी लीला पूर्वक दोनो कर जोरिकै शीश नवावते हैं (४) दो० परमानन्द कृपायतन मन परिपूरण काम॥ प्रेमभक्ति अनपावनी देहु हमहिं श्रीराम॥ अरुहे श्रीरामचन्द्र परमानन्द अरुकृपा तेहिके स्थान हौं अरु सम्पूर्ण कामना करिकै तुम्हारा मन परिपूर्ण है तुम निष्कामहौ किन्तुअपने जनन के मनको सब कामनाते परिपूर्ण करतहौ ताते श्री रामचन्द्र कृपाकरिकै अपनी अनपावनी भक्ति हमको देहु अनपावनी कही जेहि के सम अपर पदार्थ पावन नहीं है नकोई कर्म न कोई धर्म न योग न वैराग न ग्यान न विज्ञान नध्यान न समाधि इत्यादिकन ते परम

पवित्र पावन ताको अनपावनी कही किन्तु जो भक्तिकोई नहीपावै जोहि पर श्री रामचन्द्र अतिकृपा करैं ताको देहिं सो अनपावनी कही किन्तु जो दिन विघ्नन ते नचलै सर्वकालमे अचलरहै ताको अनपावनी भक्ति कही सो प्रेम लक्षणा भक्ति सनकादिक श्री रामचन्द्रसे मांगते है ॥ चौ०
प्रणत काम सुधेनु कल्पतरु ॥ होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु ॥
पुनि भक्ति कैसी है प्रणतकही जो तुम्हारी शरण हैं तिनको परमदिव्य कामधेनु कल्पवृक्ष है तहां सर्वकामना देवेको एकै सामर्थ्य है तुरु क्यों कहाहै तहां भक्ति कल्पतरुरूप हैकै श्री रामचन्द्रके स्वरूपको देतिहै अरु कामधेनु रूप हैकै स्वरूपविषे अतिप्रीति अनुराग देतिहै सो भक्ति प्रसन्न हैकै बरदान हमको देहु ॥ (२)॥ चौ०॥ रघुकुल केतु सेतु श्री रक्षक ॥ कालकर्म स्वभाव गुण भक्षक ॥ हे रघुकुलके केतु कहीं पताका अरु श्रुतिसेतु कहीं मर्यादतेहिके तुमरक्षक हो अरु कालकर्म स्वभाव गुण तेहिके भक्षकही कालकही झरोखामें सूर्यकी किर्णै जगमगाइ रहीहैं तामें एकको त्रिषरेणु कहीं अरु सैकरा त्रिषरेणु कर एकअणु कही अरु सैकराअणुकर एकपरमाणु कहीअरु सातुपरमाणुकर एकली कहीं अरु साठिलीकर एकनिमेष कहीं अरुसाठिनिमेषकर एकपल कहीअरु साठिपलकर एकदण्ड कही अरुसाठि दण्डकेदिन रातकहीं अरुतीस दिनरात्रिके एकमासकही अरु बारहमासके एकवर्ष यहीं रीतेहीं जैते पलघरी दिनमासवर्ष बीतते हैं जैसेरि ब्रह्मो लिखा है तासनवते जन्म भयो तेहि साइतते जैते पलघरी दिनमास बीतते हैं सो कर्म होत जातेहैं अरु तेहिशरीरके कर्मके सम्बन्धते जीवनको स्वर्ग मृत्युलोक

अरु चौरासी भोगकरते हैं जेहिकालके विषे ताकोंकाल कहीं तहांजेजीव तुम्हारी शरण होतेहैं तेहिकेकालको तुमभक्षक कहीं कालहूकेकाल ह्वैकै अपनोपद देते हो कर्मजोतीनिगुण सम्बन्धी अरुस्वभाव अनेकजन्मके कर्म्म संसकार जो सूक्ष्म शेष रहिगयो है सोजीवन विषे स्वभावकरिके वर्त्तमान होत हैं ताको स्वभावकही अरुतीनि गुण तेहिको भक्षककही नासकरिकै आपनपद देतेहो ॥(८)॥ चौ० तारण तरण हरण सबदूषण ॥ तुलसिदास प्रभुत्रिभुवण भूषण ॥ अरुहे रामचन्द्र तारणतरण हो अरुसर्व दूषणके हरैयाहो तरण कही जो तुम्हारेजन हैं तिनको अनेक दूषणकरिकै संसारतेतारि देतेहो अरु तुमतो तारणकही संसारते पारहहु शुद्धसच्चिदानन्द विग्रहपरब्रह्म रहौ किन्तु तरणकही ज्ञानी जीवनमुक्त तिनकोतुमहीं तारतेहौ अपनीशरण करिकै नतुउनको सामर्थ्य नहीं है तुम्हारीमाया तरिवेको तहांप्रमाण (श्लोक एकः) दैवी ह्येषा गुणमयी मममाया दुरत्यया ॥ मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्तिते १ किन्तुपुनि उक्ति करिकै कहतेहैं तहां तीनिप्रकारके पुरुषहैं एकतारणहैं एकतरण तारणहैं तारण कही वेद शास्त्र पुराण बांचतेहैं वैराग्यज्ञान भक्ति निरूपण करतेहैं उनकेवचनको-ग्रहणकरिकै तरिजातेहैं अरुआपु सामान्य हैं अरुएकतरण हैं परमहंस आपुपरेहैं विशेष और किससे प्रयोजन नहीं है अरुतारण तरणकही सन्तजन आपुतरे हैं अरु अनेकजीवको तारते हैं इनतीनिउपरे तुम्हारी कृपाहै अरुतीनिउके अनेकदूषण करिकै १। तारण तरण तरण तारण तुमहोकौन श्री गोसाईं तुलसीदास कहतेहैं कि हे श्री रामचन्द्र तीनिहू लोकके भूषण तुमहो ते तुम्हारी स्तुति मैं कहांलगि करौं (९)

चौ० तुम जानहु कपि मोर स्वभाऊ ॥ भरत मोहिं कछु अन्तर काऊ ॥
तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे कपि तुम मोर स्वभाव जानते हो हमते भरतते कछु अन्तर नहीं
कबहूं तहां इहां तो हनुमानजी मनोहर नरशरीर धरे हैं। (चौपाई)। हनुमदादि सब
वानर बीरा ॥ धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥ यहां अब तो हनुमानजी के निज दिव्य ना-
कार नित्य शरीर है श्रीरामचन्द्रने कपि क्यों कहा तहां कं कही जलको इहां ककार
पर अनुस्वारको आगमन कीरलीन है असहोत है, तहां कं नाम जल सुधा पय-
वारि नीर इत्यादिक औरौ नाम हैं तहां कं कही जलको नाम सुधा है तहां हनुमानजी
श्री रामचन्द्रके भक्ति अहर्निश सुधारूप पी कही पीवते है ताते कपि कहा (७)
चौ० सुना चहौं प्रभु तिनकर लक्षण ॥ कृपासिन्धु गुणज्ञान विचक्षण ॥
हे प्रभु तिन साधुनके लक्षण आपके मुखते मैं सुना चाहता हों काहेते कि आप
गुण गण के विचक्षण कही प्रवीण हैं किन्तु सन्तनके अनन्त गुण गण
हैं तोहि विषे केवल आपही विचक्षण हो (८) चौ० शमदम नेम नीति न-
हि डोलहिं ॥ परुष वचन कबहुं नहि बोलहिं ॥ अरु शमदम नीति नह
चलै हैं शमको है चित्तबुद्धि मन अहंकार चित्तको विषय पदार्थ कों
निश्चय करना अरु मनको विषय पदार्थ में संकल्प विकल्प अरु अहंकारको-
विषय पदार्थको अपनपौ माने इनचारिउकी वृत्ति एक कीरके परमेश्वरके
तत्व विषे लगावे ताको शमकही अरु दमकही पांच प्रकार इंद्रिय श्रवण
त्वक् नयन जिह्वा नासिका तिनको विषय शब्द स्पर्श रूप रसगन्ध इनसे
ज्ञानय अरु पांच कर्म इंद्रिय मुख हाथ पग लिंग गुदा तिनको विषय
भक्षण व्यवहार गमन मैथुन विसर्ग कही मलकार त्याग इनदशौ इन्द्रियकी वि-

षयको जीते ताको दमकही अरुनेम जेहैं दयाअहिन्सा सत्यसोइ कही निरालस अरु इन्द्रिनके विषय वैराग ते तोराय लेइ ब्रह्मचर्य दया आर्जव-क्षमा धृति अल्पभोजन मौनअरु नीति चारि सामदाम दण्ड विभेद तहांमरे सन्तनमे चारिउ कैसे रहैं सामकही याचरामें समबुद्धि अरुशल कही नेरे-सम्बन्ध युक्तकर्म इन्द्रियनेमे मर्याद चलाहि तिनको विवेकरूप दण्डसो ध्वंसकरते हैं ताकोदण्डकही अरुविभेद कही मायाब्रह्म जीव अपतत्वमे में भेदरावतेहैं मायाको माया जानेहै जीवको जीव जानते हैं अरु ब्रह्मको ब्रह्म जानते हैं यह भेदे सन्तनमें विभेद कही विशेषहै तहासमक्ष नेम नीतिइत्यारिकमे अचलहै अरु परुषकही कठोर वचन कहुंनहीं बोलतेहैं (८)॥ चौ० झूठइलेना झूंठइ देना॥ ॥ झूंठइ भोजन झूंठचबेना॥ अरु वे सन्तकैसेहैं जिनके झूठइ लेनाहै अरु झूठइदेनाहै अरुझूठइ भोजनहै अरुझूठइ चबेनाहै तहां जगत विषे लेवदेव व्यवहार है सो उनको यहद्वैतो वृथा है काहेते कि भगवत सम्बन्धि व्यवहार उनको नहीं है तातेझूठहै अरुकेवल योगकर व्यवहार भोजन चर्वणादिक है सो भगवत अर्पण नहीहै ताते झूठहै किन्तु एकलेना स्वार्थिकहै अरु एक परमार्थिकहै स्वार्थिक कहो यह कहतेहैं कि हमवाहर जाते अथवा कोई-महाजनते इतलाकिलय लेतेहैं अरुइतना भोजन लेते हैं अरुइतना वस्त्र लेते हैं अरुपावते कबहुंनहीं ताते झूंठकहतेहैं अरुपरमार्थिक लेनो कहो यह कहते हैं कि हमपचास हजारनाम लेतेहैं नित्य अरुलेतेनहीं झूंठ कहते हैं अरुदेनो

में दुइभेद एकस्वार्थिक अरुएक परमार्थिक तहांपर कहतेहैं कि हमोरुद्र कमी है हमनेकिसीको धौ रुपयादिये हैं अरुकिसी को पांचसौ दिये हैं अरुकिसी को हजार दिये हैं अरुकिसीको लाखन दिये हैं सो सब झूठइ कहते हैं अरु एकेकहते हैं कि हमतो कितनेउ गउदान किहे हैं अरुकेते अन्न वस्त्र भोजन द्रव्य दिये हैं सोसब झूठइहैना कहते हैं अरुभोजन चर्वन मिश्रित चारहै भो-ज्य भक्ष्यलेह्य चोष्य भोज्य कहो भात पोहिती रोटीपूरी खोवयाका लड्डू-पेड़ा इत्यादिक मिठाई अरुभक्ष्यकही बुंदिया मेवा गिरीको इत्यादिकजो चाबनमें आवै अरुलेह्य कहो मोहन भोग इत्यादिक अरु जो पीवने में आवैचोष्य कहो उत्तम मृगनको मास किन्तु कोई तरकारी अरु मेवा इत्या-दिक अरु खटरस कहो खट्टा मिठ्ठा चरपरा बाकर कटु कषाय तहां खट्टा कहो निबुआ अचार इत्यादिक अरु मीठी कहीचीनी कन्द मिश्री इत्यादिकका शर्वत चरपराकही चटनी इत्यादिक बाकरकहो अंवरा हर्रा इत्यादिक के अचार कटुकही मिर्चा मिर्च सोंठ इत्यादिक कषायकही लोन इत्यादिक जो सब भोजन व्यञ्जनको भोषित करताहै तहां असाधु जो है ते यहकहते हैं कियह भोजन चर्वणादिक हमनित्य खाते हैं सो झूठइकहते हैं (८) ॥

दो०॥ सुनहु तात मायाकृत गुण अरु दोष अनेक ॥ ❀
❀ ॥ गुण यह उभय न देखिये देखिय सो अविवेक ॥ ❀

हेतात सुनहु मायाकृत विषे गुण अरुदोष अनेकहैं तहांजीवनविषे गुण यह सान्तिक सो नदेखिये अरु उभयजो अवगुण सो न देखिये तो सोई अविवेकहै किन्तु मायाकृत गुण देखिये जो देखिये तो अविवेक है

किन्तु गुण मायाकृत शुद्धसात्विक सो सन्तनकर कोहआयेहैं सो देखिये अरु माया कृत अविद्या के गुण जो खलनमें चलेहैं सो उभय नहोवापे देखिये तो अविवेकहै (१)॥ चौ०॥ सुनिगुण गान समाधि बिसारी॥ सादर सुनहिं परम अधिकारी॥० तहां सनकादिक श्री रामचन्द्रकर गुणगान सुनत सन्ते ब्रह्मलीला समाधिको बिसारिदेते हैं सादरते परमअधिकारी है कै सुनते हैं परम अधिकारी कहो षट्सम्पत्ति विवेक बैराग्य षट्शरणागत करिकै युक्त होइ षट्सम्पत्ति कहो शम दम उपराति तितीक्षा श्रद्धा समाधान शम कहो चतुष्ट अंतःकरण चित्तबुद्धि मन अहंकार चारिहु वृत्ति को एककरिकै आत्मा मे लगावै ताको शमकहो अरु दमकहो पांच ज्ञान इन्द्रिय अरु पांच कर्म इन्द्रिय किविषय तिनको जीतना पुनि उपराति कहो बाह्यान्तर की वृत्तिको एककरन ताको उपराति कहो पुनि तितीक्षा कहो शीत उष्ण सुख दुःख हर्षशोक मानापमान इत्यादिकनको सहिजाना उद्वेग न होइ ताको तितीक्षा कहो पुनि श्रद्धा कहो वेदवाक्य गुरुवाक्य निजअनुभव इनतीनिउमें प्रतीति करना ताको श्रद्धा कहो पुनि समाधान कहो चित्तको वृत्ति जीव ब्रह्मको एकता-विषे सहजानन्द समाधिबांधो रहो है जैसे ब्रह्मज्ञानी पुरुष को ब्रह्मज्ञान जागते में नहो डिगै हैं तैसे समाधान हैं पुनि विवेक बैराग्य विवेक कहो सारासार को ज्ञान अरु हंसइव बुद्धि आत्मा शुद्धकर ग्रहण अरु अनात्मा जगको त्याग- पुनि बैराग्य के चारि भेद हैं पुनि षट्शरणागत कहते हैं अनुकूलमें सङ्कल्प अरु प्रतिकूलमे त्याग पुनि आत्म समर्पण पुनि कार्पण्य पुनि-

गोप्तृत्व वर्णन पुनि रक्षामें विश्वास तहां जो श्रीरामचन्द्र के अनुकूल होइ
कर्मधर्म योग वैराग ज्ञानइत्यादिक तामें सङ्कल्पकरै कि मनवचनकर्मतें
मैं इहै करौंगो ताको अनुकूल कही पुनि गुणकर्म जे प्रभुके प्रतिकूल होहिं
ताको त्याग ताको प्रतिकूल कही पुनि मनवचन कर्मधर्म जीवात्मा श्रीरामार्पण
करै अरु इनते अपनपौ दूरिकरै ताको आत्मानिक्षेप कही पुनि कार्पण्य कही
श्री रामचन्द्र के प्राप्ति हेतु जेते साधन वेद कहते हैं सो सब करै अरु श्रीराम-
चन्द्रते यह प्रार्थना करै कि हे श्री रामचन्द्र मोसे कछु नहीं बनै है मैं बड़ो
अपराधी हौं ऐसेही मनवचन कर्मते सदा दीन रहै कार्पण्य कही पुनि
गोप्तृत्व सम्बन्ध है तहां श्री रामचन्द्र ऐसे समर्थ हैं कि जे पदार्थ वेदमें निषेध
हैं तिनको श्री रामचन्द्र सर्वोपरि कीदीन है तहां वेदसे याहि विधि क-
ह्योहै कि काठको नावहोइ अरु सुपात्र को सखा मंत्री करिये अरु नि-
नको वाह्यांतर शुद्धहोइ ते मोक्षके अधिकारी हैं तहां श्रीरामचन्द्रने पत्थर
ते सेतु बांधा है जे सहजही डूबिजाते हैं अरु कोल भिल्ल वानर ऋक्षनको
सखा मंत्री कीनहै जे ऐसे कुबुद्धी चंचल हैं अरु अनेक राक्षसनको पास-
पद दीन्हे हैं जिनकर पापमय कर्तव्य शरीर है ते श्री रामचन्द्र हमऐसे
पापिनको प्रतिपालन करैंगे सो वर्णन करै पुनि रक्षामे विश्वास जिन
श्री रामचन्द्र ने आर्हतगनकी रक्षाकीनहै पुनि दुःशासनते द्रौपदी-
को रक्षाकीनहै पुनि पापते अहल्या की रक्षाकीनहै पुनि वालिते सु-
ग्रीवको रक्षा कीनहै पुनि रावणते विभीषणको रक्षाकीनहै ते श्री
रामचन्द्र संसारसागरते हमारो रक्षा अवश्य करैंगे यह ध्रुव विश्वास
करै यह षट्शरणागत कही तहां षट्सम्पत्ति अरु विवेक वैराग्य

अरु षट्शरणागत इनसबकोरिकै युक्तहोइ ताको रामचरित रसके परम-
अधिकारीकहो सो सनकादिकसब करिकेयुक्तहैं ताते सनकादिक रामचरित
रसके परमअधिकारी हैंकै अति आदरते ब्रह्मलीन समाधिको विसारिकै
सुनतेहैं ॥(८) चौ०॥ एकबार रघुनाथ बोलाये ॥ गुरुद्विज पुर-
बासी सब आये ॥ हे पार्वती एकबार श्री रामचन्द्र सभा विषे बैठे
हैं अरु पार्षदनको आज्ञा भई कि समस्तपुरबासी हमारे पासआ-
वहिं तहां यह बात सबहिन सुना सुनिकै प्रथम ब्राह्मणन की
मण्डली संयुक्त बशिष्ठन आवते भये पुनि सरयू के तीरतीर जो मुनि
संन्यासी रहते हैं ते सम्पूर्ण पुरबासी चारिउबर्ण आवतेभये दि-
व्यदृष्टि से देखिकै सुनिकै सनकादिक नारद वाल्मीकि अगस्त्य
इत्यादिक महांमहांमुनि तेहिक्षण आवतेभये यह जानिकै कि
श्री रघुनाथजीके मुखतेआजु कुछुसुनिहैंगे॥(९) चौ०॥ सोई
सेवक प्रीतम मम सोई ॥ मम अनुशासन मानै जोई ॥ श्री
तहां सोई तो मोर प्रियतम सेवक है अरु मैं त्यहिकर प्रियतम हौं
अनुशासनकही जो मोरिआज्ञामानै तहां एकै सेवक है अरु
एक प्रियतम सेवकहै तहांसर्वजीव श्री रामचन्द्रकर सेवक हैं-
अरु जो रामाज्ञामानै सो प्रियतम सेवकहै तहांतवतौ श्री रामचन्द्र
साक्षात आज्ञा देतरहेहैं अरुजोकोई श्री रामचन्द्रकर प्रियतम सेवक
है चाहै तो कौनी रीतिसे श्री रामचन्द्रको आज्ञा जानै

तहां दृष्टान्त करिके जनावते हैं जो कोई सरदार मालिक है सो अपनो भाई पुत्र सेवक अरु चाकर हैं अरु तिसको अपने हाथ पत्रिका लिखै किन्तु लिखाइदेइ औ वोहि पत्रिका की रीति ते सब करहिं तो प्रियतम सब हैं अरु जो पत्रिका की रीति नहीं करै तो भाई पुत्र सेवक चाकर तो है पर प्रियतम नहीं है दण्ड देवे योग्य है अब दृष्टान्त देते हैं तैसे वेदशास्त्र पुराण इत्यादिक विषे जहां श्री भगवान उवाच है सो शास्त्र स्वहस्त पत्रिका जानव अरु महामुनिन को वाक्य ग्रन्थ हैं सो रामचन्द्र की आज्ञा ते मुसाहिबन को लिखी पत्रिका जानव तहां इनइ रीति की पत्रिका एक ही जानव तहां चारि वर्ण अरु चारि आश्रम अरु जे विरक्त हैं तिन सबन को जैसी जैसी वेदशास्त्र की आज्ञा है तेहि रीति चलते श्री रामचन्द्र के प्रियतम सेवक हैं अरु जे वेदशास्त्र की आज्ञा में नहीं चलते हैं तिनको श्री रामाज्ञा ते यमराज दण्ड देते हैं काहे ते वेदशास्त्र पुराण श्री रामचन्द्र की पत्रिका हैं अरु एक आज्ञा श्री रामचन्द्र की काल है अरु तहां ज्योंहि काल में हानि लाभ दुःख सुख इत्यादिक होते हैं तहां विवेकी पुरुष जे हैं ज्योंहि काल में जौन होत है त्योंहि में हर्ष शोक नहीं ल्यावते हैं श्री रामरजाय में मानते हैं ते श्री रामचन्द्र के प्रियतम सेवक हैं ॥ (५) ॥ चौ० ॥ बड़ भाग्य मानुष तनु पावा ॥ सुरदुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा ॥ ॥ अक्षरार्थ ॥

॥दो०॥ सो परंतदुख पावै शिरधुनि धुनि पछिताप॥
॥ कालहि कर्महि ईश्वरहिं॥ मिथ्या दोष लगाय॥

तें प्राणी वर्तमान में तो नहीं समुझिके करते हैं परन्तु परिणाम कहीं अन्तावेसे
विषम दुःख पावी हैं अरु माथापीटिपीटि पछिताहैं अरु कालकर्म
ईश्वरको वृथा दोष लगावते हैं काहेते कि मनुष्यतनु कालकर्म ईश्वर को
सहज में जानते हैं तहा काल किसको कहै कुघरी सुघरी कुदिन सुदिन
कुमास सुमास कुतिथि सुतिथि कुयोग सुयोग कुलग्न इत्यादिक काल
विषे वर्तमान होते हैं सो शास्त्रद्वारा हैकै सबमनुष्य जानते हैं जिनको
शास्त्रकर ज्ञान नहीं हैं सो भी ब्राह्मणन के द्वारा हैकै जानते हैं
काहेते जबकोई विवाह यात्रा सुदिन इत्यादिकके काम पड़ते हैं तब ब्राह्मणनते
पूछिलेते हैं अरु केते काम बिना पूछे कुयोग में करते हैं ताहीते विघ्न होते हैं तहां
कालतो शास्त्र के द्वारा हैकै नीक औ बिकार जनाइ देते हैं ताते सब जानते भी हैं
तहां शास्त्रकी आज्ञाको उलंघनकरिकै कार्यकरते हैं ताते दुःख पावते हैं
अपनी मूर्खत्वते तात कालको वृथा दोष देते हैं अरु ऐसेही कर्मकी गति शास्त्रके
द्वारा हैकै सुकर्म कुकर्म जानते हैं अरु जानिकै कुकर्म करते हैं जाते दुःखको
प्राप्त होते हैं तहां एककोई प्राणी सुखी है अरु एककोई दुखी है अरु दूनी को कोई
पूछै कि तुम क्यों दुखी सुखी हो तहां ये कहते हैं कि हमारे पूर्वजन्मके ऐसेई कर्म हैं
ऐसेही नीच ऊंच सब कहते हैं ताते नीक विकार सब कर्म जानते हैं अरु विकार
करते हैं ताते कर्मको हरामजादी अपनीसे वृथा दोष देते हैं अरु शास्त्र की
रीतिसे ईश्वरको भी जानते हैं ऊंचनीच सब जानते हैं कैसे जानिये जो सुकाल

होई तौ कहेहैं कि ईश्वरभलाकौन है अरुजोकाल परे तौ ईश्वरको गैल्ला-
कोते हैं अरुजोकोईके घरमें कोई प्राणी मृत्युवश हैकै तौ कहते हैं कि
ईश्वरमारि डार्यो है तहाँ देखियेतौ यहकहते हैं कि ईश्वर मारनहार जियावनहार
ईश्वर ऐसो समर्थ हैं तहाँ वेही ईश्वरको आठपहर में एकघड़ीनहीं भजन
करतेहैं अरुआठोंपहर जागतसोवत विषय मेंलगे रहतेहैं तहाँ अनेक दुःख
को प्राप्त होतेहैं तहाँईश्वरको मिथ्या दोषदेतेहैं तहाँ जोकोईकहै कि जोकछु विकारजो
है सो सवकालकर्म ईश्वरकौरहै सो सत्यहै परजहाँवेद ईश्वर की बाणी हैं त्योंहि
हा हैकै ईश्वाने सबमनुष्यतनको जनायदियो है ताते ईश्वरको मिथ्या
दोषदेतेहैं ॥(१)॥ चौ० यहितनुकर फल विषय न भाई ॥ स्वर्गौस्व-
ल्प अन्त दुखदाई ॥ तहाँ श्रीरामचन्द्रकहेहैं कि हे समस्तसभा सुनहु मनु-
ष्यतनुधरेकर यहफलहै कि विषयमें न आसक्त होइ कहाँतक विषयका त्याग
मनुष्य तनुमें चाहिये स्वर्गादिकको विषय अभावहैं त्यागहै काहेते कि स्वर्गौ
स्वल्पहै अरुअन्त दुखदाई है तहाँयह शास्त्रन में कहा है किजवयहजीव
जग इत्यादिकर्मकरिकै स्वर्गको जातहै तवदेवी जे हैं ते आगे हैकै आते-
आदर लेतीहैं अरुताहीजीवको देखनेके वर्ष जितना स्वर्गमें रहिवे
को शास्त्रकहतहै तेफूलकी माला देवी पहिराइ देती है अरुत्योंह पुरुषसों
कहिदेती है कि जवएकफूल यहिमाला को सूखितवएकवर्ष आयुर्वल
तुम्हारोक्षीण होयगो ऐसेही जवसव माला सूखिजाइगो तव हमतुमको
स्वर्गतेगिराइ देहिंगी ताते रातिदिनवाहपुरुषको गिरिपरिवेकी चिन्तामें

बीततहै तातेस्वर्गको सुखस्वल्पहै जैसेकोई काहूबंदेआदमीको अन्यायन सुनाइदइ कि तुमछठयें महीनामें मारहुगे तबवाको चिन्ताउत्पन्न होतीहै छःमहीना वाको गनतबीततेहैं तहांविषयको सुखवाको कहीहै तातेस्वर्गको विषयअल्प कहीहै जातेअन्तदुःखदायीहै (प्रमाणं भगवद्गीतायां श्लोकः) ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति॥ एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते॥१॥ चौ० नरतनु पाइ विषय मन देहीं॥ पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं॥ नरतनु पाइके जोविषयमें आसक्त होत हैं ते मनकर्मबचनते बड़ी अपनी हानिकरते हैं कैसे सुधाबदलिके विषलेतेहैं वेमूर्ख हैं तहां सुधाजो मेरीभक्ति ताकोत्यागिके विषयनो विषरूप है ताकोग्रहणकरतेहैं तहां मेरीभक्तिकरिके परमपदकोजातेहैं अरुदेवताइन्द्रादिक अमृतपानकियेहैं परकालपाइके च्युतह्वैजातेहैं तातेमेरीभक्ति अमृतहूते अधिकहै अरुविषय विषहूतेअधिकहै काहेते विष एकबारमारतेहै अरुविषयचौरासी लक्षबारमारतेहै जेमेरीभक्तिकरतेहैं अरुपक्व नहींभये अपक्वहैं किन्तुयोगभ्रष्ट भयेहैं अरुतेही समयमें उनकोशरीरछूटो ताहूपर एकदुइ जन्मान्तरभेर करिकै मोक्षहोतेहैं (तहांप्रमाणहै श्रीभागवते)= त्यक्त्वा स्वधर्मं चरणाम्बुजं हरेर्भजन्नपक्वोऽथ पतेत्ततो यदि॥ यत्र क्व वाभद्रमभूदमुष्य किं को वार्थ आप्तोऽभजतां स्वधर्मतः॥१॥ (भगवद्गीतायाम्) प्राप्य पुण्यकृतांल्लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः॥ शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥२॥ ~~चौ० नरतनु पाइ विषय मन देहीं॥ पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं॥~~
चौ० ताहि कबहु भल कहै न कोई॥ गुंजा गहै परसमणि खोई॥ तहां देखिये तो त्याहि प्राणी को कोई नहीं भलकहै जोपारसमणिको डारिके

गुञ्जा को ग्रहण करते हैं तहां पारस को अरु भक्ति को दृष्टान्त दीन है अरु गुञ्जा को विषय को दृष्टान्त दीन है तहां जैसे पारस अखण्ड धन है अरु हाथी घोड़े रथ द्रव्य अन्न वस्त्र इत्यादिक सबको अखण्ड कारण है तैसे मेरी भक्ति ज्ञान वैराग योग शील सन्तोष दया ध्यान समाधि मोक्ष सबके अखण्ड कारण हैं तहां मनुष्य देह तनु को प्राप्त है अरु त्याहि भक्ति को डारि कहो क्योंकि गुञ्जारूप विषय को ग्रहण करते हैं यह बड़ी हानि है अरु गुञ्जा कहो घुंघुंची कैसी है आधी श्याम है आधी लालि है अरु काली लालि दोनों में कछु मालन नहीं है तहां विषय में जो शोक है अरु दुःख है सो काला रंग है अरु सुख हर्ष जो है सो लाल रंग है तहां यह गुञ्जारूप विषय में सुख दुःख हर्ष शोक अहीर्निश बना रहत है सोई काला लाल है ॥३॥ चौ० आकर चारि लक्ष चौरासी ॥ योनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥ हे भरद्वाज श्री रामचन्द्र कहते हैं हे पुरवासिहु मुनीश्वरहु सुनहु जो पारसरूप मोरि भक्ति है ताको त्यागि कै अरु गुञ्जारूप को विषय ग्रहण करते हैं तहां जब उनको शरीर छूये तब आकर चारि खानि पुनि चौरासी लक्ष योनि त्याहि मे भ्रमते हैं परजीव सदा अविनासी है अरु एक सो है तहां चारि खानि कहते हैं जरायुज उद्भिज अण्डज ऊष्मज जरायुज कहो जो माता के उदर ते भोरि बांधो उत्पन्न होते हैं मनुष्य पशु इत्यादिक पुनि उद्भिज कहो तृण वृक्ष इत्यादिक पुनि अण्डज कहो जो अण्डा फोरि कै उत्पन्न होते हैं पुनि ऊष्मज कहो मसा डंसादिक तहां

मनुष्यतनु तो चौरखानिमें है औ चौरासीयोनिमें भिन्नहै तहांमनुष्य तनुपाइके
श्रीरामचन्द्रके भजनमें चूकिगयो तबओही जीवको चौरासी होतीहै अरु
चौरासी कहो बीसलाख स्थावरकी योनिमें भ्रमतेहै तृणतरु इत्यादिक-
पुनि नवलाखजलके जीवहैंवै भ्रमतेहै कृमिमीन इत्यादिक पुनि ग्यारह-
लक्ष कूर्मयोनिमें भ्रमतेहैं कच्छुआ अरु मेढकसर्पमूसा चींटीदीमकइत्या-
दिक जेजीव भूमिखोदिके रहतेहै पुनि दशलक्ष नभचर विहंग इत्यादिक
पुनितीसलाख घोड़ाबैलसूकर कूकर इत्यादिकमें भ्रमतेहैं पुनि चारिलक्ष
वानरकी योनिमें भ्रमतेहैं तबमनुष्यतनु पावतेहै सो मनुष्यतनु पाइकेपुनि
विषयमें लाग्यो तबपुनिवोही चौरासीमें जाइपरतेहैं तहांप्रमाणहै ॐ
(अन्यच्च श्लोक द्वयम्) स्थावरंविंशतेर्लक्षं जलजंनवलक्षकम्॥ कूर्मश्च-
रुद्रलक्षं च दशलक्षंचपक्षिणः १ त्रिंशल्लक्षं पशूनांच चतुर्लक्षंतु वानरः॥
ततो मनुष्यतां प्राप्यततः कर्माणि साधयेत् २॥४॥ चौ० फिरत सदामाया
के प्रेरे॥ कालकर्म स्वभावगुण घेरे॥ ते प्राणी चौरासी में मायाप्रेरित
फिराकरतेहै कालकर्मस्वभावगुण की प्रेरणाते काहेते नकोईकालमें भजन
कीन्ह्योहै अरु नकोईकर्मकरिके भजनकियोहै अरुनस्वभावकरिके भजनकियो
हैं अरु नकोईगुणन करिके भजनकीन्ह्योहै कालको भजनकहो प्रातःकाल
मानसीमें रघुनाथजूको चारिदण्डसोवतरहे किन्तुदुइदण्ड रातिरहे जगावै
अपनी भावनासंयुक्त जसकछु अगस्त्यसंहिता इत्यादिकमें कह्योहै सो
विधिकरै पुनि चारिपांच दण्डदिनचढ़े स्नानको विधिकरै पुनिडेढ़पहरदिन

चलै किन्तु इशगहरमें हड़दण्ड दिनकमारहे तब ज्यवनारिकोबिधिकरै त्योंहिकेआगे
स्वउनारिको बिधिकरै किन्तु बाटिकागवन को बिधिकरै आगेनृत्यगान
को बिधिकरै ऐसे तिनपहर डेढपहर रात्रबीते बिपारीस्वउनार कोबिधिकरै
ऐसेहो जानसोंध भजनकरै तबकालदण्डसे रैबोबिजाय. किन्तु ऐसेही
शालग्रामबिषे कर्मकरिके सम्पूर्णबिधिकरै तबकर्मदण्डसेबांचिजाइ किन्तु
आपने स्वभावहीसे रामनाम सदाउच्चारणकरै तौ स्वभावदण्डसे बचिजाय
किन्तु सात्विक गुणकैसेहै, श्रीरामचन्द्रको गुणकहै औश्रसुनै पुनिराज सुगण लीलोको औ
रघुनाथजीके उत्सवमें इत्यादिककर्मकरिके प्रेमकरै पुनितामसगुणकोकैसे
अहंकार निवृत्तबैरागकरै बिषयकरत्यागकरै तबतामसगुणके दण्डसे बचैजाय
जे ऐसे भजननहीं करतेहैं तेकाल कर्म स्वभावगुणन के वशहोके चौरासी में
फिरतेहैं ॥५॥ चौ० कबहुंक करि करुणा नरदेही ॥ देइ ईश बिनुहेतु
सनेही ॥ तहां चौरासी भ्रमतसन्ते अरुकोईयोगते ईशजोपरमेश्वर है
सोकरुणाकरिके बीचमेंनरतनुदेतभयो कोहेतपइजोव पर परमेश्वर बिना
हेतुसनेही हैं ॥६॥ चौ नरतनु भववारिधि कहंबेरा ॥ सम्मुख मरुत
अनुग्रह मेरा ॥ तहां ईशकहैं कृपाकरिके नरतनुदीन है सो नरतनुकैसो है
भवजो संसार समुद्र त्यहिकेतारिबेकोबेरा है इहां बेराकहीजहाजको अरु जहाज
बिनापवननहीं चलैहै तहां जबपहजोव मेरे सम्मुखभयो शरणागतमे तबमै
कृपाकरत सोई सम्मुख पवन जैसे पूर्वजहाज चलै तबपाछिवां पवन
चलै अरुपश्चिमको चलै तबपुरवाईबहै सोई मेरीकृपा है ॥७॥ चौ०

कर्णधार सद्गुरु दृढनावा ॥ दुर्लभसाज सुलभकरि पावा ॥ तहां जहाज अरु पवन अरु कर्णधार तीनिहुंको इकतां होइ तब समुद्रपार होतहै पर जहाज दृढ कहो गाढो होइ तैसेही नरतनु जहाज है अरु जीव जहाजको चढैया है अरु रामकृपा पवन है अरु सद्गुरु कर्णधार है पासद्गुरु के वचनको शिष्य दृढ करिकै ग्रहण करै तब संसार समुद्रते यह जीव पार है कै परमपदको प्राप्त होतेहैं ॥ दोहा॰ जो न तरै भवसागर नरसमाज असपाइ ॥ सो कृत निन्दक मन्दमति आतमहनगति जाइ ॥ तहां श्रीरामचन्द्र कहते हैं जे नर अस संजाम पाइकै कि नरतनु जहाज अरु मोरि कृपा पवन है अरु सद्गुरु कर्णधार है भवसागर नहीं तरते है ते कृतनिन्दक हैं आत्महन गतिको प्राप्त होते हैं तहां कृतनिन्दक कहो जो काहू ते नीकि करणी करै अरु वह प्राणी न माने सो कृत निन्दक है तहां देखिये तो मैं कृपा करिकै नरतनु दीनहै सो मोको नहीं मानते हैं ऐसे कृतनिन्दक है यह गोसाईं भाषाकीन है श्रीमद्रामायण मानस श्रीमहादेवकृत ताहीको प्रमाण श्रीवेदव्यासने श्रीभागवतमे कहा है ॥

(श्लोकः) गुरुर्न स स्यात्स्वजनो न स स्यात्पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात् ॥ दैवं न तत्स्यान्न पतिश्च स स्यान्न मोचयेद्यः समुपेतमृत्युम् १ (पुनः श्रीवाल्मीकीये श्रीलक्ष्मणवाक्यं सुग्रीवं प्रति) गोघ्ने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा ॥ निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः १ ते कृतनिन्दक आत्महनगतिको प्राप्त होते हैं पुनि आत्महनगति काको कही जे अपनी आत्माको आपहि ते

इनतेहैं क्योंहैं कि अपनो आत्मा अपनो मित्रहै अरु अपनो आत्मै आपनो अरिहै तहां अपनो आत्मासे मित्रता नहीं करतेहैं मित्रता कहीं आत्मज्ञान, कीकै हमको नहीं भजतेहैं ते आत्महनगति कहो महा घोर नरकको प्राप्त होतेहैं अरु तहां बहुतकाल रहतेहैं पुनि नरकते निकसिकै चौरासी को जातेहैं यह आत्महनगति को फलहै तहां प्रमाण है

(भगवद्गीतायांश्लोकः) उद्धरेदात्मनात्मा नमात्मा नमवसादयेत ॥ आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः १(१) ॥ चौ॰ पुण्य एक जग महँ नहिं दूजा ॥ मन क्रम बचन विप्र कर पूजा ॥ तहां सब पुण्य ते एक पुण्य जगत विषे उत्तमहै दूजो नहीं है मन कर्म बचन ते ब्राह्मण के पदको पूजो करै (७) ॥ चौ॰ सानुकूल तेहि पर मुनिदेवा ॥ जो तजि कपट करै द्विज सेवा ॥ तब त्यहि प्राणी के ऊपर मुनि अरु देवता कहो समस्त मुनि ब्राह्मण सानुकूल होतेहैं ताते सजातीय मानिकै प्रसन्न होतेहैं अपनो भक्त आशीर्वाद देतेहैं कि तुमको उत्तम संतन की संगति प्राप्त होइ अरु जब ब्राह्मण हवन करतेहैं तब इन्द्रो दिक्पाल इत्यादिक देवता प्रसन्न होतेहैं प्रसन्न ह्वैकै जो बाह्यान्तर इन्द्रियनपर देवता हैं भक्तिके विघ्नकर्ता ते

शान्त ह्वै जाते हैं अरु आशीर्वाद देते हैं कि तुमको उत्तम सत्संग होइ जब कपट तजिकै विप्रके चरणन की पूजा करै तब सत्संग तें मिलै तब मेरी भक्ति प्राप्त होइ (८) चौ० सरल स्वभाव न मन कुटिलाई॥ यथालाभ सन्तोष सदाई॥ सरल तौ स्वभाव होइ अरु मनको अरु कर्म की कुटिलाई कर त्याग होइ अरु यथालाभ तथा सन्तोष होइ सरल स्वभाव कहो दम्भ पाखण्ड कपट छल छिद्र ईर्षा पीड़ इतें रहित होइ अरु काहू जीवन कर निरादर न होइ ताको सरल स्व-भाव कहो अरु कामक्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य अरु लोकमर्याद इन सातों संयुक्त जो मनकी कुटिलता कही ताते इन सातों कर त्याग करै तौ मनकी कुटिलता जाइ अरु अखण्ड एकान्त आसन दृढ़ करिके रामचन्द्र कर ह्वै कै स्मरण करै जो कछु अनायास में अन्न वस्त्र आवै ताते शरीर कर निर्वाह करै ताको यथालाभ तथा संतोष कहो किन्तु यही रीति से जगत में विचरै एक रात्रि से सिवा-य आगे कहूं टिकै नहीं (२)॥

चौ० बैर न बिग्रह आशा न त्रासा॥ सुखमय ताहि सदा सब आसा॥

नतो किसूते बैररखतेहैं न किससे बिग्रह करतेहैं अरु न किसूको आशारखतेहैं तहांबैरकही जो मनमें धरेहै अरु बिग्रह कही तुरंत लोरपरेहैं अरुसब आशाकही दशोंदिशा तिनको सुखमयहै किन्तु दशोंदिशा कही पञ्च ज्ञान इन्द्रिय अरु पञ्च कर्म इन्द्रिय पे दशों तिनको सुखमयहै॥ चौ० प्रीति सदा सज्जन संसर्गा॥ तृणसम बिषय स्वर्ग अपवर्गा॥

अरुसदा मेरे सन्तनके प्रीति इहै संसर्ग है जिनके संसर्ग कही पूर्वसंस्कार अरु प्रारब्ध क्रियमाण तहां संस्कार कही जैसे किसान अपने घरमें अन्न संचित कौरिके धरते हैं पुनि प्रारब्ध कही उहै अन्नकाटि काटि खातेहैं पुनिकृयमाण कही आगेअन्न उत्पन्नकौरिबेको यत्नकरतेहैं तैसे उनके संचित प्रारब्ध कृयमाण प्रीति संयुक्त मेरे सन्तनको संगतिमें है अरु सातहू स्वर्गको बिषय अरु अपवर्ग कही मोक्षको बिषयको तृण को समान जानतेहैं ऐसे निसकामहैं (८)॥ ७४

चौ० भक्तिपक्ष हठ नहिं शठताई ॥ दुष्टतर्क सब दूरि बहाई ॥ अरु भक्तिके पक्षविषे जो हठकरै तौ ताहिको शठ नहीं कहो काहेते कि जो भक्तिके पक्षमें हठनकरै तौ उपासनामें दोषआवैहै ताते उपासना में हठ करिकै पक्षकियाचाहो पर दुष्टतर्कणा सम्पूर्ण दूरिकरौकै किन्तु भक्तिपक्षविषे नतौ हठचाहो अरु न शठताई चाहो काहेते हठता शठताई कियेते मन को उद्वेग होतहै तहांजोहिके संगहठता शठताई करप्रयोजनहोवै त्योहिको संगति नकीरिये अपने स्वजातीय उपासक को संगति कीरिये ॥ ०दोहा ॥

मम गुण ग्राम सुनाम रत गतममता मदमोह ॥ ताकर सुख सुइ जानै परानन्द सन्दोह ॥ अरु मेरे गुणानुवाद में अरु मेरे नाममें रतहै पर ममतामदमोह इत्यादिक गतकहो छूटि गयेहैं त्यागिदीहीनेहै काहेते भजनके बाधकहैं तहां ममताकहो मातुपितु सुत वित्त कलत्र भाई कुटुम्ब जाति इत्यादिक मे अपनपौ मानिकै प्रीतिकरना अरु मद कही आठ जाति कुलरूप यौवन धन विद्या ज्ञान ध्यान इत्यादिक अष्टमद भक्तिके विरोधी हैं तहा प्रमाणहै (ग्रन्थश्लोकौ द्वौ) जातिविद्यामहत्त्वञ्च रूपयौवनमेव च ॥ यत्नेन परिवर्जनीयाश्चैते भक्तिकंटकाः १ पतंगमातंगकुरंगभृंगमीनाहताः पञ्चभिरेव पञ्च ॥ एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च २ अनि मोह कहो ज्यों पदार्थमें ममत्वहै अरु त्योहिको कोई योगते विक्षेप करउ अरु त्योहिकी कल्पना मिलिवे की सो मोह ताते इनसबनको त्यागिकै मेरे गुणग्राम नाममें अहर्निश रहत हैं

हे भाइहु यहरहस्य अरु सुख सोई जानेगो जौनसुख परमानन्दहै परमानन्द २
सन्देहकहो सम्बृह ऐसे सुखको जोईजानतेहैं जे यहि रहस्य मेंचले (१)॥

दोहा० उमा अवधवासी नर नारी कृतारथरूप ॥ ब्रह्म सच्चिदा नन्द
धन रघुनायक जहभूप ॥ हेउमावासो नरनारि तौ सम्पूर्ण कृतार्थ रूपहीहैं काहे
ते ब्रह्मसच्चिदानन्द घनब्रह्म श्रीरामचन्द्र भूपहैं तहां पे सब नित्य विभूति के
पार्षद हैं श्रीरामचन्द्रको लीलाहेतु आयेहैं पुनि श्री रामचन्द्र के सङ्गही
परविभूतिको जाहिंगे तहां श्रीरामचन्द्रको एकनित्य ऐश्वर्य लीला विभूति
है जाको त्रिपादभूतिकहो सो प्राकृति मण्डलके परेहै (प्रमाण श्रुतिः)
त्रिपादूर्ध्वउदैतपुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः॥ त्रिपाद विभूतिकवोनहै सान्धनी
सन्दीपिनी आह्लादिनी येतीनिपरविभूतिहैं परमानन्दरूपहीहैं अरुएकपाद
विभूतिमें अनेक ब्रह्माण्डहैं तहांएक पादमे दुइभेदहैं एकअविद्या एकवि-
द्या तहांअविद्या प्रमाणमें सबजीवहैं अरुविद्यामें मुमुक्ष अरु जीवन-
मुक्त जीवहैं तहांसर्वजीवनके कल्याणहेतु श्रीरामचन्द्र अपनो त्रिपाद
विभूति संयुक्त परमदिव्यसो प्राकृति मण्डल ब्रह्माण्डको सबविषय
नैमित्य माधुर्यलीला परमदिव्य अखण्डकरतेहैं पुनिवहै नित्य ऐश्वर्य
लीला दिव्य अपारस्थानमे आवान्तर कौर्के प्रजनकद उपदेशके द्वारा
ह्वैके सहित प्रजनपरधामको गवन कियाचाहतेहैं यहीरीति से का-

हेत श्रीअयोध्यावासी सब नित्यजीवन मुक्तहैं परमेश्वरकी आज्ञानुकूल परमेश्वर
के सङ्गही आवतेहैं अरुसङ्गही जातेहैं तहांजो कैलासमें पार्वतीजीने महादेव
से प्रश्नकीनहै कि (प्रजासहित रघुवंशमणि किमि गवने निजधाम) ताहि के उत्तर
महादेव याहिप्रसंगमे चतुर्दश तरंगमे लक्षणा करिकै प्रजा श्रीरामचन्द्रको परमधा-
म गमन पूर्णकरेंगे हे पार्वती श्रीअयोध्यावासिन को श्री रामरूपही निश्चयकै जा-
नहु तहांप्रमाण (पाद्मे श्लोक एक: श्रीरामचन्द्र वाक्यं विभीषण सुग्रीवादीन्प्रति)
अयोध्याचपरं ब्रह्मसरयू सगुणः पुमान् ॥ तन्निवासी जगन्नाथः सत्यमेतद् ब्रवीमि ते
(१) ॥ चौ० अति आदर रघुनायक कीन्हा ॥ पदपखारि पादो-
दक लीन्हा ॥ तहांरघुनाथजीने वशिष्ठको अति आदरकीन
अतिआदर करिके चरणधोइकै पादोदकलीनहैं तहांजो कोई कहै कि
वशिष्ठ जी तो श्री रामचन्द्रको परमेश्वर जानतेहैं तिन अपनो चरण
क्यों धोवने दिया तहांपै श्रीरामचन्द्रके आत्मसमर्पणीय भक्तहै वे स्वामी
की रुचि म्वाफ़िक चलतेहैं जामे स्वामीप्रसन्न होहिं सोई करतेहैं
अपने धर्मकर्मको स्वर्गनर्कको व मोक्षको विचार नहींकरते हैं अरु
श्री सीता राम के आज्ञानुकूल रहतेहै (२) ॥ चौ० देखि देखि आचरण
तुम्हारा ॥ होत मोह मम हृदय अपारा ॥ हे श्री रामचन्द्र तुम परमेश्वर
परब्रह्महो यहनरकी ऐसी लीला देखिदेखि हमको अपार मोह
होतहै (४) ॥ चौ० ॥ महिमा अमित बेद नहिजाना ॥ मैं-
केहि भांति कहौं भगवाना ॥ हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी महिमा

व माया आमित है बेदनहिंजानिसकै है हे भगवन् मैं क्यहि प्रकार ते कौं श्री
भगवान शब्दको अर्थ करतेहैं जिन श्रीरामचन्द्र कर नाममोहिं रते सम्पूर्ण अज्ञान
नाश ह्वैजातेहैं काहेते परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर सर्वत्रपूर्ण भगवानहैं भगवान्
क्यों कहा ताको अर्थ भगवान कही षट्भगयुक्त ऐश्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष
तिनको स्वरूप कहतेहैं ऐश्वर्य जाको अनेक ब्रह्माण्ड हैं पुनि धर्म काको कही
सत्यवाक्य सर्वदाता निष्कपट शुद्धकर्म ताको धर्म कही पुनि यश काको कहीं
उदारगुणरूप जाको कोई जीतिनसकै शीलनिधि अत्यन्तसुन्दर जाको देखिकै चराचर
मोहैं ताको यश कही पुनि श्री काको कही तेज जाके तेजके आगे सूर्यचन्द्र अग्नि
इत्यादिकको छबिजाहि श्री कही शोभा स्वरूपकी कैं सर्वगुणकी कैं शोभित है
श्री कही प्रतापजाको सबडरें जाकी आज्ञामें पृथ्वी अप तेज वायु आकाश तीनिहुं
गुण देवदानव मनुष्य इत्यादिक चराचर वर्तमान हैं औ कही लक्ष्मी जी ने
जाकी आज्ञानुकूल ह्वैकै कोटिन ब्रह्माण्ड मे सुखभोग भोग दियो है
ताको श्री कही पुनि वैराग्य काको कही शब्दस्पर्श रूपरस गंध
चित्त बुद्धि मनअहंकार सात्विक राजस तामस ह्वैकै इनसबन को
अपने बशकीये हैं अहरनके परे हैं ताको वैराग्य कही पुनि मोक्ष
काको कही सालोक्य भगवानके लोकमें बसै सामीप्य समानिकट
रहै सारूप्य जैसो भगवान को रूप है तैसो रूप होइ सायुज्य अ-
संकार है रहै अथवा कोई के मनमें जैसे सूर्यको तेज परकूटे
सूर्यहि में लीन होइ ताको सायुज्य कही पुनि सार्ष्टि मुक्ति ।

सामान्य ऐश्वर्य अपने समान ऐश्वर्य देते हैं ये पांच मुक्ति हैं तामें ऐ-
श्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष येते षट्भग जामें सम्पूर्ण होहिं अरु
अपने जनको दाता ताको पूर्ण भगवान् कहो जो स्वरूप षट्भग में कछु
कम होइ ताको अंश कला विभूति कही देखिये तौ षट्भग श्रीरामचन्द्र के
वाम चरण में षट्कोण अंक हैं ताको षट्भाग शास्त्र कहते हैं ताते
श्री रामचन्द्र पूर्ण स्वयं भगवान हैं (श्रीमन्महारामायणे) ऐश्वर्येण च
धर्मेण यशसा च श्रियैव च॥ वैराग्य मोक्ष षट्कोणैः संजातो भगवान्हरिः
१ पोषणं भरणाधारं शरण्यं सर्वव्यापकम्॥ कारुण्यं षड्भिः पूर्णो-
रामस्तु भगवान्स्वयम् २ अनेक ब्रह्माण्ड को पोषण गुण अरु [redacted]
भरण गुण आधार गुण अरु सर्व शरण्यत्व गुण अरु सर्वव्यापकत्व
गुण अरु करुणा गुण एते षट्गुण परमदिव्य श्रीरामचन्द्र में नित्य हैं
ताते स्वयं भगवान हैं (५) चौ०॥ [redacted]

चौ० उपरोहिती कर्म अति मंदा॥ वेद पुराण स्मृति कर निंदा॥
तहां हे श्रीरामचन्द्र मैं तुमको [redacted]पर ब्रह्म अखण्ड विग्रह अच्छे
प्रकार ते जानत हौं तबतौ उपरोहिती कर्म में लीन है तहां उप
रोहिती कर्म अतिमन्द है जाको बेद पुराण स्मृति निन्दा करते हैं
(६)

दोहा॰ तब मैं हृदय विचार करि योग यज्ञ ब्रतदान।
जा कहँ करिय सो पाइहौं धर्म न यहि सम आन ॥
हे श्री रामचन्द्र! बशिष्ठ जी कहते हैं तब मैंने अपने हृदय में विचार कीन्ह जोहि परमेश्वर की प्राप्ति हेतु जप ब्रतदान योग वैराग्य समाधि इत्यादिक जो बहुत काल करै मनशुद्ध करिके तबकहूँ परमेश्वर की प्राप्ति होइ किंतु न होइ अरु सोई परमेश्वर के मैं उपरोहिती कर्म ते प्राप्त होत हौं ताते याहि उपरोहिती के समान दूसर धर्म नहीं है याते यह ध्वनि है जो वेद अरु लोक करिके निन्दित कर्म धर्म इत्यादिक हैं अरु उनमें परमेश्वर की प्राप्तिका सम्बन्ध है ताते यह सर्वोपरि उत्तम है यह निश्चय कै मैं रघुबंश कुल की उपरोहिती ग्रहन कीन है तहां प्रमाण है वेद विषे ।अहो पच्यत ग्रहं परिदधासि बशिष्ठ त्वम् पुरोधासि स एव ब्रह्मोद्भवम् परिपश्यन्तु धीराः अनन्यमनसा निन्दन्तु देवाः स्वर्गेषु यज्ञायाथाय तान्धियः कौशिकेन समग्रं प्रलीयताम् देवाः धियासि बाहुरासि पूर्ण मंगलाय तत्प्रधानानि यज्ञासीत एषः ब्राह्मणः बशिष्ठश्चाह प्रयोजनाय केषु भानुवंशस्य कृतोद्भवः आचरणाय कर्म सर्वस्य अप्रमेयाणि कर्माणि नाहं बभूव एवस्तु गेयं सनो चैतन्नो गृह्णाति काले काले मंगलाय परिपूर्ण ब्रह्मलोकादि हागताः पूज्यमानास्सन्तु आपस मनस्य मनोभवः देवर्षि गन्धर्वैः मंगल मास्ताम् चिन्मयो सम्मोलन बिधिस्संगीयताम्
(२) ॥

चौ० तव पद पंकज प्रीति निरन्तर॥ सब साधन कर यह फल सुन्दर॥

[redacted] हे रघुनन्दनजी तुम्हो चरणारविन्द विषे निरन्तर प्रीति होइ सम्पूर्ण साधन का फल एक यही यही सुन्दर है (४)

चौ० छुटइ मल कि मलहि के धोये॥ घृत कि पाव कोउ बारि बिलोये॥

हे प्रभु जो साधन करिके प्रापे हैं जो ऐसो साधन कोटिन करैं तहां अन्तःकरण की झीनी वासना अहंमम इत्यादिक नहीं मिटै है कैसे जैसे कोई वस्त्र कीच में भरि गयो है अरु कीचरी सो धोवै सो कैसे साफ होइ तहां अति मलीन ह्वै जात है इहां पर अभिप्राय है कि जो कोई अनेक सुकर्म करते हैं ते स्वर्ग को प्राप्त होते है तहां अति विषयता को प्राप्त भयो है काहेते कर्म सब सवासिक है अरु ग्यान जोग जो है सो भी सवासिक है काहेते की कैवल्य मुक्ति की वासना है अरु वासना सब मलीन ही है कदाचित ग्यान योग जो शुद्ध होइ तौ कैवल्य मुक्ति को प्राप्त होइ है पर श्री रामचन्द्र के स्वरूप भक्ति की प्राप्ति नही होइ है ताते उपासना काण्ड में बिना भक्ति मुक्ति शुष्क है ताते अनेक साधना करै पर अन्तःकरण नही शुद्ध होत है कैसे जैसे जल के मथे ते घृत नहीं निकसै है (५) चौ० -

प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई॥ अभ्यन्तर मल कबहुं न जाई॥

ताते हे श्रीरामचन्द्रजी तुम्हो चरणारविन्द विषे प्रेमलक्षणा भक्ति रूप जल जबतांई नहीं होइ तबतांई अनेक साधना करैं परन्तु अभ्यन्तर मल कबहू नही छूटै है अभ्यन्तर कही अन्तः करण की झीनी वासना तहां वासना में द्वै भेद हैं एक स्थूल एक झीनी जो मनमें उठै सो करिपरै उसे स्थूल कही अरु जे नाहि मनमें वा

मना उठे उसे झीनी कही कैसे जैसे कोई अति क्षुधित ब्राह्मण विवेकी है अरु कबहुं काहु नीचजाति के गृह अनेक सुन्दर पदार्थ व्यंजन देख्यो तहां वासना चलि गई है अरु ब्राह्मण वह पदार्थ जो अना पासहूं प्राप्त होत सन्त नहीं ग्रहण करै ताको झीनी कहो तथापि झीनी बाधक नहीं है परसन्तजन झीनी हू को नहीं सहि सकैं तहां स्थूल वासना कर्मयोग ध्यानेन बल मिटि जाय है पर झीनी वासना नहीं मिटै है तहां श्रीरामचन्द्र जे प्रेमलक्षणा भक्ति निर्मल जल नदी रूप पूर्ण प्रवाह भरी सो धोय डारै हैं (६)

दो॰ नाथ एक वर मागौं रामकृपा करि देहु ।।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहु घटै जनि नेहु ।।

हे भरद्वाज श्री बशिष्ट जी बोलते भये हे श्रीरामचन्द्र करुणा निधान मैं एक वरदान मांगत हौं कि तुम्हारी माया की प्रबलता से जे जन्म पाइ जगत में मेरे होंय तहां तहां तुम्हारे परणार बिन्दु विषे तैलवत धार अखण्ड मोरि प्रीति बनी रहै कबहूं घटै नहीं हे महाराज कृपा करिकै यह वर मोको देहु काहे ते कि आप अन्तर्ध्यान होवा चाहते हो औ मोको इहां राखे जाते हो अरु तुम्हारी आज्ञा सबके शीश पर है ताते यह वर मागत हौं तहां श्रीरामचन्द्र बशिष्ट की सर्वज्ञता अरु अपनी लीला समुझिकै अति प्रसन्न भये हैं अन्यः

करण में एवमस्तु कहते भये यहां वशिष्ठजीने परमपद को प्राप्ति क्यों न-
मांगी अरु अनेक जन्मताई श्रीरामचन्द्रजीके चरणको प्रेमलक्षणा भक्ति मागते
भये तहां यह साधुनके युक्तियथार्थ है काहेते कि जो परमपदको प्राप्तिको
वरदान मांगोहं तौ सकामी भक्त होहिं अस जो संगजीवको वरदान मांगोहे
तौ श्रीरघुनाथजी की इच्छा भंग होइ है यह जानिकै निष्काम भक्ति मांगो है
अरु जहां श्रीरामचन्द्रके पदविषे अखण्ड प्रेम है तेतो श्रीरामचन्द्रको प्राप्त-
ही हैं अरु श्रीवशिष्ठ इत्यादिक जे महान हैं ते श्रीराम इच्छानुकूल
रहते हैं ताहीते जे नित्य पार्षद हैं अपनी लीला विषे तिनहीं को
परमेश्वर अपनो माता पिता गुरु करते हैं (१)

चौ० देखि कृपाकरि सकल सराहे॥ दिये उचित जिन जिन जो चाहे॥
सबपदार्थन को देखिकै श्री रामचन्द्र कृपा करिकै सराहते भये अरु अपनो
मने अनुकूल सबको देते भये हैं अरु जो यह अर्थ कही कि
अवधवासिन जो जो चाहिन है सो सो दीन है तौ यहिं अर्थ विषे
एक अभाव भासत है काहे ते कि श्री रामरामचन्द्र ने यहि प्रकरण
के पूर्व अपनी पर विभूति परमदिव्य नित्य ऐश्वर्य लीला अरु नैमित्य
ऐश्वर्य नैमित्य ऐश्वर्य
माधुर्य लीला दिखाई है तहां नित्य तहां ऐश्वर्य नैमित्य ऐश्वर्य

माधुर्य्य दुनौं मिलते एकही हैं अरु भिन्न हैं दो तत्व एकही
हैं तहा श्री रामचन्द्र जी अपनी पराविभूति परम दिव्य तरुणी
एक करा चाहते हैं सहित ऐश्वर्य परम धाम को गमन कि-
या चाहते हैं ताते पुरवासिन को वैराग ज्ञान अपनी परम
भक्ति उपदेश कीन है अरु पुरवासिन ग्रंहण कीन है त-
हा पुरवासिन के हाथी घोड़े अनेक रत्नके अलङ्कार
पट इत्यादिकन की कहा चाहना है तहा श्री रामचन्द्र जी
अपने उपदेश के पुरवासिन ते परीक्षा लेते हैं जव पौर
पक्का देखे तव जे जस कार्य मे रहे तिनको तैसे तैसे वाहन
अलङ्कार देते भये काहेते कि जेते सव वाहन हैं तेते सव
पर विभूति हो[illegible]के हैं ताते सङ्ग ही जाहिंगे अरु मनुष्यन
को वाहन संयुक्त लै जाहिंगे अरु श्री अयोध्या के चराचर
जीव जे हैं तिन सवन को श्री रामाज्ञाते ब्रम्हा कोटिन वि-
मान ल्यावैंगे तिनपर चढाइके परमधाम को पहुचावहिंगे
तहा विमान सव रहि जाहिंगे काहेते पुरवासिन के संयोग
ते ब्रह्मा के विमानन के मोक्ष भई अरु जे जीव अपर
रहे ते सव आदि अन्त द्विभुज नित्य किशोर रूप हैं तहां
जो कोई शास्त्र को प्रमाण देके कहै कि श्री अयोध्या वा
सी चतुर्भुज रूप होइके परमधाम को गये हैं तहां श्री राम च-
न्द्र करुणा निधान सत्यव्रती सवको मर्यादा राखते हैं
ताते रमा वैकुण्ठ तार्द मध्य विषे विष्णु स्वरूप च-

तुर्भुज विष्णु के ऐश्वर्य लीलाके मर्याद राखेहै अरु आदि ग्रन्त
विषे नित्य किशोर द्विभुज जानिये याहि चौपाई मे पोहि ध्वनिहै
जो कहिआये हैं यह भेद बालकाण्ड में ब्रह्मादिक देवलनकी स्तुतिमें
भगवद्दरशन प्रसङ्ग ब्रह्मवाणी (चौपाई) कश्यप अदिति महातप कीन्हा॥
तहा बालकाण्ड मे विलक्ष देखव (४)

चौ० हनुमान सम नहि बडभागी ॥ नहि कोउ राम चरण अनुरागी ॥
हे पार्वती श्री हनुमानके समान बडभागी कोई नहीं है काहेते कि श्री रामचन्द्र
जीके चरणारविन्दके अनुरागी ऐसे न कोई भयेहैं न कोई हैं न कोई होहिंगे भूत
भविष्य वर्तमान तीनिहू कालमे नहीहै (८)

चौ० गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ॥ बारबार प्रभु निज मुख गाई ॥
हे गिरिजा जिन हनुमानकी प्रीति सेवकाई श्री रामचन्द्रजी श्री मुखते बार
बार बखानते हैं काहेते कि जाकी अविद्या मायाकी सहितसमाज हनुमान अ-
च्छीतरह जीतिके स्वस्वरुपैहं प्राप्त हैकै श्री रामचन्द्र जीके चरणारविन्द के
मकरन्दके लुब्ध मधुपइव वृता ताते बारबार बड़ाई करते है तहा अविद्या
माया ताको विषवणकही गुणनकी सेना कहतेहैं तामाया की सेना
विषे मनअरु महामान द्वौ वजीर हैं पुनितीनिमहां सेना पति हैं काम क्रोध लोभ
तामे काम महा मुख्यहै तिनके छैछै उपसेना पतिहैं क्रमते जानव मोहमद
अहङ्कार मात्सर्य ममता दम्भ तहां मोह उपसेना पतिके सहायक राग

बालक बित इत्यादिकनके विषे प्रीति तिनके संचारी पैदर पञ्च विषय शब्द
स्पर्श रूप रसगन्ध अरु मद्द उपसेनापतिके सहायक जातिकुल सुन्दरता पु
वा धन विद्या शास्त्र ज्ञान अरु तिनके संचारी पैदर अनेक हैं मान पर
मान निन्दा अहं मम इत्यादिक पुनि अहङ्कार सेनापतिके सहायक पु
रुष कहैं देहसन् बचनकर्मते हैं पुनि तोहिके संचारी पैदर परधन पर
नारि इत्यादिक जे हैं तिनमे प्रीति पुनि मात्सर्यके सहायक पर ऐश्वर्य न
ड़ाई पर भोग नहीं सहि सके हैं अरु तिनके संचारी पैदर मिथ्या बचनमन
कर्म्मकी कर्तव्य पुनि ममता उपसेनापतिके सहायक विषय जोद्रव्य
त्याहिको संग्रह पुनि जावे नहीं पुनि त्याहिके संचारी पैदर चित्त बुद्धि
मनको विषय कर्मते चिन्तवन निश्चय मनन इत्यादिक पुनि दम्भ
उपसेनापतिके सहायक सुन्दर वेष सुन्दर बचन सुन्दर कर्म करते हैं अरु
अन्तःकरणमें परधनमान बड़ाई की बासना भरी है त्याहिके संचारी पैदर लोक
को चातुर्यता पुनि अविद्यामय मायाके भट कहते हैं अविवेक अ
ज्ञान गोरव छलकपट पाखण्ड पुनि आयुध सबनके ईर्षा कटु
बचन पराये धन धर्मके बिघ्नकर्ता अरु इन्द्रिय वाह्यान्तर विषय
लीन तहां अविद्यामायाके महामुख्य बलीरावन अरु महामान सो
हनुमान जी के नामहीते जीता गया है काहेते नाम हनुमान
नकार को उकार लोपकरिकै तहां हनधातु नाश विषे होत है
ताते पाखण्डान्वय करिकै जे सर्व्वथा मनमान को हनै तिनको

हनुमान कहो काहेते हनुमान सब मनमानको तीनिहु काल में जीते हैं अरु हनुमान अब वर्तमान विषे शिक्षामे हेतु हैं तहा श्री रामचन्द्र जीने किष्किन्धाकाण्ड में हनुमान जी को आपने विषे अनयभाव शिक्षा कीने है तब सर्वथा मनमानको नाश कीन है ताते हनुमान क्रिय-मान हैं अरु हनुमानको श्री गोसाईने विनयपत्रिका मे काम जीताग्र-णी कहा है तहा कामकही मदनको पुनि काम कही अनेक त्रैगुण्य-जनितकामना जेहैं सो दूनौ कामको हनुमान जीते हैं जहा जहां मन मान वजीर अरुकाम मुख्य सेनापतिको जीते ते अपर सेनापति उपसेना पति अरु सहायक अरु पैदर अरु भट सब पराय जाते हैं तहा अविद्या माया के वजीर महावीर त्याहिको जितैया शास्त्र को विशेष सत्सङ्गको ग्रहण अरु तिनके आयुध मन जीतवे को त्रैगुण्यजनित विषय ते विराग पुनिमान महामान मानकही जाति विद्या धनबल इत्यादिक पुनि महामानकही अहंतत्ववेत्ता तिनके जीतैको आधिक को है वि-द्या ताको आयुध आत्मा अनात्मा को ज्ञान पुनि श्री रामचन्द्र जी के चरण पङ्कज में रति पुनि शास्त्र के तत्व श्री रामरूपमय सर्वमल गुण तत्वन में एकबुद्धि पुनि काम क्रोध लोभ सेनापतिके जितैया क्रमते सबको जानिये शमदम उपरति तितीक्षा श्रद्धा समाधान पुनि शास्त्र अष्टाङ्ग योग पुनि क्रोध जीतैको विचार अरु आयुध क्षमा शांति पुनि लोभ जीतैको उदार चित्त आयुध सन्तोष प्रारब्धवश निर्वाह पुनि मोह उपसेनापति के जितैया ज्ञान पुनि आयुध नित्यानित्य को विचार

पुनि मदके जितैया देह आदिक वर्णाश्रम संसार अनित्य है आ-
युध असंग है पुनि अहङ्कार उपसेनापतिके जितैया शील आ-
युध निर्वैर पुनि मात्सर्य के जितैया विवेक श्रीरामचन्द्र जी की
रजायमें सबै बर्तमान है पुनि आयुध शुभाशुभ कर्म के आधीन
सबै है पुनि ममता के जितैया सर्वजीव परमेश्वर हैं पुनि आयुध
कोई किसको नहीं है पुनि दम्भके जितैया सबते अचाह सर्व
वस्तुते पुनि क्रमते उपसेनापतिके सहायक कहते हैं राग
को जितैया विराग अपन्यो को जितैया न कोई मित्र न कोई
आरहे पुनि द्वारावल बित्त अपनपौ तेहिके जितैया नुनुस
दशा सर्वजीवनके लोन्चानुसंधान सर्वपुरुषार्थ विभूति श्री राम-
चन्द्र जीकी है पुनि तिनके पैदरके जितैया श्रीरामचन्द्र के
चरित्र दण्डवत प्रतिमा व्यापक नामप्रसादी तुलसी फूल इत्या-
दिकमें प्रीति पुनि मद उपसेनापतिके सहायक के जितैया
वर्णाश्रमके धर्मकर्म के फलको त्याग किन्तु स्वरूपही को
त्याग तिनके पैदरके जितैया देशकाल अवसर लिहे सुकर्म
सर्वजीवको आदर सम्मान दया पुनि अहंकार के सहायकन
के जितैया मनक्रम बचनते सुधीर रहस्य पुनि तिनके
पैदर के जितैया मनक्रमबचनते संतनसे प्रीति पुनि मात्सर्य
सहायकके जितैया परमेश्वर सबको भला करे पर दृढ़
बुद्धि अरु तिसके पैदरके जितैया सत्यवचन पुनि-
ममताके सहायक के जितैया विषय के स्वरूपही को
त्याग पुनि तिनके पैदरके जितैया चित्त बुद्धि मनको

वृत्ति विषयते छूटिकै श्री रामचन्द्रको स्वरूप ताको चिन्तवन नि-
श्चय मनन अरु प्रताप कृपामे बुद्धिकी निश्चय अरु मनमें श्री
राम चरितको मनन ग्रौन इनभवो सहायक के जितैया सरलस्व-
भाव सहजानन्द श्रीरामचन्द्रके चरणनमे प्रीति ग्रानि लाईके पैरके
जितैया श्री रामचन्द्रके लीला गुणनमें अतिप्रवीणता ग्रहण अविद्या
के भटनको कौन जितैयाई परमविवेकते अविवेकमें जीताजारहे
ज्ञानते अज्ञान जीताजारहै श्रीरामको चराचरमय मानिकै सबको गौरव
देना तब अपनो गौरव मिटै है निश्छल भयते छल मिटै निष्कपट
भयेते कपट मिटै सरल स्वभावते पाखण्ड मिटै इत्यादिक अविद्या
के अनेक सेना परिचार है अरु अविद्या के वश सर्वजीव है
त्रैलोक्यभरि अरु जे जीव श्रीरामशरणागत हैं तिनपर श्री
रामकृपाते विद्या प्राप्त भई है तबते सम्पूर्ण अविद्या को बिना श्रमही
जीतिलेते है तबते श्रीरामचरण के अति अनुरागी होते हैं सर्वो
पाय शून्य अनुरागी ऐसे हनुमानजी हैं ताते श्रीरामचन्द्र श्री
मुखते हनुमानको प्रीति सेवकाई बारबार बखानते हैं (८)

चौ० मामवलोकय पंकज लोचन॥ कृपाविलोकनि सोचविमोचन॥
हे पंकजलोचन मामवलोकय हमारी दिशि कृपाकरिके देखौ
तुम्हारी कृपा सर्व शोचको विमोचन कर्त्तीहै तहां मामवलोकय
क्यों कहा का श्रीरामचन्द्र नारदको देखते नहीं हैं तहां श्रीराम
अपनी परमदिव्य विभूति संयुक्त अन्तर्धान होवा चाहते हैं

तातें नारदजू कहते हैं कि हे [redacted] रामचन्द्रजी मोको कृपाकरि

कौरिवे जो आज्ञा होइ सो करौं आज्ञा होइ संगचलौं आज्ञा

होइ ब्रह्मलोक मेरहौं तहां श्रीरामचन्द्रजी शीलके निधान ना

रदजी की स्तुति सुनि श्रीरामचन्द्र जी बोले नहीं तब नारदजी

पहचाना कि श्री रामचन्द्र की इच्छा मोको ब्रह्मा रीहिवेकी

है यह अर्थ चौपाई के अभिप्राय करिके है ॥(१)

चौ० रामचरित शतकोटि अपारा ॥ श्रुति शारदा न

वरणै पारा ॥ हे पार्वती श्री रामचन्द्रजी के चरित शतकोटि

त्याहिके परे अपार हैं तहां शतकोटि अपार श्री मद्रामचरित

के ग्रन्थ हैं काहेते कि श्री रामचन्द्र के संग विषे अठारह

पद्म सेनापति रहे हैं ते सब वेदवेत्ता रहे हैं तिन सबने

एक एक श्रीमद्रामायण ग्रन्थ कीने हैं अरु को जाने

केते श्री मद्रामायण के ग्रन्थ श्री महादेवने कीने हैं

श्री ब्रह्माने कीने हैं श्री वेदव्यास कीने हैं श्री अगस्तजी

इत्यादिक मुनीशन कीने हैं सो रामायण तीनिहु लोक

मे सातो द्वीपनमें सर्वत्र प्राप्त हैं ताते शतकोटि अपार कहे हैं जाको अति श्रेष्ठ शारदा इत्यादिक कहिवे को पार नहीं पाइ सकते है किन्तु मुख्य सामान्य है जामे शतकोटि अपार अपार श्लोक कही है तामे एक एक अक्षर जो उच्चारण करै सो महांपाप जो जन्ममरण है सो मिटि जाते हैं (श्लोक एकः) चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्॥ एकैकमक्षरं पुन्साम्महा पातकनाशनम १ (२)

चौ०॥ राम अनन्त अनन्त गुणानी॥ जन्म कर्म अनन्त नामानी॥

हे पार्वती श्रीरामचन्द्र एक हैं अरु अनन्त हैं अरु अनन्त गुण हैं अरु अनन्त जन्म अनन्त कर्म हैं अरु अनन्त चरित हैं नामानी कहे तिन श्रीरामचन्द्र के नमस्कार करतहों किन्तु नामानी कहे बहुत काकोक्ति शब्द है का नामानी न तु सर्व अनन्त मानिवे जोग्य है किन्तु जिनके अनन्त नाम है (३)

चौ० उमा कह्यउं सब कथा सुहाई॥ जो भुशुण्डि खगपतिहि सुनाई॥

हे उमा यह कथा अति पावनि है जो काकभुशुण्डि ने गरुड को सुनाई है सो हम तुमसे कहा काकभुशुण्डि को साक्षी दीने है किन्तु जाते पार्वती पुनि प्रश्न करिहे (४)

दो॰ बिरति ज्ञान विज्ञान दृढ़ रामचरण अति नेह ।
बायस तनु रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥

हे नाथ आपके मुखते यह प्रसंग सुनिके परमसन्देह होत भयो यह जो कथा काकभुशुण्डिने गरुड़ प्रति कही है त्योंहि कथा विषे कर्म योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान भक्ति श्री रामचन्द्रके चरणारविन्द विषे अति दृढ़ प्रीति करनहारी यह कथा है अरु मोको यह समुझि परेउ है कि जो कहेउ है तामें अरुढ़ रहेउ है तथा यह आश्चर्य है कि काकतनु विषे वैराग्य ज्ञानविज्ञान संयुक्त श्री रामचन्द्रकै भक्ति प्राप्त भई है यह सन्देह है (१)

चौ॰ नरसहस्र महँ सुनहु पुरारी ॥ कोउ एक होय धर्म ब्रतधारी ॥
हे भरद्वाज इहां पार्वती जी भक्ति को सप्त भूमिका कहती हैं तेहि के द्वार है के सम्पूर्ण भक्ति के परमादिव्यगुण महादेवके मुखते सुना चाहती हैं हे पुरारि हजार मनुष्यन विषे एक कोई अपने धर्म में आरूढ़ होते है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अरु अन्त्यज अरु गृहस्थ ब्रह्मचर्य किन्तु ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी चारिहु वर्णाश्रम विषे एक कोई निज धर्मके व्रत को धारण किये हैं तीर्थ व्रत दान संयम नियम सुकर्म सुधर्म इत्यादिक जो वेद सुष्टु कर्तव्य निज निज धर्म वर्णत हैं सो प्रीति संयुक्त करिके श्री रामार्पण करै यह भक्ति की प्रथम भूमिका है (१)

चौ० धर्मशील कोटिन मह कोई ॥ विषय विमुख विराग रत होई ॥
ऐसे जो निज धर्म ने ली कोटिन होहि तिनके मध्यमे एक कोई
सहनशीलवान होतेहै शीलकहो जो कटुवचन न कहै किन्तु
मान अपमान करे सो सहिजाइ अरु अन्तःकरण में उसके ऊपर
दुःख न ल्यावे अरु मनक्रम बचनते कोई जीवको निरादर न करे अरु
इन्द्रिय के विषयने अशक्त न होइ ताको शीलकहो यह द्वितीय भूमिका
पुनि ऐसे सहनशीलवान जो कोटि होइ तिनके मध्यमें एककोई को
विषय वैराग्य होतेहै वैराग्य कहो तीनिहु लोक को विषय सिरको
समान जाने है यह तृतीय भूमिका (२)

श्री सरस्वती पुस्तक भण्डार
श्री लक्ष्मण किला
अयोध्याजी

चौ० कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई ॥ सम्यक् ज्ञान सुकृत कोउ लहई ॥
पुनि ऐसे विरक्त कोटिन के मध्यमें एककोई सुकृती सम्यक् ज्ञानको प्रा-
प्त होतेहै सम्यक ज्ञानकहो अपने अनुभवते आत्माको अनात्मासे
भिन्न देखे हैं आत्मज्ञान में आरूढ़ है जैसे अपनी आत्माको देखे
तैसे ही चराचर विषे देखत हैं यह चतुर्थ भूमिका (३)
चौ० ज्ञानवन्त कोटिन मह कोई ॥ जीवनमुक्त सुकृत कोउ होई ॥
१ ऐसो जो ज्ञानवन्त है तिन कोटिनके मध्यमें एककोई जीवन्मुक्त
होते हैं जीवनमुक्त कहो संसार में देह धरे हैं पर संसारते मुक्त है
जिनके हर्ष शोक दुःख सुःख हानिलाभ मानापमान मित्र अरि निन्दा
स्तुति इत्यादिक देहाभिमान नहीं है ताको जीवन्मुक्त कहो इति पंचम भूमिका (४)

चौ० तिन्हसहस्र महं सबसुख खानी॥ दुर्लभ ब्रह्म लीन विज्ञानी॥
ते जीवन मुक्त के हजारन में एक कोई ब्रह्म में लीन है विज्ञान विषे आरूढ़ है ब्रह्मलीन विज्ञान जीव अन्तर्यामी ब्रह्म की एकता है सो सब सुख की खानि है (५)

चौ० धर्मशील विरक्त अरु ज्ञानी॥ जीवन मुक्त ब्रह्म पर प्रानी॥
काहे ते जामें धर्मशील वैराग्य ज्ञान जीवन मुक्त सम्पूर्ण गवन करि के ब्रह्म में लीन है इति षट् भूमिका (६)

चौ० सब ते सो दुर्लभ सुरराया॥ रामभक्ति रत गत मद माया॥
पार्वती कहती हैं कि हे सुरराया यह सब ते दुर्लभ श्री राम भक्ति है कैसी है राम भक्ति मद माया ते गत है गत कही निवृत्त है ऐसी राम भक्ति त्यहि पराभक्ति को जो प्राप्त है सो उनकी कैसी दशा है प्रेम में मग्न हैं हर्ष शोक दुःख सुख हानि लाभ इत्यादिक ते रहित हैं उठत बैठत चलत सोवत जागत रामाकार सहजानन्द वृत्ति रामनाम परावाणी ब्रह्मान्तर ते ध्वनि है तामें मग्न है अरु सर्वत्र चराचर में रामरूप देखते हैं अरु श्री रामचन्द्र को स्वरूप शोभासिन्धु तामें मन मीन ह्वै रह्यो है यह सप्तई भूमिका (७)

चौ० सो हरि भक्ति काक किमि पाई॥ विश्वनाथ मोहि कहहु बुझाई॥
यह श्रीरामचन्द्र की भक्ति की सप्त भूमिका समाप्त भई॥ हे नाथ ऐसी जो श्री रामचन्द्र की भक्ति सो काक देह में कैसे प्राप्त भई है यह सन्देह है हे

शिवनाथ यह प्रसंग मोसे समुझाइ कै कहो यह प्रसंग मेरे पूर्वही कहा है तहां प्रमाण है (श्रीमन्महारामायणे शिव वाक्यं पार्वतीं श्लोकः ५) मुग्धे श्रृणुष्व मनु जोपि सहस्र मध्ये धर्मव्रती सर्वसमान शीलः॥ तत्रैव कोटिषु भवेद्विषये विरक्तः सद्धानको भवति कोटिविरक्तमध्ये २ ज्ञानीषु कोटिषु तृजीवन कोपि मुक्तः कश्चित्सहस्र नरजो जीवनमुक्तमध्ये॥ विज्ञानरूप विमलोप्यथ ब्रह्मलीन स्तोष्वेव कोटिषु सुकृत खलु रामभक्तः २ श्रीरामनाम रसना प्रपठन्ति भक्त्या प्रेम्णाच्च गद्गद गिराप्यथ हृष्टलोमाः॥ सीतायुतं रघुपतिंच किशोरमूर्तिं पश्यन्त्य हर्निशमुदा परमेण रम्यम् भूमौ जलेनभसि देवनरासुरेषु भूतेषु देवि सकलेषु चराचरेषु॥ पश्यन्ति शुद्धमनसा खलु रामरूपं रामस्यते भुवितले समुपासकाः स्युः ४ शांतस्समान मनसाच सुशील युक्तः तोषक्षमागुण दया ऋजुबुद्धि युक्तः॥ विज्ञान ज्ञान विरतिः परमार्थवेत्ता निर्द्धामको भयमनाः सचराम भक्तः ५ पुनः (भगवद्गीतायां श्लोकं सर्द्धद्वयम) ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न सोचतिन कांक्षति॥ समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् १ चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोर्जुन॥ आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानीच भरतर्षभ २ तेखां ज्ञानी नित्यमुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते (८)

चौ॰ धन्यसती सती पावनि मति तोरी॥ रघुपति चरण प्रीति नहि थोरी॥ इहां पार्वती को सती क्यों कहा तहां पूर्वसती तनमें सन्देह भयो रहै तासर्व सन्देहको नाश भयो ताते धन्य कहा है हे सती तुम्हारो मति धन्य है अतिपावनि है काहेते कि रघुपति के चरण में थोरी प्रीति नहीं है बड़ी प्रीति है (७) (८)

चौ० सुनहु परमपुनीत इतिहासा ॥ जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा ॥
श्री महादेव कहते है कि हे पार्वती यह जो रामपुनीत इतिहास है सो
सुनहु जो सुनिके सम्पूर्ण शोक अरु भ्रम नाश होइ (८)

चौ० पीपर तरु तर ध्यान सो धरई जाप यज्ञ पाकरि तर करई
हे पार्वती पीपरिके तरे ध्यान धरते है सतयुग के कृत्य पीपर के तर करते हैं
सतयुग के ध्यान धर्म अरु पाकरि के तरे त्रेता कृत्य करते है त्रेता को धर्म
यज्ञ सो जपयज्ञ करते हैं (प्रमाणं भगवद्गीतायाम्) यज्ञानां जपयज्ञोस्मि (५)

चौ० आम्र छाँह कर मानस पूजा ॥ तजि हरिभजन काज नहिं दूजा ॥
अरु आम की छायाविषे मानसी पूजा करते हैं द्वापर को धर्म परिचर्या पूजा
है तहाँ श्रीरामचन्द्र को भजन तजिके काकभुशुण्डि के दूसर कार्य
नहीं है (६)

चौ० बट तर कह हरिकथा प्रसंगा आवहि सुनहि अनेक विहंगा
अरु वट का तर श्रीरामचन्द्र की कथा कहते हैं अनेक विहंग सुनते हैं
तहाँ कलियुग के कल्याण कर्ता धर्म हरिकीर्त्तन है तहाँ यह जाने परत है कि
चारिहु युग को धर्म श्रीरामचन्द्र की भक्ति विषे चारिहु तरु तर करत हैं तहाँ
चारिउ तरु चारिहु युग जानिये (प्रमाणं श्रीमद्भागवते द्वादशस्कन्धे श्लोकः)
कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ॥ द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरि
कीर्त्तनात् १ (७)

दो० बालचरित कहि विविधविध मनमहपरम उछाह ॥
कौशिक आगमन कहेसि पुनि श्रीरघुवीर विवाह ॥

अर्थ मनमह परमउत्साह करिकै पुनि बालचरित विविध प्रकारते कहत भयो पुनि कुवार वदी षष्ठीको विश्वामित्रको आगवन भयो पुनिपाचदिन वास करिकै कुवार वदी व्दादशी का पारण करिकै चारिदण्ड दिनचढे आपने आश्रम को श्री रामचन्द्र लक्ष्मण को लैकै चलत भये पुनि पांचये दिन आश्रम में पहुचे तीनिदिनमुनिके आश्रममेरहि यंत्ररक्षा करिकै पुनि द्वादशी को विश्वामित्र अरु जनकको मिलापभयो पुनि वाही द्वादशी को जनकपुरकी शोभादेखन को श्रीरामचन्द्रलक्ष्मण संयुक्त जातभये पुनि त्रयोदशीको फुलवारी देखनको गये पुनि चतुर्दशीको धनुषयज्ञ देखनको गये अरु पौर्णमासीको धनुष तोरतभये अरु ताही तिथिको जनकके दूत श्री अयोध्या को गयेपुनि कार्त्तिकवदी अष्टमी को वरात चली पुनि त्रयोदशी को जनकपुर मे वरातपहुंचो जायतहां कार्त्तिकवदी त्रयोदशी सहित कार्त्तिक अगारहदिन अरु अगहन उन्नीसदिन द्वौ मिलिकै एकमास सातदिन वरातको मुकाम रह्यो आनन्द पूर्वक लगनसाधतरहे पुनि अगहन सुदी पञ्चमी को विवाह भयो अरु विवाहके उपरान्त एकमास पांचदिन पुनि वरातरही अरु पौषवदी दशमी को मिलत मिलावत संन्ते पहरदिन बीतगयो तब जनकपुर से वरात चलत भई अरु वही पौष सुदी पौर्णमासीको अवधके समीप वरात प्राप्त भई पुनि माघ वदी द्वितीया को श्रीरघुनाथजीने मन्दिरमे प्रवेशकियो हे पार्वती यहप्रसंग सम्पूर्ण विधिविधानते भुशुण्ड कहतभयो (१)॥

दो। श्रोता सुमति सुशील शुचि कथा रसिक हरिदास

पाइ उमा पइ गोप्यमत सज्जन करहि प्रकास

तहां हे पार्वती जो श्रोता सुमतिमान होइ सुशील होइ सुशील कहे सहन शील होइ निन्दा अपमान इत्यादिक सोहि जाइ किसी जीवको निरादर न करै अरु शुचि कहे पवित्र काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिक से रहित होइ रसिक कहे श्रीरामचन्द्र के चरित रसको पानकरै अपर साधन के रहित अनिच्छित होय अरु भगवद्दास होय ऐसे श्रोता को पाइकै तब गुप्तमत सज्जन जे सद्गुरु हैं ते प्रकाशते हैं किन्तु याहि ग्रन्थ विषे सद्गुरुनको उदारता दयालुताको समान होती हैं काहेते कि काहे को कोई ऐसो श्रोता होइगा अरु काहे को गुप्त सद्गुरु मत कहि हैं अरु सद्गुरु तो मेघ बुद्धी हैं तहां दूसरा अर्थ श्रोता कहे सुष्मति ते श्रवण करै जैसे मृगा राग सुनै हैं पुनि शील शुचि हैकै निदिध्यासन कहे अभ्यास करै तब सद्गुरु जो कहते हैं सो तत्त्ववचन श्रोतन को आसात होइ तहा सज्जन तो समाज में सब पदार्थ कहते हैं पर उनकी वाणी में जो गुप्तमत है तेई श्रोता पावते हैं जो कोइ आये हैं अरु सज्जन तो सब प्रकाश करते हैं जैसे स्वाती के नक्षत्र विषे मेघ सर्वत्र बर्षते हैं पर वृक्षन विषे केवल कदलीही में कपुर फरते हैं अरु समुद्र के अनेक जन्तु हैं पर सीपाहि विषे मोती फरते हैं प्रतोवह इनमें चातके सन्तुष्ट होते हैं तैसे सज्जन की वाणी स्वाती को जल है वे विकी श्रोता

कदली सीप चातकके हैं जहां दोहा (स्वातपक्ष्योगिकापाम) कदलिकपूर जसीप मोण चातकको गति सोइ। पुतर्विंबक वैजो सुजन स्वाति वृष्टि कुलहोइ॥ हे पार्वती तैसे ही गरुड़को पाइके काकभुशुण्डि सवकहेते हैं तहा भ्रोतासब रामतत्त्वके अधिकारी हैं (२)॥

चौ० नारदभव विरञ्चि सनकादी॥ जेमुनिनायक आतमवादी

काहेते नारदजो हैं अरु भव कहीशिव जो हैं विरंचि जो हैं सनकादि जो हैं इत्यादिक अपरमुनिजो हैं ब्रह्मवादी (६)

दो० श्रीमद वक्र न कीनकेहि प्रभुता बधिर न काहि।

मृगलोचनि के नयनशर को असलाग नजाहि॥

हे तात श्री कही लक्ष्मी को धनजाति कुल युवा विद्याज्ञान ध्यान एते आठो मद हैं इनमें अपनपौ मानिके कोनहीं वक्रकही टेढ़ ह्वै गयो है अरु प्रभुता कही ऐ-श्वर्यमान त्याहिकरिके कौनहीं बधिर ह्वैगयो है अरु मृगलोचनी जो स्त्री है त्याहिके नेत्रनके बाणक्याहिके नाही लागे हैं जगत में सबके लागे हैं॥(२)॥

चौ० गुणकृत सन्निपात नहिं केही॥ कोन मोहमद तजेउ निबेही॥

अपने गुण के कृतमानिके काको नहीं सन्निपात ह्वै गयो है काहेते अपने गुण के आगे काहूको नहीं माने हैं अरु मोहमद तजिके यहि जगत में को निबहा है(१)

दो० सो दासी रघुनाथकै समुझै मिथ्या सोपि।
दूरन रामकृपाबिनु नाथ कहौं पद रोपि॥

हे गरुड़ सो माया श्रीरामचन्द्रकी एकदासीहै परसमुझवेते मिथ्याहै तहा रघुनाथजूकी दासी कहना सो सत्यहै अरुजीव कल्याणकारी नहीहै ताते मिथ्याकहा परयोहे जीवको बन्धन किहे है छोड़े नहीं है जबश्रीरामचन्द्र कृपाकरें तब छोड़ैहै यहप्रण करिके कहतहैं (२)

चौ० ॥ जो माया सब जगहि नचावा॥ जासु चरित लखि काहु न पावा॥
हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र की जो माया है सो सम्पूर्ण जगत को नचावती है तेहिको चरित्र सबदेखते हैं पर जानिबेमें काहूके नही आवै (१)

चौ० ॥ सोइ प्रभु भ्रूबिलास खगराजा॥ नाचनटी इव सहित समाजा॥
सो माया श्री रामचन्द्रकी भृकुटीके बिलास बिषे नटीइव सहित समाज नाचती हैं सब चरित्र करती हैं (२)
चौ० सोइ सच्चिदानन्द घन रामा॥ अज बिज्ञान रूप बलधामा॥
सोई श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्दघनहैं अरु अज कहौ अजन्मा हैं अरु बिज्ञान रूप बलके धामहैं (३)

व्यापक व्यापि अखंड अनंता अखिल अमोघ शक्तिभगवंता

अरु व्यापि जो संसार है किन्तु व्यापि जो जीव है त्यहिविषे अपनेतेज चैतन्यस्वरूप परम दिव्य गुणकरिके व्याप्त है अरु अखण्ड है अनन्त है जाको अन्तवेदहू नहीपावे ताते अनन्त है अरु जाको शक्ति अखिल कही अनन्तब्रह्माण्ड है अमोघ कही जाको थाह कोई नही पावे है अरु अव्याहत गोतेहै जाको अव्याहतकही अव्यय अविनाशी गति कही जाके पौरुष है सो श्रीरामचन्द्र के दिव्य शक्ति है ऐसे स्वयम्भ भगवान हैं श्रीरामचन्द्र (४)

चौ अगुण अदभ्र गिरा गोतीता ॥ समदरशी अनवद्य अजीता ॥

पुनि अगुण है तीनिउ गुणके परे है अरु अभ्र कही जिनको आदिअन्त मध्य अनादि अपार जाको पारकोई नही पावै है अरु गिरा कही वाणी जो कही मनादिक अन्तर्बाह्य इन्द्रिय ताते अतीत कही परे है पुनि कैसे है समदर्शी कही सर्व सर्वजीवन के साक्षी है अरु नियन्ता है प्रेरक है अरु अनवद्य कही निर्दोष है सर्वते भिन्न है अरु अजित है काहू के जीतवे योग्य नही है (५)

चौ॰ निर्मम निराकार निरमोहा ॥ नित्यनिरंजन सुख संदोहा ॥

पुनि कैसे हैं श्रीरामचन्द्र निर्मम कही अहम्ममते रहितहै काहू पर ममत्त्व नहीं है पुनि कैसे हैं निराकार कही पांचतत्त्व तीनिउ गुणके आकार करिके रहित हैं पुनि सर्व ते निर्मोह हैं नित्य है निरञ्जन कही माया रहित हैं अरु सुखके सन्दोह कही समुद्र हैं (६)

चौ० प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी ॥ ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी ॥
पुनि प्रकृतिकही मूलकही प्रकृति अव्याकृत आद्याशक्ति महामाया मूल
कारण त्यहिके परेहैं अरु सबके उर अन्तर्यामी हैं अरु परब्रह्म हैं निरीह
कही ईहानामचेष्टा कही षट्विकार जन्मकही बढबवृद्धि बिवर्ण छोटा
बड़ा मोटा दूबर रंग बदलब सो बिवर्णकही पुनि क्षीयते कहि आयुर्बल घट
नजाइ पुनिवृद्धि पुनि मरण येते षट्विकार ईहा नामचेष्टा त्यहि सबते
रहितहैं श्रीरामचन्द्र बिरज कही रज जो है माया के बिकार त्यहितेरहितहैं
पुनि अबिनाशीहैं (७)

दो० यथा अनेकन बेषधरि नृत्यकरै नट कोइ ॥
सोइ सोइ भावदेखावई आपुन होइ न सोइ ॥
हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र की बिचित्र लीला सुनहु यथा कही जैसे कोई
नटनटवा अनेकबेषधरिके नृत्यकरते हैं कबहु योगी संन्यासी बैरागी
ब्रह्मचारी इत्यादिकनके बेषबनाईके नकलकरतेहैं पुनिकबहु स्त्री
कर बेषबनाइके नृत्यकरतेहैं पर जैसो जैसो बेषबनाते हैं तैसो तैसो
भावदेखावते हैं तहां नटवा आपुही है औरजो बेषबनायो है त्यहिको
स्वरूप नहीं है तहां जो बेश कियो है सो सबबेष सत्य हैं अरु उसकी
नकल नृत्य सत्य है अरु योगी संन्यासी बैरागी ब्रह्मचारी स्त्री
इनको स्वरूप होना नटकविषे सो असत्य है नटवा केवल आपही
हैं यह दृष्टान्त है अब दृष्टान्त कहते हैं तैसे श्रीरामजो नरलीला
कीन है सो लीला नित्य है तहां श्रीरामचन्द्र बिषे नरभाव त्यावना अ-
नित्यहै श्रीरामचन्द्र परबिग्रह सच्चिदानन्द एकरसआपही हैं तहांतिनको

लीलामें भूलि गये हैं काहेते उनकी माया आश्चर्य है तुम्हारा करहु (२)

चौ० जो मति मलिन विषय रत कामी ॥ प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
अरु हे स्वामी जे तिनके मलिन हैं विषय के वश हैं अरु सकामी हैं ते-
प्रभु विषे इमि मोह करते हैं (२)

चौ० माया वश मति मन्द अभागी ॥ हृदय जमनिका बहुविधि लागी ॥
वे प्राणी माया के वश हैं, अरु मति के मन्द हैं उनके हृदय विषे जमनिका
कही मोहरूपी काई लगि रही है (८)

ते शठ हठ वश संशय करहीं ॥ निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥
ते शठ हठ के वश ते अनेक संसय करते हैं अपनी अज्ञानता श्रीरामचन्द्र विषे
रोपण करते हैं (९)

दो० - निर्गुण रूप सुलभ अति सगुण न जानै कोय ।
- सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि भ्रम वश होय ॥
हे तात प्रभु के दुइ रूप हैं एक निर्गुण ब्रह्म एक सगुण ब्रह्म पर बिचार किये ते
एक हैं तहां निर्गुण ब्रह्म जानिबे को सुलभ है काहेते निर्गुण ब्रह्म को वेद कहते हैं
कि सर्वत्र एकरस परिपूर्ण व्याप्त है अरु सब कहते हैं ताते ताहि कर जानब सुलभ है
अरु अनुभव से जाना जाते है अरु सगुण ब्रह्म जानिबे को अति दुर्लभ है काहे ते कि
भले भले विवेकी यह कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी निर्गुण ब्रह्म हैं अपने भक्तन के

हेतु अपनी माया को आरोपण करिके देहको धारते हैं ताते सगुण कहो अरु कोई असकहते हैं कि श्रीरामचन्द्र ईश्वर हैं अपनी माया करिके देहको धारते हैं ताते सगुण कहो अरु कोई असकहते हैं कि श्रीरामचन्द्र ईश्वर हैं अपनी माया करिके सदा सगुण रूप हैं तहां यहि मतो के कहने वाले सगुणब्रह्मको स्वरूप यथार्थ नहीं जान्यो है काहेते कि सगुण कहो जो तीनगुण ते संयुक्त होइ तहां विराटरूप जो ईश्वर है तिनको सगुण कहो किन्तुविष्णु भगवान को सगुण कहो काहेते कि सात्विकगुण को ग्रहण किहेहैं तातेसगुण कहो अरु श्रीरामचन्द्र तो निर्गुण सगुण के आधार हैं काहेते केवल परब्रह्म विग्रह हैं सगुण ईश्वर जाको अंश है अरु निर्गुण ब्रह्म जाको घनतेज है अरु परम दिव्यगुण तिनको विशेषण है ताते श्रीरामचन्द्र को स्वरूप ज्ञान दुर्लभ है जो जानहु काहे ते कि सुगुन अगम श्रीरामचन्द्र अगम ते सुगम भये हैं तिनको नाना चरित है जो सुनिके मुनिन के मनमें भ्रम होत है किन्तु अगुण सगुण के नाना चरित हैं किसू के जानिबे योग्य नहीं है तहां प्रमाण है (सदाशिव संहितायां श्लोक एकः) सगुणं निर्गुणं चैव परमात्मा तथैव च ॥ एते चांशा हि रा- मस्य पूर्वं चान्ते च मध्यतः (२)॥

चौ० ॥ सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ ॥ जन अति अभिमान न राखहिं काऊ ॥ हे तात श्रीरामचन्द्र का स्वभाव सहजहीं असहै सो तुम सुनहु आपने जन जो हैं तिनकर अभिमान जो है त्याहिको कबहु नहीं राखते हैं (५)॥

चौ॰ मारकत मृदुल कलेवर श्यामा ॥ अंग अंग प्रति छवि बहुकामा ॥
मरकतमणि कहो श्याममणि मृदुकहो कोमल ऐसो श्याम कलेवर अरु अंग अंग प्रति कोटिन कामकी शोभा है (५)

चौ॰ ललित अंग कुलिशादिक चारी ॥ नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥
अरु अति ललित चरण विषे कुलिश आदिक चिह्न हैं सो चरण विषे कहूं शास्त्रन विषे अठारह कहे हैं कहूं बाइस कहे हैं कहूं चौबीस कहे हैं कहूं बत्तीस कहूं ४८ कहे हैं यह मुनिन को मत है चारीकहो चारगवन विषे होत है तिन चरणते अंगनाई विषे बिचरत हैं अरु नूपुर चारु तिनको रवकहो शब्द अति मधुर है (६)
चौ॰ ज्ञान अखण्ड एक सीता बर ॥ माया बश्य जीव सचराचर ॥
हे नाथ अखण्ड ज्ञान एकरस सीतावर है अरु माया बश चराचर जीव हैं (४)

चौ॰ जो सबके रह ज्ञान एकरस ॥ ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥
हे तात जो कोई जीव का ज्ञान एकरस है तो जीवसे ईश्वर ते कहो कैसे भेद है तहां जो कोई कहै कि जीवको एकरस ज्ञान रहे है ते जीव ईश्वर ते अभेद है तहां यह अर्थ नहीं बने है काहे ते जीव ईश्वर ते कसभेद हैं किसी जीवको एकरस ज्ञान रहते है नहीं ताते ईश्वर ते अरु जीव ते सदा भेद है किन्तु जीवका एकरस ज्ञान रहते अभेद है जैसे भरत शत्रुघ्न लक्ष्मण हनुमान इत्यादिक जे नित्य पार्षद हैं अरु ज्ञान कहो अपने स्वस्वरूप में नित्य है अरु अपर स्वरूप श्रीरामचन्द्र तिनके सेवक है (५)

चौ० माया बश्य जीव अभिमानी ॥ ईशवश्य माया गुण खानी ॥

हे तात मायाके बशते जीव अभिमानी है रह्यो है अरु माया जो गुणकी खानि सो ईश्वर के बश्य है (६)

चौ० परवश जीव स्ववश भगवन्ता ॥ जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥

ताते जीव परवश है अरु भगवान स्ववस कहो अपने बश्य है स्वतन्त्र है अरु जीव परतन्त्र है अनेक है परमेश्वर का अंश है तत्त्व एक है व्यक्ति अनेक हैं तहां अनादि होते माया जीव को सम्बन्ध है तहां माया मे तीनि भेद हैं अविद्या विद्या आह्लादिनी तहां अविद्या के सम्बन्धते जीव बद्ध है अरु विद्या के सम्बन्ध ते मुमुक्ष जीवन्मुक्त है अरु आह्लादिनीमय त्रिपाद विभूति है नित्य है अरु शुद्ध जीव आह्लादिनी एकही तत्त्व है अरु विद्या जीव को विशेषण ज्ञान विज्ञान इत्यादिक शुद्ध गुण हैं अरु कैसे जीव अनेक हैं जैसे अन्त तत्त्व एक है व्यक्ति अनेक तैसे जीव अनेक हैं श्रीकन्त परमेश्वर एक है ऐसो अनादि होते हैं तहां प्रमाण (श्लोकं सार्द्ध गीतायाम) ममै वांशो जीव लोके जीव भूतः सनातनः ॥ मकार व्यंञ्जनं चैव त्रिधा शक्ति स्वरूपिणी १ शक्तिराह्लादिनी विद्या विद्यासत्त्वात्मकः स्वयम् ॥ (पुनः रामायणे) रामरूपस्य तेजोयं जीवो वेदैः प्रभाषितः ॥ भेदं मतस्य सर्वेषामाचार्याणां बदामिते २ (७)

दो० रामचन्द्र के भजन बिनु जो चह पद निर्वान
ज्ञानवन्त अपि सोपि नर पशु बिन पूंछ विषान

ताते श्रीरामचन्द्र के भजन बिना जो निर्वाण पद चाहे तो नहीं प्राप्त होइ आपि कहो निश्चय करिके यद्यपि ज्ञानवान है तदपि अज्ञान है जैसे बिना सींग

पुंछको पशु है किन्तु निष्पाप ज्ञानी है अरु श्रीरामचन्द्र के भजन विना कैवल्य मुक्तिको चाहते हैं सो मुक्ति को प्राप्त होते हैं परविना भजन कैवल्य मुक्ति कैसी है जैसे विना श्रृंग पुंछको पशु अशोभित है तैसे ज्ञानकी मुक्ति अशोभित है

चौ० ऐसेहि बिनु हरि भजन खगेशा ॥ मिटै न जीवन कर कलेशा ॥
हे तात ऐसेही श्रीरामचन्द्र के भजन विना जीवनको क्लेश नहीं मिटैहै कदाचित जो ज्ञानकरिके कैवल्य प्राप्ति होहि तौ सामीप्य मुक्तिको नहीप्राप्त है जैसे कोई कंगाल है अरु भाजी मोटा अन्न खाइके पेटभरै तैसे ज्ञानकी मुक्ति निराश है (१)

चौ० हरि सेवकहि न व्याप अविद्या ॥ प्रभुप्रेरित व्यापै तेहि विद्या ॥
हे तात तहां हरिके सेवकनको अविद्या माया नहीव्यापतीहै काहेते हरिके सेवक अविद्या विद्याते परेहैं जो कदाचित कवहूंजीव धर्म्म करिके कोनौ अभिमानभयो किन्तु हरिविषे भ्रम भयो · तबकिंचित अविद्या कारणकहूं आइजाइ तौ हरि की प्रेरणाते विद्या माया व्यापती है काहेते कि जबछोट कांटा गड़त है तब बड़े कांटाते निकसत है तैसे प्रभुआपने दासनको विद्यामाया करिके अविद्या निकासि डारते हैं उपरान्त दोऊ जातरहत हैं तैसे मोको श्रीरामचन्द्र की प्रेरणाते विद्या माया प्राप्त भई (२)

चौ० ताते नाश न होइ दास कर ॥ भेद भक्ति बाढै विहंगवर ॥
ताते हे गरुड़ रामभक्तनकर नाशकहीं जन्ममरण नहींहोइ (गीतायाम्) कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्ताः प्रणश्यति ॥ भेदकहो सेवक सेव्य जीव विषे भाव भक्ति

की अधिक वृद्धि होती है (३)

चौ॰ भ्रमते चकित रामस्वीहि देखा ॥ विहंसे सो सुनु चरित विशेखा ॥
तबां हे तात मोको भ्रमते श्रीरामचन्द्र चकित देखा तब हंसत भये सो विहंसिवे को
चरित सुनहु (४)

चौ॰ त्यहि कौतुक कर मर्म न काहू ॥ जाना अनुज न मातु पिताहू ॥
तेहि ते विहंसिवे के कौतुक कर मर्म माता पिता अनुज काहू नहीं जाना है हे
पार्वती काहे ते कि एक स्वरूप काकभुशुण्डि को श्रीरामचन्द्र के समीप बैसे बना
रहा है वैसी ही लीला करते रहे हैं अरु एक स्वरूप उड़ि गयो है अवलोकन
बिर्षे गयो ताते पिता अनुज नहीं जान्यो है (५)

दो॰ ब्रह्मलोक लगि गयउं मैं चितवत पाछ उड़ात
युग अंगुल कर बीच सब राम भुजहिं मम तात
हे तात तब मैं उड़त उड़त भूलोक जो है तेहि ते उड़िके भुवर्लोक कही मध्य रूप
स्वर्ग को गयउं पुनि स्व: कही स्वर्ग इन्द्रलोक तहा गयउं पुनि तहां ते उड़ि के
महर्लोक को गयउं पुनि महर्लोक ते जनलोक को गयउं पुनि जन लोक ते तप
लोक को गयउं पुनि तपलोक ते सत्यलोक को गयउं हे तात छ: आवरण-
भेदि के सातवां आवरण सत्यलोक को गयउं ताबीच में तीनि लोक
आवरण है सत्यलोक के ऊर्ध्व सोरह कोटि जोजन को तहं उ मैं प्रभु

कर अनादरवेउं मोसे अरु श्रीरामचन्द्र के भुजाते दुइ अंगुलकर बीचरहा दुइ अंगुल कहो द्वैतमें श्रीरामचन्द्र विषे आपन अज्ञान आरोपण किहेउं तहां सोई दुइ अंगुल (९).

दो० - सप्तावरण भेदि करि अहलगि गति रहि मोरि ॥
गयउं तहां प्रभुभुज निरखि व्याकुल भयउं बहोरि ॥

पुनि हे तात सातआवरण ब्रह्माण्डके भेदिगयउं तहां सत्यलोकते अरु ब्रह्माण्ड के आवरणताई एकसै बासठिकोटि योजनके अन्तरायहै अरु ता बीचमे तीनिलोक आवरणहै सत्यलोकके ऊर्ध्व सोरहकोटि योजनको महर्लोक है जहांसनकादिक रहतेहै ताको ऊर्ध्व बत्तिसकोटि योजन उमालोकहै पुनि तेहि के ऊर्ध्व चौंसठि कोटि योजन शिवलोकहै पुनि शिवलोकते अरु ब्रह्माण्डके आवरणताई पचास कोटि अन्तराय है तहा सात आवरण करिकै जो ब्रह्माण्ड है सो कहतहौं भूमि जल अग्नि आकाश अहंकार तीनिउ गुणनको एकता है पुनि तेहिके ऊपर महतत्त्वहै तहानीचेसे प्रमाण देतेहैं प्रथम पृथ्वीको आवरण पचास कोटि जोजनके मोटाई पीतरंग है पुनि ताके ऊपर जलको आवरण पांचसै कोटि योजन की मोटाई जलको आवरण जैसे पाला जमै है तैसेई है ताको श्वेतरंग है पुनि ताके ऊपर अग्नितत्त्वको आवरण है पांच हजारकोटि योजन की मोटाई अंगार सरीखे जोमि रह्यो है तेजोमय ताको लालरंगहै पुनि ताके ऊपर पवनतत्त्व पचासहजारकोटि योजनकै मोटाई पवन भरि रह्योहै जैसे बवंडर पवनको राशि ताको हरितरंग है पुनि ताके ऊपर आकाश

तत्वको आवरण सो पांचलाख कोटि योजनकी मोटाई महां अंध-
काररूप भरिरह्यो है ताको नील रंग पुनि ताके ऊपर अहंकारतत्त्व को
आवरण पचासलाख कोटि योजन की मोटाई परिपूर्ण है रह्यो है ताको
श्वेतपीतकाला मिश्रित संकर रंग है पुनि ताके ऊपर अहंकार तत्त्व को
आवरण पांचसे लक्ष कोटि योजनको मोटाई है सोसब रंग करिके युक्त
एतेसात आवरण करिके ब्रह्माण्ड गोला है तहां साती आवरण मिले हैं
इनमें अन्तराय नहीं है तहां हे तात जो यह सातो तत्त्वको भेदिहे सो
ब्रह्माण्डके पार होइहै तहां हे तात श्रीरामचन्द्रकी कृपासे महादेव
को अनुग्रह: से मोको एती शक्ति है तहां मैं सातो आवरण भेदिगयउं
पुनि तेहिके ऊपर जहांतक मोरिगतिरही तहां ताई गयउं महाविष्णु को
लोक जो ब्रह्माण्डको कारण तेहिलोकको मैं भेदिगयउं पुनि महाश-
म्भु को लोक जाको ज्योतिर्ज्योति कहते हैं सो भेदिगयउं पुनि वासुदेव लोक
जाको महावैकुण्ठ कहते जहावासुदेव संकर्षण अनिरुद्ध प्रद्युम्न चतुर्व्यूह
रहते हैं सो भेदिगयउं पुनि गोलोक एकलोक है तेहिके मध्यपर श्रीअयोध्या
तहां ताई मोरिगतिरहै तहां भ्रम भयउ यहप्रसंग सदाशिव संहिता के प्रथम
अध्याय में प्रसिद्ध है तहां बालकाण्ड में यहचौपाई तिलक में सबकहाहै
(चौपाई) रामधामदा पुरी सुहावनि - लोकसमस्त विदित जगपावनि तहं
प्रभुकर भुज युगलंगुल कर बीच मोसे रहे तबमें देखि के आकुलाइ उक्तो
कहते कि ऐसे श्रीरामचन्द्र विषे मोको भ्रम भयउ (२) ॥
चौ॰ अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी । सरयू भिन्न भिन्न नरनारी ॥
अ॰ प्रति ब्रह्माण्ड श्रीअयोध्या देखेउं अरु सरयू तथा नरनारि भिन्न
भिन्न देखेउं (६१) ॥

दो॰ सुनि सप्रेम बानी मम देखि दीन निज दास
बचन सुखद गम्भीर मृदु बोले रमानिवास
सब प्रेम संयुक्त मेरी बाणी सुनिकै आपन निजदास जानिकै सुखदायी बचन अति गम्भीर बोलते भये रमानिवास अनेक ब्रह्माण्ड में रसिकै प्रकाश कर्त्ता अन्तर्यामीरूप श्रीरामचन्द्र हैं तातें रमानिवास कहा किन्तु सम्पूर्ण रमा लक्ष्मी तेहि बिखे निवास किन्तु लक्ष्मीका जिनविषे निवास है (१)

दो॰ अबिरल भक्ति बिशुद्ध तब श्रुतिपुराण जो गाव ॥
जाहि खोजत योगीश मुनि प्रभुप्रसाद कोउ पाव ॥
तातें अबिरल भक्ति कही सघन को अबासा अबासा प्रीति प्रेम सहित श्रीरामचन्द्र को सुमिरण अन्तर करै शयनपरै चित्तकी वृत्ति अखण्ड तैलधार अबासारूप में लगी रहै सो अति बिशुद्ध है वेदपुराण जिसे कहते हैं अरु ताही भक्ति को योगी मुनीश परमहंस खोजते हैं परतुम्हारी कृपाते कोई कोई पावते हैं (१)

दो॰ माया सम्भव सकल भ्रम अबनहि ब्यापहि तोहि ॥
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुण गुणाकर मोहि ॥
हे भुशुण्डि मायाते सम्भव जो अनेक भ्रम है सो तोको अब नहीं ब्यापहिं पर अनादि ब्रह्म अजन्मा अज अरु अगुण जो निर्गुणतत्त्व अरु सगुणतत्त्व जो दूनों के आकर कहे खानि सो मोको जानहु (१)

चौ॰ भक्तिहीन बिरंचि किन होई ॥ सबजीवनसम प्रिय मोहि सोई ।
पुनि मेरी भक्ति तें हीन जो कदाचित ब्रह्मा होइ तौ जैसे सबजीव मोको प्रिय हैं यहां अभिप्राय है कि जो कदाचित ब्रह्मा के समान समर्थ कोई जीव होइ सृष्टिकर्त्ता वेदकर्त्ता वक्ता अरु महाकल्प भरि जीवनहोइ अरु मेरी भक्ति

ते हीन होइ तौ जैसे सर्वजीव मेरी विभूति, मे कार्य कर्त्ता प्रियहैं तैसे वह भी प्रियहै (८)॥

चौ॰ याहि विधि जीव चराचर जेते। त्रिजग देव नर असुर समेते॥

हे भुशुण्डि याहिप्रकारते याहि संसार में जेते जीवहैं चराचर त्रिजग देवता नरअसुर इत्यादिक तहां देवनर असुर छोड़ि कै अपर सबजीवन की त्रिजग संज्ञा है अरु त्रिजगको अर्थ कोई औररीति सों कहते हैं सो जहांहोइ तहां होइ इहां जो हमकहा सोई अर्थ सिद्ध है (९)॥

दो॰ पुरुष नपुंसक नारिनर जीवचराचर कोय॥
सर्वभाव तजि कपट तजि मोहिपरम प्रिय सोय॥

हे भुशुण्डि नपुंसक जो पुरुष है और सर्वनारि जे हैं अरु नारि जे हैं अरु चराचर कोईजीव होहिं सम्पूर्ण कपट तजिकै सर्वभावतें मोको भजै सो मोको परम प्रिय हैं सर्वभावकही सर्वजीवन विषे मोको व्याप्त देखै तिनमें एक ब्राह्मण तीर्थ विषे मेरी प्रसन्नता अधिकमानै अरु सम्पूर्ण देवतन को सामान्य विशेष मेरी विभूति मानै अरु मेरी प्रतिमा मेरीलीला अरुजहांकहूं मेरे सम्बन्धते कहूं पावैं अरु संतन को मेरो स्वरूप मानै ताको सर्व भावकही पुनिकपट कही देवदानव मनुष्य पशु पक्षी बर्णाश्रम अंत्यज जाति बर्णाश्रम के अभिमान मानै है सो त्यागिदेइ (अन्यच्च श्लोकः) श्रीमद्रामस्वरूपतो गतवपुर्भिन्नं न जातं क्वचित् सीताद्या रघुनाथ यादव पीतस्सर्वे वतारा यथा॥ इत्थं ये प्रतिबोधयन्ति स्वजनान्रामः प्रसन्नस्सदा नित्यं चैव नमामि रामचरणास्ते भ्योपि सद्भ्यो नमः (१)॥

चौ० कबहु काल नहि ब्यापहि तोही ॥ सुमिरसु भजेसु निरन्तर मोही ॥
अरु तोको काल कबहू नहीं ब्यापैहै पर मोर सुमिरण भजन निरन्तर न छूटै सुमिरण कही चित्तकी वृत्ति अखण्ड एकरस सर्वकाल में लगी रहै औ भजन कही भजसेवा विष होत है तातें बाह्यान्तर भगवत भागवत के कैंकर्य प्रतिमा में अरु मानसो में मन कर्म बचनते लगारहै पर दुनों को एकही जानै (९)॥

सो०॥ ज्यहि सुख लागि पुरारि अशुभबेष कृत शिवसुखद।
अवधपुरी नरनारि त्याहिं सुखमहं संतत मगन ॥२॥
हे गरुड़ ज्यहि बाललीला सुखके हेतु पुरारि अशुभबेश धरे हैं त्यहि सुखबिषे अवध पुरीके नरनारि संतत कही निरन्तर मग्न हैं तहां अशुभबेष क्यों कियो तहां जब अशुभबेष धरिकै योगी बनिकै श्रीमहादेव श्रीरघुनाथजीके समीप आवते जाते हैं तबदेखिकै किलकि किलकि हसते हैं अरु समीपते भिन्न भिन्न नही जाइ देते हैं तातें त्यहि सुख निमित्त अशुभ बेश किहे हैं किन्तु वैराग्य देखावते हैं अरु जो पदार्थ संसार में कोई नही ग्रहण करै है सो महादेव ग्रहण किहे हैं कि जो ऐसी वैराग्यसंयुक्त रहै सो श्रीरामचन्द्रके सुखको प्राप्त होइ (२)॥

चौ० निजसुख बिनमन होइ कि थीरा॥ परसकिहोइ बिहीन समीरा ॥
अरु जबताईं निजसुख कही आत्मक सुखनहीं होइ तबलाईं मन नहीं स्थिर होइ अरु जैसे बिना पवन तत्त्व स्पर्श बिषै नहीं प्राप्त होइ तैसे श्रीरामचन्द्र के भजन बिना जीवको कल्याण नही होइ है (८)॥

दो० कालकोटि समसरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरन्त।
धूमकेतु शतकोटि सम दुराधर्ष भगवन्त ॥
अरु शतकोटि काल के सम दुस्तर है दुर्ग है दुरन्त है दुस्तर कही तीरिबे योग्य नहीं हैं अरु दुर्ग कही दुरिगम्य कही प्राप्ति जिनकी अरु दुरन्त कही ज्यहिकर अन्त पावना दूरि है अरु धूमकेतु कही अग्नि त्यहिके शतकोटि सम दुराधर्ष भगवन्त दुराधर्ष कही दूरि है धर्षणा कही धारणा जिनकी (२)॥

चौ० कामधेनु शतकोटि समाना। सकल काम दायक भगवाना॥
अरु शतकोटि कामधेनु सम हैं तहां शतकोटि कामधेनु तीनिही फलकै दाता हैं श्रीरामचन्द्र अर्थधर्म काम मोक्ष सकल के दाता हैं शतकोटि कामधेनु कोटिकहां जो फल देइगी एक कामधेनु वही फल देइगी शतकोटि कामधेनु तहां एक असत्यद है नाशनाम अरु एक सत्यद है नित्य अखण्ड तहां श्रीरामचन्द्र कोटिन प्रकारते शतकामधेनु ते सोरस है ताते सब कामदायक हैं (४)॥

छ० निरुपम न उपमा आन रामसमान निगमागम कहै॥
निमिकोटिशत खद्योत रविसम कहत अतिलघुता लहै॥
हेगरुड़ श्रीरामचन्द्र निरुपम हैं इनकी उपमा को आनकोई नहीं है राम समान रामही हैं यह निगम कहते हैं इहां अन्वय अलङ्कार जानब अरु जो कोई कहै कि तुम अनेक उपमा कहि आये हो तहां जो उपमा कहि आये हैं सो सब याही रीति जानब जैसे शतकोटि खद्योतको प्रकाश त्यहि

को रविसम प्रकाश करत सन्ते लघुता आवत है (८)॥

चौ० तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक ॥ मोहि जियायउ जन सुखदायक ॥ तहां मोंको अस समुझि परेउ कै तुम्हार स्वरूप गारुड़ी भयो गारुड़ी कहो जो गरुड़के मन्त्रते झारै सर्पको विष तहां तुम्हारे पास मोंको पठैके रघुनायक मोहि जियायो काहेते जनसुखदायक है किन्तु तवस्वरूप में रघुनायकने गारुड़ी कहिके साको जियायो मोहविषरूप उतरिगयो गारुड़ी कहो हमको है गरुड़ त्यहिके मन्त्र ते सर्प को विष झारै सो उतरिजाइ किन्तु गारुड़ी समुझि कहो (९)॥

चौ० तुम सर्व्वज्ञ तज्ञ तम पारा ॥ सुमति सुशील सरल आचारा ॥ तुम सर्वज्ञ हौ तज्ञ कहो परमतत्त्ववेत्ता हौ अरु तमजो अविद्या ताहिके परे हौ अरु सुमति सुशील के सदन हौ सुमति सुशील आचरण ये सब तुम्हारे सरल हैं सरल कहो स्वाभाविक हैं किन्तु सुमति सुशील रूप तुम्हारे आचरण हैं (१)॥

चौ० तजौं न तनु निज इच्छा मरणा ॥ तनु बिनु बेद भजन नहि बरणा ॥ अरु महा देवकी कृपाते मोंको इतनी सामर्थ्य है कि अपनी इच्छा ते जब चाहौं तब शरीर को त्यागि देउं अरु परम शरीर को धारण करिलेउं अरु हे तात-तौन्य तनुमें भजन भल बनत है अभिमान नहीं होत है अरु वेद वर्णते हैं कि विनातन भजन नहीं होइ है जो कोई संदेह करै कि विना तनु जीव कालहै कहां है कहां जातहै सो सुनहु तहां ज्ञानकरिकै कैवल्य को प्राप्त होत है तहां भजन कहां होतहै नहीं होत है अरु विना श्रीरामचन्द्र के

भजन जो कदापि मुक्त होइ तो कौने कामको अरु देहको [illegible] आठ देहको धरत अज्ञानदशा होती है ताते भजन में अन्तराय परती है अरु देवतनके लिंग शरीर हैं तहां लिंग शरीर में श्रीरामचन्द्र को भजन वेद नहीं वर्णत है अरु भजन ते जीवका परम हित वेद वर्णत हैं (५)

चौ० वर्णधर्म नहि आश्रम चारी ॥ श्रुति विरोध रत सब नर नारी ॥
चारि वर्ण जो हैं अरु चारि आश्रम जो हैं सो वर्णाश्रम के धर्म पाछे कहि आये हैं सो कलिकाल मे काहू के धर्म न रहे अरु सम्पूर्ण नर-नारि वेद विरोधी धर्मकर्म करत भये (१)०

चौ० द्विज श्रुति बंचक भूप प्रजाशन ॥ कोउ नहि मान निगम अनुशासन ॥
अरु ब्राह्मण श्रुति बंचक हैं भूप आपन प्रजा कहते हैं अरु तिनका धन हरि लेते है किन्तु प्रजाशन कहो प्रजाको अशन कहो खाइ जाते हैं अरु वेद शास्त्र की आज्ञा कोई नहीं माने हैं (२)

चौ० गुरु शिष्य अंध बधिर कर लेखा ॥ एक न सुनहि एक नहि देखा ॥
अरु गुरु शिष्यको अंधे बहिरे को लेखा होत भयो गुरु देखै नहीं शिष्य सुनै नहीं गुरु तो शिष्यको गुण अवगुण देखे नहीं लोभके निमित्त शिष्य करि लियो है अरु शिष्य गुरुनको कहा सुने नही करै नहीं गुरुने वाको अच्छी तरह देखि नहीं लियो (६)

दो० वादहिं शूद्र द्विजन सन हम तुम ते कछु घाटि ॥
जानहिं ब्रह्म सो विप्रवर आंखि देखावहिं डाटि ॥ २

अरु शूद्र जे हैं ते ब्राह्मणन ते बाद करते हैं अरु ब्रह्म उहां लौ पावें जितने कहते हैं का हम तुमते कछु घाट है काहेते हम ब्रह्मज्ञान जानते हैं अरु ब्रह्मज्ञान तुमको उचित है सो तुमको आवते नहीं है (अहं ब्रह्मज्ञानात ब्रह्मप्राप्त इत्यादिक वचन कहि कहि डाटि डाटि आंखि देखावते हैं (२)॥

चौ० भए अभेद बादी ज्ञानी नर॥ देखा मैं चरित्र कलियुग कर॥२
ऐसे विषयमें लपटिरहे हैं अरु कहते हैं कि हम अभेदज्ञानी हैं जो ऐसे ज्ञानी हैं ऐसो कलियुग कर चरित्रमें देखा है (३)॥

चौ० विप्र निरक्षर लोलुप कामी॥ निराचार शठ बृषली स्वामी॥
हे तात ब्राह्मण निरक्षर होत भये अरु गायत्री रहित होत भये अरु लोलुप कहे झूठे होत भये अरु कामी होत भये अरु निराचार शठ हठधर्मी होत भये अरु बृषली जे हैं दासी तिनके स्वामी होतभये (४)॥

दो० भये वर्ण संकर कलिहि भिन्नसेतु सब लोग॥
करहिं पाप पावहिं ते दुख भय रुज शोक बियोग १॥
सब लोग वर्णसंकर होत भये और माता और पिता हे तात त्यहिं कलियुग विषे भिन्न भिन्न मार्ग सब चलते भये अरु अनेक पाप करै हैं अरु भय रोग कोरे के ग्रसित हैं (१)

चौ० नृप पापपरायण धर्म नहीं। करिदण्डविडम्ब प्रजा नित हीं।
अरु कलि में राजा पापपरायण होत भये हैं ताते प्रजनते नित्य दण्ड लेते हैं अरु विडम्बन करी मारते हैं॥(६)

चौ० कलि काल बिहाल किये मनुजा। नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा॥
हे तात कलिकाल करिके सम्पूर्ण विहाल हैगये हैं अरु अनुजा जो भाई की स्त्री है अरु तनुजा जो अपनी कन्या तिनको कोई नहीं मानते हैं (५)

चौ० नित युग धर्म होहिं सबकेरे। हृदय राम माया के प्रेरे॥
हे तात सबके युग युग के धर्म नित वर्तमान होते हैं श्रीरामचन्द्रजी माया की प्रेरणा ते तहा सतयुगके धर्म सतयुगहि मेंहैं अरु त्रेता के धर्म त्रेताही मे हैं अरु द्वापर को धर्म द्वापर में अरु कलियुग को धर्म कलियुग मे हैं ताते नित्य युग धर्म कहा किन्तु तीनिहू युगको धर्म कलियुग विषे सूक्ष्म सूक्ष्म वर्तमान होतेहै तामें कलियुग कीं अति आधिक्यई यहीरीति सब युगमें जानिये किन्तु कोई पुरुष एकही दिन चारि पहरमें चारिहु युगको धर्म वर्तमान करते हैं (१)॥

चौ० शुद्ध सत्व समता विज्ञाना। कृतप्रभाव प्रसन्न मन जाना॥
शुद्ध सात्विक गुण तेहीं ते मनमे समता अरु विशेष आत्मज्ञान ताते मन प्रसन्न है सबके यह सतयुग को धर्म है (२)

चौ० सत्वबहुत रज कछु रतिकर्मा। सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा॥
अरु सात्विक गुण तौ पूर्ण अरु राजसगुण के चारी भाग में एकभाग त्रेता में प्राप्त भयो त्याहे गुणनके अनुभव सत्कर्मनि कर्म करते हैं

तातें त्रेताके कर्म धर्म में सब सुखें हैं काहेते कि सात्त्विक कीरैकै केवल वैराग्य योग ध्यान राजस कीबैकै यज्ञ इत्यादिक सुन्दर भोग श्रीरामप्रसादी दुनों मिलै त्रेता में परमसुख है (३)।।

चौ० बहुरज स्वल्प सत्वकछु तामस।। द्वापर धर्म हर्ष भय मानस।।
अरु द्वापर में आधा रजसगुण अरु एकभाग सात्त्विक, एकभाग तामस तातें द्वापर विषे हर्ष जो है भयजो है शोक इत्यादिक मिलिकै व्याप्त हैं (४)।।

चौ० तामस बहुत रजोगुण थोरा।। कलि प्रभाव विरोध चहुंओरा।।
अरु कलि में तामसगुण पूर्ण अरु राजस एक भाग अरु सात्त्विक जहांतहां भगवत् की कृपाते ताते सम्पूर्ण विरोध हैरहा है (५)

चौ० बुध युग धर्म जानि मन माही।। तजि अधर्म रतधर्म कराहीं।।
तातें बुध जे हैं पण्डित विवेकी सो युग को धर्म जानते हैं तातें अधर्म को त्यागिकै धर्म करते हैं तहां एकही दिनमें चारिहूं युग के धर्म करते हैं प्रातसमय जब चारि दण्ड रात्रि रहती है अरु चारि दण्ड दिन चढेताई सतयुग को धर्म ज्ञानध्यान करते हैं उपरान्त डेढ़ पहर दिनचढेताई त्रेता को धर्म करते हैं होम यज्ञ किन्तु जप यज्ञ उपरान्त अढ़ाई पहर दिन चढेताई द्वापरको धर्म करते हैं पूजास्नान श्रृंगार भोगराग किन्तु मानसी पूजा उपरान्त कलियुग को धर्म श्रीरामचरित कीर्तन करते हैं किन्तु रामनामैं स्मरण करते हैं अरु नाम स्मरणतें सर्वोपरि ही आठों याम भगवद्धर्म करते हैं बुधजन जे हैं (६)।।

चौ॰ नटकृत विकट कपट खगराया॥ नटसेवकहिं न व्यापै माया ॥

हे खगराय जैसे नटके कुतबेष अति विकटहै नहीजाना जाइहै किंम् मे तहां नट की माया नटके सेवक को नहीं व्यापत है हे तात तैसेही हरिकी प्रेरणा ते हरि की माया अनेकगुण दोष युक्त कलाकरती हैं पर जे हरिके सेवक हैं तिन को नहीं व्यापती है किन्तु हरिअपनी मायाकरिके गुण दोष युक्त अनेक कला करते हैं सो हरिके सेवकनको नही व्यापती हैं (२) ॥

दो॰ परमसाधु परमारथ बिन्दक॥ शम्भु उपासक नहिं हरि निन्दक ॥

ब्राह्मण परम साधु परमार्थ बिषे बिन्दक कहो प्राप्त रहै अरु शम्भुको उपासक रहै अरु हरिकी निन्दा नहीं कराहिं (४)

चौ॰ रामहि भजहि तात शिवधाता॥ नरपामरके केतिक बाता ॥

हे तात श्रीरामचन्द्रको शिव अरु धाताकहे विधाता इत्यादिक भजते हैं नरजे पामर हैं पशुमान तिनको कौन बातहै (३) ॥

चौ॰ अधमजाति मैं बिद्या पाई ॥ भयउं यथा अहिदूध पियाई ॥

हे तात मै अधम जाति अरु विद्या पायउं सो विद्या मोहिं बिषे कैसी ह्वैगई जैसे सर्प को दूधपिआये विष ह्वैजात है जैसे स्वाती को जल सर्प के मुख बिषे परत संन्ते बिष विशेष ह्वैजातहै तैसे मोको बिद्या भई (६) ॥

चौ० कविकोविद गावहिं असनीती ॥ खलसन कलह न भलसन प्रीती ॥ (१२१३ नम्बर)

* हे तात कविकोविद यह कहते हैं कि खलन सन न कलह करो अरु न भलाई प्रीति करो किन्तु भलेउ सों न प्रीति करो (२८) ॥ श्रीसीताराम जी

श्रीसीताराम जी

येक कोई राजा पंडित से श्रीमद् भगवत सुना बारह आवर्ति -
परन्तु जब समाप्त का समय आया तो राजा पंडित से प्रश्न किया
की जो श्रीमद् भगवत बारह आवर्ति हम को सुनाया है सो यह श्री
मद् भगवत श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित को सुनाया सोई भगवत है को ई दुसरी है
तब श्री पंडित जी बोले की वोही भगवत है तब राजा बोले कि येक आवर्ति भगवत
श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित को सुनाया उनको तो मोक्ष होगया और बारह आवर्ति
भगवत हम को आप सुनाया सो कुछ नहीं जानि पड़ता है इस का क्या कारण है तब
श्री पंडित जी बोले कि हम को बक्श दिया जावै तो मैं समझ कर आप से कहूँगा राजा बोले
कि बहुत अच्छा है पंडित जी बख्श लेकर घर आये परन्तु उत्तर के विषय में पंडित का कोई
उचित काम नहीं किया इस कारण से पंडित बे होश होगये तब पंडित की पतनि
पुछा कि किस कारण से आप का चित सोच में है तब श्री पंडित जी बोले कि राजा राजा
को हम ने बारह आवर्ति श्रीमद् भगवत सुनाया इस पर राजा ने प्रश्न किया सो उसका
उत्तर नहीं कुछ आता इस कारण सोच में है कि जो परिश्रम किया वोह वृथा गया
अब राजा मुझ को कुछ नहीं देवैगा तब श्री पंडित जी को पतिनी ने कहा कि आप कोई
परम भगवत महतमा को खोजो तो वोह महतमा लोग उसका उत्तर देवैंगे तब
श्री पंडित जी महतमन को खोजने चले ढुढते २ येक महतमा मिले वो महतमा
श्री शुकदेव जी है उनके समीप गये तब महतमा ने पूछा कि आप किस कारण से
हमारे पास आये हैं तब श्री पंडित जी सब हाल कह गये तब महतमा ने कहा कि
आप को सांच के रीति से समुझावें कि प्रगट दिखावें तब पंडित जी बोले कि प्रगट
दिखाइये तब महतमा ने कहा कि जाव राजा को साथ मे लेकर हमारे पास आवो
तब पंडित जी राजा के पास आ कर कहा और राजा को साथ लेकर महतमा के पास के
चले और महतमा श्री शुकदेव जी जो जीवन मुक्त है श्री शुकदेव जी येक सिरजा परगट
किया और उसी सिरजा से कहा कि इन दोनो को रसरी मली के पेड़ में बांध कर अलग
देवो अलग २ सिरजा ने वैसा ही किया

तब महात्मा ने राजा से कहा कि राजा न ये तुम्हारे गुरु है और आपके देखते हुये वांधे है सो
इनको छोड़ा देव तब राजा बोले कि महाराज हम कैसे छोड़ावें हमतो स्वयम बंधे हैं तब
श्री सुकदेवजी पंडितजी से कहा कि पंडितजी देखिये ये आप के शिष्य हैं सो आप के
देखते हुये वांधे हैं सो इनको छोड़ा देव क्योंकि राजा का धर्म बहुत [illegible] ग्राह नीकिया
होगा इसने इनको छोड़ा देव तो श्री पंडितजी बोले कि महाराज हमतो खुद वांधे हैं
तब श्री महात्मा सुकदेव जी सिख्य को हुकम दिया कि इन दोनों को छोड़ देव
छोड़वाकर बोले कि तुम लोगों को समुझि हुवा कि नहीं दोनों राजा पंडित कहते कि
नहीं तब महात्मा बोले कि मैं सुकदेव जी है और हमही राजा परीक्षत को भागवत सुना
चुके सो तुम को ज्ञान है कि किस तरह राजा परीक्षत भागवत सुना है और किस रीत से हम
होती रही इसलिये हम प्रगट हुये हैं कि तुम दोनों कि वासना पूरी रहो पंडित से
श्री सुकदेव जी कहा कि तुम्हारे तो यह वासना रही कि धन मिले लोभ परीक्षत
देना पड़ेगा इससे न तो तुम सुना मन लगाकर और न पंडित जी सुनाया ने वास्तिक
होकर और हमारे वचनों किया हुवा भागवत का दुषरा लगाया इससे हम
को आना पड़ा = हमारे मिलने का फल तुमलोगों को प्राप्त होगा जो तुम्हारा पतिनी
ने बताया है अब तुम दोनों पंच भौतिक शरीर को त्यागो मैं जिस राम परब्रह्म से
जीवन मुक्त हुये हैं उसी राम परब्रह्म से हमने दोनों को जीवन मुक्त करि देवेंगे
तुम दोनों सवासिक रहे हो इससे यह पंच भौतिक शरीर को त्यागो यह शरीर तो
काम सम्बन्धी है अब दुसरी शरीर तुमको मिलैगी तब दोनों शरीर को त्यागि
दिया तब जो राजा रहे सो लोनार भये और पंडित को वेस्या का जन्म हुवा
इसके पीछे दोऊ को संयोग मिला पंडित का पूरा हुवा

उस पंडित ने वेश्या अपने उनके उद्धार हेतु जो विलास कर्म कार के धन संचित किया था
उसे अपने द्रव्य लगाने के वास्ते बाग मन्दिर बनाया इस संयोग से श्री अग्रदेव जी ज्ञानी मुनि
इत्यादि का मंडली लिये हुये और श्री अग्रदेव स्वामी महंत का सपरिवार उनके बाग में
उतरे उतरे बाहर के बाग का पुष्प और जल से श्री युगल सरकार को स्नान कराया और
पुष्प चढ़ाया और आरती करने के वक्त में जब घंटी घंटा बाजने लगा तो अन्न जल
लेने का संकल्प में हुई कि यह तो हमारा बाग है यहां पर सन्त कहां से आये चाकर
होकर खवासी को भेजा कि देख आवे कि कितने मूर्ती हैं और सामान तौला दे कर दे दो
क्योंकि अभी हमारे मिलने का समय नहीं है और हमको देखते ही कोई सन्त रह ले नहीं सक
सकेंगे ये लोग वैराग्य धारण वाले उतरे हैं इन लोगों का वेश्या का बाग मन्दिर
नहीं मालूम है तब खवासिनी महात्मा लोगों का सामान दे आई जब सन्तन की
रसोई भोग लगाकर प्रसाद पाया तब समय पाकर वेश्या आती भई खोड़सो
प्रकार का श्रृंगार करके और भेट का सामान सब पैकार में लिये दंडवत किया
दंडवत करते ही उनके वेश्या का चिन्ह महात्मा लोग देख कर पूछा कि तुम कौन है
तब वेश्या बोली कि महाराज मैं तो बार मुखी हूँ वेश्या कर्म हमारा है महात्मा सेवी सो
कि महाराज अंसार हमको नहीं कि जिसका कर्म कोई नहीं भर सका। उसके कर्म को महात्मा
भोग किया देते हैं यह सुनकर ज्ञानी ब्रह्मचारी लोग बोले कि इसने तो हमको नष्ट करि
दिया। तब महन्त जी बोले कि इसका सोच नहीं करना अब क्या करना है हम नष्ट भये
सो भये। यह सोचना कि धाम ग्रहण कर लिया और इसका नहीं सुधार हुआ
तो नागा है यदि इसका सुधार हो जावे तो हम लोग अच्छे हैं
और जो ज्ञानी रहे उनको सम्बोध नहीं आया अपने होने ज्ञानी में
रहे तब महन्त जी बोले कि हे! वैश्या दौवे को हमारे पास से
हटा के जल्दी इसी द्रव्य से जुगल जोड़ी श्री सीता राम जी की
निर्मित कराना और मन्दिर बनवाय के जो तेरे पास खजाना है उसमे
एक पैसा नहीं रखना सब भगवत ने अर्पण करके आप
अपने गुजारा मात्र प्रसाद पाना वह वैश्या महात्मा के वचन सुन
मूर्ति निर्मित कराया वह मूर्ति बनाने को कैसको दिया? सोनार को
जो राजा था उसने मूर्ति बनाया। इसमें सात्विक कर्म से निर्मित
किया खाने पुराने की इच्छा नहीं किया - यह समझ कर कि
वेश्या ऐसा कर्म किया तो यह ~~बड़भागा~~ बड़भागी है

रस मे लोभ हम नही करें और मूर्ति बना कर तैयार करादिया / एक रत्ती सोना दाहिने नेत्र के पुतली मे कम गया तो अपने पास से लगा दिया उसी के प्रभाव से देह छोड़ कर वह "सोनार" अवध मे आकर राजा अम्बरीष हुआ और वेश्या शरीर को त्याग कर राजा की कन्या भई इसी पूर्व क्रम संयोग से इकट्ठा हुये श्रीराम जानकी के भावना के अधिकारी हुये तब पाँडित रानी भई रानी होकर श्रृंगार रस की भावना से वे और पतंग तक पर धाम को ले गई तहां पर श्री शुकदेव जी उसको आचार्य गुरू मिले - पांचवे आवरण मे उसको महल प्रास दिया उसको नैस पारेकर कहना चाहिये /

पृ० २३

ऐक रोज श्री कौशिल्या श्रीरामचन्द्र जी को गोद में लिये खेलाती रहीं कि ऐक धन्या नाम करके धाइ आई तब उस धाइ को देखकर श्रीराम हसे किलकारी मारि के इतने में धाइ बोली कि जो आपका अज्ञा पावै तो श्रीरामचन्द्र जी को केकेइ के भवन में ले जावैं क्योंकि श्री महराज दशरथ जी विराजमान हैं इसपर श्रीरामचन्द्र की माता बोली कि बहुत अच्छा है ले जाव तब धन्या श्रीरामचन्द्र जी को सुन्दर भूषन बसन धारन करके गोद में लेकर चली श्रीरामचन्द्र कैसे हैं कि जिनके शरीर का आभा अरसी के फूल कि तरह है और पीतझिंगली पहिने हैं जब धन्या महराज के समीप पहूँची तो श्रीरामजी को सिखाया कि बेटा माता पिता को प्रनाम करना इसपर श्री महराज प्रसन्न हुये

श्री:

श्री: गुरुचरणकमलेभ्यो नम:, श्री सीतारामाभ्यां नम: ॥

श्रीवाटिका विहारणी विहारणी विजयतेतराम्

अथ श्री मानस रामायणान्तर्गत पुष्पवाटिका विहार के प्रसङ्ग के चौपाइयों के गुप्त भाव का प्रकाश श्रीमद् स्वामी १०८ श्री

॥ युगलानन्यशरन जी कृत ॥

चौ० ॥ पूजन गौरि सखी लै आई - करत प्रकाश फिरत फुलवाई ॥

अर्थ:

सखियां श्री किसोरि जी को गिरजा जी का पूजन करने के लिये कै सी ले आई, इस प्रसङ्ग के मिलान के वास्ते ऊपर से भूमिका कहते हैं ॥ जब दोनो राजकुमार नगर देखने के लिये आये तब नगर के जो बालक संग संग लगे उनसे बातें लाभ करते हुये जब दोनो राजकुमार धनुषयज्ञ भूमि में गये तब उन बालकों में मुग्ध निग्ध आदि भाव करके कई प्रकार के बालक हैं ॥ धनुष को देख कर राजकुमार बालकों से भेद लेने लगे। बोले कि हे प्रियवर, यह धनुषयज्ञ किस निमित्त से हुआ है। मुग्ध आदि प्राप बालकों श्री मिथिलाधिप राजनंदनी जी के रूप गुण स्वभाव इत्यादि जानने के लिये ये क्यों की आप राजकुमार हैं ॥

श्री:

चतुराई से सब बात जान कर सजग हो जायेंगे अतएव आप बालकों से प्रश्न करते भये इन बालकों में अवस्था भेद करके और एक पूछे हैं इनमें से जो बालक अति न मुग्ध है न अबोध के विरोधी हैं अर्थात् जिन बालकों को मीता जो बात कहने में संकोच नहीं है उन्हीं बालकों से आप का प्रश्न है तब बालक बतलाने लगे कि यह धनुषयज्ञ श्री राजनंदिनी जी के निमित्त भया है तब तो श्री राजकुमार श्री मिथिलाधिप राजनंदिनी जी के पाल्य गुण रू उन सबको एक रीति वरण करके पूछने लगे बालिका न सब गुणों का निरूपण करके जब श्री प्यारी जी का रूप सौन्दर्य कथन करने लगे तब बाल कि हे श्री राजकुमार श्री राजकिशोरी का रूप तो अलौकिक है अनेक रवि के समान प्रकाश रूप वाले हैं सो सब फीके पड़ जाते हैं इतना प्रकाश श्री राजनंदिनी जी का सहज है। श्री राजकुमार बोले कि हे प्यारे हमारा रूप तो आप सब को दृष्टिगोचर है इससे भी अधिक प्रकाश श्री राजदुलारी जी का है।। बालक बोले कि हे प्रियवर श्री राजनंदिनी जी के रूप के सामने आप भी मंद हो जायेंगे हे प्यारे हम वचनों से क्या कहें यदि आप के भाग्य होंगे तो आप देखेंगे श्री को सरकार जी इन बालकों के सुन कर श्री राजकुमार के मन में अपने रूप का गर्व आया और अपने मन में निश्चय किया कि हम अपने रूप से पराजय कर देंगे ऐसा निश्चय करके बालकों से श्री राजकिशोरी जी के मिलने का मन में जो समय भी जान के मन में रख लिया अब जो नगर देखने के व्याज से जो श्री राजकुमार ने अपने रूप की मोहनी डार कर सब कामन वस किया है ॥ दो०

चौ०

जिन निज रूप मोहनी डारी। किन्हे स्वबस नगर नर नारी।

॥श्रीः॥

और जो युवतीभवन झरोखन लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागी॥

अर्थ॥ ऐसे इन सबको भी अपने मोहनी रूपसे बस कर लिया है इसके कु
जव से पूरे हैं॥ नगर देखकर जब राजकुमार चलने लगे तब युवतियों
ने झरोखे में से देखती रही उन सबों ने फूलों की वर्षा करके
फूल के ब्याज से राजकुमार को संकेत भी किया था कि आज जो
कल पुष्पवाटिका में सजग होकर आना, तब तुम्हारा जोरतो देखो
जावेगी यही फूल बर्षाने का भाव था॥

चौ० समाप्तः

दोहा०॥ हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि वृन्द॥

अर्थ॥ फूल के द्वारा युवतियों ने राजकुमार से पुष्पवाटिका में
आने की सूचना देकर जिस महल में अष्ट पुहर रानी की कौसल
होती रही वहाँ पर वह आकर प्रस्ताव किया कि दो राजकुमार आये हैं सो
अपने रूप से सब को विह्वल कर दिये और अपने रूप के अभिमान से
विजय का नगारा (डंका) दिये हैं कि जो अपने रूप का अभिमान रखती हो
वह निकले अब हम विजय को आये हैं॥ युवती गणों ने इस वाक्य को
सुनकर श्रीमत्या: अष्ट पुयरवणी आपस में निश्चय करती भई कि इस
बात को श्रीमन्महाराज मिथिलाधिप राजनंदनी जी से अवश्य निवेदन
करना चाहिये और हम सबके संयुक्त श्री राजकुमार जू का गर्व दूर करने के
लिये श्री राजनंदनीजू को वाटिका विहार के वास्ते ले चलना चाहिये
ऐसा निश्चय करके जहाँ चँवर छत्र व्यंजनादि लेकर अनन्त सखियों
सेवित श्री मिथिलाधिप राजनंदनी जी सिंहासन पर विराजमान हैं वहाँ
पर आवती भई।

श्री:

और पूर्वोक्त सब वचनों का निवेदन करती भई पुनि यह कहती भई कि यह राज नीति है कि जो राजा अपने देश पर चढ़ आवे तो नीति मान राजा वही है कि जो पै पहले विजय करके अपने देश की उन्नति करे अतएव आप के इस लावन्य के देश पर राजकुमार चढ़ आये हैं तो हम सब निश्चय कर चुकी हैं कि विजय करने के वास्ते चलना चाहिये आपकी जैसी आज्ञा हो। श्री विदेह राज नंदिनि जी ने श्री प्रियसखियों के प्रस्ताव को पास किया कि अद्भुत प्रकार चलना चाहिये इतना वचन श्री राज दुलारी जी के मुखारविन्द से सुनते मात्र नाना प्रकार की सवारियां आदि सवारियों पर चढ़ती भई जैसे चली कि जो अति शोभा प्रकाश मान नाम यान उस पर श्री राज नंदिनी जी चढ़ी मध्य में श्री राज नंदिनी जी की सवारी तिस के चारो तरफ अष्ट यूथेश्वरियों की सवारी तिसके चारों तरफ अनन्त सखियों की सवारी इस प्रकार से चलती भई चल कर के वाटिका में आई और चलकर के वा टिका में आई और आपस में विचार करके श्री राज किशोरी जी एक सखी जो अति प्रधाना है तिनसे कहती भई कि हे सखि आप जाओ और सब बात देख आओ कि वह राजकुमार कहां पर हैं कि जिन्हों ने विजय का नगारा नगर में दिया है बाग में आये या नहीं यदि आये हों तो नय से जीते जायेंगे या अनय से जीते जायेंगे। यहां पर नय नाम नीति और अनय नाम अनीति का है। नय और अनय का अभिप्राय यहां यह है कि जो वीर अपने से समान है। उस पर वीर का सम्पूर्ण शृंगार करके चढ़ाई करना अनय है और यदि साधारण वीर हैं तो साधारण रीति से विजय करना नय है अतएव आप जाइये क्योंकी सब शास्त्र सबों की ज्ञाता हो अस्त्र यहां कहा है (कटाक्षादि) श्री किशोरी जी का अभिप्राय श्रीमती यूथेश्वरी जी से यह है। कि आप सब शास्त्र की ज्ञाता हो कटाक्षादि अस्त्रों से राजकुमार को घायल करना श्री किशोरी जी ने खास अपना काम श्री यूथेश्वरी जी को स्वयं मान देकर कहा है। स्वयं मान यह है कि अपना और अपने ही तन सरीखे श्रीमती यूथेश्वरी जी के करने में हेर फेर किसी तरह का नहीं एकत्व सुख श्री राज दुलारी जी मानती हैं। देखिये कि ऐसे प्रेम रस आदि लाल से प्रथम मिलाप वह अनिर्वचनीय सुख का भोक्ता अपने ही सहाय श्री विदेह कुल राज नंदिनी जी अपनी परम प्यारी चन्द्रकला जी को मान दे नहीं तो। कटाक्षादि का अधिकार न देकर यही कह देतीं की जाओ देख आओ वह राज कुमार कहां पर हैं॥

समाप्त

श्री:

यदि कहो कि श्रीमती चन्द्रकलाजू की प्रधानाचार्य रचित इस नाम के सोदपा गा।
सो आगे प्रगट करेंगे इस प्रकार श्री मिथिलाधिप राजनन्दनीजी के मुखारविन्द से
ऐसा वचन सुनकर भक्तजन श्री सखीजी राजकुमार के तलाश में गई ॥प्रथमा॥

चौ॰ एक सखी सिय संग विहाई - गई रही देखन फुलवाई, देखन फुलवाई से भाव
अर्थात फुलवाटिका के अन्तर श्री राजकुमार को देखने गई रहीं ॥

चौ॰ ते दोउ बन्धु बिलोकि सिजाई, प्रेमविवस सीता पहिं आई ॥ एवं वह सखी।
जो दोनों भाइयों को जाकर देख प्रेम में विहुल होकर श्री राजकिशोरी जी
के पास आई जहाँ पर आई जहाँ पर श्री राज दुलारी जी सब सखियों से संयुक्त
मंजनादिक पूजा गिरजा पूजनादि करके सुख छविकी विराजमान हैं ।
तहाँ पर आई प्रेमविवस कहने का भाव यह है कि हम तो जानता रहीं कि कोई
प्रबलवीर राजकुमार हैं यह तो साधारण ही जीते जायेंगे अतएव प्रेमविवश

चौ॰ तासु दसा देखी सखिन पुलकगात जलनैन, कहु कारण निज हरष को पूछहिं सब मृदु बैन
सखीजी की विहवल दशा देखकर सब सखियों मृदु बैन से पूछती भई
मृदु बैन कहने का भाव स्वाभाविक के सब सखी कोमल वचन बोलने वाली हैं ॥
एवं कहु कारण का भाव यह है कि कारण नाम जिस निमित्त से आप गई रहीं
उसका हाल कहो, अर्थात् श्री राजकुमार को देखने के लिए आप गई रहीं
सो राजकुमार हमारी स्वामिनीजी का कुछ सामना करेंगे या नहीं उसे कहो
और निज हर्ष का कहने का भाव यह है कि आप को जो, प्रीति हर्ष है उसे अपने
वचनों से सुनाकर हम सबको भी हर्षित करो एवं सखी जी उत्तर देती हैं

चौ॰ देखन बाग कुँवर दोउ आए वे किशोर सब भाँति सोहाए ॥ अर्थात्
हे सखियो श्री राजकुमार बाग देखने आए हैं। इस शब्द के कहने का
भाव यह है कि बाग रूप श्री राजकिशोरी जी हैं तिनको देखने आए
अर्थात् अपने रूप के अभिमान से बाग रूप श्री किशोरीजी का रूप
देखने नाम जीतने के लिए आए हैं। परन्तु आप ही जीते जायेंगे

श्री:

इसको भाग के हुए न हो श्यामसे जोर हो जाएगें, फलश्री किशोरी जी का रूप काल्पनिक भाग
से दिखलाते हैं। बाग में फूल हैं फल हैं, सुगंध है तड़ाग है। मोर है पक्षी हैं ऐसी तरह
से श्री किशोरी जी के अंग में ये सब उपमा द्वारा उत्प्रेक्षित है। जैसे फूल चंपा कमल
गुलाब तिल आदि इनमें से वर्ण रंग दिखलाया चंपक बरनी कमल से मुख
कमल पद कमल इत्यादि गुलाब से लोलमत्व तिल पुष्प से नासिका। आदि फलों से
बिम्बफल आदि करके उरोज रसाल आदि फल से अंगों का रस स्वाद आदि इन फूल फलों
से पता लगता।